रजिस्ट्री सं० डी- 222

REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 25] नई दिल्ली, शनिवार, जून 17, 1972 (ज्येष्ठ 27, 1894)

No. 25] NEW DELHI, SATURDAY, JUNE 17, 1972 (JYAISTHA 27, 1894)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोटिस

(NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 24 जनवरी 1972 तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 24th January 1972 :—

अंक Issue No	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
1	2	3	4
8	सं० प्रति अदायगी/पी० एन०-4/72 दिनांक 15 जनवरी 1972	वित्त मंत्रालय	सार्वजनिक सूचना सं० प्रति अदायगी/पी० एन०-1, दिनांक 15 अक्तूबर, 1971 में प्रकाशित सारणी में अतिरिक्त संशोधन।
8	No. DRAWBACK P N-4/72, dt. 15th Jan. 1972	Min of Finance	Further amendment in the table published in the public Notice No. DRAWBACK/P.N.-1, dt. the 15th Oct. 1971
	सं० प्रति अदायगी/पी० एन०-5/72, दिनांक 15 जनवरी, 1972	तदैव	सार्वजनिक सूचना सं० प्रति अदायगी/पी० एन०-1, दिनांक 15 अक्तूबर, 1971 में प्रकाशित सारणी में संशोधन।
	No. DRAWBACK/PN-5/72 dated 15th Jan. 1972	Do.	Amendments in the table published in the Public Notice No. DRAWBACK/PN-1, dated the 15th Oct. 1971.
	सं० प्रति अदायगी/पी०एन०-6/72, दिनांक 15 जनवरी 1972	तदैव	सार्वजनिक सूचना सं० प्रति अदायगी/पी० एन०1, दिनांक 15 अक्तूबर, 1971 मे प्रकाशित सारणी मे संशोधन।
	No. DRAWBACK/PN-6/72 dt. 15th Jan 72	Do.	Amendments in the table annexed to the Public Notice No. F. DRAWBACK/P.N.-1, dt. the 15th Oct. 1971.

1	2	3	4
	सं० प्रति अदायगी/पी०एन०-7/72, दिनांक 15 जनवरी 1972	वित्त मंत्रालय	सार्वजनिक सूचना सं० प्रति अदायगी/पी० एन०-1, दिनांक 15 अक्तूबर 1971 में प्रकाशित सारणी में संशोधन ।
	No. DRAWBACK/PN-7/72 dt. 15th Jan. 1972 .	Min. of Finance	Amendments in the table published in the Public Notice No. DRAWBACK/PN-1, dt. the 15th Oct. 1971.
9.	सं० 2-प्रेज़/72, दिनांक 15 जनवरी, 1972	राष्ट्रपति सचिवालय	राष्ट्रपति द्वारा पदक प्रदान ।
9.	No.2-Pres/72, dt. 15th Jan. 1972 . .	President's Secretariat	Making of Awards by the President.
10	सं० 5-आई०टी०सी० (पी०एन०)/72, दिनांक 17 जनवरी 1972	विदेश व्यापार मंत्रालय	संयुक्त राज्य अमरीका अन्तर्राष्ट्रीय विकास अभिकरण कार्यक्रम महासागर जलयानों को अधिकार पत्र देना और अन्तर्राष्ट्रीय विकास अभिकरण वित्तपुस माल के परिवहन के लिए कतिपय जलयानों पर व्यापार निषेध लगाना ।
10.	No.5-I.T.C.(P.N.)/72 dt. 17th Jan. 1972 .	Min. of Foreign Trade	U.S. AID Programme chartering of Ocean Vessels and Embargo on certain vessels for transport of AID financed goods.
11.	सं० 1/24/72-एम०, दिनांक 18 जनवरी 1972	परमाणु ऊर्जा विभाग	डाक्टर विक्रम अम्बालाल साराभाई का देहान्त ।
11.	No. 1/24/72-M, dt. 18th Jan. 1972 . .	Department of Atomic Energy	Death of Dr. Vikram Ambalal Sarabhai.
12.	सं० 37/1/IV/72/टी०, दिनांक 18 जनवरी 1972	लोक-सभा सचिवालय	लोक-सभा को सोमवार 13 मार्च, 1972 को 11 बजे नई दिल्ली में अधिवेशन के लिए राष्ट्रपति द्वारा आमन्त्रित आदेश ।
12.	No. 37/1/IV/72/T dt. 18th Jan. 1972 .	Lok Sabha Secretariat	Order by the President on summoning the Lok Sabha at New Delhi on Monday, the 13th March, 1972 at 11 A.M.
13.	सं० 6-आई०टी०सी० (पी०एन०)/72, दिनांक 18 जनवरी 1972	विदेश व्यापार मंत्रालय	अप्रैल 1971—मार्च 1972 वर्ष के लिए आयात नीति ।
13.	No. 6-ITC(PN)/72 dt. 18th Jan. 1972 .	Min. of Foreign Trade	Import Policy for the year April 1971—March 1972.
4.	सं० आर० एस० 1/1/72-एल०, दिनांक 19 जनवरी 1972	राज्य सभा सचिवालय	राज्य सभा को सोमवार 13 मार्च 1972 को 11 बजे नई दिल्ली में समवेत होने के लिए राष्ट्रपति द्वारा आमन्त्रित आदेश ।
14.	RS 1/1/72-L dt. 19th Jan. 1972 . .	Rajya Sabha Secretariat	Order by the President on summoning the Rajya Sabha at N. Delhi on Monday the 13th March 1972 at 11 A.M.
15.	सं० 7-आई०टी०सी० (पी०एन०)/72 दिनांक 19 जनवरी 1972	विदेश व्यापार मंत्रालय	पंजीकृत निर्यातकों के लिए आयात नीति—विदेशी यात्रियों द्वारा आंशिक या पूर्ण रूप में किये गए अग्रिम भुगतान के लिए दरियों के किए गए निर्यात के प्रति प्रतिपूर्ति प्रदान करना (संशोधन सं०-53)।
15.	No. 7-ITC(PN)/72 dt. 19th Jan. 1972 .	Min. of Foreign Trade	Import policy for Registered Exporters— Grant of Replenishment against export of carpet made against advance payments made in part or full by the Foreign tourists (Amendemet No. 53).

1	2	3	4
16.	सं० 8-आई०टी०सी० (पी०एन०)/72, दिनांक 21 जनवरी 1972	विदेश व्यापार मंत्रालय	अप्रैल 1971—मार्च 1972 वर्ष के लिए पंजीकृत निर्यातकों के लिए आयात नीति (संशोधन सं०-54)।
16.	No.8-ITC(PN)/72 dt. 21st Jan. 72 . . .	Min. of Foreign Trade	Import Policy for registered exporters for the period April 1971– March 1972 (Amendment No. 54).
16.	सं० 9-आई०टी०सी० (पी०एन०)/72, दिनांक 21 जनवरी 1972	तदैव	अप्रैल 1971—मार्च 1972 वर्ष के लिए पंजीकृत निर्यातकों के लिए आयात नीति (संशोधन सं०-55)।
16.	No. 9-ITC(PN)/72 dt. 21st Jan. 1972 . .	Do.	Import policy for registered exporters for the year April 1971—March, 1972 (Amendment No. 55).
17.	सं० 3/2/72-पब्लिक II, दिनांक 22 जनवरी 1972	गृह मंत्रालय	दिल्ली के उपराज्यपाल डा० आदित्य नाथ झा का देहावसान।
17.	No. 3/2/72-Pub.II dt. 22nd Jan. 1972 . .	Min. of Home Affairs.	Death of Dr. Aditya Nath Jha Lt.-Governor of Delhi.
18	सं० ए० 21021/13/71-प्रशासन III B दिनांक 22 जनवरी 1972	वित्त मंत्रालय	सीमाशुल्क तथा केंद्रीय उत्पादन शुल्क विभागों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रशस्ति प्रमाण पत्र प्रदान किए जाने की योजना की धारा (एफ०) और (जी०) का प्रतिस्थापन।
18.	No.A. 21021/13/71 Ad.III B, dt. 22nd Jan. 1972 .	Min. of Finance	Substitution of clauses (f) and (g) of the scheme for the grant of appreciation certificates to officers and staff of the Customs and Central Excise Departments.
19.	सं० 3 ए०-प्रेज०/72, 22 जनवरी 1972	राष्ट्रपति सचिवालय	राष्ट्रपति द्वारा उपाधियां प्रदान।
19.	No. 3A-Pres/72, dt. 22nd Jan. 1972 . . .	President's Secretariat	Making of awards by the President.
20	सं० 10-आई०टी०सी० (पी०एन०)/72 दिनांक 22 जनवरी 1972	विदेश व्यापार मंत्रालय	अफगानिस्तान से सभी प्रकार के ताजे फलों का आयात किन्तु नारियल, काजू तथा खजूरों [क्रम सं० 21(ए०)(1)/4] को छोड़कर।
20.	No.10-ITC(PN)/72 dt. 22nd Jan. 1972 . .	Min. of Foreign Trade	Import of fresh fruits all sorts excluding coconuts, Cashew nuts and Dates [S.No. 21(a)(i)/IV] from Afganistan.
21.	सं० 11-आई०टी०सी० (पी०एन०)/72 दिनांक 24 जनवरी 1972	तदैव	अप्रैल 1971—मार्च 1972 वर्ष के लिए पंजीकृत निर्यातकों के लिए आयात नीति (संशोधन सं० 56)
21.	No. 11-ITC(PN)/72 dt. 24th Jan. 1972 . .	Do.	Import policy for registered exporters for the year April 1971—March 1972 (Amendment No. 56).

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिए।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पो से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	591
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयो और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियो आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाए	969
भाग I—खंड 3—रक्षा मत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	63
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियो आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	847
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मत्रालयो और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	1459
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाए	2013
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	285
भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	819
भाग III—खड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	191
भाग III—खड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाए	—
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल है	1091
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी सस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसे	119
पूरक संख्या 25—	
10 जून, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट	1125
20 मई, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरो मे जन्म तथा बड़ी बीमारियो से हुई मृत्यु सम्बन्धी आंकड़ें	1135

CONTENTS

PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	591
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	969
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	63
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	847
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB.-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories	1459
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	2013
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence	27
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	819
PART III—SECTION 2.—Noufications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta	191
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1091
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	119
SUPPLEMENT No. 25	
Weekly epidemiological Reports for week ending 10th June, 1972	1125
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 20th May 1972	1135

भाग I—खण्ड 1
(PART I—SECTION 1)

रक्षा मंत्रालय को छोड़कर भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 1 जून 1972

सं० 71-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में उत्कृष्ट वीरता के लिए महावीर चक्र प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. ब्रिगेडियर आनन्द सरूप (आई०सी०-4501), गोरखा राइफल्स।

ब्रिगेडियर आनन्द सरूप को पाठनगर और फेनी नगर के दक्षिणी क्षेत्र में दुश्मन पर हमला करने के लिए सैन्य दलों को सगठित करने और लड़ाई में उतारने का काम सौंपा गया। इन्होंने इस सैना को बहुत तेजी से सगठित किया और इनकी कमान में सैनिक नजीरहाट, कुमीरहाट और भटियारी की लड़ाइयों में बड़ी वीरता से लड़े। ब्रिगेडियर आनन्द सरूप लगातार आगे बढ़ते रहे और अपने सैनिकों के साथ अग्रिम पंक्ति में रहकर संक्रियाओं का निर्देशन करते रहे।

पूरी कार्यवाही में ब्रिगेडियर आनन्द सरूप ने प्रत्यक्ष वीरता और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया।

2. लेफ्टिनेन्ट कर्नल शमशेर सिह (आई०सी०-7018), ब्रिगेड आफ गार्ड्स।

लेफ्टिनेन्ट कर्नल शमशेर सिह पूर्वी सेक्टर में एक हमले के दौरान ब्रिगेड आफ गार्ड्स की एक बटालियन की कमान कर रहे थे। दुश्मन ने सुरगों, तारों और छल बमों को छिपा कर और आर्टीलरी, टैंक और मशीनगन की गोलाबारी में अच्छा तालमेल कायम कर के बहुत मजबूत मोर्चाबन्दी कर रखी थी। दुश्मन के शक्तिशाली मुकाबले के बावजूद बटालियन लक्ष्य पर पाव जमाने और उस जगह पर कब्जा रखने में किसी तरह सफल हुई। इसके लिए जवानों को एक बकर से दूसरे बकर पर जाकर लड़ना पड़ा और हमारा भारी जानी नुकसान हुआ। दुश्मन ने बहुत से जवाबी हमले किए, जिनके दौरान बटालियन के पास गोला बारूद की कमी हो गयी। किन्तु जरा भी विचलित न होकर लेफ्टिनेन्ट कर्नल शमशेर सिह ने आमने-सामने होकर लड़ाई लड़ी। इन्होंने स्वय जगह-जगह जाकर अपने जवानों को निर्देश दिया और उन्हे अपने-अपने मोर्चे पर डटे रहने के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही इन्होने आर्टिलरी और मशीनगन की गोलाबारी की सहायता का बदोबस्त किया। अपनी बटालियन का पुनर्गठन करने के बाद इन्होंने एक और हमला किया और कड़े मकाबले के बावजूद दुश्मन को भारी जानी नुकसान पहुचा कर अपने लक्ष्य पर कब्जा करने में सफल हुए।

इस सक्रिया में लेफ्टिनेन्ट कर्नल शमशेर सिह ने प्रत्यक्ष वीरता और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया।

3. मेजर विजय कुमार बेरी (आई०सी०-11567), पैराशूट रेजीमेन्ट।

17 दिसम्बर, 1971 को युद्ध विराम के बाद पाकिस्तानी सैनिकों ने पश्चिमी सैक्टर में हमारे प्रदेश के भीतर घुसकर लगभग 600 गज इलाके पर कब्जा कर लिया और चारों तरफ, सुरग बिछा कर इसे एक रक्षित इलाका बना लिया। सीमा पार अन्य रक्षित मोर्चों पर दुश्मन भारी तादाद मे था और वहा से वह इस इलाके पर हावी हो रहा था।

पैराशूट रेजीमेन्ट की एक बटालियन को दुश्मन के कब्जे से यह इलाका वापिस लेने का काम सौंपा गया। मेजर विजय कुमार बैरी को इस इलाके पर कब्जा करने का आदेश दिया गया। इनकी कम्पनी को दुश्मन की भारी गोलाबारी का सामना करना पड़ा। लेकिन बिना झिझके मेजर बैरी ने हमला जारी रखा। सुरग क्षेत्र मे अपने जवानों का नेतृत्व करते हुए इन्होंने अपनी जान की जरा भी परवाह न करके दुश्मन की पोजीशन पर हमला किया और लक्ष्य पर पहुंच गए। लेकिन दुश्मन ने इस पोजीशन पर अगले बारह घन्टे तक आर्टिलरी और मार्टर से धुआधार फायर किया। मेजर विजय कुमार बेरी इस से जरा भी विचलित नहीं हुए और हर शैक्शन के पास जाकर इन्होंने अपने जवानों का हौसला बढ़ाया। इस तरह वे कब्जे में आये इलाके पर डटे रहे और उस इलाके से दुश्मन को भगा दिया।

इस सक्रिया में मेजर विजय कुमार बेरी ने उत्कृष्ट वीरता और असाधारण नेतृत्व का परिचय दिया।

4. 2850287 नायक सुरत सिह, राजपूताना राइफल्स।

मरणोपरान्त

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 दिसम्बर, 1971)

9 दिसम्बर, 1971 को राजपूताना राइफल्स की एक बटालियन को मैनामती में स्थित दुश्मन की मोर्चाबन्दी पर हमला करने का आदेश मिला। यहा अच्छी तरह तैयार कन्क्रीट के बंकर थे, जिनमें मिडियम मशीनगनें लगी हुई थी और जिनका दुतरफा फायर हर रास्ते पर आड किए हुए था। ज्यों ही प्रहार

करने वाले सैनिक लक्ष्य के करीब पहुंचे, मीडियम मशीन-गनों से गोलीबारी होने लगी जिससे प्रहार रुक गया। स्थिति की गम्भीरता महसूस करके नायक सुगन सिंह एक मीडियम मशीन-गन चौकी की तरफ लपके। इनके कन्धे पर गोलियों की बौछार पड़ी। लहूलुहान होने के बावजूद वह बंकर तक रेंग कर पहुंचे और इन्होंने एक हथगोला भीतर फेंका, जिससे दो पाकिस्तानी सैनिक मारे गये। दूसरी मीडियम मशीनगन अभी भी गोला-बारी कर रही थी। इनके शरीर से खून बहुत निकल चुका था फिर भी वह दूसरी मशीनगन की तरफ लपके। लेकिन वह आगे नहीं बढ़ सके और वहीं गिर पड़े। इसके बावजूद हाथ में हथगोला लिए वह दूसरे बंकर तक रेंग कर पहुंचे और इन्होंने हथगोला बंकर में मरका दिया, जिससे दुश्मन के तीन जवान मारे गये। इसके विस्फोट के कारण वह भी वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में नायक सुगन सिंह ने उत्कृष्ट वीरता और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

सं० 72-प्रेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को वीरता के लिए शौर्य चक्र प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. मेजर विष्णु दत्त शर्मा (आई०सी०-10048), रेजिमेंट आफ आर्टिलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)

मेजर विष्णु दत्त शर्मा एयर डिफेंस रेजिमेंट की बैटरी की कमान कर रहे थे। इन्हें हलवाड़ा हवाई मैदान का हवाई हमलों से बचाव करने का कार्य सौंपा गया था।

इन्होंने अपनी बैटरी को कुशलता और दक्षता से तैनात किया और अपने मार्ग दर्शन से अपने सैनिकों को प्रेरणा दी जिससे कि वे दुश्मन के सीधे हवाई हमलों का बखूबी मुकाबला कर सकें। इनके प्रेरणादायक नेतृत्व में इनकी बैटरी 3 दिसम्बर 1971 को दुश्मन के वायुयानों के सामने डटी रही, जिससे बहुमूल्य संस्थापनों और उपस्करों को नुकसान न पहुंच सका। 4 दिसम्बर, 1971 को इस बात को अच्छी तरह जानते हुए भी कि हवाई मैदान में अनेकों बिना फटे बम पड़े हैं, अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना हवाई हमलों से पूरी तरह बचाव के लिए वे एक से दूसरी गन-पोजीशनों में गए। इस तरह एक से दूसरी गन-पोजीशन में जाते समय जब अचानक ही एक बिनफटा बम फट गया तो वह बुरी तरह जख्मी हुए।

इस पूरी सक्रिया के दौरान मेजर विष्णु दत्त शर्मा ने प्रणनीय साहस और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

2. लेफ्टिनेन्ट कमांडर सज्जन कुमार (एक्स०), भारतीय नौसेना।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

लेफ्टिनेन्ट कमांडर सज्जन कुमार, पाकिस्तान के खिलाफ हुई हाल की सक्रियाओं के दौरान विशाखापत्तनम् में "कमान क्लियरेंस डायविंग टीम" के इंचार्ज थे।

5 दिसम्बर, 1971 को लेफ्टिनेन्ट कमांडर सज्जन कुमार ने उस टीम का नेतृत्व किया, जिसने पाकिस्तानी पनडुब्बी गाजी का पता लगाकर उसका निशान लगाया, जो कि बाद में भारतीय नौसैनिक कार्यवाही की वजह से विशाखापत्तनम् के पास डूब गई। हालांकि, डूबी हुई पनडुब्बी के भीतर विस्फोट होने का खतरा था, फिर भी लेफ्टिनेन्ट कमांडर सज्जन कुमार ने गोताखोरी की संक्रियाओं का लगातार नेतृत्व किया, जिसकी वजह से न केवल पनडुब्बी को पहचानने में मदद मिली, बल्कि दूसरी महत्वपूर्ण संक्रियात्मक सूचनाएं भी प्राप्त हुई।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट कमांडर सज्जन कुमार ने उच्चकोटि के शौर्य का परिचय दिया।

3. स्क्वाड्रन लीडर गोपाल कृष्ण अरोड़ा (4864), फ्लाइंग (नेवीगेटर)।

मरणोपरान्त

दिसम्बर, 1971 में हुए पाकिस्तान के साथ संघर्ष के दौरान स्क्वाड्रन लीडर गोपाल कृष्ण अरोड़ा, दुश्मन के हवाई जहाजों को मार गिराने की कार्यवाही का नियंत्रण करने के लिए, जमीन से हवा में मार करने वाले गाइडेड वेपन्स स्क्वाड्रन के साथ थे। इन्होंने एक दिन में ही गाइडेड वेपन्स कमान पोस्ट कायम कर ली और इसका स्थानीय हवाई रक्षा व्यवस्था के साथ तालमेल बैठा लिया। ये अपनी चौकी पर हर समय मौजूद रहे और हमारी हवाई सीमा का अतिक्रमण करने वाले दुश्मन के विमानों को मार गिराने में स्क्वाड्रन का कुशलतापूर्वक मार्ग दर्शन किया। इनके प्रयत्नों की वजह से ही, हमारे हवाई मैदान पर बमबारी करने वाले दुश्मन के एक बामर-विमान को मार गिराया। ड्यूटी के दौरान, इनका पाव दुश्मन द्वारा हवाई हमले में गिराए हुए एक छिपे हुए विस्फोटक पर पड़ गया, जिसकी वजह से इन्होंने वीरगति पाई।

इस कार्यवाही में स्क्वाड्रन लीडर गोपाल कृष्ण अरोड़ा ने उच्चकोटि के साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विरसा सिंह मल (9602), एरोनोटिकल इंजीनियरिंग (इलैक्ट्रोनिक्स)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 दिसम्बर 1971)

दिसम्बर 1971 में हुए पाकिस्तान के संघर्ष के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विरसा सिंह मल, हमारे अग्रिम हवाई मैदानों में से एक पर लड़ाकू बामर स्क्वाड्रन के साथ तकनीकी अफसर के रूप पर तैनात थे। इन्होंने संक्रियात्मक जरूरतों के लिए हवाई जहाजों की सेवा योग्यता अधिक से अधिक बढ़ाने और उनके जल्द से जल्द फिर उड़कर जाने का बन्दोबस्त किया।

9 और 10 दिसम्बर की रात को दुश्मन के विमानों ने हवाई मैदान पर एक के बाद एक, जल्द-जल्द तीन हमले किए और विसर्जन क्षेत्र में बम गिराए। इससे बंकर में रखी हुई हथियारों की पेटियों में आग लग गई, जिससे सारे विसर्जन क्षेत्र में रौशनी फैल गई। भौंप, दूसरे हवाई हमले की चेतावनी दे रहा था, फिर भी इन्होंने मुट्ठी भर वायु सैनिकों की सहायता से जलती हुई पेटियों को बंकर से निकाला और आग को मिट्टी फेंक कर बुझाया। इस प्रकार इन्होंने हथियारों को बरबाद होने से बचा लिया।

इस पूरी कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विरसा सिंह मल ने उच्चकोटि के साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5. सैकिण्ड लेफ्टिनेन्ट रवीन्द्रनाथन मालेदाथ (एम०एस०-23795),
कोर आफ इंजीनियर्स।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसम्बर 1971)

सेकिण्ड लेफ्टिनेन्ट रवीन्द्रनाथन मालेदाथ को यह आदेश दिया गया था कि वे पठानकोट हवाई मैदान के दौड़ पथ और इसके आस पास के क्षेत्र में से बिन फटे बमों को हटा दें ताकि हवाई अड्डे का सक्रियात्मक (आपरेशनल) उपयोग बना रहे। इन्होंने इस खतरनाक कार्य को प्रसंशनीय तरीके से किया। इन्होंने स्वयं अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना, अनेक बिन फटे बमो के फ्यूज निकाल लिए।

इस पूरी कार्यवाही मे, सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट रवीन्द्रनाथन मालेदाथ ने प्रशसनीय साहस, दृढ निश्चय और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

6. जे०सी० 33586 सूबेदार सेवा सिंह,
कोर आफ इंजीनियर्स।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसम्बर, 1971)

सूबेदार सेवा सिंह को फिरोजपुर के पास जीरा गाव में फूड कारपोरेशन आफ इंडिया के अहाते में से दुश्मन द्वारा डाले पांच बिन फटे बमों को ठिकाने लगाने का कार्य सौंपा गया था। इन बमों का फ्यूज और इसके कल पुर्जे नई तरह के थे और इनको बेअसर करने के तरीके के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। इसके अतिरिक्त इनके पास न तो कोई खास तरह के बमों को ठिकाने लगाने के उपस्कर थे और न ही फ्यूजों को रक्षित करने का कोई सामान था। फिर भी सूबेदार सेवा सिंह निर्भीकता से अपनी सुरक्षा और जान को जोखिम में डालकर अपने हाथों से फ्यूज निकालने का निश्चय कर लिया। इसके बाद उन्होंने अपने हाथों से बिन फटे बमों के फ्यूज निकाल दिए।

इस पूरी कार्यवाही में सूबेदार सेवा सिंह ने प्रशंसनीय साहस, दृढ निश्चय और सैनिक चातुर्य का परिचय दिया।

7. बिप्र चरन महापात्र, एन०एम०,
मास्टर चीफ पेटी अफसर, द्वितीय श्रेणी,
सं० 60128, भारतीय नौसेना।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर, 1971)

मास्टर चीफ पेटी अफसर बिप्र चरन महापात्र के पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं के दौरान विशाखापत्तनम् में कमाड क्लियरेंस डाइविंग टीम के एक सदस्य थे।

भारतीय नौसेना की कार्यवाही के कारण जब पाकिस्तानी पनडुब्बी गाज़ी विशाखापत्तनम् के पास डूब गई तो 5 दिसम्बर 1971 को कमाड डाइविंग टीम से इसका पता और निशान लगाने के लिए कहा गया। हालांकि डूबी हुई पनडुब्बी में विस्फोट हो सकता था, फिर भी मास्टर चीफ पेटी अफसर बिप्र चरन महापात्र लगातार गोताखोरी की कार्यवाही करते रहे जिससे न सिर्फ पनडुब्बी को पहचान लिया गया बल्कि महत्वपूर्ण सांग्रामिक सूचना भी मिली।

पूरी संक्रिया के दौरान मास्टर चीफ पेटी अफसर बिप्र चरन महापात्र ने उच्चकोटि के वीरता का परिचय दिया।

8. मंगल भाई पटेल,
लीडिंग इंजीनियर मैकेनिक,
सं० 87199, भारतीय नौसेना।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान लीडिंग इंजीनियरिंग मैकेनिक मगल भाई पटेल भारतीय नौसेना के पोत के कर्मीदल के एक सदस्य थे।

4 दिसम्बर 1971 को जब इनका पोत अरब सागर आक्रामक संक्रिया में लगा हुआ था तो बाइलर रूम में बहुत ज्यादा गर्म स्टीम से पाइप फट गया जिससे बाइलर रूम में 398.5 डिगरी सैन्टीग्रेड गर्म भाप भर गई। बाइलर रूम को खाली करना था और चूंकि मशीनरी बन्द नहीं की जा सकती थी इसलिए मशीनरी को बड़ा खतरा था। अपनी निजी सुरक्षा की तनिक परवाह न करते हुए मंगल भाई पटेल ने दौड़ कर सभी इमरजैन्सी कन्ट्रोल वाल्व बन्द कर दिए। उनका पूरा बदन पूरी तरह झुलस गया मगर उन्होंने जहाज की मशीनरी को बचा लिया।

इस कार्यवाही में, लीडिंग इंजीनियरिंग मैकेनिक मंगल भाई पटेल ने सराहनीय साहस का परिचय दिया।

9. आयीरूकुजिल जोसफ बेबी,
लीडिंग मेडिकल असिस्टेन्ट,
सं० 80298, भारतीय नौसेना।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर, 1971)

आयीरूकुजिल जोसफ बेबी, लीडिंग मेडिकल असिस्टेन्ट उस भारतीय नौसेना के जहाज पर थे जो जल-थलीय सेना का भाग था। यह सेना बंगलादेश में पाकिस्तानी सेनाओं के विरुद्ध सक्रियाओं के दौरान काक्स बाजार के क्षेत्र में आर्मी यूनिटों को उतारने के काम पर लगी हुई थी।

15 दिसम्बर 1971 को जब आर्मी यूनिटो का पहला दल तट पर जाने के लिए पानी में कूदा तो कुछ जवान धारा के बहाव में ऐसे क्षेत्र में बह कर चले गए जहां पानी गहरा था और उनके डूबने का खतरा था। आयीरूकुजिल जोसफ बेबी, लीडिंग मेडिकल असिस्टेन्ट ऐसे क्षेत्र में अपने जहाज से कूद पड़े जहा पानी का उछाल बहुत ज्यादा था और ऊंची-ऊंची लहर उठ रहीं थी।

अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना इन्होंने एक जवान को डूबने से बचाया और उसे अपने जहाज पर वापिस लाए। इन्होंने तुरन्त ही कृत्रिम श्वास के तरीके से उस जवान की जान बचा ली।

इस कार्यवाही मे आयीरूकुजिल जोसफ बेबी, लीडिंग मेडिकल असिस्टेन्ट ने सराहनीय साहस का परिचय दिया।

10. 291190 लीडिंग एयरक्राफ्टसमैन ओंकार सिंह,
फिटर मैकेनिक एयरफ्रेम।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 दिसम्बर, 1971)

8/9 दिसम्बर, 1971 की रात मे हमारे एक अग्रवर्ती हवाई मैदान पर दुश्मन के वायुयानो ने बहुत ज्यादा बम और गोलिया

बरसाई। इसमें राकेटों के ढेर में आग लग गई। आग बहुत तेजी से फैलने लगी और सारा विसर्जन क्षेत्र चमक उठा। भवन और अहाते भी साफ दिखाई देने लगे और उन पर दुश्मन के हवाई हमलों का खतरा पैदा हो गया। इसी बीच, हवाई हमले की सूचना देने वाला साइरन् दुबारा बज उठा। खतरे की परवाह किए बिना तुरन्त लीडिंग एयर क्राफ्टसमैन ओंकार सिंह खुद आग बुझाने के लिए आगे आए। इन्होंने इस काम को सफलतापूर्वक किया और गोला बारूद का ढेर और विसर्जन क्षेत्र दुश्मन के दूसरे हवाई हमले से बच गए।

इस कार्यवाही में, लीडिंग एयर क्राफ्टसमैन ओंकार सिंह ने सराहनीय साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

11. नारायण अत्ती मराद,
रेक्टिंग लीडिंग इंजीनियरिंग मैकेनिक,
सं० 56163 भारतीय नौसेना।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

नारायण अत्ती मराद, लीडिंग इंजीनियरिंग मैकेनिक पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध के दौरान भारतीय नौसेना जहाज के कर्मीदल के सदस्य थे।

4 दिसम्बर, 71 को जब उनका जहाज अरब सागर मे आक्रामक कार्यवाही में लगा हुआ था तो बायलर रूम में बहुत अधिक गर्म स्टीम से पाइप फट गया और बायलर रूप में 398 5 डिग्री सेन्टीग्रेट गर्म भाप भर गई। बायलर रूम को खाली करना था और मशीनों को गम्भीर खतरा पैदा हो गया क्योंकि इन्हें बन्द नहीं किया जा सकता था। अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना नारायण अत्ती मराद बायलर रूम में घुस गए और आइल स्प्रेयर और फरनैस पम्प को बन्द कर दिया और इस तरह जहाज की मशीन को गम्भीर खतरे से बचा लिया।

इस कार्यवाही मे नारायण अत्ती मराद, लीडिंग इंजीनियरिंग मैकेनिक ने सराहनीय साहस का परिचय दिया।

12. 246295 कारपोरल सरमुख सिंह,
इंस्ट्रूमेन्ट रिपेयरर-1।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 दिसम्बर, 1971)

8/9 दिसम्बर 1971 की रात को हमारे एक अग्रवर्ती हवाई मैदान पर दुश्मन के वायुयानों ने बहुत ज्यादा बम और गोलिया बरसाई जिसकी वजह से विस्फोटक भण्डार में आग लग गई। आग बहुत तेजी से फैलने लगी और सारा विसर्जन क्षेत्र चमक उठा। भवन और अहाते भी साफ दिखाई देने लगे और उन पर दुश्मन के हवाई हमलों का खतरा पैदा हो गया। इसी बीच, हवाई हमले की सूचना देने वाला भोंपू दुबारा बज उठा। खतरे की परवाह किए बिना कारपोरल सरमुख सिंह खुद आग बुझाने के लिए तुरन्त आगे आए। इन्होंने इस काम को सफलतापूर्वक किया और गोलाबारूद का ढेर और विसर्जन क्षेत्र दुश्मन के दूसरे हवाई हमले से बच गए।

इस कार्यवाही में कारपोरल सरमुख सिंह ने सराहनीय साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

13. 5235359 लांस नायक भीम बहादुर थापा,
गोरखा राइफल्स।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर)

15 दिसम्बर 1971 को लांस नायक भीम बहादुर थापा गोरखा राइफल की बटालियन की एक कम्पनी के स्थानापन्न सैक्शन कमांडर थे। इस कम्पनी को पूर्वी सैक्टर में अवतरण जलयान द्वारा उतर कर "यूखिया" तट पर प्रहार करने का काम सौंपा गया था। यह सैक्शन लगभग 4 फीट गहरे पानी में उठती हुई लहरों के बीच उतरा। जैसे ही सैक्शन तट की ओर बढ़ा, इसके जवान ज्यादा गहरे पानी में चले गए। इस नाजुक समय में लांस नायक भीम बहादुर थापा अपनी निजी सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना गहरे पानी में कूद गए और अपने तीन जवानों को डूबने से बचा लिया।

इस कार्यवाही में लांस नायक भीम बहादुर थापा ने उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया।

14. जी०/54982 ड्राइवर मैकेनिकल इक्विपमेंट,
सेवा सिंह,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—24 दिसम्बर 1971)

24 दिसम्बर, 1971 को जनरल रिजर्व फोर्स की रोड मैन्टीनैन्स यूनिट के मैकेनिकल इक्विपमेंट के ड्राइवर सेवा सिंह को सड़क पर भारी जमी हुई बर्फ को साफ करने का काम सौंपा गया था। बर्फ से "जोजिला" के आगे सड़क बन्द हो गई थी, जिसकी वजह से युद्ध में घायल हुए सैनिकों को कारगिल सैक्टर से श्रीनगर ले जाने वाली गाड़ियों का काफिला रुक गया था। अपनी जान और आराम की तनिक परवाह किए बिना इन्होंने 27 किलोमीटर लम्बी सड़क पर जमी हुई बर्फ को साफ करने के लिए शून्य से भी कम तापमान में दिन-रात अपनी मशीन को चलाया।

इस पूरी कार्यवाही में श्री सेवा सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

15. 6582936 सिविल ड्राइवर कश्मन,
आर्मी सर्विस कोर।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 दिसम्बर, 1971)

14 दिसम्बर, 1971 को आर्मी सर्विस कोर के सिविल ड्राइवर कश्मन जब राजस्थान सैक्टर की आर्टिलरी गन पोजीशनों के लिए अपनी गाड़ी में गोलाबारूद ले जा रहे थे, तो दुश्मन के हवाई जहाजों ने उनकी गाड़ी पर हमला किया। यद्यपि वह जख्मी हो गए थे फिर भी अपनी गाड़ी को बराबर चलाते रहे और अन्त में गोला-बारूद को लक्ष्य तक पहुंचा दिया।

इस कार्यवाही में सिविल ड्राइवर कश्मन ने प्रशंसनीय साहस, सूझ-बूझ और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

16. जी०/9898 पायनियर महावीर यादव,
पायनियर कम्पनी (जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स)
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 दिसम्बर, 1971)

पायनियर महाबीर यादव चालीस पायनियरों या उस दल में से एक थे जिसे 14 दिसम्बर, 1971 को राजस्थान क्षेत्र में हथियाए गए प्रदेश में खोकरापार रेल स्टेशन पर वैगनों से लकड़ी के तख्ते और गोला-बारूद उतारने के लिए तैनात किया गया था। शाम को करीब 5 बजकर चालीस मिनट पर दुश्मन के चार बमवर्षक विमान इस इलाके पर उड़कर आए और रेल वैगनों पर बम बरसाना शुरू कर दिया। सभी पायनियर आड़ में छिप गए परन्तु पायनियर महाबीर यादव उस वक्त तक गोला बारूद उतारते रहे जब तक कि एक बम ने गिर कर उनकी जान न ले ली।

इस कार्यवाही में पायनियर महाबीर यादव ने सराहनीय साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

17. जी०/140069 पायनियर राजमल,
जनरल रिज़र्व इंजीनियर फोर्स।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 दिसम्बर, 1971)

11 दिसम्बर, 1971 को जनरल रिज़र्व इंजीनियर फोर्स की एक पायनियर कम्पनी के पायनियर राजमल जब जम्मू हवाई अड्डे पर इंजन आर्टिफिसर किरपा राम के साथ मिलकर जमीन की सतह से 20 फीट की ऊंचाई पर एक भारी बोझ ट्रिस्टो पर जमाने के लिए ऊपर उठा रहे थे तो दुश्मन के चार हवाई जहाजों ने हवाई अड्डे पर हमला कर दिया। हालांकि उनके अधिकतर साथियों ने आड़ में शरण ली, मगर यह जानकर कि यदि यह बोझ यकायक गिरा दिया गया तो मशीन को भारी नुकसान पहुंचेगा और निर्धारित काम पूरा नहीं होगा सकेगा, वे अपनी जगह पर ही डटे रहे। वे और इंजन आर्टिफिसर किरपा राम इक्विपमेन्ट को धीरे-धीरे नीचे लाए और उसे सुरक्षित स्थान पर पहुंचा कर बचा लिया। इन्होने खुद अपने लिए खतरा मोल लिया। हालांकि बम फटने से वे घायल हो गए थे फिर भी शान्त रहे और विचलित नहीं हुए। इस तरह इन्होंने अपने साथियों को प्रोत्साहित किया और उनमें साहस और विश्वास भर दिया।

इस कार्यवाही में पायनियर राज मल ने सराहनीय साहस, दृढ़ निश्चय और उच्चकोटि के कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

18. जी०/104506 अधीक्षक, प्रथम श्रेणी,
श्री हरबंस सिंह,
जनरल रिज़र्व इंजीनियरिंग फोर्स।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-24 दिसम्बर, 1971)

24 दिसम्बर 1971 को जनरल रिज़र्व इंजीनियर फोर्स की रोड मेंन्टिनेंस यूनिट की प्रथम श्रेणी के अधीक्षक श्री हरबंस सिंह को, सड़क पर भारी जमी हुई बर्फ को साफ करने का काम सौंपा गया था। बर्फ से "जोजिला" में आगे सड़क बन्द हो गयी थी जिसकी वजह से युद्ध में घायल हुए सैनिकों को कारगिल सैक्टर से श्रीनगर ले जाने वाली गाड़ियों का काफिला रुक गया था। जो थोड़े से मैकेनिक इन्हें उस समय मिल सके उन्हीं को लेकर ये काम पर जुट गए। अपनी जान और आराम की तनिक परवाह किए बिना ये लगातार काम की देखरेख और संचालन करते रहे ताकि इनके मुश्किल क्षेत्र में दिन-रात काम होता रहे। इनके नेतृत्व, साहस और लगन से प्रेरित होकर इनके सैनिकों ने शून्य से भी कम तापमान में दिन-रात काम करके 26 दिसम्बर 1971 तक सड़क साफ कर दी। हालांकि इन्हें पता था मार गया था फिर भी वे यहां से उस समय तक हटाए जाने का राजी नहीं हुए जब तक हताहतों को ले जाने वाला काफिला आगे नहीं निकल गया।

इस पूरी कार्यवाही में श्री हरबंस सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय और उच्चकोटि के नेतृत्व का परिचय दिया।

19. जी०/1131 इंजन आर्टिफिसर किरपा राम
जनरल रिज़र्व इंजीनियर फोर्स।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 दिसम्बर, 1971)

जनरल रिज़र्व इंजीनियर फोर्स की एक सरफेसिंग कम्पनी के इंजन आर्टिफिसर किरपा राम जम्मू हवाई अड्डे पर हवाई पट्टी के एक हिस्से पर प्रीमिक्स कार्पेट बिठाने का काम कर रहे थे। वे जब पायनियर राज मल के साथ मिल कर, जमीन की सतह से 20 फीट की ऊंचाई पर ट्रिस्टो पर जमाने के लिए एक भारी बोझा ऊपर उठा रहे थे तो दुश्मन के चार हवाई जहाजों ने ट्रिस्टो मशीन पर हमला कर दिया। हालांकि उनके अधिकतर साथियों ने आड़ में शरण ली, मगर यह जानकर कि अगर यह बोझ यकायक गिरा दिया गया तो मशीन को जबर्दस्त नुकसान पहुंचेगा और निर्धारित काम पूरा नहीं हो सकेगा, वे अपनी जगह पर ही डटे रहे। ये और पायनियर राज मल इक्विपमेंट को धीरे-धीरे नीचे लाए और उसे सुरक्षित जगह पहुंचा कर बचा लिया। हालांकि ये बम फटने से घायल हो गये थे फिर भी शान्त रहे और विचलित नहीं हुए। इस तरह इन्होंने अपने साथियों को प्रोत्साहित किया और उनमें साहस और विश्वास भर दिया।

इस कार्यवाही में इंजन आर्टिफिसर किरपा राम ने साहस, दृढ़ निश्चय और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

20. श्री अपार सिंह चीमा,
सहायक स्टेशन-मास्टर,
गुरदासपुर रेलवे स्टेशन।

दिसम्बर, 1971 में भारत-पाक संघर्ष के दौरान श्री अपार सिंह चीमा गुरदासपुर रेलवे स्टेशन पर सहायक स्टेशन मास्टर थे। अपने क्षेत्र में दुश्मन के हवाई जहाजों की नीची उड़ानों के बारे में सूचनाएं इकट्ठी करने के काम में तालमेल की जिम्मेदारी इन पर थी। इनके कुशल निदेशन में 3 दिसम्बर से 17 दिसम्बर 1971 के बीच 110 प्रेक्षण-सूचनाएं भेजी गईं। इनमें से 90 प्रतिशत सूचनाएं नियंत्रण केन्द्र को तीस सैकिण्ड के भीतर भेज दी गईं। इनमें से इक्कीस सूचनाएं रात के समय आई थी और इन इक्कीस सूचनाओं में से बारह के अनुसार पठानकोट पर हवाई हमला हुआ। इनकी सतर्कता और कर्त्तव्यपरायणता के कारण पठानकोट को दुश्मन के हवाई हमलों की समय पर चेतावनी मिल सकी।

12 दिसम्बर, 1971 को गुरदासपुर रेलवे स्टेशन पर दुश्मन के पाक सेबरजेटों ने भारी बमबारी की। बमबारी के बावजूद

श्री अपार सिंह चीमा अपनी जगह पर जमे रहे और नियंत्रण-केन्द्र को लगातार सूचना भेजते रहे।

13 दिसम्बर 1971 को दिन के दो बजे कर दस मिनट पर इन्होंने नियन्त्रण-केन्द्र को सूचना भेजी कि इधर से दुश्मन के चार हवाई जहाजों को गुजरते देखा गया है। तुरन्त ही उन्हें रोकने के लिए दो हवाई जहाजों को भेजा गया और इस तरह गुरदासपुर पर दुश्मन के लगातार हवाई हमलों को रोका जा सका।

इस संपूर्ण कार्यवाही में, श्री अपार सिंह चीमा ने उच्च-कोटि के साहस व कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

21. श्री राम प्रकाश,
सहायक स्टेशन मास्टर,
उत्तरी रेलवे।

22. श्री बलवन्त सिंह,
इंजन ड्राइवर,
उत्तरी रेलवे।

23. श्री बलबीर सिंह,
लीडिंग फायरमैन,
उत्तरी रेलवे।

सर्वश्री राम प्रकाश, बलवत सिंह और बलबीर सिंह, तोपें, गाड़ियां और गोलाबारूद ले जाने वाली विशेष सैनिक रेलगाड़ी में सेवा नियुक्त थे। जब रेल गाड़ी "कोटकपुर" क्षेत्र में सड़क के किनारे पड़ने वाले स्टेशन से आगे बढ़ी रही थी, उस समय अचानक उस डिब्बे में आग लग गई जिसमें, सैनिक सामान और गोलाबारूद से लदी एक गाड़ी थी। रेलगाड़ी को तुरन्त रोक दिया गया। आग की तेजी और गाड़ी में भरे गोलाबारूद के फटने से जो खतरा होता उसकी परवाह किए बिना, सर्वश्री राम प्रकाश, बलवन्त सिंह, और बलबीर सिंह ने मिलकर जलते हुए डिब्बे को बाकी रेलगाड़ी से काट दिया। इसके बाद जलते हुए डिब्बे को ले जाकर इंजन से अलग कर दिया इस प्रकार विशेष सैनिक रेलगाड़ी को नष्ट होने से बचा लिया।

इस कार्यवाही में सर्वश्री राम प्रकार, बलवन्त सिंह और बलबीर सिंह ने उच्चकोटि की सूझ-बूझ, साहस और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

24. श्री चतर सिंह।

"थोक" गांव के सरपंच श्री चतर सिंह ने अपना ऊंट और अपने गांव से 10 ऊंट और लेकर राजस्थान सैक्टर के "छोटन" और "बाड़मेर" इलाके में पूरी संक्रियाओं के दौरान ग्रेनेडियर्स की एक बटालियन के साथ काम किया। उनके दल ने अपनी निजी जान व सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना इस बटालियन का जरूरी सामान दुश्मन के प्रदेश के अन्दर लगभग 70 किलोमीटर दूर तक ढोया। संक्रियाओं के दौरान इनके दल पर दुश्मन के तोपखाने, मार्टरों, और स्वचालित हथि-यारों की भारी गोलाबारी होती रही मगर वे बटालियन के साथ काम करते रहे।

17 दिसम्बर 1971, को, जब बटालियन हैडक्वार्टर पर सबसे भारी गोलाबारी होने लगी और ऊंटों के चारों ओर गोले गिरने लगे तब भी किसी ऊंट या उसके सवार ने अपनी जगह नहीं छोड़ी। यह विशेषकर श्री चतर सिंह के प्रेरणादायक नेतृत्व, कर्त्तव्यपरायणता और सराहनीय साहस के कारण था।

25. श्री चीवंग नामग्याल,
नुब्रा गार्डस।

श्री चीवंग नामग्याल, नुब्रा गार्डस की उस कम्पनी की कमान कर रहे थे जो पाइंट 18402 एरिया "गोल्ड पोस्ट" और "चालंका" गांव पर हमला करने वाली सेना के अन्तर्गत थी। यह स्वयं सेवकों की वह कम्पनी थी जिसे 15 दिन का सैनिक प्रशिक्षण मिला था। श्री चीवंग नामग्याल, महान साहस, दृढ़ संकल्प और प्रेरणादायक नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए अड्डे पर मजबूती से डटे रहे और साथ ही हमला करने वाली सैन्यदलों का बगली बचाव भी करते रहे। इनके योग्य नेतृत्व में इनकी कम्पनी ने बड़ी ऊंचाइयों पर गोलाबारूद ले जाकर सैन्यदलों को महत्वपूर्ण सहायता पहुंचाई और हताहतों को निकाल लाने में भी असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

इन कार्यवाहियों के दौरान श्री चीवंग नामग्याल ने उच्चकोटि के साहस, निश्चय, और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

26. श्री स्टेनजिन तुनदुर,
नुब्रा गार्डस।

नुब्रा गार्डस के श्री स्टेजिन तुनदुर पश्चिमी सैक्टर के "अरानू" गांव में चिकित्सक थे। युद्ध छिड़ते ही ये, अपना पेशा छोड़कर इस सेना में भर्ती हो गए। पूरी संक्रियाओ के दौरान इन्होंने कठिन व नाजुक परिस्थियों में भी "लदाख स्काउट्स" और नुब्रा गार्डस को अथक डाक्टरी सहायता दी। श्री स्टेन-जिन तुनदुर की सेवाएं, कारगिल सेक्टर की संक्रियाओं की सफलता में बहुत अधिक सहायक सिद्ध हुई।

इस पूरी संक्रिया में श्री स्टेनजिन तुनदुर ने उच्चकोटि के साहस, और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

27. श्री मुन्शी राम,
सिविल मजदूर (टी०सं० 207)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर 1971)

श्री मुन्शी राम पश्चिमी मोर्चे पर अखनूर में गोलाबारूद स्थल पर अनियत (कैजुअल) मजदूर थे। 5 दिसम्बर 1971 को इस गोलाबारूद स्थल पर दुश्मन ने भारी बम वर्षा की। उस समय जबकि अन्य मजदूर उस जगह को छोड़ कर चले गए, श्री मुन्शी राम अपने स्थान पर डटे रहे और अपने कर्त्तव्य का पालन करते रहे।

इस कार्यवाही में श्री मुन्शी राम ने उच्चकोटि के साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

सं० 73-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओ में वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1—लेफ्टिनेंट कर्नल प्रकाश चन्द्र साहनी, आई० सी० 6797, बिहार रेजीमेन्ट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

लेफ्टिनेन्ट कर्नल प्रकाश चन्द्र साहनी बिहार रेजीमेन्ट की एक बटालियन की कमान कर रहे थे, जिसे पूर्वी सेक्टर के एक क्षेत्र में दुश्मन की एक मजबूत मोर्चाबंदी को समाप्त करने का काम सौंपा गया था। यह दुश्मन की सुदृढ़ मोर्चा था जिस पर वह भारी तादात में था। लेफ्टिनेन्ट कर्नल प्रकाश चन्द्र साहनी ने बड़ी सैनिक दक्षता के साथ हमले की योजना बनाई और दुश्मन को भारी जानी नुकसान पहुंचाते हुए पोजीशन पर कब्जा करने के लिए अपने जवानों को प्रोत्साहित किया। इस संक्रिया के दौरान दुश्मन के छोटे हथियारों और आर्टिलरी द्वारा गोलाबारी के बावजूद इन्होंने अपनी बटालियन का नेतृत्व साहस और दृढ़ निश्चय से किया।

इस कार्यवाही में, लेफ्टिनेन्ट कर्नल प्रकाश चन्द्र साहनी ने नेतृत्व और उच्चकोटि की सैनिक दक्षता का परिचय दिया।

2. लेफ्टिनेन्ट कर्नल राज कुमार सूरी (आई० सी० 8126), जाट रेजीमेन्ट।

लेफ्टिनेन्ट कर्नल राजकुमार सूरी जाट रेजीमेन्ट की एक बटालियन की कमान कर रहे थे जो फाजिल्का सैक्टर के एक मोर्चे पर तैनात थी। 3 दिसम्बर से 17 दिसम्बर 1971 तक इनकी बटालियन पर दुश्मन ने आर्टीलरी और मार्टरों से भारी गोलाबारी की। 9 दिसम्बर को दुश्मन की गोलाबारी से घायल होने के बावजूद भी वे अपने सैनिकों का निदेशन करते रहे और उन्हें मोर्चे पर जमे रहने को प्रोत्साहित करते रहे। इस प्रकार बटालियन ने दुश्मन के दो जोरदार हमलों को विफल कर दिया।

लेफ्टिनेन्ट कर्नल राज कुमार सूरी ने उच्चकोटि की वीरता, और नेतृत्व का परिचय दिया।

3. मेजर अनन्त नारायण कृष्णास्वामी (आई० सी० 11114) जम्मू एवं काश्मीर राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 दिसम्बर, 1971)

मेजर अनन्त नारायण कृष्णास्वामी जम्मू एवं काश्मीर राइफल्स की एक बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, जिसे पूर्वी क्षेत्र के एक स्थान पर सड़क को बन्द करने का आदेश मिला था। 16 दिसम्बर, 1971 को सड़क पर रुकावट खड़ी कर दिए जाने के बाद टैंकों के साथ दुश्मन के लगभग 500 जवानों का एक दस्ता इस बटालियन की तरफ बढ़ता देखा गया। दुश्मन ने हमारी अग्रिम कम्पनियों पर जिनमे से एक कम्पनी की कमान मेजर कृष्णास्वामी कर रहे थे, गोलाबारी करना शुरू कर दिया। मेजर कृष्णास्वामी ने हर खाई में जाकर अपने जवानों को मोर्चे पर जमे रहने के लिए प्रोत्साहित किया। इसी बीच देखा गया कि दुश्मन हमले के लिए इकट्ठा हो रहा है। मेजर कृष्णास्वामी ने सड़क पर छोड़ी गई गोलाबारूद की दो गाड़ियों को अपने कब्जे में कर लिया और उनमें आग लगा दी। इन्होंने एक मेगाफोन का भी बंदोबस्त किया और दुश्मन को हथियार डालने के लिए कहा। यह बात बार-बार दोहरा कर और जवाबी कार्यवाही की धमकियां देकर इन्होंने ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि दुश्मन ने टोलियों में बट कर हथियार डालने शुरु कर दिए अंत में सभी दुश्मनों ने हथियार डाल दिए।

इस कार्यवाही में मेजर अनन्त नारायण कृष्णास्वामी ने उच्चकोटि की वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

4. मेजर रविंदर दत्त ला (आई० सी० 11655) केवेलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर, 1971)

मेजर रविंदर दत्त ला एक आर्मर्ड स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे, जिसे राजस्थान क्षेत्र के लोंगेवाला स्थान पर दुश्मन की घुस आई सेना को आगे बढ़ने से रोकने का काम सौंपा गया था। इन्होंने दुश्मन को आगे बढ़ने से रोकने के लिए अपने टैंकों का नियोजन बड़े प्रभावीकारी तरीके से किया 6 दिसम्बर से 10 दिसम्बर, 1971 तक की लड़ाई के दौरान मेजर रविंदर दत्त ला ने भारी संख्या में दुश्मन के टैंकों को तबाह किया और अपनी इन्फैन्ट्री को बहुमूल्य सहायता पहुंचाई।

मेजर रविंदर दत्त ला ने आद्योपान्त वीरता, नेतृत्व और उच्चकोटि की सैनिक दक्षता का परिचय दिया।

5. मेजर प्रदीप कुमार शर्मा, (आई० सी० 13172), रेजीमेंट आफ आर्टिलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

मेजर प्रदीप कुमार शर्मा 3/4 दिसम्बर, 1971 की रात को डेरा बाबा नानक पुल पर हमले के दौरान गोरखा राइफल्स की एक तोपखाना बटालियन के कमाडर थे। हमले की योजना में परिवर्तन के कारण तोपखाने की गोलाबारी की योजना को फिर से पूरी तरह बतलाना पड़ा और मेजर प्रदीप कुमार शर्मा ने बहुत ही जल्दी और बारीकी से योजना को तैयार किया। हमले के दौरान इन्होंने देखा कि दुश्मन की एक मीडियम मशीन गन हमारे सैनिकों को भारी जानी नुक्सान पहुंचा रही है। अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए वे दुश्मन के बंकर की तरफ लपके और इन्होंने चालक को मार कर मशीन गन को शान्त कर दिया।

इस कार्यवाही में मेजर प्रदीप कुमार शर्मा ने वीरता, नेतृत्व और उच्चकोटि की सैनिक दक्षता का परिचय दिया।

6. जे० सी० 38368 रिसालदार ब्रह्मानंद केवेलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

5 दिसम्बर, 1971 को केवेलरी के एक स्क्वाड्रन की एक टुकड़ी की कमान करते हुए रिसालदार ब्रह्मानन्द छम्ब सैक्टर में पाकिस्तानी आक्रमण को रोक रहे थे। उनकी टुकड़ी पर दुश्मन की बख्तरबन्द और पैदल सेना ने भारी हमला किया परन्तु वे अपने मोर्चे पर डटे रहे और जब

तक हमारी टुकड़ियां सुरक्षित रूप से फायरिंग के पार न पहुंच गई दुश्मन के उस पर कब्जा करने के सारे प्रयत्नों को विफल करते रहे। इस लड़ाई में उन्होंने दुश्मन के पांच टैंक नष्ट किए।

इस कार्यवाही में रिसालदार ब्रह्मा नन्द ने सराहनीय पहल, साहस और उच्चकोटि के दृढ़ संकल्प का परिचय दिया

7 जे० सी० 28067 सूबेदार हरी सिंह,
महार रेजीमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 दिसम्बर 1971)

महार रेजीमेंट की एक बटालियन को पश्चिमी क्षेत्र में फतेवाला चौकी के गिर्द सुरंग-क्षेत्र बनाने का आदेश दिया गया था। एक गश्ती दल को सुरंग बिछाने वाली इंजीनियरों की पार्टी की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया। जब सुरंग बिछाने का कार्य शुरू हुआ तो दुश्मन ने भारी तोपखाने से गोलाबारी शुरू कर दी जिसकी वजह से एक सिपाही मारा गया और किर्चों की वजह से चार और जवान जख्मी हुए। गश्ती दल घायल जवानों को सुरक्षित स्थानों पर ले आया, परन्तु दुश्मन की मशीन गनों के भारी और कारगर गोलाबारी के कारण मृत सैनिक की लाश को कोशिशों के बावजूद वहां से न लाया जा सका। सूबेदार हरी सिंह को आदेश दिया गया कि वे दूसरे गश्ती दल साथ लेकर मृत शरीर को लाने के लिए जाएं। जब गश्ती दल उस क्षेत्र में पहुंचा तो उस पर दुश्मन ने मशीन गन व तोपखाने से भारी गोलाबारी शुरू कर दी। सूबेदार हरी सिंह ने अपनी पार्टी को तो आड़ लेने को कहा और स्वयं रेंग कर आगे बढ़े और उस लाश को ले आये।

इस कार्यवाही में सूबेदार हरी सिंह ने उच्च कोटि के साहस और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

8. सं० 1027089 दफादार पृथी सिंह,
केवेलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

4/5 दिसम्बर 1971 की रात में दुश्मन हमारे प्रदेश में घुस आया और हल्की मशीन गनों से लैस एक कम्पनी के साथ सियालकोट सैक्टर में नवान पिन्ड सीमा की बाहरी चौकी पर कब्जा कर लिया। 5 दिसम्बर, 1971 को गढ़वाल राइफल की एक बटालियन की दो प्लाटूनों को टैंक सहित इस चौकी पर दुबारा कब्जा करने का आदेश दिया गया। हमले के दौरान, दुश्मन के स्वाचालित हथियारों के भारी और सही गोलाबारी के कारण इन्फेन्ट्री की गति रुक गई। दफादार पृथी सिंह को आदेश दिया गया कि वे अपने टैंक के साथ आगे बढ़ें और दुश्मन का सफाया कर दें। अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना और भारी गोलाबारी और टैंक रोधी फायर के बावजूद वे चतुराई से अपने टैंक को दुश्मन के करीब ले गये और चौकी को तबाह कर दिया जिसकी वजह से इस पर कब्जा किया जा सका।

इस कार्यवाही में दफादार पृथी सिंह ने वीरता, दृढ़ संकल्प और उच्च कोटि की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

9. जे० सी० 41312 सूबेदार लाल बहादुर पुन
गोरखा राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर, 1971)

सूबेदार लाल बहादुर पुन गोरखा राइफल्स की एक बटालियन की एक राइफल कम्पनी के सैकण्ड-इन-कमांड थे। कम्पनी को पूर्वी क्षेत्र में दुश्मन के एक मोर्चे पर कब्जा करने का आदेश दिया गया। लक्ष्य से 75 मीटर की दूरी तक कोई आड़ नहीं थी। सूबेदार लालबहादुर पुन ने बगल की तरफ से बंकर तक जाने के लिए अपने आप को प्रस्तुत किया और धुएं का पर्दा बनाने के लिए वहां धूम्र बत्तियां फेंकी। धूम्र बत्ती फेंकने के पश्चात् हवा दूसरी तरफ चलने लगी। जिसकी वजह से धुएं का असर कम हो गया। धुएं के पर्दे के महत्व को समझते हुए वह रेंग कर एक और अच्छे स्थान पर पहुंचे और दूसरी धूम्र बत्ती फेंकी। इससे जो धुएं का पर्दा बना, जिसके कारण दुश्मन के मोर्चे पर कब्जा करने में मदद मिली।

इस कार्यवाही में सूबेदार लालबहादुर पुन ने सराहनीय साहस और पहल का परिचय दिया।

10. 1311154 नायब सूबेदार दोराय स्वामी,
इन्जीनियर कोर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 दिसम्बर, 1971)

11 दिसम्बर, 1971 की रात को शकरगढ़ सैक्टर के एक क्षेत्र में से हमारे टैंकों का आना जाना इसलिए रुक गया कि सुरंग क्षेत्र के बीच जाने वाले एक नाले में हमारा ट्राल धंस गया था। दुश्मन का जवाबी हमला होने ही वाला था और इसलिए यह जरूरी हो गया कि सुरंग क्षेत्र में से रास्ते को तुरन्त चालू किया जाए। नायब सूबेदार दोराय स्वामी ने तुरन्त इस कार्य को अपने जिम्मे लिया। इनकी पार्टी पर दुश्मन भारी और सही गोलाबारी कर रहा था, परन्तु इसके बावजूद वे हर सैनिक के पास गए और उन्हें हिदायतें दी। अन्त में रास्ता खुल गया और टैंक और दूसरे टैंक रोधी साज सामान आगे तक जा सके।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार दोराय स्वामी ने सराहनीय साहस, पहल और नेतृत्व का परिचय दिया।

11. जे सी 42500 नायब सूबेदार गुरचरण सिंह
सिख रेजीमेंट

नायब सूबेदार गुरचरण सिंह पूर्वी सेक्टर में एक रक्षित क्षेत्र में सिख रेजीमेन्ट की एक बटालियन के प्लाटून कमांडर थे। अंधेरे में मीडियम मशीन गनों से लैस दुश्मन की दो प्लाटूनों ने दो कम्पनियों से रक्षित इलाकों के बीच मोर्चा जमा लिया और उनकी कम्पनी पर भारी और सही गोलाबारी शुरू कर दी। नायब सूबेदार गुरचरण सिंह को इन मोर्चों से दुश्मन को निकाल बाहर करने का आदेश दिया गया। उन्होंने बिजली की सी तेजी से प्लाटून द्वारा हमला किया परन्तु दुश्मन की

चले और भारी गोलाबारी के कारण वे लक्ष्य से कुछ दूर रह गये। दुश्मन के हथियारों को बे-असर करने के लिए बड़े ही कौशल से उन्होंने अपनी हल्की मशीन गन को एक उपयुक्त स्थान पर लगाया। वे रेंग-रेंग कर एक-एक जवान के पास गये और उन्हें प्रेरित करते हुए आगे बढ़ कर प्रहार करने के लिए जोश दिलाया। दुश्मन की गोलाबारी के बावजूद और अपनी जान की तनिक परवाह किये बिना उन्होंने स्वयं हमले का नेतृत्व किया। इस निश्चित हमले से दुश्मन घबरा गया और झटपट पीछे हट गया।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार गुरचरण सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

12. म० 1169089 हवलदार (जी० डी०) थपासी चेटियार रामास्वामी चेटियार,
एयर डिफैन्स रेजीमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

हवलदार (जी० डी०) थपासी चेटियार रामास्वामी चेटियार एयर डिफैन्स बैटरी की एक टुकड़ी की कमान कर रहे थे, जो अमृतसर हवाई अड्डे की रक्षा कर रही थी। 5 दिसम्बर, 1971 को दुश्मन के लड़ाकू विमानों ने अमृतसर हवाई मैदान पर कई बार हमले किए। हवलदार रामास्वामी चेटियार ने अपने तोपखाने से सही गोलाबारी करके दुश्मन का एक स्टार फाइटर गिरा दिया और उसके चालक को भी पकड़वाने में भी वे सहायक हुए।

आद्योपान्त हवलदार (जी० डी०) थपासी चेटियार रामास्वामी चेटियार ने उच्चकोटि के साहस और सैनिक कौशल का परिचय दिया।

13. सं० 3140746 हवलदार हेम चन्दर,
जाट रेजीमेन्ट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

4 दिसम्बर, 1971 को राजस्थान क्षेत्र में जाट रेजीमेंट की एक बटालियन को दुश्मन को उसकी चौकी से मार भगाने का आदेश दिया गया। इस चौकी पर दुश्मन भारी संख्या में था। दुश्मन की हल्की मशीन गन के भारी और सही गोलाबारी के कारण हमारा हमला रुक गया। हवलदार हेम चन्दर अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना रेंग कर आगे बढ़े और एक ग्रेनेड से दुश्मन के हल्के मशीन गन बंकर को नष्ट कर दिया। उनकी इस कार्यवाही की वजह से हमारा हमला सफल हो सका।

इस कार्यवाही में हवलदार हेम चन्दर ने सराहनीय साहस और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

14. 2743482 हवलदार कृष्ण गुराव,
मराठा लाइट इन्फैन्ट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 दिसम्बर, 1971)

हवलदार कृष्ण गुराव मराठा लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन के उस मीडियम मशीनगन सैक्शन के कमांडर थे, जिसने पूर्वी क्षेत्र के एक स्थान पर सड़क पर रुकावट खड़ी की। 10/11 दिसम्बर, 1971 की रात को इस ठिकाने पर दुश्मन ने भारी संख्या में हमला किया। हवलदार कृष्ण गुराव ने दुश्मन पर भारी और सही गोलाबारी करके उसके हमले को छिन्न-भिन्न कर दिया। बाद में दुश्मन ने पुनर्गठित होकर उस तरफ से फिर हमला किया, जहां हमारी मीडियम गन फायर की जद नहीं थी। हवलदार कृष्ण गुराव ने अपनी जान की परवाह न करते हुए खुले में अपनी मशीनगन फिर से लगाई और दुश्मन के दूसरे धावे को भी छिन्न-भिन्न कर दिया। इस कार्यवाही में दुश्मन के 77 सिपाही मारे गए।

इस पूरी कार्यवाही के दौरान हवलदार कृष्ण गुराव ने उच्चकोटि की वीरता, पहलशक्ति और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

15. 5431807 हवलदार दलबहादुर गुरंग,
गोरखा राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर, 1971)

हवलदार दलबहादुर गुरंग गोरखा राइफल्स की एक बटालियन की उस प्लाटून के प्लाटून हवलदार थे, जिसे दुश्मन के 3 इंची मार्टरों और एक टैकरोधी गन पर कब्जा करने का आदेश मिला। हवलदार दलबहादुर गुरंग को उनके सैक्शन के साथ टैकरोधी गन और बाकी प्लाटून को 3 इंची मार्टरों पर कब्जा करने का काम सौंपा गया। दुश्मन के भारी गोलाबारी के बावजूद इन्होंने अपने सैक्शन का नेतृत्व किया और इन्होंने न केवल टैकरोधी गन पर भी कब्जा किया, बल्कि रेंगते हुए आगे बढ़कर दुश्मन को मारकर एक हल्की मशीनगन को भी शान्त कर दिया।

इस कार्यवाही में हवलदार दलबहादुर गुरंग ने उच्चकोटि की वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

16. 2440669 हवलदार लेख राज,
पंजाब रेजीमेंट।

पंजाब रेजीमेंट के हवलदार लेख राज पूर्वी क्षेत्र में जब एक रिकायललेस गन टुकड़ी की कमान कर रहे थे, तब दुश्मन ने भारी संख्या में, टैंकों की स्वचालन की मदद से, उनकी बटालियन पर हमला कर दिया। सुबह की धुंध की आड़ में दुश्मन के टैंक गोले बरसाते हुए अग्रिम रक्षित इलाकों में 20 गज की दूरी तक आ गए। सेना को जो खतरा पैदा हो गया उसे देखकर हवलदार लेख राज ने बगल की तरफ से दुश्मन के टैंकों पर हमला करने के लिए अपनी रिकायललेस गन से काम लिया। दुश्मन के मशीनगन की भारी गोलाबारी के बावजूद उन्होंने पहले ही गोले से दुश्मन के टैंक को निशाना बनाया और नष्ट कर दिया। जब वे दूसरे टैंक को निशाना बनाने वाले थे तो दुश्मन के एक टैंक से मीडियम मशीनगन की गोलियां उन्हें लगीं और वे गंभीर रूप से घायल हो गये।

इस कार्यवाही में हवलदार लेख राज ने संयमित साहस, सराहनीय, पहल और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

17. 3140688 हवलदार रघवीर सिंह,
पैराशट रेजीमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसम्बर, 1971)

16 दिसम्बर, 1971 को हवलदार रघवीर सिंह फिरोजपुर सैक्टर के एक क्षेत्र में दुश्मन की चौकी के पीछे संक्रिया कर रही एक प्लाटून के साथ थे । आधी रात के समय दुश्मन ने अपनी इस चौकी को सुदृढ़ करने के लिए एक प्लाटून और दो मीडियम मशीनगनें और भेज दी, जिस पर हमारी टुकड़ियां हमला कर रही थी । दुश्मन की प्लाटून ने हवलदार रघवीर सिंह के सैक्शन की स्थिति पर मशीनगनों की सहायता से हमला किया जो बहुत नजदीक से गोलाबारी कर रही थी । अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना इन्होंने मीडियम मशीनगन पर धावा बोला । उसके कार्मिक को संगीन से मार दिया, एक मशीन गन पर कब्जा किया और दुश्मन के एक सैनिक को कैदी बना कर ले आए । यह देखकर दूसरी मशीनगन टुकड़ी घबरा कर भाग खड़ी हुई ।

इस कार्यवाही में हवलदार रघवीर सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

18. 9205717 हवलदार खजान सिंह संगवान,
गार्ड्स ब्रिगेड ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर, 1971)

हवलदार खजान सिंह संगवान गार्ड्स ब्रिगेड की एक बटालियन की एक कम्पनी के सैक्शन की कमान कर रहे थे, जो छम्ब सैक्टर में फागला रिज पर तैनात सिख रेजीमेंट की एक बटालियन की मदद के लिए तैनात था । 6 दिसम्बर, 1971 को दुश्मन ने बख्तर सेना से इस स्थान पर जबर्दस्त हमला किया । उन्होंने दुश्मन की बख्तर सेना पर कमान्डो छापे किये और 600 मीटर की दूरी से टैंकरोधी मिसाइल से दुश्मन के दो टैंकों को नष्ट कर दिया । उनकी निर्भीक और साहसिक कार्यवाही दुश्मन के हमले को विफल बनाने में सहायक सिद्ध हुई ।

इस कार्यवाही में हवलदार खजान सिंह संगवान ने उच्चकोटि के साहस और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया ।

19. 4141549 लांस हवलदार किशन सिंह,
कुमायू रेजीमेंट ।

लांस हवलदार किशन सिंह पूर्वी क्षेत्र में दुश्मन के एक बहुत मजबूत किलाबन्द इलाके पर हमले के दौरान कुमायू रेजीमेन्ट की एक बटालियन की एक कम्पनी के साथ थे । प्रहार के दौरान दुश्मन की एक भारी मशीन गन ने उनकी कम्पनी पर सही और प्रभावी गोलाबारी शुरू कर दी । लांस हवलदार किशन सिंह तुरन्त मशीन गन बंकर की तरफ अकेले आगे बढ़े और बंकर में एक ग्रेनेड फका । गन को शान्त करने के बाद वे फिर अकेले आगे बढ़े और उन्होंने दुश्मन के सैनिक को मार कर मशीन गन छीन ली ।

उनका संयमित साहस, पहल और जान की तनिक परवाह न करने के कारण ही लक्ष्य पर कब्जा हो सका ।

20. 5833405 लांस हवलदार जोगिन्दर सिंह सेन,
गोरखा राइफल्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर, 1971)

लांस हवलदार जोगिन्दर सिंह शकरगढ़ क्षेत्र के एक स्थान में दुश्मन की स्थिति पर हमले के दौरान गोरखा राइफल्स की एक बटालियन की एक कम्पनी के मीडियम मशीनगन सैक्शन कमांडर थे । इनके द्वारा लक्ष्य पर कब्जा कर लेने के बाद दुश्मन ने भारी संख्या में जवाबी हमला किया और वह मीडियम मशीनगन को घेर लेने में सफल हुआ । दुश्मन के तीन सिपाहियों ने मशीनगन चौकी पर हमला किया और मशीनगन छीनने की कोशिश की । लांस हवलदार जोगिन्दर सिंह सेन अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह न करके खाई में से कूद कर बाहर आए और इन्होंने अपनी खुकरी से दुश्मन के तीनो सिपाहियों को मार गिराया । इस कार्यवाही से न केवल मीडियम मशीनगन छिनने से बच गई, बल्कि दुश्मन के जवाबी हमले को भी विफल किया जा सका ।

इस कार्यवाही से लांस हवलदार जोगिन्दर सिंह सेन ने उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया ।

21. 92306050 नायक फतह मोहम्मद,
लद्दाख स्काउट्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 दिसम्बर, 1971)

नायक फतह मोहम्मद पश्चिमी क्षेत्र में दुश्मन की एक स्थिति पर हमले के दौरान लद्दाख स्काउट्स की एक कम्पनी के अग्रिम सैक्शन की कमान कर रहे थे । दुश्मन की दो हल्की मशीनगनों ने एक बंकर से भारी गोलाबारी शुरू कर दी, जिससे इनके सैक्शन का प्रहार रुक गया । नायक फतह मोहम्मद ने जवाबी गोलाबारी के लिए तुरन्त ही अपने सैक्शन को तैनात किया और अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए वे बंकर तक रेंग कर गए और इन्होंने बंकर के भीतर दो हथगोले फैंके । इस तरह इन्होंने गन पर तैनात सभी सिपाहियों को मार कर गनें शान्त कर दीं ।

इस कार्यवाही में नायक फतह मोहम्मद ने उच्चकोटि की वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया ।

22. 2552653 नायक जजुला संयासी
मद्रास रेजीमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 दिसम्बर, 1971)

नायक जजुला संयासी शकरगढ़ क्षेत्र में मद्रास रेजीमेंट की एक बटालियन की रिकायललैस गन टुकड़ी के कमांडर थे । 17 दिसम्बर, 1971 को दुश्मन के दो बंकरों से मीडियम मशीनगन की गोलाबारी के कारण हमारे सैनिकों का आगे बढ़ना रुक गया । नायक जजुला संयासी अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए अपनी गन को बाजू की तरफ निकाल ले गए और इन्होंने दोनों मीडियम मशीनगन बंकरों को नष्ट कर दिया ।

इस कार्यवाही में नायक जजुला संयासी ने उच्चकोटि की वीरता, पहल शक्ति और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

23. 2651351 लांस नायक रघुनाथ सिंह,
ग्रेनेडियर्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

लांस नायक रघुनाथ सिंह 5 दिसम्बर, 1971 की रात को राजस्थान क्षेत्र में दुश्मन की पोजीशन पर हमले के दौरान ग्रेनेडियर्स, बटालियन की एक कम्पनी की मीडियम मशीनगन टुकड़ी में थे। दुश्मन की भारी गोलाबारी और मशीनगन के फायर के बावजूद इन्होंने बहुत ही साहसिक प्रभावी ढंग से हमले में योग दिया। आग की तरह जलती हुई बैरल को उठाते हुए इनके हाथ जल गए, लेकिन इसके बावजूद भी वे भारी मात्रा में लगातार गोलाबारी करते रहे, जिसके कारण हमले के सफल होने में काफी मदद मिली।

इस कार्यवाही में लांस नायक रघुनाथ सिंह ने उच्च-कोटि की वीरता, पहल शक्ति और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

24. 2660579 ग्रेनेडियर मंगल सिंह
ग्रेनेडियर्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर, 1971)

ग्रेनेडियर मंगल सिंह राजस्थान क्षेत्र में दुश्मन की एक पोजीशन पर हमले के दौरान प्रहार सैन्य दलों में थे। दुश्मन की मशीनगनों की भारी और सही गोलाबारी के कारण हमला रुक गया। ग्रेनेडियर मंगल सिंह अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए अपनी हल्की मशीनगन लेकर अग्रिम पोजीशन पर आ गए और ऐसा करते समय वे गंभीर रूप से घायल हो गए। इसके बावजूद वे रैंग कर आगे बढ़ते गए और अपनी मशीनगन से दुश्मन पर तब तक गोलीबारी करते रहे, जब तक वे घावों की वजह से बेहोश न हो गए।

इस कार्यवाही में ग्रेनेडियर मंगल सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, पहलशक्ति और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

25. 4443902 सिपाही स्वर्ण सिंह
सिख लाइट इन्फैन्ट्री ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—12 दिसम्बर 1971)

सिपाही स्वर्ण सिंह पश्चिमी क्षेत्र में दुश्मन की एक स्थिति पर हमले के दौरान सिख लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन की एक कम्पनी में थे। बाजू की तरफ स्थित दुश्मन के के एक बंकर से मीडियम मशीनगन की भारी और सही गोलाबारी के कारण कम्पनी का प्रहार रुक गया। सिपाही स्वर्ण सिंह अपनी निजी सुरक्षा की जरा परवाह न करते हुए मशीनगन चौकी तक रैंग कर पहुंचे और इन्होंने एक हथगोला फैंक कर उसे शान्त कर दिया। इसके तुरन्त बाद दुश्मन का एक सिपाही इनकी तरफ झपटा। सिपाही स्वर्ण सिंह ने दुश्मन को अपनी संगीन से मार डाला।

इस कार्यवाही में सिपाही स्वर्ण सिंह ने उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया।

सं० 74-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. कैप्टन कुमार माधव वेलप्पन नायर (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

कैप्टेन कुमार माधव वेलप्पन नायर, उस "टास्क फोर्स" के कमांडर थे, जिसने 8/9 दिसम्बर, 1981 की रात को कराची पर हमला किया था। हालांकि दुश्मन के तुरन्त हवाई हमले का अंदेशा था और दुश्मन ने किनारे पर तोपें लगा रखीं थीं, फिर भी ये अपनी "टास्क फोर्स" को दुश्मन से लड़ने के लिए कराची से कुछ दूर ले गए। यह जानते हुए भी कि, दुश्मन के एक पिकेट-जहाज ने इनके दल का पता लगा लिया है और इसकी सूचना कराची भेज दी है, फिर भी ये अपने जहाज को कार्यवाही के लिए कराची से कुछ दूर समुद्री क्षेत्र में ले गए, और कार्यवाही करके पाकिस्तान की बहुत सी नौसेना यूनिटों को डुबा दिया और नुकसान पहुंचाया।

इस कार्यवाही में कैप्टन कुमार माधव वेलप्पन नायर ने उच्चकोटि की वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

2. कमांडर विनय राय चौधरी (एस०),
भारतीय नौसेना ।

कमांडर विनय राय चौधरी, भारतीय नौसैनिक जहाज विक्रान्त के इंजीनियर अफसर थे। दिसम्बर, 1971 में, पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध के दौरान, इन्हें बंगला देश के समुद्र में गश्त लगाने के लिए कहा गया था। इस कार्य में दुश्मन के जहाजों पर हमला करने और गश्त लगाने के लिए भारतीय नौसैनिक जहाज विक्रान्त से लड़ाकू बमवर्षक और पनडुब्बी विरोधी हवाई जहाजों की संक्रियाओं भी शामिल थीं। कमांडर विनय राय चौधरी ने अपनी लगातार कोशिशों से इन हमलों के लिए हर प्रकार के उपस्करों को सुलभ बनाए रखा। इनकी कोशिश का ही परिणाम था कि इस जहाज पर दुश्मन की पनडुब्बियों का हमला नहीं होने पाया, जबकि दुश्मन के हर बंदरगाह पर भारतीय नौसैनिक हवाई जहाज लगातार हमले करते रहे।

पूरी संक्रियाओं के दौरान कमांडर विनय राय चौधरी ने सराहनीय साहस और सैन्य कौशल का परिचय दिया।

3. कमांडर राय जोसफ मिलेन (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

कमांडर राय जोसेफ मिलेन, उस भारतीय नौसैनिक पन-डुब्बी के कमान अफसर थे जिसने पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में बंगला देश के समुद्र में गश्त की थी यह जानते हुए भी कि इनके जहाज की गश्तों पर दुश्मन अपनी हवाई और सरफेज फोर्स के जरिए लगातार निगरानी कर रहा है तो भी इन्होंने अपनी जोखिम भरी गश्तें जारी रखी। जिसकी वजह से दुश्मन को पानी के भीतर हमारा डर बना रहा। बंगला देश में जिन बंदरगाहों पर दुश्मन का कब्जा था उन तक पहुंचने वाले उन रास्तों की

इन्होंने जाच की, जिनमें नौ-चालन के लिए कुशलता की जरूरत थी। इस प्रकार इन्होंने भारतीय नौसेना के लिए महत्वपूर्ण आसूचना प्राप्त की।

पूरी संक्रियाओं में कमांडर राय जोसेफ मिलेन ने सराहनीय साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

1. लेफ्टिनेन्ट कमांडर (स्पेशल ड्यूटी गोमन) इंदर सिंह, भारतीय नौसेना।

लेफ्टिनेन्ट कमांडर इंदर सिंह, पूर्वी बेड़े के एक नौसैनिक यूनिट के कमान अफसर थे। दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध छिड़ने पर, इनको विशाखापत्तनम् की ओर आने वाले रास्तों पर दुश्मन की पनडुब्बी के हमले के विरुद्ध गश्त लगाने का आदेश दिया गया। 3/4 दिसम्बर 1971 की रात को उन्होंने विशाखापत्तनम् की ओर आने वाले रास्ते में घुसने की कोशिश कर रही एक पाकिस्तानी पनडुब्बी पर हमला कर दिया। इनका हमला कामयाब रहा और पाकिस्तानी पनडुब्बी डुबो दी गयी। बाद में पता चला कि वह पनडुब्बी गाजी थी। बाद की संक्रियाओं में इन्होंने एक पाकिस्तानी जहाज को भी पकड़ा।

पूरी संक्रियाओं में लेफ्टिनेन्ट कमांडर इंदर सिंह ने सराहनीय साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

5. लेफ्टिनेन्ट कमांडर अश्वनी कुमार मेहरा (एक्स), भारतीय नौसेना।

लेफ्टिनेन्ट कमांडर अश्वनी कुमार मेहरा उस भारतीय नौसेना हवाई जहाज के पायलट थे, जिसने दिसम्बर, 1971 के दौरान बंगला देश में दुश्मन के बन्दरगाहों पर लगातार हमले किए। इन्होंने चटगांव, मंगला और खुलना के रक्षित बंदरगाहों पर हमले की नौ उड़ानों में हिस्सा लिया। इनमें से छः सफल उड़ानों का नेतृत्व इस अफसर ने किया। इनके हवाई जहाज पर भारी विमानभेदी तोपों की गोलीबारी के बावजूद वे लक्ष्यों पर उड़ानों का नेतृत्व करते रहे, जिससे बन्दरगाहों में खड़े जहाजों और संस्थापनों को भारी नुकसान पहुंचा। 13 दिसम्बर, 1971 को इन्होंने दुश्मन के एक ऐसे भारी रक्षित जहाज पर हमला कर दिया, जिसमें सेना जा रही थी। इनके हमले के कारण दुश्मन के जहाज में आग लग गई और बाद में वह कर्णफूली नदी में डूब गया।

पूरी संक्रियाओं के दौरान, लेफ्टिनेन्ट कमांडर अश्वनी कुमार मेहरा ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और सैनिक चातुर्य का परिचय दिया।

6. मेघ नाथ संगल, मास्टर चीफ इलेक्ट्रिकल आर्टिफिसर (पावर) सेकण्ड क्लास (नं० 50896), भारतीय नौसेना।

मेघ नाथ संगल, मास्टर चीफ इलेक्ट्रिकल आर्टिफिसर (पावर) सेकण्ड क्लास, उस भारतीय नौसैनिक जहाज के कर्मीदल में शामिल थे जिसने 4--5 दिसम्बर, 1971 की रात को कराची पर हमला किया था। हालांकि दुश्मन के तुरन्त हवाई हमले का अंदेशा था और दुश्मन ने किनारे पर तोपें लगा रखी थी, फिर भी इन्होंने अपने नौसैनिक द्वारा आक्रमण कर दिया। इनकी बहादुरी और प्रेरक नेतृत्व की वजह ही से इनके मातहत नौसैनिकों ने अपनी नौसैनिक यूनिटों का इस लायक बनाया कि वे पाकिस्तान का सरफेसफ्लीट को करारी चोट पहुंचा सकी।

इस कार्यवाही में मेघ नाथ संगल, मास्टर चीफ इलेक्ट्रिकल आर्टिफिसर (पावर) सेकण्ड क्लास ने सराहनीय साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

7. मुधिलिस्सेरी औसेफ थोमाचन, पैटी अफसर (सं० 46337) भारतीय नौसेना।

मुधिलिस्सेरी औसेफ थोमाचन, पैटी अफसर, उस भारतीय नौसैनिक जहाज के कर्मीदल में शामिल थे, जिसने 4-5 दिसम्बर 1971 की रात को कराची पर हमला किया था। हालांकि दुश्मन के तुरन्त हवाई हमले का अंदेशा था और दुश्मन ने किनारे पर तोपें लगा रखी थी, फिर भी मुधिलिस्सेरी औसेफ थोमाचन, पैटी अफसर, ने अत्यन्त साहस के साथ अपने नौसैनिकों द्वारा आक्रमण किया। इनकी बहादुरी और प्रेरक नेतृत्व की वजह ही से इनके मातहत नौसैनिकों ने अपनी नौसैनिक यूनिटों को इस लायक बनाया कि वे पाकिस्तान की सरफेस फ्लीट को करारी चोट पहुंचा सकी।

इस कार्यवाही में, मुधिलिस्सेरी औसेफ थोमाचन, पैटी अफसर ने सराहनीय, साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

8. रविन्द्रनाथ शर्मा, एक्टिंग पैटी अफसर (टेलीग्राफ) (सं० 88301), भारतीय नौसेना।

रविन्द्रनाथ शर्मा, पैटी अफसर (टेलीग्राफिस्ट), उस भारतीय नौसैनिक जहाज के कर्मीदल में शामिल थे, जिसने 4-5 दिसम्बर, 1971 की रात को कराची पर हमला किया था। हालांकि दुश्मन के तुरन्त हवाई हमले का अंदेशा था और दुश्मन ने किनारे पर तोपें लगा रखी थी, फिर भी रविन्द्र नाथ शर्मा ने अत्यन्त साहस के साथ अपने नौसैनिकों द्वारा आक्रमण किया। इनकी बहादुरी और प्रेरक नेतृत्व की वजह ही से इनके मातहत नौसैनिक ने अपनी नौसैनिक यूनिटों को इस लायक बनाया कि वे पाकिस्तान की सरफेस-फ्लीट को करारी चोट पहुंचा सकी।

इस कार्यवाही में रविन्द्रनाथ शर्मा, पैटी अफसर (टेलीग्राफिस्ट) ने, सराहनीय साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

9. कापल्ली साईं राजू, लीडिंग इलैक्ट्रिकल मैकेनिक (पावर), (सं० 89148), भारतीय नौसेना।

कापल्ली साईं राजू, बंगला देश में पाकिस्तानी सेनाओं के विरुद्ध संक्रियाओं में, उस नौसैनिक यूनिट के साथ थे, जिसने खुलना बंदरगाह पर हमला किया था। 10 दिसम्बर, 1971 को खुलना बन्दरगाह पर जब यह दल दुश्मन के हवाई

और किनारे वाली सेनाओं से लोहा ले रही थीं, उस समय कापल्ली साई राजू, लीडिंग इलैक्ट्रिकल मैकेनिक (पावर) उस जहाज में थे जिस पर दुश्मन ने भारी हवाई हमला कर दिया था। एक भिडंत के दौरान, जहाज के कुछ कर्मी खुलना बन्दरगाह पर कब्जा करने के लिए उतरे। यह जानते हुए भी कि इनके दल के कुछ लोग बुरी तरह जख्मी हो गए हैं और यह भी कि उस पर दुश्मन की थलसेना अपनी भारी मशीन गनों से गोलीबारी कर रही है, इन्होंने अपने नौसैनिकों का नेतृत्व करते हुए दुश्मन से आमने-सामने लड़ते रहे, जिसकी वजह से खुलना बन्दरगाह पर हमारा अधिकार हो गया।

इस कार्यवाही में कापल्ली साई राजू, लीडिंग इलैक्ट्रिकल मैकेनिक (पावर) ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़ निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

10. लक्ष्मण कुमार चक्रवर्ती, मेकेनिशियन तृतीय श्रेणी (सं० 48830),
भारतीय नौसेना।

लक्ष्मण कुमार चक्रवर्ती, मेकेनिशियन तृतीय श्रेणी, उस भारतीय नौसैनिक जहाज के कर्मीदल में शामिल थे, जिसने 4/5 दिसम्बर, 1971 की रात में कराची पर हमला किया था। हालांकि दुश्मन के तुरन्त हवाई हमले का अंदेशा था और दुश्मन ने किनारे पर तोपें लगा रखीं थी, फिर भी इन्होंने अत्यन्त साहस के साथ अपने नौसैनिकों द्वारा आक्रमण कर दिया। इनकी बहादुरी और प्रेरक नेतृत्व की वजह ही से इनके मातहत नौसनिकों ने अपनी यूनिटों को इस काबिल बनाया कि वे पाकिस्तान की मरफेम-फ्लीट को करारी चोट पहुंचा सकीं।

इस कार्यवाही में लक्ष्मण कुमार चक्रवर्ती, मैकेनिशियन, तृतीय श्रेणी ने सराहनीय साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

सं० 75-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. ग्रुप कैप्टेन राबर्ट अर्नोल्ड वेयर (3881),
फ्लाइंग (पायलट)।

दिसम्बर, 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान ग्रुप कैप्टेन राबर्ट अर्नोल्ड वेयर पश्चिमी क्षेत्र में एक संक्रियात्मक स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। यह जानते हुए भी कि हवाई जहाज पर छोटे हथियारों तक से फायर किया जा सकता है और जहाज को नुकसान पहुंचने की स्थिति में पैराशूट से नहीं उतारा जा सकता और न ही हवाई जहाज को मजबूरन जमीन पर उतारा जा सकता है, इन्होंने पुंछ क्षेत्र में जमीन की सतह से 30-50 फुट तक की ऊंचाई पर काफी तादाद में संक्रियात्मक उड़ानें कीं। 8 से 11 दिसम्बर 1971 के बीच इन्होंने भारी जमीनी गोलाबारी के बीच में से दुश्मन की बहुत सारी गन पोजीशनों पर बममारी की और उन्हें बरबाद कर दिया इसके अतिरिक्त उन्होंने अपनी सेना की सहायता में भी बहुत सी दूसरी उड़ानें की और इन्होंने दुश्मन की पोजीशनों को भारी नुकसान पहुंचाया। क्षेत्र में घुसपैठियों का पता लगाने के लिए भी इन्होंने टोह उड़ानें कीं।

संक्रियाओं के दौरान ग्रुप कैप्टेन राबर्ट अर्नोल्ड वेयर ने उच्चकोटि की व्यावसायिक दक्षता और नेतृत्व का परिचय दिया।

2. विंग कमांडर केशव चन्द्र अग्रवाल (4434),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 को भारत-पाक युद्ध के दौरान विंग कमांडर केशव चन्द्र अग्रवाल एक संक्रियात्मक लड़ाकू स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। अपनी थल सेनाओं की सहायता में इन्होंने दुश्मन की बख्तरबंद और थल सेना के जमाव क्षेत्रों पर की गई अनेक संक्रियात्मक उड़ानों का नेतृत्व किया। भारी जमीनी गोलीबारी और हवाई विरोध के बावजूद इन्होंने हमले किए और बहुत सी गाड़ियों और पैट्रोल भंडारो को बर्बाद किया। 4 दिसम्बर, 1971 और फिर 8 दिसम्बर, 1971 को इन्होंने चोर-दोरोनारा क्षेत्रों में टोह उड़ाने कीं, और गोलाबारूद से लदी दो रेल गाड़ियों का पता लगा कर उन्हें नष्ट कर दिया। 6 दिसम्बर, 1971 को इन्होंने एक फार्मेशन का नेतृत्व किया और चोर-दोरोनारा-हसीसार क्षेत्र में एक रेलवे इंजिन और गोलाबारूद से लदे पंद्रह डिब्बों को नष्ट किया। फिर 9 दिसम्बर, 1971 को पंद्रह मालगाड़ी के डिब्बे नष्ट किए और मीर-पुरखास के स्थान पर लगभग चालीस डिब्बों को नुकसान पहुंचाया। इस तरह इन्होंने दुश्मन को महत्वपूर्ण रसद से वंचित कर दिया।

इन संक्रियाओं के दौरान विंग कमांडर केशव चन्द्र अग्रवाल ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और उड़ान कौशल का परिचय दिया।

3. विंग कमांडर कृष्ण कुमार बधवार (4669),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष के दौरान विंग कमांडर कृष्ण कुमार बधवार पश्चिमी क्षेत्र में एक बममार स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। 3 दिसम्बर से 14 दिसम्बर, 1971 के दौरान इन्होंने दुश्मन के ऐसे हवाई अड्डों और बंदरगाह संस्थापनों के विरुद्ध अनेक उड़ानें कीं, जो मिसाइल और विमान भेदी गनों से बहुत ज्यादा रक्षित थे। अपनी निजी सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए, बहुत साहस और कौशल से इन्होंने मसरूर और द्रिग रोड़ के हवाई अड्डों और कराची के बंदरगाह संस्थापनों पर हमला किया। इस प्रकार दुश्मन के तेल-भंडारों को कम और कराची की बंदरगाह-सुविधाओं को अपंग करने में इनका हाथ है।

संक्रियाओं के दौरान विंग कमांडर कृष्ण कुमार बधवार ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

4. विंग कमांडर नरेन्द्र चतरथ (3959),
फ्लाइंग (पायलट)

4 दिसम्बर, 1971 को विंग कमांडर नरेन्द्र चतरथ ने ढाका के निकट अच्छी तरह से रक्षित कुर्मीटोला हवाई अड्डे पर किए गए हमले का नेतृत्व किया। लक्ष्य के निकट पहुंचते ही पाकिस्तानी सैबरों ने इनकी फार्मेशनों को आ घेरा। हमलावर सैबरों से निबटने के लिए विमानों ने फार्मेशन से हट कर कार्यवाही शुरू की। विंग कमांडर नरेन्द्र चतरथ ने एक सैबर पर हमला किया और कुछ देर की आकाशीय लड़ाई के बाद सैबर पीछे हट गया और अपने अड्डे को लौटने लगा। मौसम खराब होने और पैट्रोल की कमी के बावजूद उन्होंने दुश्मन के प्रदेश में भीतर तक जाकर उस सैबर का पीछा किया और उसे एक दूसरी आकाशीय लड़ाई में उलझा कर उसे मार गिराया। दुश्मन का जहाज जमीन पर गिर पड़ा और जल कर ध्वस्त हो गया।

इस कार्यवाही में विंग कमांडर नरेन्द्र चतरथ ने उच्चकोटि की वीरता और उड़ान कौशल का परिचय दिया।

5. विंग कमांडर डोनाल्ड मैल्विन कन्क्वेस्ट (4692), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष के दौरान विंग कमांडर डोनाल्ड मैल्विन कन्क्वेस्ट संक्रियात्मक प्रशिक्षण यूनिट की कमान कर रहे थे। 4 दिसम्बर, 1971 को इन्होंने एक फार्मेशन का नेतृत्व किया, जिसने कराची बंदरगाह के भारी तेल संस्थापन पर हमला किया और उसमें आग लगा दी। 5 दिसम्बर को उन्होंने मौरीपुर हवाई अड्डे पर हमला किया और जमीन पर खड़े हवाई जहाजों में से 6 को नष्ट कर दिया और दूसरों को भारी नुकसान पहुंचाया। फिर 6 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने पुनः विंग रोड़ हवाई अड्डे के गोदामों पर हमला किया और उन्हें नष्ट कर दिया। इसके अलावा इन्होंने निकट के से हवाई सहायता और विभंजन मिशनों पर अनेक उड़ानें कीं। लोंगेवाला क्षेत्र में दुश्मन की बख्तरबंद सेना के भारी हमले को बेअसर करने और बहुत सी माल गाड़ियों में आग लगाने का श्रेय इन्हीं को है। एक बार वे दुश्मन की गोलीबारी से घायल हुए। बुरी तरह लहुलुहान होने के बावजूद भी वे अपनी फार्मेशन को सफलता से अड्डे पर लौटा लाए।

सम्पूर्ण संक्रियाओं में विंग कमांडर डोनाल्ड मैल्विन कन्क्वेस्ट ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

6. विंग कमांडर रविन्द्र नाथ डोगरा (4725), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध के दौरान विंग कमांडर रविन्द्र नाथ डोगरा एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। इन्होंने दुश्मन के अति रक्षित प्रदेश के भीतर तक कई उड़ाने की और कई बार वे गोलियों से छिदा विमान वापस लाये। अपनी निडरता और आदर्श से इन्होंने अपनी स्क्वाड्रन के पायलटों में विश्वास जगाया, जिन्होंने अपने आप को कठिन उड़ानों पर जाने के लिए प्रस्तुत किया और सफलतापूर्वक उन्हें पूरा किया।

संक्रियाओं के दौरान विंग कमांडर रविन्द्र नाथ डोगरा ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और उड़ान-कौशल का परिचय दिया।

7. विंग कमांडर अरुण कांति मुखर्जी, वी० एम० (4416), फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के साथ हुए हाल के युद्ध में विंग कमांडर अरुण कांति मुखर्जी एक टैक्टीकल फ्लाइंग यूनिट की कमान कर रहे थे। इन्होंने बहुत सी संक्रियात्मक उड़ानें कीं और दुश्मन के अति रक्षित हवाई अड्डों पर हमला किया। इनकी यूनिट को सौंपे गए सभी कार्य इनकी ठोस योजना के कारण अनुकरणीय ढंग से पूरे हुए। दुश्मन द्वारा भारी रक्षा बचाव बंदोबस्त के बावजूद इनकी यूनिट ने रात के समय उसके इलाके में बहुत भीतर तक उड़ानें भरीं। इस यूनिट ने रात के समय दुश्मन को परेशान रखने में बहुत महत्वपूर्ण काम किया।

संक्रियाओं के दौरान विंग कमांडर अरुण कांति मुखर्जी ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

8. विंग कमांडर रामनाथन सुन्दरमन (4574), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष के दौरान विंग कमांडर रामनाथन सुंदरमन पूर्वी क्षेत्र में एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में थे। ढाका के निकट तेजगांव हवाई अड्डे पर हमला करने वाली फार्मेशन का यह नेतृत्व कर रहे थे कि दुश्मन के चार हवाई जहाजों की एक फार्मेशन इनको रोकने के लिए लपकी। जमीन से भारी गोलीबारी के बावजूद वे दुश्मन से जूझे और चार में से एक सैबर को मार गिराया।

इस कार्यवाही में विंग कमांडर रामनाथन सुंदरसन ने उच्चकोटि की वीरता और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

9. विंग कमांडर मुरारी लाल लेहन (4577), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर 1971 के भारत-पाक संघर्ष के दौरान विंग कमांडर मुरारी लाल लेहन पश्चिमी क्षेत्र में एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। इन्होंने अनेक संक्रियात्मक उड़ानें की और जमीनी भारी गोलाबारी के बीच में से दुश्मन के अनेकों टैंकों, बंकरों और गन ठिकानों को नष्ट किया। इनके स्क्वाड्रन ने दुश्मन के प्रदेश में भीतर तक बहुत सी लड़ाकू टोह उड़ानें कीं, जिनसे बाद की संक्रियाओं की योजना बनाने और उस पर अमल करने में बहुत मदद मिली।

संक्रियाओं के दौरान विंग कमांडर मुरारी लाल लेहन ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

10. स्क्वाड्रन लीडर रमेश चन्द्र कोहली (4891), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध के दौरान स्क्वाड्रन लीडर रमेश चन्द्र कोहली को एक सक्रियात्मक बममार स्क्वाड्रन के साथ तैनात किया गया था। इन्होंने दुश्मन के प्रदेश में बहुत भीतर तक कई उड़ानें की, जिनके दौरान इन्हें अति रक्षित टार्गेटों पर दुश्मन रडार के घेरे को पार करके जाना पड़ा। यूनिट में अपने साथियों और जूनियर पायलटों के लिए वे हमेशा प्रेरणा के स्रोत रहे।

सक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर रमेश चन्द्र कोहली ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक दक्षता और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

11 स्क्वाड्रन लीडर आर्य भूषण लाबा (4713), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर 1971 में भारत-पाक युद्ध के दौरान स्क्वाड्रन लीडर आर्य भूषण लाबा एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमांडर थे। 4 दिसम्बर, 1971 को इन्होंने रिसालवाला और चंदर हवाई अड्डों पर की गई उड़ानों का नेतृत्व किया और विसर्जन-स्थलों को एकदम तबाह कर दिया। 5 दिसम्बर 1971 को इन्होंने दुश्मन के एक टैंक और टैंक ढोने वाली गाड़ी को नष्ट किया। 6 दिसम्बर 1971 को उन्होंने नरोवाल के निकट दुश्मन की पोजीशनों को बर्बाद किया। 7 दिसम्बर 1971 को पहले इन्होंने दुश्मन की सेना के जमाव पर और बाद में उसकी गन और टैंक पोजीशनों पर बममारी की। 9 दिसम्बर 1971 को इन्होंने इछोगिल नहर पर बने एक पुल को उड़ा दिया। तकनीकी स्टाफ से निकट सपर्क बना कर इन्होंने स्क्वाड्रन में अपने जहाजों को बहुत अच्छी चालू हालत में रखा।

सक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर आर्य भूषण लाबा ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

12. स्क्वाड्रन लीडर फारुख जहांगीर मेहता (4906), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध सक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर फारुख जहांगीर मेहता ने एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के सीनियर पायलट के रूप में बाटस सक्रियात्मक उड़ानें की जिनमें कच्छ और बाड़मेर क्षेत्र में निकट से हवाई सहायता और मीरपुर तथा बदिन पर सफल बममारी की कार्यवाहियां शामिल हैं। इन्होंने बदिन, तालाहर और ममरूर हवाई अड्डों पर पांच जवाबी हवाई उड़ानें की। 13 दिसम्बर 1971 को जब वे तालाहर हवाई अड्डे पर बममारी उड़ान पर थे तो एक सैबर ने इन्हें घेर लिया। बाद में हुई इस हवाई लड़ाई में इन्होंने दुश्मन के उस हवाई जहाज को मार गिराया। एक और मौके पर जब वे नयाचोर क्षेत्र में निकट से हवाई सहायता के मिशन पर थे तो इन पर एक सैबर ने हमला किया। इन्होंने बड़ी दक्षता से अपने हवाई जहाज को घुमाया और दुश्मन के जहाज पर सीधी मार की, जो उसी समय जमीन पर गिरता देखा गया।

इन सभी कार्यवाहियों में स्क्वाड्रन लीडर फारुख जहांगीर मेहता ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक दक्षता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

सं० 76-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की सक्रियाओं में वीरता के लिए "वीर चक्र का वार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. विंग कमांडर भूपेन्द्र कुमार विश्नोई, वीर चक्र (4594), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में भारत-पाक युद्ध के दौरान विंग कमांडर भूपेन्द्र कुमार विश्नोई पूर्वी क्षेत्र में एक सक्रियात्मक लड़ाकू स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। इन्होंने तेजगाव हवाई अड्डे पर बममारी की सबसे पहली दो उड़ानों का नेतृत्व किया और भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद तेजगाव हवाई पट्टी पर बममारी की और साथ ही जमीन पर खड़े दुश्मन के एक बड़े परिवहन विमान को नष्ट कर दिया। बममारी के लिए की गई इन उड़ानों में से एक उड़ान पर इन के जहाज को एक भारी गोला लगा और उसे बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचा। लेकिन इसके बावजूद भी इन्होंने सफलता से हमला किया। 14 दिसम्बर 1971 को भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद इन्होंने ढाका में सैनिक लक्ष्यों पर हमले किये। इन्होंने ढाका के गवर्नमेंट हाउस और दूसरे लक्ष्यों पर बहुत ही सही निशाने से हमले किए। भारतीय थल सेना की सहायता में की गई उड़ानों में से इन्होंने दस उड़ानें कोमिला सैक्टर में दुश्मन की अति रक्षित पोजीशनों के खिलाफ की और दुश्मन के बंकरों तथा मजबूत ठिकानों को नष्ट किया।

इन सक्रियाओं में विंग कमांडर भूपेन्द्र कुमार विश्नोई ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक दक्षता और नेतृत्व का परिचय दिया।

2. स्क्वाड्रन लीडर विनोद कुमार भाटिया, वीर चक्र (6497), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध सक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर विनोद कुमार भाटिया एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमांडर थे। इन्होंने दुश्मन के प्रदेश में बहुत अन्दर तक कई उड़ानें की और उपयोग जानकारी अपने साथ लाए। विमान भेदी तोपों से अति रक्षित दुश्मन के हवाई अड्डों पर इन्होंने जवाबी हवाई बममारी की। अपनी बाद की उड़ानों पर भारी जमीनी गोलाबारी और दुश्मन के जहाजों की गश्त के बावजूद इन्होंने सफलता से हमले किए। इन्होंने दुश्मन के तीन हवाई जहाज और बहुत से जमीनी सैनिक संस्थापनों को नष्ट किया। दुश्मन की संचार लाइनों को अस्तव्यस्त करने के लिए भी इन्होंने कई विभंजन उड़ानें की। इसके अतिरिक्त इन्होंने हमारे जमीनी सैन्य दलों को भी निकट से हवाई सहायता दी।

संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर विनोद कुमार भाटिया ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया ।

3. फ्लाइट लेफ्टिनेंट विनोद कुमार नेब, वीर चक्र (8189), फ्लाइंग (पायलट)

4 दिसम्बर, 1971 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार नेब चार बममार हवाई जहाजों की फार्मेशन में नम्बर 3 थे, जो ढाका में कुर्मीटोला हवाई अड्डे पर बममारी के मिशन पर थी । ज्योंही फार्मेशन लक्ष के नजदीक पहुंची तो तीन सैबर विमानों ने उसे रोका । फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार नेब ने दुश्मन के एक हवाई जहाज पर हमला किया और उसे मार गिराया । इसके बाद इनकी निगाह एक और सैबर पर पड़ी । हालांकि इनके जहाज में पैट्रोल कम रह गया था, लेकिन वे चतुराई से अपने जहाज को लाभ-प्रद स्थिति में लाये जिससे कि दुश्मन के सैबर पर गोली चलाई जा सके । इस बीच हवाई जहाज की चेतावनी बत्ती जल उठी और इनके नेता ने पैट्रोल की कमी का ध्यान करते हुए इन्हें मुठभेड़ से हट जाने का आदेश दिया । इंजन की गड़बड़ी के बावजूद यह अपने हवाई जहाज को अड्डे पर सुरक्षित लौटा लाए । इसके बाद अड्डे से अलग, स्क्वाड्रन की टुकड़ी से संयुक्त होकर उन्होंने उड़ान संक्रियाएं की और कोमिला क्षेत्र में जमीन पर बममारी की उड़ानों पर गए । अपने नेता के साथ इन्होंने बरकाल क्षेत्र में अपने सैन्य दलों के सामने पड़ने वाली पहाड़ियों पर ऊंचे में बने दुश्मन के बंकरों और गन ठिकानों को नष्ट किया जिससे हमारी सेना उन पर कब्जा कर सकी ।

संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार नेब ने उच्चकोटि की वीरता और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया ।

सं० 77-प्रेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में वीरता के लिए 'वीर चक्र' प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं।—

1. मेजर रमेश कुमार दादकर, आई० सी०-14290, मराठा लाइट इन्फैन्ट्री,

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—26 नवम्बर, 1971)

(मरणोपरान्त)

मेजर रमेश कुमार दादकर मराठा लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन की एक कंपनी की कमान कर रहे थे जो कि हाल की पाकिस्तान के विरुद्ध कार्यवाहियों के दौरान पूर्वी क्षेत्र के एक स्थान पर तैनात थी। जब एक जूनियर कमीशन्ड अफसर सुरंग के फट जाने से घायल हो गया तो मेजर रमेश कुमार दादकर शत्रु की भारी गोलीबारी के बावजूद, कुछ स्ट्रेचर वाहकों को साथ लेकर, उसकी मदद के लिए फौरन आगे बढ़े। जब जूनियर कमीशन्ड अफसर को उस जगह से निकाला जा रहा था तो एक स्ट्रेचर वाहक शत्रु की गोली से घातक रूप से घायल हो गया। बिना डरे, उन्होंने जूनियर कमीशन्ड अफसर को सुरंग क्षेत्र से बाहर निकालने के, अपने प्रयत्न जारी रखे। ऐसा करते हुए, शत्रु की एक मशीन गन की गोली की बौछार उन पर पड़ी, जिसके कारण उन्होंने वीरगति पाई।

इस कार्यवाही में मेजर रमेश कुमार दादकर ने सराहनीय साहस और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

2. मेजर हरदेव सिंह ग्रेवाल, आई० सी०-21289, जाट रेजिमेंट,

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 दिसंबर 1971)

(मरणोपरान्त)

7 दिसंबर 1971 की रात को मेजर हरदेव सिंह ग्रेवाल, जाट रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कंपनी की कमान कर रहे थे, जो कि छम्ब क्षेत्र में रक्षात्मक मोर्चे पर तैनात थी। शत्रु ने तोपखाने की भारी गोलाबारी की सहायता से तीन बार इस मोर्चे पर हमला किया। उन्होंने अपने तोपखाने से शत्रु पर भारी गोलाबारी करवा कर अपने सैनिकों को उसके हमले को विफल करने की प्रेरणा दी। अपने तीसरे प्रबल प्रयास में शत्रु हमारे इलाके में एक जगह अपने पांव जमाने में सफल हो गया था। उन्होंने फौरन उस पर जवाबी हमला कर दिया और शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुंचाकर वे पुनः पूर्व स्थिति को बहाल करने में सफल हुए। 9 दिसंबर 1971 की रात को शत्रु ने इन्फैन्ट्री और आर्मर की मदद से दुबारा कई हमले किए। अपनी सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना वे खुले में ही एक जवान से दूसरे जवान के पास जाकर उन्हें प्रोत्साहित करते रहे और उन्होंने शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुंचा कर उसके सभी हमलों को विफल कर दिया। 10 दिसंबर, 1971 को यद्यपि उनकी जांघ पर घाव हो गया, फिर भी, वे लड़ाई का निर्देश करते रहे। पुनः उन पर शत्रु की मशीन गन की गोलियों की बौछार पड़ी जिसके कारण उन्होंने वीरगति पाई।

इस कार्यवाही के दौरान मेजर हरदेव सिंह ग्रेवाल ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़ निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

3. मेजर हरपाल सिंह ग्रेवाल (आई० सी०-18061) बिहार रेजिमेंट **(मरणोपरांत)**

मेजर हरपाल सिंह ग्रेवाल बिहार रेजिमेंट की बटालियन की एक कंपनी के कमान अफसर थे और इन्हें पूर्वी क्षेत्र में दुश्मन की एक चौकी को नष्ट करने का काम सौंपा गया था। चौकी पर दुश्मन भारी तादाद में था और यहां उसने खूब अच्छी तरह मोर्चाबंदी कर रखी थी और उनके पास मीडियम मशीन गनें भी थीं। हमले के दौरान इनकी कंपनी दुश्मन की मशीनगनों और छोटे हथियारों के भारी गोलीबारी के बीच आ गई, किन्तु उन्होंने स्वयं आगे बढ़कर अपने जवानों को प्रोत्साहित किया ताकि हमले को जारी रखा जा सके। हमले का नेतृत्व करते हुए मेजर ग्रेवाल मशीनगनों की गोलियों की एक बौछार से घायल हो गए फिर भी इन्होंने आगे बढ़ना जारी रखा और चौकी का खात्मा कर दिया। लक्ष्य पर कब्जा करने के बाद घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में मेजर हरपाल सिंह ग्रेवाल ने उच्चकोटि की वीरता के और नेतृत्व का परिचय दिया।

4. मेजर लील बहादुर गुरंग (आई० सी०-14532), महार रेजिमेंट **(मरणोपरांत)**

मेजर लील बहादुर गुरंग पूर्वी क्षेत्र में दुश्मन की एक चौकी पर हमला करने के दौरान महार रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कंपनी के कमान-अफसर थे। दुश्मन ने चौकी की खूब अच्छी तरह मोर्चाबंदी कर रखी थी और उसके पास मीडियम मशीनगनें

भी थीं। हमले के दौरान इनकी कंपनी दुश्मन की मीडियम मशीन गनों के रेंज और सही गोली बारी के बीच आ गई। जोरदार गोली-बारी के बावजूद मेजर गुरंग ने पक्के इरादे से हमले का नेतृत्व किया और स्वयं आगे बढ़कर हमले को जोरदार बनाए रखने के लिए अपने जवानों को जोश दिलाया। एक टांग बुरी तरह घायल हो जाने के बावजूद वे दुश्मन के मीडियम मशीन गन के एक बंकर तक रेंग कर पहुंचे और इसी दौरान इनकी टांग पर गोलियों की एक और बौछार पड़ी। गंभीर रूप से घायल होने पर भी इन्होंने दुश्मन के बंकर में एक हथ गोला फेंका और मशीन गन को शांत कर दिया। फलस्वरूप इनकी कंपनी लक्ष्य पर कब्जा करने में सफल हुई। लड़ाई के मैदान में घावों से शहीद होने के अंतिम क्षण तक ये अपने जवानों का हौसला बढ़ाते रहे।

इस कार्यवाही के दौरान मेजर लील बहादुर गुरंग ने उच्चकोटि की वीरता और अटल निश्चय का परिचय दिया।

5. मेजर गुरदेव सिंह जसवाल, (आई० सी०—16008), पंजाब रेजिमेंट (मरणो परान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 दिसंबर, 1971)

मेजर गुरदेव सिंह जसवाल, पश्चिमी क्षेत्र में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, पंजाब रेजिमेन्ट की एक बटालियन की एक कंपनी की कमान कर रहे थे। इनकी बटालियन को शकरगढ़ क्षेत्र में 'चक अमरू' रेल स्टेशन पर दुश्मन की स्थिति पर कब्जा करने का आदेश मिला। मेजर गुरदेव सिंह जसवाल ने 600 गज दूर तक की सामरिक सुरंग क्षेत्र में से होकर प्रहार किया। इनके इस बड़े तेज प्रहार के कारण दुश्मन चकरा गया और भाग खड़ा हुआ। पुनर्गठन के दौरान इनकी कंपनी पर दुश्मन की मीडियम मशीन गनों और तोपखाने का सही और घना फायर पड़ने लगा। मेजर गुरदेव सिंह जसवाल, दुश्मन के छोटे हथियारों के फायर और गोलाबारी के बावजूद खाई-खाई जाकर अपने जवानों को उत्साहित करते रहे। ऐसा करते हुए उन्हें दुश्मन की मीडियम मशीन गन की गोलियों की बौछार लगी जिसकी वजह से वे शहीद हो गए।

इस पूरी कार्यवाही में मेजर गुरदेव सिंह जसवाल ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़ निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

6. मेजर नारायण सिंह (आई०सी०—18086), जाट रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसंबर, 1971)

5 दिसंबर, 1971 को मेजर नारायण सिंह जो जाट रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कंपनी की कमान कर रहे थे, फाजिलका क्षेत्र में एक स्थान पर शत्रु को इलाके को अधिकार में लेने का कार्य सौंपा गया था। जब जवाबी हमला शुरू किया गया तो शत्रु ने तोपखाने और छोटे हथियारों से जोरदार गोलाबारी शुरू कर दी जिससे हमारे बहुत से सैनिक हताहत हुए। बिना डरे, मेजर नारायण सिंह ने अपने जवानों को लेकर लक्ष्य पर हमला किया। ऐसा करते समय उन पर शत्रु की मशीन गन की गोलियों की बौछार पड़ी, लेकिन वे हमले का निर्देश करते रहे और दुश्मन को उलझा कर उससे गुत्थम गुत्था करते रहे जिसमें वे घातक रूप से घायल हुए।

इस कार्यवाही में मेजर नारायण सिंह ने उच्चकोटि की वीरता दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

7. मेजर वेत्री नाथन (आई० सी०—13991), गोरखा राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसंबर, 1971)

मेजर वेत्री नाथन कारगिल क्षेत्र में गोरखा राइफल की एक बटालियन की एक कंपनी की कमान कर रहे थे। 6/7 दिसंबर, 1971 की रात को उनकी कंपनी को एक ऐसी पहाड़ी पर कब्जा करने का काम सौंपा गया, जहां दुश्मन भारी तादाद में था। हमले के दौरान दुश्मन ने हमारे जवानों पर छोटे हथियारों और तोपखाने से भारी और सही गोलीबारी शुरू कर दी। मेजर वेत्री नाथन अपनी निजी सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना एक जवान से दूसरे जवान के पास गए और हमले का दबाव बढ़ाने के लिए उन्हें उत्साहित किया। बुरी तरह घायल होने के बावजूद उन्होंने हमले का नेतृत्व किया और घावों के कारण वीरगति को प्राप्त होने से पहले ही लक्ष्य पर कब्जा कर लिया।

इस कार्यवाही में मेजर वेत्री नाथन ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

8. मेजर देविंदरजीत सिंह पन्नू (आई० सी०—13158), सिख रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसंबर, 1971)

3/4 दिसंबर, 1971 की रात को दुश्मन ने जब हमला किया तो मेजर देविंदरजीत सिंह पन्नू सिख रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कंपनी की कमान कर रहे थे, जो छंब की रक्षा के लिए एक मुख्य स्थान पर डटी हुई थी। मेजर पन्नू तत्काल 'मोयल' सीमा चौकी की एक स्क्रीन पोजीशन पर तैनात अपनी एक प्लाटून के पास तेजी से पहुंचे और दुश्मन के भारी दबाव के बावजूद रात भर वहीं डटे रहे। उसके बाद भी सोलह घंटे तक चौकी के पूरी तरह घिरे जाने के बाद भी उन्होंने दुश्मन के हमले को रोके रखा। इसके बाद वह अपनी मुख्य चौकी पर पीछे हट गए, जहां लगातार दो रात उनकी कंपनी पर दुश्मन बटालियन की तादाद में हमला करता रहा था। मेजर पन्नू दुश्मन को पीछे धकेलने के लिए अपने जवानों को प्रोत्साहित करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की तरफ जाते रहे और इस दौरान दुश्मन के छोटे हथियारों और आर्टीलरी की गोलीबारी के सामने वे कई बार खुद खुले में आए। इस चौकी के महत्व को समझते हुए दुश्मन ने तोपखाने से भारी गोलाबारी के बाद बटालियन की तादाद में 5 दिसंबर की सुबह इस पर फिर हमला किया। अपने जवानों का हौसला बढ़ाने के लिए मेजर पन्नू जब एक खाई से दूसरी खाई की तरफ जा रहे थे तो वह एक गोले से घायल हो गए और अपनी चौकी पर ही शहीद हो गए।

इस कार्यवाही में मेजर देविंदरजीत सिंह पन्नू ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

9. मेजर राजेन्द्र सिंह रजावत, (आई०सी०—18128), राजपूताना राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 दिसंबर, 1971)

मेजर राजेन्द्र सिंह रजावत शकरगढ़ क्षेत्र में राजपूताना राइफल्स की एक बटालियन की आर्मर्ड पर्सनल कैरियर कंपनी की कमान कर रहे थे। इनकी कंपनी को शत्रु के एक इलाके पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था। इस पोजीशन पर शत्रु भारी संख्या में था। मेजर राजेन्द्र सिंह रजावत ने हमले में अपने जवानों का नेतृत्व किया और दुश्मन की भारी गोलाबारी और कड़े प्रतिरोध के बावजूद घमासान मुठभेड़ के बाद सुदृढ़ इलाके से उसको निकाल दिया। जब शत्रु ने जवाबी हमला किया तो उसके भारी गोलेबारी के बावजूद वे एक खाई में से दूसरी खाई में जाकर शत्रु के हमले को विफल करने के लिए अपने जवानों को प्रात्साहित करते रहे। ऐसा करते हुए उनको शत्रु का एक गोला लगा, जिसके कारण उन्होंने वीरगति पाई।

इस कार्यवाही के दौरान मेजर राजेन्द्र सिंह रजावत ने सराहनीय साहस, दृढ़-निश्चय और उच्चकोटि के नेतृत्व का परिचय दिया।

10. मेजर शशि पाल सिंह, (आई० सी०—18798), राजपूत रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 दिसंबर, 1971)

14 दिसंबर, 1971 को मेजर शशि पाल सिंह राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कंपनी की कमान कर रहे थे, जोकि पूर्वी क्षेत्र के एक स्थान पर रेल के एक पुश्ते पर हमला करने में लगी हुई थी। शत्रु भारी संख्या में सुदृढ़ खाइयों में मोर्चाबंदी किए हुए था। हमले के दौरान शत्रु ने तोपखाने और छोटे हथियारों से भारी और अचूक गोलाबारी करना शुरू कर दिया। अविचलित मेजर शशि पाल सिंह ने लक्ष्य की ओर बराबर आगे बढ़ना जारी रखा। ऐसा करते हुए वे घायल हुए और उनके अगले दस्ते को भारी जानी नुकसान उठाना पड़ा, जिससे हमले की प्रगति रुक गई। घावों के बावजूद, वे संक्रियाओं का निदेश करते रहे और अंत में लक्ष्य पर कब्जा करने में सफल हुए। बाद में, घावों के कारण उन्होंने वीरगति पाई।

इस कार्यवाही के दौरान, मेजर शशि पाल सिंह ने उच्च कोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

11. मेजर सुरिन्दर वत्स (आई० सी०—15055), इंजीनियर्स कोर (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसंबर, 1971)

13 दिसंबर, 1971 को, इंजीनियर रेजिमेंट के मेजर सुरिन्दर वत्स, मराठा लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन के साथ तैनात थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में कमालपुर-बखशीगंज अक्ष पर दुश्मन के इलाके में छापा मारने का काम सौंपा गया था। छापा सफल रहा और साथ ही दुश्मन की 130 मि० मी० की चार मार्टारों को भी कब्जा कर लिया। दुश्मन की कुमुक के आने की आशंका थी, इसलिए मेजर सुरिन्दर वत्स को यह आदेश दिया गया कि छापा मारने वाला कालम अड्डे से वापस लौटने पर पहले मार्टारों को बर्बाद कर दें। मेजर सुरिन्दर वत्स ने विस्फोटकों से दो मार्टारों को उड़ा दिया। लेकिन जब वे तीसरी मार्टार को उड़ाने के लिए चार्ज तैयार कर रहे थे उस समय दुश्मन के एक व्यक्ति ने उन्हें छिप कर गोली का निशाना बना दिया। हालांकि वे बुरी तरह जख्मी हो गए था फिर भी इस काम के महत्व को समझते हुए और घावों के कारण वीरगति पाने से पहले उन्होंने बची हुई मार्टारों के बैरल में ग्रेनेडों का विस्फोट करके उन्हें भी नष्ट कर दिया।

इस कार्यवाही में मेजर सुरिन्दर वत्स ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

12. कैप्टन रवीन्दर नाथ गुप्त (आई० सी०—16871) इंजीनियर्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 दिसंबर, 1971)

कैप्टन रवीन्दर नाथ गुप्त उन उप-टास्क फोर्स कमांडरों में से एक थे जिन्हें पश्चिमी क्षेत्र में एक इलाके में बिछाए सुरंगों को तोड़ने का काम सौंपा गया था। इस सक्रिया की सफलता इस बात पर निर्भर थी कि दुश्मन के सुरंग क्षेत्र में से गाड़ियों के गुजरने के लिए, गलियां इतनी तेजी से बनाई जाएं कि अपनी आर्मर्ड रेजिमेंट दुश्मन के जवाबी हमले से पहले इस इलाके में पहुंच जाएं। इस इलाके में दुश्मन तोपखाने और मार्टर से लगातार गोले बरसा रहा था और इस बात की खबर नहीं मिल रही थी कि सुरंग क्षेत्र कितना गहरा है। चूंकि समय बहुत कम था अतः कैप्टन रविन्दर नाथ गुप्त ने सुरंग क्षेत्र के दूसरे किनारे का पता लगाने के लिए अपने साथ छोटी सी टोली ली, और पैदल काफी बड़े इलाके के गिर्द से होकर एक घंटे के अंदर-अंदर यह महत्वपूर्ण खबर प्राप्त कर ली। बाद में जब दुश्मन ने हमला कर दिया तो इन्होंने अपनी निजी सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना साफ किए हुए सुरंग क्षेत्र में से होकर अपने टैंकों का खुद मार्ग दर्शन किया। ऐसा करते हुए दुश्मन के तोपखाने का एक गोला उन्हें लगा जिसकी वजह से वे शहीद हो गए।

इस कार्यवाही में कैप्टन रविन्दर नाथ गुप्त ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

13. कैप्टन अशोक कुमार करकारे (आई०सी०—21909), आर्टिलरी रेजिमेंट (मरणोपरांत),

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 दिसंबर, 1971)

आर्टिलरी रेजिमेंट के कैप्टन अशोक कुमार करकारे अगले प्रेक्षण अधिकारी थे। पश्चिमी क्षेत्र में 'खलारा' पर हमले के दौरान वे राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कंपनी के साथ थे। कंपनी ने जम कर हमला किया और बड़े-बड़े मुकाबले के बावजूद लक्ष्य के कुछ हिस्से पर कब्जा कर लिया। दुश्मन ने तुरंत तोपखाने की भारी गोलाबारी शुरू कर दी जिससे हमारे काफी जवान हताहत होने लगे। इसी बीच कैप्टन अशोक कुमार करकारे ने दुश्मन के एक तोपखाने के रेडियो सेट को हथिया लिया और उसके जरिए दुश्मन को गुमराह करके उसके तोपखाने की गोलाबारी अन्यत्र करवा कर अपने जवानों को हताहत होने से बचाया। 8 दिसंबर, 1971 की सुबह दुश्मन ने इन्फैन्ट्री से, टैंकों की मदद लेकर कड़ा जवाबी हमला किया। भारी गोलाबारी और छोटे हथियारों के फायर के बावजूद कैप्टन अशोक कुमार करकारे अपने तोपखाने से सही गोलाबारी करवाते रहे। परिणामस्वरूप वे हमले को पछाड़ने में सहायक हुए। उसी दिन दुश्मन ने दुबारा जमकर जवाबी हमला किया और एक बार फिर कैप्टन करकारे ने तोपखाने में प्रभावकारी सहयोग के लिए अपने को खतरे में डाला। वे दुश्मन पर तब तक गोले बरसाते रहे जब तक कि हमारे सैनिक उस स्थान से निकल न गए। लेकिन जब वे खुद पीछे हट रहे थे तो उन्हें मशीन गन की गोलियों की बौछार लगी जिससे उसी क्षण उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में कैप्टन अशोक कुमार करकारे ने उच्च कोटि की वीरता, नेतृत्व और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

14. कैप्टन रविन्द्र खौरा (एस० एस०—20095), आर्टिलरी रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसंबर, 1971)

कैप्टन रविन्द्र खौरा लंबा क्षेत्र के एक सुरक्षित इलाके में आर्टिलरी रेजिमेंट के प्रेक्षण चौकी अधिकारी थे। 3/4 दिसबर, 1971 को भारी संख्या में दुश्मन ने तोपखाने की भारी और सही गोलाबारी की मदद से इस चौकी पर कई बार हमले किए। भारी गोलाबारी के बावजूद इन्होंने अपनी जान की जरा भी परवाह न की और दुश्मन पर तोपखाने की सही गोलाबारी करने के लिए अपने को कई बार खतरे में डाला। अपने जवानों में जोश भरा और उन्हें अपनी पोजीशन पर डटे रहने के लिए उत्साहित किया और वे तब तक तोपखाने की कारगर गोलाबारी करके दुश्मन के हमलों को विफल बनाते रहे जबकि दुश्मन का एक गोला लगने से उनकी मृत्यु न हो गई।

इस कार्यवाही के दौरान कैप्टन रविन्द्र खौरा ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

15. कैप्टन मदन पौल (आई० सी०—18747), हवाई प्रेक्षण चौकी स्क्वाड्रन (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसबर, 1971)

कैप्टन मदन पौल पश्चिमी क्षेत्र में तैनात एक हवाई प्रेक्षण चौकी स्क्वाड्रन के हवाई प्रेक्षण चौकी पायलट थे। कार्यवाहियों के दौरान चौबीसों घंटे दुश्मन के इलाके में काफी अदर तक उड़ाने भरते रहे ताकि दुश्मन के सैनिक जमावों के बारे में जरूरी सूचना प्राप्त करके दुश्मन के लक्ष्यों पर अपने तोपखाने से गोलाबारी कर सकें। कई बार दुश्मन की मशीन गन की गोलियों से उनके हवाई जहाज में छेद हो गए पर इसकी परवाह किए बिना वे तब तक अपने काम में लगे रहे जब तक उन्हें जरूरी सूचनाएं प्राप्त न हो गईं। 14 दिसबर, 1971 को उड़ान के दौरान दुश्मन के वायु विस्फोट गोले से उनका हवाई जहाज बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। पर अपनी जान की परवाह न करते हुए वे लक्ष्यों पर उड़ते रहे और अपने तोपखाने से सही गोलाबारी करवाते रहे। 16 दिसंबर, 1971 को काम पूरा करके लौटते समय कैप्टन मदन पौल ने देखा कि दुश्मन हमारे सैनिक ठिकानों पर गोलाबारी कर रहा है। उन्होंने तुरंत अपना हवाई जहाज दुश्मन के ठिकाने की तरफ मोड़ा जिससे वे अपने तोपखाने की गोलाबारी का निर्देशन कर सके। ऐसा करते समय दुश्मन की मशीन गन की एक गोली लगने से उनकी मृत्यु हो गई।

पूरी कार्यवाही के दौरान कैप्टन मदन पौल ने उच्चकोटि के साहस, दृढ़-निश्चय और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

16 कैप्टन सतीश चन्द्र सहगल (आई० सी०—20044), आर्टिलरी रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसबर, 1971)

16 दिसबर, 1971 को कैप्टन सतीश चन्द्र सहगल शकरगढ़ क्षेत्र में आर्मर्ड रेजिमेंट के साथ अग्रिम प्रेक्षण चौकी अफसर थे। अगला स्कावड्रन 'मराज चक' के जगल में परिचालन में व्यस्त था, जबकि इसको अचानक करीब 200 गज की दूरी पर गाजीपुर जंगल में धुंए की आड़ में पीछे हटते दुश्मन के टैंक दिखाई दिए। फौरन ही कैप्टन सतीश चन्द्र सहगल ने मीडियम तोपखाने से बहुत ज्यादा गोले फायर कराकर शत्रु के टैंकों के संकेन्द्रण को बेअसर कर दिया। जब उन्होंने शत्रु के एक टैंक को गाजीपुर जंगल के किनारे पर बच कर निकल भागने का प्रयत्न करते हुए देखा तो उन्होंने आगे बढ़कर उस पर हमला कर दिया और अपने प्रेक्षण चौकी टैंक की गन से भागते हुए शत्रु के टैंक को नष्ट कर दिया। ऐसा करते हुए उनके टैंक पर गोला लगा जिससे उसमें आग लग गई। अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना उन्होंने रेडियो आपरेटर के सहयोग से जलते हुए टैंक में से ड्राइवर और गनर को बाहर निकालने में मदद की। इसी बीच उनको दुश्मन की मशीन गन की गोलियां लगीं जिसके कारण उन्होंने वीरगति पाई।

इस कार्यवाही के दौरान कैप्टन सतीश चन्द्र सहगल ने उच्चकोटि की वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

17 कैप्टन विजय प्रताप सिंह (आई सी—22198), (मरणोपरान्त)

कैप्टेन विजय प्रताप सिंह माउन्टेन रेजिमेंट की एक कंपनी के अग्रिम प्रेक्षण अफसर थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में दुश्मन की चौकी पर हमला करने का काम सौंपा गया था। हमले के दौरान कंपनी कमाडर बुरी तरह घायल हो गए। कैप्टेन विजय प्रताप सिंह ने कंपनी की कमान सभाल ली और दुश्मन की चौकी पर हमले का नेतृत्व किया। उन्होंने प्लाटून-प्लाटून जाकर अपने जवानों को उत्साहित किया। भारी तोपखाने, मार्टर और स्वचालित हथियारों से गोलाबारी के बावजूद बुरी तरह घायल होते हुए भी इन्होंने दुश्मन पर अपनी गनों से सही और केन्द्रित गोलाबारी की। इनके उदाहरण से प्रेरित होकर कंपनी ने इस चौकी पर कब्जा कर लिया। कैप्टेन विजय प्रताप सिंह अंत में घावों के कारण वीर गति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में कैप्टेन विजय प्रताप सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

18. कैप्टेन सुरेन्द्र नाथ (एम एस—8540), आर्मी मेडिकल कोर (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसंबर, 1971)

16 दिसबर, 1971 को शकरगढ़ क्षेत्र में बसन्तार नदी की लड़ाई के दौरान कैप्टेन सुरेन्द्र नाथ मद्रास रेजिमेंट की एक बटालियन के साथ रेजिमेंट के चिकित्सा अफसर थे। बसंतार नदी पर पुल का पदाधार स्थापित करते हुए बटालियन को भारी जानी नुकसान उठाना पड़ा। अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना वे थैला उठाए एक घायल से दूसरे घायल तक जाकर डाक्टरी सहायता देते रहे। ऐसा करते हुए वे एक गोले की किर्च से घायल हुए और घावों के कारण उन्होंने वीरगति पाई।

इस कार्यवाही के दौरान कैप्टेन सुरेन्द्र नाथ ने सराहनीय साहस, दृढ़-निश्चय और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

19. सेकंड लेफ्टिनेंन्ट परमजीत सिंह चीमा, (आई सी—23365) इंजीनियर्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसंबर, 1971)

सैकंड लेफ्टिनेन्ट परमजीत सिंह चीमा राजस्थान क्षेत्र के नयाछोर इलाके में एक इंफैंट्री ब्रिगेड ग्रुप की मदद के लिए तैनात की गई एक फील्ड कंपनी के साथ थे। नयाछोर की तरफ बढ़ने के दौरान एक टैंक के ट्रैक, टैंक-रोधी सुरंग से खराब हो गए। सैकंड लेफ्टिनेन्ट परमजीत सिंह चीमा को इस नकारा किए टैंक को निकालने के लिए सुरंग क्षेत्र में से एक सुरक्षित मार्ग बनाने का आदेश मिला। अपनी निजी सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना वे मार्ग बनाने के लिए अपना दल ले गए। दुश्मन ने इस सुरंग क्षेत्र साफ करने वाले दल पर मशीन गनों और राइफलों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी। सेकंड लेफ्टिनेन्ट परमजीत सिंह चीमा बड़ी हिम्मत के साथ काम करते रहे और अपने टैंक को निकाल लाने का काम पूरा कर लिया। बाद में परवत अली के पास सुरंग साफ करते हुए वे एक सुरंग फटने से शहीद हो गए।

इन कार्यवाहियों में सैकंड लेफ्टिनैन्ट परमजीत सिंह चीमा ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

20. सेकंड लेफ्टिनेन्ट डेविड एलेक्जैन्डर डेवडसन (एस एस—22831),
महार रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 दिसंबर, 1971)

पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं में सेकड लेफ्टिनेन्ट डेविड एलेक्जैन्डर डेविडसन महार रेजिमेंट की एक बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। 10/11 दिसंबर, 1971 की रात को उनकी बटालियन को शकरगढ़ क्षेत्र के एक स्थान पर शत्रु के मोर्चे पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया था। इस मोर्चे पर शत्रु बड़ी तादाद में था और सुरंग-क्षेत्र में रक्षित था। हमले के दौरान, प्रहार करने वाले हमारे सैनिक शत्रु की मशीनगन की भारी गोलाबारी के कारण रुक गए थे। यह जान कर कि दुश्मन की इस गन को शांत करना कितना जरूरी है, सेकंड लेफ्टिनेन्ट डेविड एलैक्जैन्डर डेवडसन अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना लक्ष्य की ओर आगे बढ़े और प्लाटून को अपने पीछे आने की प्रेरणा दी। शत्रु ने उनकी प्लाटून पर छोटे हथियारों और तोपखाने से जोरदार और सही गोलाबारी शुरू कर दी जिससे उनकी प्लाटून को भारी जानी नुकसान उठाना पड़ा। लेकिन बिना डरे, उन्होंने शत्रु की मशीन गन स्थिति पर धावा बोल कर उसकी मशीन गन को शांत कर दिया जिससे कि लक्ष्य पर हमारा कब्जा हो गया। ऐसा करते हुए शत्रु की मशीन गन की गोलियों की बौछार उन पर पड़ी जिसके कारण उन्होंने वीरगति पाई।

इस कार्यवाही के दौरान सेकंड लेफ्टिनेन्ट डेविड एलेक्जैन्डर डेवडसन ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

21. सेकंड लेफ्टिनेन्ट सतीश कुमार जसवाल (आई सी —23805),
डोगरा रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसंबर, 1971)

सेकंड लेफ्टिनेन्ट सतीश कुमार जसवाल शकरगढ़ क्षेत्र में बिम्मो बुजुर्ग और धींगर के इलाके में दुश्मन के प्रदेश में काफी भीतर तक अपना गश्ती दल ले गए। 15 दिसंबर, 1971 की रात के लगभग 11 बजे जब इनका गश्ती दल धींगर गांव पहुंचा तो दुश्मन की घात टुकड़ी ने नजदीक से स्वचालित हथियारों और ग्रनेडों से उन पर गोली चलानी शुरू कर दी। सेकंड लेफ्टिनेन्ट सतीश कुमार जसवाल ने अपनी गश्ती दल को दुश्मन की इस घात टुकड़ी पर टूट पड़ने का आदेश दिया। इस कार्यवाही मे उनके एक गोली लगी। घायल हो जाने के बावजूद भी वे अपने गश्ती दल को निदेश देते रहे और घावों के कारण शहीद होने से पहले दुश्मन की घात टुकड़ी को हराने मे सफल हुए।

इस कार्यवाही में, सेकंड लेफ्टिनेन्ट सतीश कुमार जसवाल ने उच्च कोटि की वीरता दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

22. सेकंड लेफ्टिनेन्ट भारत सिंह कसना, (एस एस—24026)
डोगरा रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसंबर, 1971)

सेकंड लेफ्टिनेन्ट भारत सिंह कसना डोगरा रेजिमेंट की एक बटालियन के एक प्लाटून कमांडर थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में मादुरवेर पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। इस बटालियन की एक कंपनी ने मादुरवेर के उत्तर में एक रेल पुल पर कब्जा करने के लिए हमला किया लेकिन पुल से ऊंचाई पर बने दुश्मन के बंकरो से आने वाले तेज स्वचालित गोलीबारी के कारण इसका बढ़ना रुक गया। जब इस कंपनी ने एक बंकर को बेअसर कर दिया तो दूसरे ने, जो लगभग 150—200 गज की दूरी पर खुला था, इनका आगे बढ़ना रोक दिया ऐसी सूरत मे सेकंड लेफ्टिनेन्ट भारत सिंह कसना ने अपने प्लाटून को इकठ्ठा किया और तोपखाने तथा स्वचालित हथियारो के बहुत भारी गोलाबारी के बावजूद दुश्मन के बंकरों पर प्रहार कर दिया। इस कार्यवाही में उनकी टांग में मिडियम मशीन गन की गोलियो की एक बौछार लगी मगर अपनी चोट की परवाह न करते हुए उन्होने प्रहार का दबाव बढ़ाए रखा। फिर इनके माथे पर भी स्वचालित हथियारों की गोलियां लगी और घावो के कारण वे शहीद हुए।

इस कार्यवाही मे सेकंड लेफ्टिनेन्ट भारत सिंह कसना ने उच्च-कोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

23. सेकंड लेफ्टिनेन्ट अशोक कुमार ननछहल (एस एस —23228')
राजपूत रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 दिसंबर, 1971)

सेकंड लेफ्टिनेन्ट अशोक कुमार ननछहल पश्चिमी क्षेत्र में खलरा इलाके में छीना बीडी चांद पर मौजूद दुश्मन की स्थिति पर किए गए एक हमले के दौरान राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन के प्लाटून कमांडर थे। हमले के दौरान उनकी बटालियन पर तेज गोलाबारी और स्वचालित हथियारो की अधिक गोलियां चलाई जाने लगी पर सेकंड लेफ्टिनेन्ट अशोक कुमार ननछहल ने अपने जवानों को हमले का दबाव बढ़ाने के लिए जोश दिलाया। इस नाजुक मोर्चे पर उन्होने शत्रु के बंकरों से फायरिंग करने वाली उन दो मशीन गनो को देखा जो भारी तादाद में हमारे जवानो को हताहत कर रही थीं। अपनी जान की जरा परवाह न करते हुए इन्होने अकेले मशीन गन चौकी पर हमला किया। इन्होंने एक छेद से ग्रेनेड

फेंक कर दुश्मन को मार गिराया और गनों को शांत कर दिया। लेकिन इस कार्यवाही में वे बुरी तरह घायल हो गए और घावों के कारण शहीद हो गए। उनकी इस दिलेरी से उनके जवानों में जोश भरा और वे लक्ष्य पर हमला करके उसे हासिल करने और दुश्मन को नुकसान पहुंचाने में सफल हो गए।

इस कार्यवाही में सैकंड लेफ्टिनेन्ट अशोक कुमार ननछहल ने उच्चकोटि की वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

24. सैकंड लेफ्टिनेन्ट शेशप्पा मंजू नाथ (आई सी—24877), राजपूत रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसंबर, 1971)

3 दिसंबर, 1971 को राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन पूर्वी क्षेत्र में पछागढ़—ठाकुरगांव अक्ष के साथ-साथ आगे बढ़ रही थी। सैकंड लेफ्टिनेन्ट शेशप्पा मंजू नाथ अग्रिम प्लाटून की कमान कर रहे थे। आगे बढ़ने के दौरान दुश्मन ने एक मीडियम मशीन गन से गोली चलाना शुरू कर दिया जिससे हमारे काफी जवान हताहत होने लगे। मशीन गन को शांत करना जरूरी समझ कर इन्होंने मशीन गन की चौकी पर हमला किया इस दौरान इन्हें मशीन गन की गोलियों की बौछार लगी जिसके कारण वे शहीद हुए। लेकिन शहीद होने से पहले वे मशीन गन को शांत कर चुके थे।

इस कार्यवाही में सैकंड लेफ्टिनेन्ट शेशप्पा मंजू नाथ ने उच्चकोटि के साहस, दृढ़-निश्चय और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

25. सैकंड लेफ्टिनेन्ट हरदेव पाल नय्यर (एस एस—23397), सिख लाइट इन्फैन्ट्री। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—12 दिसंबर, 1971)

11/12 दिसंबर 1971 की रात को, सैकंड लेफ्टिनेन्ट हरदेव पाल नय्यर एक कंपनी में प्लाटून कमांडर थे जिसे पश्चिमी क्षेत्र में दुश्मन की चौकी पर हमला करने का काम सौंपा गया था। प्रहार के दौरान, प्लाटून दुश्मन के बंकरों से किए गए स्वचालित गोली बारी के कारण रुक गया। सैकंड लेफ्टिनेन्ट हरदेव पाल नय्यर, अपनी निजी सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना दोनों बंकरों तक रेंग कर पहुंच गए और ग्रेनेड फेंक कर उनको शांत कर दिया। तीसरे बंकर की तरफ जाते समय उन्हें दुश्मन की मीडियम मशीन गन की गोलियों की एक बौछार लगी। हालांकि वे बुरी तरह घायल हो चुके थे फिर भी चौकी पर कब्जा कर लेने तक उन्होंने अपने जवानों को उत्साहित किया। बाद में घावों के कारण वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में, सैकंड लेफ्टिनेन्ट हरदेव पाल नय्यर ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

26. सैकंड लेफ्टिनेन्ट जयेंद्र जयसिंह राने (आई सी—24201), गढ़वाल राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसंबर, 1971)

5 दिसंबर, 1971 को सैकंड लेफ्टिनेन्ट जयेंद्र जयसिंह राने गढ़वाल राइफल्स की एक बटालियन की एक कंपनी की कमान कर रहे थे। जिसे पूर्वी क्षेत्र में दिल्ली के निकट शत्रु की चौकी पर कब्जा करने का आदेश दिया गया था। शत्रु अच्छी तरह तैयार मोर्चों में था और मीडियम मशीन गन, मार्टर और आर्टिलरी से लैस था। सैकंड लेफ्टिनेन्ट राने ने हमले का नेतृत्व किया, किन्तु उनकी कंपनी तीन तरफ से पड़ने वाले स्वचालित, सही और भारी गोलाबारी से एक स्थान पर ही अटक गई। यद्यपि टांग में बुरी तरह घायल हो गए थे किन्तु इन्होंने अपनी एक प्लाटून को बाजू की तरफ से आगे बढ़ाया ताकि दूसरी फंसी हुई दो प्लाटूनों को निकाला जा सके। ऐसा करते हुए इनकी दूसरी टांग में भी गोली लगी किन्तु अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए वे अपने फंसे हुए जवानों को निकालने के लिए तब तक लड़ाई का संचालन करते रहे, जब तक कि लड़ाई के मैदान में ही घावों से उनकी मृत्यु न हो गई।

इस कार्यवाही में सैकंड लेफ्टिनेन्ट जयेंद्र जयसिंह राने ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

27. सैकंड लेफ्टिनेन्ट बहादुर सिंह (आई सी—24250), सिख लाइट इन्फैन्ट्री। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसंबर, 1971)

15 दिसंबर, 1971 को, सिख लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन को, राजस्थान क्षेत्र में पर्वतअली पर शत्रु के रक्षात्मक मोर्चों पर कब्जा करने का काम सौंपा गया। हमले के दौरान प्रहार करने वाले सैन्य दल पर शत्रु ने तोपखाने और मीडियम मशीन गन से भारी गोलाबारी की और उससे भारी जानी नुकसान पहुंचाया। सैकंड लेफ्टिनेन्ट बहादुर सिंह ने देखा कि शत्रु बगल की एक बंकर से लगी मीडियम मशीनगन से गोलीबारी कर रहा है। मशीनगन को शांत करने के महत्व को समझते हुए अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना उन्होंने उस चौकी पर एक धावे का नेतृत्व किया और गन को शांत कर दिया। ऐसा करते समय इन पर मीडियम मशीन गन की गोलियों की बौछार पड़ी जिसकी वजह से लक्ष्य पर पहुंचने के तुरंत बाद वे वीर गति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में सैकण्ड लेफ्टिनेंट बहादुर सिंह ने उच्चकोटि के साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

28. सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट हवा सिंह (एस०एस०-23003), गोरखा राइफल्स। (मरणोपरान्त)

गोरखा राइफल्स की एक बटालियन को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक मोर्चे पर कब्जा करने का काम सौंपा गया। शत्रु ने इस मोर्चे पर खूब अच्छी तरह मोर्चाबन्दी कर रखी थी और उसके पास मीडियम मशीनगनें भी थीं। हमले के दौरान सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट हवा सिंह शत्रु की गोलाबारी से गम्भीर रूप से घायल हो गए। अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए वे अविचलित शत्रु की तरफ बढ़ते चले गए। इन्होंने शत्रु के पांच बंकर तबाह कर दिए और उसके बहुत से जवानों को मौत के घाट उतार दिया। इनके इस दिलेर कारनामे ने लक्ष्य पर कब्जा करने के लिए इनकी कम्पनी का हौसला बढ़ाया। बाद में घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट हवा सिंह ने प्रशंसनीय साहस, पहल शक्ति और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

29. सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट कंवरजीत सिंह (आई०सी०-24921), सिन्ध हार्स। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—12 दिसम्बर, 1971)

सैकण्ड लेफ्टिनेंट कंवरजीत सिंह शकरगढ़ क्षेत्र में सिन्ध हार्स के एक स्क्वाड्रन के एक ट्रूप की कमान कर रहे थे। 12 दिसम्बर, 1971 को स्क्वाड्रन को बन नदी के पास चक्रा नामक स्थान के सामने शत्रु से जो इस स्थान पर अधिकार किए हुए था, निबटने के लिए तैनात किया गया था। तगड़े मुकाबले और सही टैन्करोधी और तोपखाने के गोलाबारी के बावजूद सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट कंवरजीत सिंह दुश्मन के मोर्चों के पास पहुंच गए। लड़ाई में इन्होंने अपने ट्रूप का कारगर ढंग से परिचालन और इस्तैमाल किया जिससे बाकी का स्क्वाड्रन दुश्मन का पता लगाने, गोलाबारी करने और भारी तादाद में नुकसान से पहुचाने में समर्थ हुआ। सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट कंवरजीत सिंह ने खुद दुश्मन के दो मोर्चों और एक टैन्करोधी मिसाइल फैंकने के ठिकाने को नष्ट कर दिया। वे स्क्वाड्रन को लड़ाई के मैदान से निकालने मे संलग्न थे तो उनके टैन्क पर शत्रु ने भारी गोलाबारी कर दी। वे बिना डर अपने टैंक के खुले कुपोला में डटे रहे और स्क्वाड्रन को लड़ाई के मैदान से निकलने के काम का निर्देशन करते हुए अपने टैंक से सही गोलाबारी कराते रहे। जब वे इस काम में लगे हुए थे तो शत्रु की टैंकरोधी गन का एक गोला आकर उन्हें लगा और वे घातक रूप से घायल हो गए।

इस कार्यवाही में सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट कंवरजीत सिंह ने सराहनीय साहस, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

30. जे०सी० 17910 सूबेदार रजब अली,
राजपूताना राइफल्स। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 दिसम्बर, 1971)

7/8 दिसम्बर 1971 को रात को सूबेदार रजब अली राजपूताना राइफल्स की एक बटालियन की एक राइफल कम्पनी की कमान कर रहे थे। उन्होंने शत्रु की सुरक्षित चौकी शेशालैड पर किए गए आक्रमण का नेतृत्व किया। प्रहार के दौरान यह गम्भीर रूप से घायल हुए, किन्तु अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए इन्होंने हमले का दबाव बनाए रखा और शत्रु के मोर्चे के मजबूत स्थल पर धावा बोला। जहां पर यह लड़ते हुए शहीद हो गए।

इस कार्यवाही में सूबेदार रजब अली ने उच्चकोटि की कर्त्तव्य-परायणता, प्रेरक नेतृत्व और साहस का परिचय दिया।

31. जे०सी० 39418 सूबेदार श्रीधर दास,
मद्रास रेजिमेन्ट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 दिसम्बर, 1971)

सूबेदार श्रीधर दास मद्रास रेजिमेन्ट की एक बटालियन की एक कम्पनी में प्लाटून कमान्डर थे। 16 दिसम्बर, 1971 को इनकी बटालियन ने पश्चिमी क्षेत्र में हिंगोरा तार के रक्षित इलाके को ले लिया। 17 दिसम्बर, 1971 के प्रातःकाल शत्रु ने भारी संख्या में एक हमला कर दिया। सूबेदार श्रीधर दास ने अपनी सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना खाई-खाई जाकर अपने जवानों को शत्रु के हमले को पछाड़ने के लिए उत्साहित किया। यद्यपि वे बुरी तरह घायल हो गए थे फिर भी उन्होंने वहां से हटाया जाना अस्वीकार कर दिया। शत्रु ने आधे घन्टे बाद दूसरा हमला किया और इस बार वह हमारे मोर्चों के बिल्कुल पास आ गया। यह देख कर कि उनकी एक हल्की मशीनगन का चालक मारा गया है उन्होंने स्वयं हल्की मशीन गन संभाली और शत्रु के कई जवानों को मार डाला। लड़ाई में वे बुरी तरह घायल हो गए जिसके कारण वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में, सूबेदार श्रीधर दास ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

32 जे०सी० 15901 सूबेदार गुरचरन सिंह, एस०एम०
सिख रेजिमेन्ट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—12 दिसम्बर, 1971)

सूबेदार गुरचरन सिंह, राजस्थान क्षेत्र में पर्वत अली पर शत्रु के मोर्चों पर हमले के दौरान सिख रेजिमेंट की एक बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। ये अपने जवानों को शत्रु के इलाके में सुरंग क्षेत्र के पार 600 मीटर अन्दर तक ले गए और साहस और दृढ़-संकल्प के साथ उससे आमने सामने की लड़ाई लड़कर लक्ष्य पर कब्जा कर लिया। जब ये लक्ष्य पर अपनी टुकड़ी का पुनर्गठन कर रहे थे उस दौरान इन्होंने शत्रु की दो कम्पनियों को जवाबी हमले के लिए इकट्ठा होते देख लिया। उन्होंने अपनी प्लाटून के साथ शत्रु पर धावा बोल दिया। तेजी और दृढ़ता के साथ किए गए अचानक हमले से शत्रु का हमला छिन्न-भिन्न हो गया और वह घबराहट में पीछे हट गया।। इस हमले के दौरान वे घातक रूप से घायल हो गए और युद्ध के मैदान में ही वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में सूबेदार गुरचरन सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, पहल और नेतृत्व का परिचय दिया।

33. जे०सी० 33019 सूबेदार प्रीतम सिंह,
सिख लाइट इन्फैन्ट्री। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसम्बर, 1971)

सूबेदार प्रीतम सिंह शकरगढ़ क्षेत्र में संक्रियाओं के दौरान सिख लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन की एक कम्पनी के वरिष्ठ जे० सी० ओ० थे। सूबेदार प्रीतम सिंह की कमान में एक कम्पनी के एक प्लाटून को पिला डोगरान गांव को साफ करने का आदेश दिया गया। प्लाटून शत्रु की सही गोलाबारी में आ गया जिससे पांच जवान, जिसमें हल्की मशीनगन की एक टीम भी शामिल थी, मारे गए। परिस्थति की गम्भीरता को समझते हुए सूबेदार प्रीतम सिंह ने जल्दी से हल्की मशीनगन लेकर प्लाटून को फिर से संगठित किया। और अपने जवानों को हमला जारी रखने के लिए उत्साहित किया। इन की हल्की मशीनगन की गोलीबारी से दुश्मन की एक मीडियम मशीनगन शांत हो गई। इसी समय वे बुरी तरह घायल हो गए लेकिन उन्होंने वहां से हटाए जाने के लिए मना कर दिया। बाद में, घावों के कारण वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस कार्यवाही में, सूबेदार प्रीतम सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

34. जे० सी० 35308 सूबेदार राज बहादुर सिंह,
ब्रिगेड आफ गार्डस

(मरणोपरान्त)

सूबेदार राज बहादुर सिंह ब्रिगेड आफ गार्ड्स की एक बटालियन की एक कम्पनी के सहायक कमांडर थे। हमारी रक्षात्मक कार्यवाही के तौर पर इनकी कम्पनी को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी पर कब्जा करने का आदेश मिला। हमले के दौरान सूबेदार राज बहादुर सिंह एक सुरंग के फटने से घायल हो गए। शत्रु की मशीन गन की गोलीबारी ने उनकी कम्पनी के हमले को रोक दिया। अविचलित, अपने घावों की जरा भी परवाह न करते हुए सूबेदार राज बहादुर सिंह सुरंग क्षेत्र और तारों की रुकावट में से रेंग कर आगे बढ़े और इन्होंने बंकर के भीतर एक हथगोला फैंक कर उस मशीन गन को शान्त कर दिया। किन्तु घायल होने के कारण वे वीर गति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में सूबेदार राज बहादुर सिंह ने उच्चकोटि के साहस और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

35. जे० सी० 16783 सूबेदार सीता राम,
ग्रेनेडियर्स

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 दिसम्बर, 1971)

सूबेदार सीता राम, शकरगढ़ क्षेत्र में चक्रा पर हमले के दौरान ग्रेनेडियर्स की एक बटालियन की एक कम्पनी की बाईं ओर की अग्रिम प्लाटून की कमान कर रहे थे। इस मोर्चे की शत्रु ने अच्छी तरह किलाबन्दी कर रखी थी और वहां वह भारी संख्या में मौजूद था। इससे आगे 800 गज तक सुरंग क्षेत्र भी था। प्लाटून के संगठन और हमले के दौरान शत्रु ने छोटे हथियारों और तोपखाने से भारी और सही गोलाबारी शुरू कर दी। शत्रु की भारी गोलाबारी और अपने जवानों के जानी नुकसान की परवाह किये बिना सूबेदार सीता राम अपने जवानों को सुरंग क्षेत्र के पार ले गए और भयंकर लड़ाई लड़ कर लक्ष्य पर कब्जा कर लिया। हालांकि ये बुरी तरह घायल हो गए थे, फिर भी उन्होंने वहां से हटाये जाने से इंकार कर दिया। शत्रु ने निर्णित जवाबी हमला कर दिया और एक बार फिर सूबेदार सीता राम ने अपने घावों पर ध्यान दिए बिना ही, एक खाई से दूसरी खाई में कूद-कूद कर अपने जवानों को डटे रहने के लिए प्रेरित किया और शत्रु के हमले को विफल कर दिया। ऐसा करते समय ये पुनः घायल हो गए और अंत में इनको वहां से हटा दिया गया। लेकिन घावों के कारण वे वीर गति को प्राप्त हुए।

इस पूरी कार्यवाही के दौरान सूबेदार सीता राम ने उच्चकोटि की वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

36. 2544424 नायब सूबेदार चेरियन,
मद्रास रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

मद्रास रेजिमेंट की एक बटालियन को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक इलाके को मुक्त कराने का आदेश दिया गया था। जब सैनिक हमले के लिए विरचना कर रहे थे तो शत्रु ने मीडियम मशीन गन से सही और प्रभावी गोलीबारी शुरू कर दी। नायब सूबेदार चेरियन को शत्रु की मशीन गन को शान्त करने का कार्य सौंपा गया। वह छः जवानों को लेकर शत्रु की मशीन गन की चौकी की तरफ गये। जब वह टुकड़ी उस ठिकाने से लगभग 50 गज से कम फासले पर रह गई तो शत्रु ने उन पर मशीन गन से गोली चलाना शुरू कर दिया जिससे नायब सूबेदार चेरियन की बाजू और छाती पर गोलियां लगी और वे घायल हो गए। अविचलित, उन्होंने अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना जारी रखा और कार्यवाही का निर्देशन करते रहे। यद्यपि उनको पुनः एक गोली लगी, फिर भी वह अपनी टुकड़ी का नेतृत्व करते रहे जो कि शत्रु की मशीन गन को शान्त करने में सफल हुई। नायब सूबेदार चेरियन ने अपने घावों के कारण वीर गति पाई।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार चेरियन ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

37. जे० सी० 225 नायब सूबेदार सुल्तान मुहम्मद खां,
जम्मू और कश्मीर मिलिशिया

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 दिसम्बर, 1971)

नायब सूबेदार सुल्तान मुहम्मद खां को कारगिल क्षेत्र के एक इलाके में शत्रु के एक सुदृढ़ ठिकाने की टोह लगाने के लिए, गश्ती दस्ता ले जाने का आदेश दिया गया था। 8 दिसम्बर 1971 को शत्रु के मोर्चों की खोज लगाते हुए, हल्की मशीन गन ले जाने वाली एक टुकड़ी भटक कर शत्रु के सुरंग क्षेत्र में चली गई और उसके सदस्य सुरंग के फट जाने से घायल हो गए। इससे शत्रु चौकन्ना हो गया और उसने स्वचालित हथियारों से गोलीबारी शुरू कर दी। नायब सूबेदार सुल्तान मुहम्मद खां खतरा महसूस करते हुए अपनी मशीन गन को बाहर निकाल लाने के लिए दौड़े। गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद, वे रेंगते हुए हल्की मशीन गन तक जा पहुंचे और शत्रु से उस समय तक लड़ते रहे, जब तक कि उनकी टुकड़ी ने शत्रु के बंकर को नष्ट न कर दिया। फिर उन्होंने अपनी हल्की मशीन गन को एक उपयुक्त स्थान पर लगाया और शत्रु पर गोलाबारी करते रहे और इस तरह इस कार्यवाही की सफलता में अपना महत्वपूर्ण योग दिया। बाद में जब उन्हें युद्ध स्थल से बाहर निकाला जा रहा था तो विमान दुर्घटना में उन्होंने वीर गति पाई।

इस कार्यवाही के दौरान, नायब सूबेदार सुल्तान मुहम्मद खां ने उच्चकोटि की वीरता दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

38. जे० सी० 46727 नायब सूबेदार माम चन्द शर्मा
महार रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

नायब सूबेदार माम चन्द शर्मा पूर्वी क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी पर हमले के समय महार रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कम्पनी की प्लाटून की कमान कर रहे थे। शत्रु बहुत ही अधिक सुदृढ़ मोर्चों पर जमा हुआ था और उसके पास मीडियम मशीन गनें भी थीं। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना हमले का नेतृत्व किया। हमले के दौरान उनकी प्लाटून पर एक मकान की ऊपरी मंजिल से भारी और सही मशीन गन की गोलीबारी होने लगी, जिससे उनकी प्लाटून का भारी जानी नुकसान होने लगा। नायब सूबेदार माम चन्द शर्मा ने अपने जवानों का स्वयं नेतृत्व किया और मशीन गन चौकी पर हमला कर दिया। इस हमले के दौरान उनके वक्षस्थल पर गोली लगी परन्तु फिर भी वे अविचलित रहे और वह प्रहार करते रहे और युद्ध क्षेत्र में घावों के कारण वीरगति प्राप्त करने से पहले उन्होंने शत्रु की मशीन गन को शान्त कर दिया।

उस कार्यवाही में नायब सूबेदार राम चन्द शर्मा ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

39. 3141913 कम्पनी हवलदार मेजर कृष्ण सिंह,
जाट रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

जाट रेजिमेंट की एक बटालियन को कोमिला हवाई मैदान से शत्रु को हटाने का कार्य सौंपा गया था। शत्रु ने इस ठिकाने की पूरी तरह किलेबन्दी कर रखी थी और भारी संख्या में उसके सिपाही वहां मौजूद थे। प्रहार के दौरान बटालियन की एक कम्पनी पर शत्रु की दो मशीन गनों से बहुत भारी और सही गोलीबारी शुरु कर दी। इन मशीन गनों को शान्त करने की जरूरत को समझकर कम्पनी हवलदार मेजर कृष्ण सिंह ने एक मशीन गन चौकी पर अकेले ही हमला किया और उस पर कब्जा कर लिया। शत्रु की दूसरी मशीन गन बराबर गोलाबारी कर रही थी और हमारी टुकड़ियों को जानी नुकसान पहुंचा रही थी। उन्होंने दूसरी मशीन गन चौकी पर भी अकेले ही हमला बोल दिया और शत्रु के हाथ से मशीनगन छीन ली। जब वह इसे वापस ला रहे थे तो उन्हें गोली लगी और उन्होंने युद्ध क्षेत्र में वीरगति पाई।

इस कार्यवाही के दौरान कम्पनी हवलदार मेजर कृष्ण सिंह ने उच्चकोटि के साहस और दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

10. 9201205 हवलदार बुद्धि बल्लभ,
महार रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

हवलदार बुद्धि बल्लभ महार रेजिमेंट की एक बटालियन में प्लाटून हवलदार थे। पूर्वी क्षेत्र में अधिकृत चौकी पर हमले के दौरान इनकी प्लाटून को शत्रु के दो बंकरों के सामने उसके भारी और सही गोलाबारी के कारण रुकना पड़ा। इनकी प्लाटून के आधे सैनिक या तो मारे गए या घायल हो गए। फिर भी वे निडर हो कर इधर मरे और घायल सैनिक के पास जा-जाकर उसका गोला बारूद इकट्ठा किया और उसे उन सैनिकों को दिया जो अब भी लड़ रहे थे। जब उन्होंने देखा कि उनकी प्लाटून शत्रु की गोलीबारी और उसके बहुत अधिक निकट आने के कारण आगे नहीं बढ़ पा रही है तो हवलदार बुद्धि बल्लभ शत्रु के बंकर को नष्ट करने के लिए उसकी ओर रेंग कर पहुंचे, परन्तु उन्हें मशीन गन की गोलियों की बौछार लगी जिससे वे वहीं पर शहीद हो गए। उनकी दृढ़ता, साहस और निजी उदाहरण ने उनके सैनिकों को शत्रु पर हमला करने और लक्ष्य पर कब्जा करने की प्रेरणा दी।

इस कार्यवाही के दौरान हवलदार बुद्धि बल्लभ ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

41. 2240521 हवलदार दयानन्द राम,
राजपूताना राइफल्स

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

हवलदार दयानन्द राम राजस्थान क्षेत्र में इस्लामगढ़ के स्थान पर, शत्रु की एक चौकी पर अपनी बटालियन के हमले में एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। इस चौकी पर शत्रु भारी तादाद में था और उसने इसकी खूब मजबूत मोर्चा-बंदी कर रखी थी। हमले के दौरान इनकी प्लाटून शत्रु के छोटे हथियारों की भारी और प्रभावी गोली-बारी के बीच आ गई। घायल होने के बाजजूद हवलदार दयानन्द राम अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए शत्रु की चौकी पर हमला बोल दिया और घावों के कारण शहीद होने से पहले उस पर कब्जा करने में सफल हुए।

इस कार्यवाही में हवलदार दयानन्द राम ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

42. 1026586 दफादार हरबीर सिंह
आर्मर्ड डिलीवरी रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

दफादार हरबीर सिंह, आर्मर्ड डिलीवरी रेजिमेंट के ट्रूप के आगे वाले टैंक के कमांडर थे, जिसे शत्रु के एक बड़े बख्तरबन्द सैनिक हमले को विफल करने के लिए राजस्थान क्षेत्र में लोंगेवाला को भेजा गया था। वह अपनी सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना वे शत्रु के टैंकों से भिड़ गए और उन पर सही और भारी गोलीबारी करके शत्रु के दो टैंक नष्ट कर दिए। इनके टैंक पर बाजू से शत्रु के टैंक का गोला लगा जिसके फलस्वरूप वे शहीद हो गए।

इस कार्यवाही में दफादार हरबीर सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

43. 4039278 हवलदार देवेन्द्र सिंह कन्दारी,
कुमाऊं रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 दिसम्बर, 1972)

10 दिसम्बर 1971 को हवलदार देवेन्द्र सिंह कन्दारी कुमाऊं रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कम्पनी में प्लाटून हवलदार थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में एक स्थान पर शत्रु के मोर्चों पर हमला करने के लिए तैनात किया गया था। हमले के दौरान कम्पनी के प्लाटून कमांडर मारे गए और उन्होंने प्लाटून की कमान सम्भाल ली। जब वे लक्ष्य पर पहुंचे तो शत्रु ने भीतरी इलाकों से छोटे हथियारों से उन पर बिल्कुल पास से गोलबारी कर दी। अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना वे शत्रु के सुदृढ़ बंकरों की ओर लपके और शत्रु से गुत्थम-गुत्था हो गये। उन्होंने शत्रु की एक गन डिटैचमैन्ट को मौत के घाट उतार कर उसकी एक हल्की मशीन गन छीन ली। ऐसा करते हुए उनके पेट में गहरा घाव लगा, जिसके कारण उन्होंने वीर गति पाई।

इस कार्यवाही, के दौरान हवलदार देवेन्द्र सिंह कन्दारी ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

44. 13652879 हवलदार हरी दास नाग,
ब्रिगेड आफ गार्डस

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसम्बर 1971)

हवलदार हरी दास नाग, ब्रिगेड आफ गार्डस की एक बटालियन को उस प्लाटून के प्लाटून हवलदार थे जिसे कारगिल क्षेत्र में एक स्थान पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। इन्होंने अपनी इच्छा से शत्रु की उस मशीन गन-पोजीशन को नष्ट करने का बीड़ा उठाया जो हमारी कम्पनी के हमले को रोके हुए थी। वे शत्रु बंकर तक गए, उसमें एक ग्रेनेड फैंका और अकेले ही निडर होकर मशीन गन के चालक को मार डाला। ऐसा कर चुकने के बाद इन्होंने खड़े हो कर अपनी कम्पनी को इशारा किया कि मशीन गन बंकर नष्ट हो चुका है। इसी बीच शत्रु का फैंका हुआ एक ग्रेनेड उनके पास फटा जिसकी वजह से वे वीर गति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में हवलदार हरी दास नाग ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

45. 5334168 हवलदार सोम बहादुर थापा,
गोरखा राइफल्स

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

5/6 दिसम्बर 1971 की रात को गोरखा राइफल्स की एक बटालियन की एक कम्पनी को पश्चिमी क्षेत्र में चक पूरा पर शत्रु की एक सीमा चौकी पर कब्जा करने का काम सौंपा गया। यह एक अच्छी तरह मोर्चाबंद मजबूत चौकी थी, जिस पर दुश्मन भारी तादाद में था और जिसके पास मीडियम मशीन गनें, रिकाइ लैस गनें और मोटर थे। जैसे ही कम्पनी हमले के लिए एकत्रित हुई, बाएं वाली अगली प्लाटून पर, जिसकी कमान हवलदार सोम बहादुर थापा कर रहे थे, शत्रु ने तोपखाने और छोटे हथियारों से भारी और सही गोलीबारी शुरू कर दी और बहुत ज्यादा जानी नुकसान पहुंचाया बिना घबराये हवलदार सोम बहादुर थापा ने जल्दी से अपनी प्लाटून को संगठित किया और हमला बोल दिया। तोपखाने के एक गोले से बुरी तरह घायल हो जाने के बावजूद भी इन्होंने अपने जवानों को लक्ष्य पर धावा बोलने और उस पर कब्जा करने के लिए प्रेरित किया। लक्ष्य पर पहुंचते ही, हवलदार सोम बहादुर थापा घायल होने की वजह से वीर गति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में, हवलदार सोम बहादुर थापा ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया

46. 2444085 लांस हवलदार दिलबाग सिंह,
पंजाब रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-12 दिसम्बर, 1971)

लांस हवलदार दिलबाग सिंह शकरगढ़ क्षेत्र में सक्रियाओं के दौरान पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन के पायनियर प्लाटून में सैक्शन कमांडर थे। शावाजपुर मोर्चे पर कब्जा कर लेने के बाद, लांस हवलदार दिलबाग सिंह को 600 गज फासले तक बिछे सुरंग क्षेत्र में से एक निरापद रास्ता बनाने का काम सौंपा गया। शत्रु की गोलीबारी के बावजूद और अपनी निजी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना इन्होंने सुरंगों का पता लगाना और उन्हें हटाना जारी रखा। लांस हवलदार दिलबाग सिंह करीब-करीब सुरक्षित रास्ता बना चुके थे कि तभी एक टैंकरोधी सुरंग बेकार करते समय इनके चिथड़े उड़ गए।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार दिलबाग सिंह ने सराहनीय साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

47. 3144417 लांस हवलदार गंगा धर,
जाट रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-4/5 दिसम्बर, 1971)

4 दिसम्बर 1971 को, पश्चिमी क्षेत्र में गुरमुख खेड़ा स्थान पर जाट रेजिमेंट की एक बटालियन ने कब्जा कर लिया। इस ठिकाने पर हमारा कब्जा होने के तुरन्त बाद ही शत्रु ने पिलबाक्स में लगी मीडियम मशीन गन से इस क्षेत्र के मुहाने पर भारी गोलबारी करके हमारी सेना का आगे बढ़ना रोक दिया। शत्रु के पिलबाक्स को शान्त करने के लिए जाने वाली आत्मघाती स्कवाड में लांस हवलदार गंगा धर स्वेच्छा से शामिल हो गए वे अपने दो और साथियों के साथ शत्रु के बंकर की ओर रेंग कर जाने लगे और जब वे तीनों उस बंकर से लगभग 10-15 गज ही दूर रह गए थे, लांस हवलदार गंगाधर बंकर की ओर तेजी से लपके और उसमें ग्रेनेड फैंक कर उसे शान्त कर दिया। इस कार्यवाही में उन्हें शत्रु ने करीब से गोली मार दी जिसकी वजह से वे वीर गति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार गंगा धर ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

48. 2951066 लांस हवलदार ज्ञान चंद,
राजपूत रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-15 दिसम्बर, 1971)

लांस हवलदार ज्ञान चंद रराजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन की प्लाटूनों में से एक प्लाटून के कमांडर थे, जिसे पूर्वी क्षेत्र के एक स्थान पर सड़क पर रुकावट खड़ी करने का काम सौंपा गया था। शत्रु ने आर्टीलरी, मोटरों और स्वचालित हथियारों से सही गोलाबारी करके हमारे जवानों को सड़क पर की गई रुकावट से हटाने का बार बार प्रयास किया। लास हवलदार ज्ञान चंद की निगाह शत्रु के उस बंकर पर पड़ी, जहां से भारी मशीन गन की गोलीबारी हमारे जवानों को जानी नुकसान पहुंचा रही थी। अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए इन्होंने एक हलकी मशीन गन उठाई और शत्रु के बंकर की तरफ रेंगना शुरू किया। ऐसा करते हुए वे गंभीर रूप से घायल हुए, लेकिन अपने घावों की परवाह न करके वे आगे बढ़ते गए। जब वे बंकर से कुछ गज के फासले पर रह गए तो इन्होंने अपनी हल्लकी मशीन गन से गोलियों की वारिश की और वहां तनात पांचों सिपाहियों को मार डाला। उन्होंने शत्रु की इस बंकर पर कब्जा करने की सब कोशिशों को असफल कर दिया। बंकर तक डाक्टरी सहायता पहुंचने से पहले ही लांस हवलदार ज्ञान चंद घावों के कारण शहीद हो गए।

इस कार्यवाही में लास हवलदार ज्ञान चंद ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

49. 5233730 लांस हवलदार टेक बहादुर गुरंग,
पैराशूट रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

लांस हवलदार टेक बहादुर गुरंग पैराशूट रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कम्पनी के सैक्शन कमांडर थे जिसे गंगा नगर के एक क्षेत्र पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया था। कम्पनी पर तोपखाने और मशीन गनों से भारी गोलाबारी की गई। जब हमला करने वाले सैनिक लक्ष्य से लगभग 50 गज की दूरी पर रह गए थे तो हल्की मशीन गन का चालक घातक रूप से घायल हो गया। लांस हवलदार टेक बहादुर गुरंग ने फौरन ही मशीन गन को उठा लिया और शत्रु पर हमले का दबाव जारी रखा। लक्ष्य पर पहुंचते ही उन्होंने शत्रु की मशीन गन बंकर पर धावा बोल दिया, इसके अन्दर हथगोला फैंका और मशीन गन को शान्त कर दिया। ऐसा करते समय शत्रु की दूसरी मशीन गन की गोलियों की एक बौछार उनकी छाती पर लगी जिसके कारण उन्होंने वीरगति पाई।

इस कार्यवाही के दौरान लांस हवलदार टेक बहादुर गुरंग ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

50. 1021241 लांस हवलदार लक्ष्मण राणे,
मराठा लाइट इन्फैन्ट्री

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 दिसम्बर 1971)

लांस हवलदार लक्ष्मण राणे मराठा लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन में एक सैक्शन कमांडर थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में जमालपुर में शत्रु के मोर्चों के दक्षिण में एक सड़क को रोके रखा था। 10/11 दिसम्बर 1971 की रात को लांस हवलदार लक्ष्मण राणे के सैक्शन पर शत्रु ने भारी संख्या में हमला कर दिया। शत्रु दल के पहले हमले को बेकार कर देने पर शत्रु ने नये सैनिकों से फिर आक्रमण कर दिया। लांस हवलदार राणे अपनी खाई से कूदकर बाहर आ गए और शत्रु पर संगीन लेकर टूट पड़े और शत्रु के तीन सैनिकों को मार कर खुद संगीन लगने से शहीद हो गए।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार लक्ष्मण राणे ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

51. 13710771 लांस हवलदार रघबीर सिंह,
जम्मू और कश्मीर राइफल्स

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—03 दिसम्बर, 1971)

लांस हवलदार रघबीर सिंह, जम्मू और कश्मीर राइफल्स की एक बटालियन में सैक्शन कमांडर थे। उन को, खालड़ा-हुड़ियारा अक्ष पर स्थित अपर बारी दोआब नहर पर बने खालड़ा पुल की सुरक्षा का काम सौंपा गया था। 3 दिसम्बर 1971 को अंधेरा होने पर शत्रु ने खालड़ा में हमारे मोर्चों पर भारी संख्या में हमला कर दिया। हालांकि शत्रु संख्या में कई गुना था और उसने उन्हें पूरी तरह से घेर लिया था फिर भी इन्होंने अपने सैक्शन को ठिकाने पर जमे रहने के लिए उत्साहित किया और शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुंचाया। ऐसा करते समय ये बुरी तरह घायल हो गये और अन्त में घावों की वजह से ही वीर गति को प्राप्त हुए, लेकिन उनका सैक्शन अपने ठिकाने पर डटा रहा और पुल को शत्रु के कब्जे में नहीं जाने दिया।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार रघबीर सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

52. 2747481 नायक एकनाथ करदेव,
मराठा लाइट इन्फैन्ट्री

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

4/5 दिसम्बर 1971 की रात को मराठा लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। एक बंकर से मीडियम मशीन गन का लगातार सही गोलीबारी के कारण हमारे जवानों का हमला रुक गया। नायक एकनाथ करदे ने शत्रु के बंकर पर हमला करके मशीन गन को शान्त कर दिया और इस तरह शत्रु के इलाके पर कब्जा किया जा सका। इसी दौरान इन्हें मशीन गन की गोलियों की बौछार लगी जिसके कारण इनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में नायक एकनाथ करदेव ने उच्चकोटि की वीरता, और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

53. 2550237 नायक मणी,
मद्रास रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 दिसम्बर, 1971)

नायक मणी मद्रास रेजिमेंट की एक बटालियन में एक सैक्शन कमांडर थे जिसे राजस्थान क्षेत्र के एक इलाके में तैनात किया गया था। 16 दिसम्बर 1971 को शत्रु ने इनके बटालियन के ठिकाने पर बड़े जोर की गोलाबारी की। नायक मणी ने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, एक खाई से दूसरी खाई में जाकर मोर्चे खोदने का काम पूरा कराया। 17 दिसम्बर 1971 की सुबह ही शत्रु ने भारी तोपखाने और मीडियम मशीन गनों से गोलीबारी करते हुए भयंकर हमला कर दिया। उनके सैक्शन की हल्की मशीन गन चौकी पर गोला लगा और वह बेकार हो गई। उन्होंने फौरन हल्की मशीन गन सम्भाल ली और तब तक गोलीबारी करते रहे जब तक कि वे घायल होने के कारण शहीद न हो गए।

इस कार्यवाही में नायक मणी ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

54. 2956048 नायक रमेश चन्द,
राजपूत रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

नायक रमेश चन्द राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन के एक सैक्शन की कमान कर रहे थे, जब कि पूर्वी क्षेत्र में एक स्थान पर शत्रु के ठिकानों से किए जाने वाले प्रभावी मशीन गन की गोलीबारी से अगली प्लाटून का आगे बढ़ना रुक गया। नायक रमेश चन्द को पुल पर से शत्रु का सफाया करने का आदेश दिया गया। ज्योंही इस सैक्शन ने हमला किया उस पर शत्रु ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी। नायक रमेश चन्द ने एक हल्की मशीन गन उठा ली और रेंगते हुए शत्रु की मशीन गन के बंकर की ओर बढ़कर उसमें हथगोले फैंके। लेकिन ऐसा करते समय उनके बाजू पर शत्रु की गोली लगी। शत्रु ने शीघ्र ही एक दूसरे बंकर में जा कर वहां से गोलीबारी शुरू कर दी।

अपने घाव की तनिक भी परवाह किए बिना, वे दूसरी मशीन गन को नष्ट करने की कोशिश में रेंगते हुए दोबारा आगे बढ़े । अपनी हल्की मशीन गन को जमा कर उन्होंने शत्रु पर भारी कारगर गोली-बारी की जिसने हमलावर सैनिकों की ओर गोलीबारी बन्द करके, नायक रमेश चन्द पर गोलीबारी करना शुरू कर दिया । ऐसा करते हुए शत्रु की मशीनगन की गोलियों की एक बौछार नायक रमेश चन्द पर पड़ी जिसके कारण उन्होंने वीर गति पाई ।

इस कार्यवाही के दौरान नायक रमेश चन्द ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय, और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

55. 2558988 नायक सहदेवन,
मद्रास रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 दिसम्बर, 1971)

नायक सहदेवन पश्चिमी क्षेत्र में तैनात मद्रास रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कम्पनी में सैक्शन कमांडर थे । 15/16 दिसम्बर, 1971 की रात को सबसे आगे वाली कम्पनी के हमले में शत्रु की एक मीडियम मशीन गन रुकावट डाल रही थी । नायक सहदेवन, अपनी सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना दौड़कर मीडियम मशीन गन की चौकी पर पहुंचे और ग्रेनेड फैंक कर उसे शान्त कर दिया । इस कार्यवाही में उन्हें एक गोली लगी और वे शहीद हो गए ।

इस कार्यवाही में नायक सहदेवन ने उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया ।

56. 5437972 लांस नायक गोबर्धन अधिकारी,
गोरखा राइफल्स

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर, 1971)

15 दिसम्बर 1971 को गोरखा राइफल्स की एक बटालियन की एक कम्पनी पूर्वी क्षेत्र में एक स्थान पर शत्रु के बचे-खुचे सैनिकों का सफाया कर रही थी । लांस नायक गोबर्धन अधिकारी को जो एक सैक्शन की कमान कर रहे थे मकानों से शत्रु को बाहर निकालने का कार्य सौंपा गया था । जब वे आगे बढ़ रहे थे तो उनके सैक्शन पर शत्रु ने एक खिड़की से मीडियम मशीन गन से गोलीबारी शुरू कर दी । वे अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना, शत्रु की मीडियम मशीन गन की गोलीबारी के बीच रेंग कर उस खिड़की तक जा पहुंचे और वहां जाकर खिड़की के अन्दर उन्होंने हथगोला फेंका, जिससे गन को क्षति पहुंची और उस पर काम करने वाले शत्रु के जवान मारे गए । इस अवसर पर सड़क के पार लगी शत्रु की मशीन गन से उन पर गोली चला दी । लांस नायक गोबर्धन अधिकारी ने उस मीडियम मशीन गन की तरफ धावा बोल दिया । ऐसा करते समय उनके मुख पर एक गोली लगी जिसके कारण उन्होंने वीर गति पाई ।

इस कार्यवाही के दौरान, लांस नायक गोबर्धन अधिकारी ने उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया ।

57. 3353350 नायक गुरजंत सिंह,
सिख रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—12 दिसम्बर, 1971)

नायक गुरजंत सिंह 12 दिसम्बर 1971 की रात को राजस्थान क्षेत्र में पर्वतश्रेणी पर आक्रमण करने वाली सिख रेजिमेंट की एक बटालियन के प्रहार करने वाली प्लाटूनों में से एक प्लाटून के सैक्शन कमांडर थे । जब इनकी प्लाटून ने लक्ष्य पर कब्जा कर लिया तब शत्रु को जवाबी हमले की तैयारी करते देखा गया । इनकी प्लाटून को शत्रु पर धावा करके उसके हमले को विफल बनाने को हुक्म दिया गया । नायक गुरजंत सिंह ने आमने-सामने की लड़ाई में अपने सैक्शन का नेतृत्व किया और स्वयं घाव के कारण वीर गति पाने से पहले शत्रु के सात जवानों को अपनी संगीन से मार डाला ।

इस कार्यवाही में नायक गुरजंत सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय किया ।

58. 9072795 लांस नायक मोहन लाल,
जम्मू एवं कश्मीर मिलिशिया

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 दिसम्बर, 1971)

7 दिसम्बर 1971 की रात को लांस नायक मोहन लाल पश्चिमी क्षेत्र में एक पिकेट पर तैनात जम्मू एवं कश्मीर मिलिशिया की एक बटालियन की मीडियम मशीन गन पर कार्यरत थे । उस समय शत्रु ने तोपखाने से भारी गोलाबारी करके बड़ी संख्या में इस पिकेट पर हमला कर दिया और प्रायः इस इलाके की अगली खाइयों को तहस-नहस कर डाला। लांस नायक मोहन लाल ने बिना डरे, शत्रु पर गोलीबारी जारी रखी, जिससे वह और आगे न बढ़ सका । इस तरह हमारे सैनिकों को जवाबी हमले के लिए पुनः गठन का समय मिल गया । हमारे जवाबी हमले के फलस्वरूप शत्रु को पीछे हटना पड़ा । आखिर में लांस नायक मोहन लाल का मृत शरीर उनकी मीडियम मशीन गन चौकी पर पाया गया लेकिन बंकर के सामने शत्रु के कम्पनी कमांडर सहित उन्नीस और लाशें भी मिलीं ।

इस कार्यवाही के दौरान लांस नायक मोहन लाल ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया ।

59. 3348614 नायक नायब सिंह,
सिख रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)

नायक नायब सिंह पश्चिमी क्षेत्र में एक रक्षित इलाके में थे । 3/4 दिसम्बर, 1971 की रात में शत्रु ने भारी संख्या में उनकी चौकी पर हमला किया । नायक नायब सिंह ने अपने सैनिकों को लड़ने का जोश दिलाया और उनकी गोलीबारी का निर्देशन किया । जब उनका गोला बारूद समाप्त हो गया तो गुत्थम-गुत्था करके उन्होंने शत्रु के एक जवान को अपनी संगीत से मार डाला । लड़ते समय इन्हें गंभीर घाव लगे जिनकी वजह से वे वीर गति को प्राप्त हुए ।

इस कार्यवाही के दौरान नायक नायब सिंह ने उच्चकोटि के संयमित साहस, और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया ।

60. 2950437 नायक राज सिंह,
राजपूत रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

नायक राज सिंह, राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन के सैक्शन कमांडर थे । इनकी कम्पनी को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी का

सफाया करने का आदेश दिया गया । उनके प्रहार को तोड़ने के लिए शत्रु ने स्वचालित हथियारों से भारी और सही गोलीबारी शुरू कर दी और तीन ग्रेनेट फेंके । इन्होंने अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना अपने सैक्शन का नेतृत्व किया और शत्रु के ठिकाने की ओर लपके । इनके सिर में शत्रु की गोली लग गई । इसके बावजूद इन्होंने शत्रु की हल्की मशीन गन बंकर पर धावा बोल दिया । अपने घावों के कारण वीर गति पाने से पहले, इन्होंने ग्रेनेड फेंक कर उसे नष्ट कर दिया ।

इस कार्यवाही में नायक राज सिंह ने उच्चकोटि के साहस, कर्त्तव्यपरायणता और नेतृत्व का परिचय दिया ।

61. 4152120 लांस नायक दुर्गा दत्त,
कुमाऊं रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

5 दिसम्बर 1971 को राजस्थान क्षेत्र के गद्रा स्थान पर शत्रु की चौकी पर हमले के दौरान, लांस नायक दुर्गा दत्त, शत्रु की एक मीयडयम मशीन गन बंकर तक रेंगकर पहुंचे, उसमें एक ग्रेनेट फेंका और कर्मीदल समेत गन को नष्ट कर दिया । जब वे दूसरी बंकर की ओर रेंग रहे थे तो उनके सिर पर मशीन गन की गोलियों की बौछार पड़ी । अपनी गहरी चोटों की परवाह किए बिना, वे आगे बढ़े और एक ग्रेनेट फेंक कर दूसरी मशीन गन चौकी को भी ठंडा कर दिया । बाद में उन्हें लक्ष्य पर बुरी तरह घायल हालत में बेहोश पाया गया और बाद में घावों के कारण इन्होंने वीर गति पाई ।

इस कार्यवाही में लांस नायक दुर्गा दत्त ने उच्चकोटि की वीरता दिखाई ।

62. 53839599 लांस नायक जर जग गुरंग,
गोरखा राइफल्स

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)

लांस नायक जर जग गुरंग एक और जवान के साथ 3/4 दिसम्बर 1971 की रात को पश्चिमी क्षेत्र में एक रक्षित इलाके के आगे श्रवण चौकी पर तैनात थे । जब शत्रु ने उन्हें घेर लिया तो उन्होंने अपने साथी को कम्पनी कमांन्डर के पास शत्रु के आने की सूचना देने के लिए भेजा और स्वयं शत्रु के सामने 2 घंटे से भी ज्यादा देर तक डटे रहे । जब उनका गोलाबारूद समाप्त हो गया तो उन्होंने संगीत से शत्रु पर हमला किया । लड़ाई के दौरान उन्हें गंभीर घाव लगे जिनकी वजह से उन्होंने वीर गति पाई ।

इस कार्यवाही में, लांस नायक जर जग गुरंग ने कर्त्तव्य की उच्च भावना, साहस और उच्चकोटि के दृढ़ संकल्प का परिचय दिया ।

63 9070949 लांस नायक जनक सिंह,
जम्मू एंव कश्मीर मिलिशिया

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि— 5 दिसम्बर 1971)

लांस नायक जनक सिंह उस टुकड़ी के सदस्य थे जिसे 5 दिसम्बर 1971 को गुरेस क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी पर छापा मारने का काम सौंपा गया था । लांस नायक जनक सिंह अगली प्लाटून का नेतृत्व करने वाले स्काउट थे जबकि शत्रु ने आगे बढ़ते हुए इस टुकड़ी पर मशीन गन से गोलीबारी की । अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना उन्होंने शत्रु के मशीन गन बंकर पर हमला किया और उसे नष्ट कर दिया, परन्तु वे बुरी तरह घायल हो गये और युद्ध क्षेत्र में ही उन्होंने वीर गति पाई ।

इस कार्यवाही के दौरान लांस नायक जनक सिंह ने उच्चकोटि के साहस और पहल का परिचय दिया ।

64 13727300 लांस नायक (अनपेड) मगर सिंह,
जम्मू एंव कश्मीर राइफल्स

(मरणोपरान्त)

जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स की एक बटालियन पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के मोर्चे से लगभग 400 मीटर के फासले पर एक क्षेत्र में रक्षात्मक ठिकाने पर तैनात थी । भारी बमबारी के बाद शत्रु ने इस ठिकाने पर बड़ी संख्या में हमला किया । लांस नायक मगर सिंह ने जो सबसे अग्रिम सैक्शन की कमान कर रहे थे । अपने जवानों को हमले को विफल करने के लिए प्रोत्साहित किया और हमले को विफल कर दिया । एक हल्की मशीन गन चौकी के करीब शत्रु के तोप का एक गोला गिरा, जिससे वहां तैनात कर्मी घायल हो गए । लांस नायक मगर सिंह जान की जरा भी परवाह न करते हुए अपनी खाई में से कूद कर बाहर आए, दौड़ कर हल्की मशीन गन चौकी पर पहुंचे और मशीन गन को अपनी खाई में ले आए और गोलीबारी जारी रखी । शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुंचा कर उसके हमले का दबाव एकदम रोक दिया । लांस नायक मगर सिंह को गोले का किरचा लगा और यह अपनी चौकी पर ही शहीद हो गए ।

इस कार्यवाही में लांस नायक मगर सिंह ने प्रशंसनीय साहस और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया ।

65 1277821 गनर (जी० डी०) आरमुगम,
एयर डिफेंस रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

5 दिसम्बर 1971 को, श्रीनगर के हवाई अड्डे को हवाई हमलों से बचाव के लिए गनर (जी० डी०) आरमुगम को विमान भेदी तोप पर तैनात किया गया । जब शत्रु के नौ सैबर जेट विमानों ने हमला किया तो उन्होंने अपनी गन से सही गोलीबारी करके शत्रु के एक वायुयान को मार गिराया । हालांकि वे गंभीर रूप से घायल हो गए थे, फिर भी वे उस समय तक अपनी गन से गोली चलाते रहे जब तक कि वे घावों के कारण शहीद न हो गए ।

इस कार्यवाही में गनर (जी० डी०) आरमुगम ने उच्चकोटि की वीरता और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया ।

66. 2955911 सिपाही विरधा राम,
राजपूत रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर, 1971)

सिपाही विरधा राम राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन की उस रिकायललेस राइफल टुकड़ी के कर्मीदल में शामिल थे जिसने

पूर्वीक्षेत्र के पास एक स्थान पर शत्रु की मोर्चाबन्दियों के पीछे सड़क रूकावटें लगा रखी थी। यहां से बटालियन को हटाने के लिए, 15 दिसम्बर 1971 को शत्रु ने मुदृढ़ हमला किया और कम्पनी के ठिकानों पर, जिसमें यह रिकायललेस राइफल लगी हुई थी, मशीन गन और मार्टर से भारी गोलाबारी शुरू कर दी। रिकायललेस गन मोर्चे पर शत्रु की सीधी मार पड़ी जिससे वह मोर्चा नष्ट हो गया और टुकड़ी का दूसरा कर्मी घायल हो गया। सिपाही विरधा राम ने रिकायललेस राइफल को उठा लिया और अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना आगे बढ़ते हुए शत्रु के पास पहुंच कर अपनी रिकायललेस राइफल से उसकी मीडियम मशीन गन चौकी को नष्ट कर दिया। जब ये दूसरे मोर्चे की ओर बढ़ रहे थे तो उस समय उनकी छाती में शत्रु की गोली लगी जिसके कारण उन्हें वहीं पर वीर गति प्राप्त हुई।

इस कार्यवाही में सिपाही विरधा राम ने उच्चकोटि की वीरता और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

67. 2647963 ग्रेनेडियर गोरख राम,
ग्रेनेडियर्स

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथी 11 दिसम्बर, 1971)

ग्रेनेडियर्स की एक बटालियन की कम्पनी हेडक्वार्टर्स टीम के सदस्य ग्रेनेडियर गोरख राम ने पश्चिमी क्षेत्र के चक्रा स्थान में शत्रु की मोर्चाबन्दियों पर हमारे हमले में हिस्सा लिया। 10/11 दिसम्बर, 1971 की रात को शत्रु द्वारा की जा रही छोटे हथियारों और तोपखाने से जोरदार गोलाबारी के बीच हमला शुरू किया गया। हमले के दौरान कम्पनी हैडक्वार्टर्स पर, नजदीक के एक बंकर में लगी शत्रु की मशीन गन से प्रभावी गोलीबारी होने लगी। यद्यपि ग्रेनेडियर गोरख राम बुरी तरह घायल हो गए थे फिर भी उन्होंने अकेले ही मशीन गन चौकी पर धावा बोल दिया। घावों के कारण वीर गति पाने से पहले उन्होंने शत्रु की मशीन गन को शान्त कर दिया।

इस कार्यवाही में ग्रेनेडियर गोरख राम ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़निश्चय का परिचय दिया।

68. 2649837 ग्रेनेडियर गुरबख्श सिंह,
ग्रेनेडियर्स

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 दिसम्बर, 1971)

10 दिसम्बर, 1971 को ग्रेनेडियर्स की एक बटालियन शकरगढ़ क्षेत्र में नैनकोट की बाहरी बस्तियों तक पहुंच गई थी। शत्रु ने हमारे ठिकानों पर तोपखाने, मार्टरों और टैंकों से जोरदार गोलाबारी कर दी। एक अफसर जो खुले में थे, एक गोले की किर्च से बुरी तरह जख्मी हो गए। ग्रेनेडियर गुरबख्श सिंह अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना उनकी ओर दौड़ पड़े और अफसर को उठा कर एक खाई की तरफ ले भागे। लेकिन ऐसा करते हुए उनके सिर में गोले की किर्च लगी और जिसके कारण उन्होंने वीर गति पाई।

इस कार्यवाही में ग्रेनेडियर गुरबख्श सिंह ने सराहनीय साहस दिखाया।

69. 4144667 सिपाही कर्नैल सिंह,
सिख लाइट इन्फैन्ट्री

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 दिसम्बर, 1971)

सिपाही कर्नैल सिंह पश्चिमी क्षेत्र में बीर-बुर्ज इलाके की संक्रियाओं के दौरान डिवीजन की कमांडो कम्पनी में शामिल थे। बीर और बर्ज के मोर्चों पर भयंकर लड़ाई हुई। 9 दिसम्बर 1971 को कमांडो कम्पनी को उस इलाके को कुमक के तौर पर जाने का आदेश मिला। शत्रु ने इन गांवों को दोबारा अधिकार में लेने के लिए बड़ी संख्या में एक आक्रमण कर दिया। हमले के दौरान शत्रु ने पार्श्व के सुदृढ़ मोर्चों से हमारी सेना पर एक मीडियम मशीन गन से गोली चलाना शुरू कर दिया और इससे हमारे सैनिकों को भारी जानी नुकसान उठाना पड़ा। अपनी जान की तनिक परवाह किए बिना सिपाही कर्नैल सिंह ने शत्रु के बंकर पर धावा बोल दिया और वे शत्रु के सैनिकों को मौत के घाट उतारने में सफल हुए। ऐसा करते हुए वे शत्रु के एक हथगोले से घातक रूप से घायल हो गए।

इस कार्यवाही में सिपाही कर्नैल सिंह ने उच्चकोटि की वीरता दिखाई।

70. 9071115 सिपाही मोहम्मद इकबाल,
जम्मू एवं कश्मीर मिलिशिया

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 दिसम्बर, 1971

सिपाही मोहम्मद इकबाल उस टुकड़ी के सदस्य थे जिसे पाकिस्तान अधिकृत जम्मू एवं कश्मीर क्षेत्र के एक स्थान पर एक प्रमुख पाकिस्तानी चौकी पर छापा मारने का आदेश दिया गया था। 5 दिसम्बर 1971 को, जब वह टुकड़ी चौकी की तरफ जा रही थी, तो शत्रु ने स्वचालित हथियारों और 2 इंची मार्टर से गोलाबारी शुरू कर दी जिससे उनके जवानों को भारी नुकसान पहुंचा। सिपाही मोहम्मद इकबाल ने शत्रु की मार्टर को शान्त करना जरूरी समझ कर उस मार्टर चौकी पर अकेले ही हमला किया और इस कार्यवाही के दौरान उन्हें हल्की मशीन गन की गोलियों की बौछार लगी और वे वीर गति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में सिपाही मोहम्मद इकबाल ने उच्चकोटि की वीरता, पहल और दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

71. 4541237 सिपाही काशी नाथ शिवरुद्र कैम्बले,
महार रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 12 दिसम्बर 1971)।

सिपाही काशीनाथ शिवरुद्र कैम्बले राजस्थान क्षेत्र में पर्बत अली पर किए गए हमले के दौरान महार रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कम्पनी में थे। जब हमारे हमलावर सैनिक लक्ष्य से 50 गज की दूरी पर रह गए तो शत्रु की एक मीडियम मशीन गन ने गोली चलाना शुरू कर दिया, जिससे हमारे सैनिक काफी तादाद में हताहत होने लगे। अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए सिपाही काशीनाथ शिवरुद्र कैम्बले ने शत्रु की मशीन गन पर हमला कर दिया शत्रु की गन की गोलियों की बौछार से यद्यपि वे बुरी तरह घायल

हो गए थे पर फिर भी वे रेंगते हुए आगे बढ़े और बंकर में एक ग्रेनेड फेंक कर इस मशीन गन को शांत कर दिया और अन्तत: घावों के कारण वे शहीद हो गए ।

इस कार्यवाही में सिपाही काशीनाथ शिवरुद्र सैम्बले ने सराहनीय साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

72. 2450841 सिपाही मेहर सिंह,
पंजाब रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

5 दिसम्बर 1971 को पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन पूर्वी क्षेत्र के एक स्थल पर डटी हुई थी । शत्रु ने भारी संख्या में मशीन गन और तोपखाने की भारी गोलाबारी की सहायता से बटालियन के ठिकाने पर हमाला किया । सिपाही मेहर सिंह जो कि एक मीडियम मशीनगन पर तैनात थे, अपनी मशीन गन लेकर खाई से बाहर उसे उपयुक्त स्थान पर लगाने के लिये निकले । ऐसा करते हुए उनके एक गोली लगी । यद्यपि वे लहु-लुहान हो गये थे, फिर भी उन्होंने शत्रु पर भारी गोलाबारी की । उन पर दोबारा फिर मशीनगन की गोलियां की बौछार पड़ी, उन्होंने शत्रु पर उस समय तक गोली-बारी जारी रखी, जब तक कि उसके हमले को विफल नहीं कर दिया । लेकिन घावों के कारण उन्होंने वीरगति पाई ।

इस कार्यवाही के दौरान सिपाही मेहर सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया ।

73. 2658792 ग्रेनेडियर मुराद खान,
ग्रेनेडियर्स

(मरणोपरान्त)

ग्रेनेडियर्स की एक बटालियन को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी पर कब्जा करने का आदेश दिया गया । बायें पार्श्व भाग से शत्रु की मीडियम मशीन गन का भारी और सही गोलीबारी के कारण हमला रुक गया । अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए ग्रेनेडियर मुराद खान भारी गोलीबारी के बावजूद मीडियम मशीन गन के बंकर की तरफ रेंगते हुए बढ़े और एक ग्रेनेड फेंक कर गन को शांत कर दिया । इसके बाद इन्होंने शत्रु के दो सैनिकों को उनके कम्पनी कमांडर पर संगीनों से वार करते देखा । वे तुरन्त आगे लपके और आमने सामने की लड़ाई में शत्रु के एक सैनिक को मार डाला पर वे स्वयं भी बुरी तरह घायल हो गये ।

इस कार्यवाही में ग्रेनेडियर मुराद खान ने उच्चकोटि के साहस और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया ।

74. 2658592 ग्रेनेडियर रफीक खान,
ग्रेनेडियर्स

(मरणोपरान्त)

ग्रेनेडियर्स की एक बटालियन को पूर्वी क्षेत्र में एक इलाके में शत्रु की एक चौकी पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था । चौकी पर कब्जा हो जाने के बाद भी शत्रु बचे-खुचे स्थलों से हमारे सैनिकों को जानी नुक्सान पहुंचा रहा था, खास तौर पर एक बंकर में रह गई शत्रु की एक हल्की मशीन गन । ग्रेनेडियर रफीक खान अपनी जान की जरा भी परवाह किये बिना रेंगते हुए आगे बढ़े और उन्होंने बंकर में हथगोला फैंका लेकिन हथगोला बाहर ही फट गया, जिससे यह गंभीर रूप से घायल हो गये । लेकिन इसके बावजूद भी इन्होंने दूसरा हथगोला फैंका और मशीन गन को शांत कर दिया, किन्तु इस दौरान मशीन गन की गोलियों की एक बौछार इन पर पड़ी और जिसके फलस्वरूप वह शहीद हो गये ।

ग्रेनेडियर रफीक खान ने प्रशंसनीय साहस और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया ।

75. 5038478 राइफलमैन मोती कुमार नवार,
गोरखा राइफल्स

(मरणोपरान्त)

राइफलमैन मोती कुमार नवार गोरखा राइफल्स की एक बटालियन की हल्की मशीन गन टुकड़ी के सदस्यों में प्रथम थे । उनकी बटालियन को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी पर कब्जा करने का आदेश दिया गया । इस मोर्चे पर शत्रु भारी संख्या में था और उसने वहां मजबूती से किलेबंदी कर रखी थी । हमले के दौरान हमारे जवानों पर शत्रु के छोटे हथियारों और तोपखाने ने कारगर गोलाबारी की । जांघ पर गोले की किर्च लगने से राइफलमैन मोती कुमार नवार बुरी तरह घायल हो गये फिर भी वे कुल्हे से हल्की मशीन गन से गोलाबारी करते रहे और इस तरह हमले का जोर कायम रखा । शत्रु के मोर्चों के पास पहुंचने पर हमारे प्रहार करने वाले सैनिकों पर एक बंकर से मशीन गन से भारी गोलाबारी होने लगी जिससे उनका आगे बढ़ना रुक गया और काफी जवान हताहत होने लगे । उस मशीन गन को शांत करना जरूरी समझकर, राइफलमैन मोती कुमार नवार ने अपनी हल्की मशीन गन छोड़ दी और अपने हाथ में दो ग्रेनेड लेकर अकेले ही इस मशीन गन चौकी पर हमला कर दिया । इस दौरान मशीन गन की गोलियों की बौछार से वे बुरी तरह घायल हो गये पर घावों के कारण शहीद होने से पहले वे एक छेद में से एक ग्रेनेड फैंक कर उस मशीन गन को शांत करने में सफल हुए ।

इस कार्यवाही में राइफलमैन मोती कुमार नवार ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय का परिचय दिया ।

76. 4049455 राइफलमैन मकर सिंह नेगी,
गढ़वाल राइफल्स

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

4/5 दिसम्बर, 1971 की रात को शत्रु हमारे इलाके में घुस आया और पश्चिमी क्षेत्र में वाह्य सीमा चौकी पर अधिकार कर लिया । 5 दिसम्बर 1971 को गढ़वाल राइफल्स की एक बटालियन की दो पलाटनों को टैंकों की एक टुकड़ी के साथ इस चौकी पर दुबारा कब्जा करने का आदेश दिया । लेकिन हमारी प्रहार करने वाली टुक-ड़ियों की गति शत्रु की मशीनगनों के सही और प्रभावी गोलाबारी से रुक गई । शत्रु की मशीन गन को शांत करने के लिये राइफलमैन मकर सिंह नेगी ने अपनी जान की तनिक परवाह किये बिना शत्रु की मशीन गन चौकी पर अकेले ही हमला किर दिया । वह बुरी तरह घायल हुये और युद्ध भूमि में ही उन्हें वीर गति प्राप्त हुई । अन्त में उस चौकी पर हमारा अधिकार हो गया ।

इस कार्यवाही में, राइफलमैन मकर सिंह नेगी ने उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया ।

77. 1179857 गनर भद्रेश्वर पाठक,
एयर डिफेंस रेजिमेंट, आर्टिलरी रेजिमेंट

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7/8 दिसम्बर, 1971)

गनर भद्रेश्वर पाठक पश्चिमी क्षेत्र मे एक मीडियम रेजिमेंट गन क्षेत्र के बचाव के लिये तैनात एक डिफेंस रेजिमेंट की एक टुकड़ी को गोलाबारूद देने का काम कर रहे थे । 7 दिसम्बर 1971 को इस मीडियम रेजिमेंट गन क्षेत्र पर शत्रु के दो मिग 19 विमानों ने हमला किया । इस एयर डिफेंस गन ने तुरन्त शत्रु के विमानों पर भारी गोलाबारी शुरू कर दी । इस गन को शांत करने के लिये शत्रु के विमानों ने नीची उड़ान भरके मशीन गनों से गोलियां बरसाई । हमले के दौरान शुरू से आखिर तक गनर भद्रेश्वर पाठक अपनी जान और सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए गन को गोला बारूद पहुंचाते रहे जिसका नतीजा यह हुआ कि शत्रु का एक विमान नष्ट हो गया ।

8 दिसम्बर 1971 को शत्रु के पांच एफ०-86 सैबर जैट विमानों ने उनके गन क्षेत्र पर हमला किया । गनर भद्रेश्वर पाठक तब तक गोला बारूद पहुंचाते रहे जब तक कि उन्हें गोली न लगी । घायल होने पर गनर भद्रेश्वर पाठक ने वहां से हटाये जाने से इंकार कर दिया और तब तक चौकी पर रहे जब तक कि घावों के कारण वे शहीद न गये ।

इस पूरी कार्यवाही के दौरान नगर भद्रेश्वर पाठक ने उच्च कोटि की वीरता और कर्त्तव्य निष्ठा का परिचय दिया ।

78. 5034537 राइफलमैन मान बहादुर पुन,
गोरखा राइफल

(मरणोपरांत)

राइफलमैन मान बहादुर पुन, पूर्वी क्षेत्र मे शत्रु की एक चौकी पर किये गये हमले के दौरान गोरखा राइफल की एक बटालियन की एक कंपनी की राकेट लांचर टीम के कमांडर थे । दुश्मन के मोर्चा में बहुत अच्छे किस्म के बंकर थे और उसकी मीडियम मशीन गनें और राकेट लांचर आसपास के इलाके पर छाये हुए थे । राइफलमैन मान बहादुर पुन प्रहार करने वाले सैनिकों के बायें किनारे पर थे हमला करने वाले सैनिकों पर शत्रु ने तोपखाने और मार्टरों से गोलाबारी शुरू कर दी और उनका आगे बढ़ना रुक गया । राइफलमैन मान बहादुर पुन अपनी सुरक्षा की तनिक परवाह किये बिना रेंग कर एक बंकर पर पहुचे और उसे अपने लांचर से शांत कर दिया । इस कार्यवाही मे उनकी टांग में एक मीडियम मशीन गन की गोलियों की बोछार लगी, मगर अपनी चोट की परवाह किये बिना वे रेंगकर दूसरी जगह पर पहुंचे और दूसरी बार राकेट लांचर से फायर करके दूसरी चौकी को भी शात कर दिया । तभी बिल्कुल पास से उन्हे गोलियो की एक और बोछार लगी और वे वही शहीद हो गये ।

इस कार्यवाही मे राइफलमैन मान बहादुर पुन ने उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया ।

79. 492235 राइफलमैन पास बहादुर पुन,
गोरखा राइफल्स

(मरणोपरांत)

गोरखा राइफल्स की एक बटालियन को पूर्वी क्षेत्र में गाजीपुर के एक ठिकाने का सफाया करने का आदेश दिया गया । हमले के दौरान शत्रु ने मीडिम मशीन गन का भारी और सही गोलाबारी करके भारी संख्या में हमारे जवानों को हताहत कर दिया । शत्रु के भारी गोलाबारी के बावजूद राइफलमैन पास बहादुर पुन हमला करते हुए आगे बढ़े और शत्रु के पास जाकर गुत्थम-गुत्था में शत्रु के तीन सैनिकों को मार गिराया और एक मीडियम मशीन गन हथिया ली । इस दौरान वे जख्मी हो गये अर घावों के कारण शहीद हो गये ।

इस कार्यवाही में राइफलमैन पास बहादुर पुन ने उच्चकोटि के साहस और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया ।

80. 2449735 सिपाही अवतार सिंह,
पंजाब रेजिमेंट

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 दिसम्बर 1971)

पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन के सिपाही अवतार सिंह जम्मू एवं काश्मीर क्षेत्र में नार्गी टेकरी के दायें भाग पर 10/11 दिसम्बर 1971 की रात को हमला करने वाली फौज में शामिल थे । इस ठिकाने पर शत्रु भारी संख्या में था और उसने वहां मजबूती से किलेबन्दी कर रखी थी । हमले के दौरान शत्रु ने प्रहार करने वाले सैनिकों पर आर्टिलरी और मीडियम मशीनगन से भारी गोलाबारी की । जिसके कारण सिपाही अवतार सिंह अपनी एक टांग गवा बैठे । फिर भी अविचलित वे उस गन को नष्ट करने के लिये मीडियम मशीनगन चौकी की तरफ रेंग कर बढ़ने लगे । जब वे मीडियम मशीनगन पर झपट रहे थे तो उन्हें स्वचालित गोलाबारी की एक गोलियों की बोछार लगी जिससे इनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में सिपाही अवतार सिंह ने उच्च कोटि की वीरता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

81. 2858706 राईफलमैन छगन सिंह
राजपूताना राइफल्स

(मरणोपरांत)

राइफलमैन छगन सिंह की प्लाटून जब पूर्वी क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी का सफाया करने में लगी हुई थी, उस समय शत्रु ने उस पर तोपखाने और छोटे हथियारों से तेज व भारी गोलाबारी शुरू कर दी । जब ये शत्रु के ठिकाने से लगभग 25 गज ही दूर रह गये थे तो उस समय इन्होंने बंकर के भीतर 106 मि० मी० की रिकायललेस गन को देख लिया । यद्यपि वे घायल हो चुके थे फिर भी रेंग कर बंकर तक पहुंचे । ऐसा करते समय इन पर एक बार फिर लाइट मशीनगन की बोछार पड़ी फिर भी इन्होंने अपने घावों के कारण शहीद होने से पहले बंकर में हथगोला डालकर उसे नष्ट कर दिया ।

इस कार्यवाही मे राइफलमैन छगन सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया ।

82. 2457287 सिपाही जगजीत सिंह,
पंजाब रेजिमेंट

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर 1971)

5 दिसम्बर 1971 को राजस्थान क्षेत्र में भारी संख्या में शत्रु ने पैदल सेना और बख्तरबंद दस्तों से हमारे उन मोर्चों पर हमला किया जिन पर पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन का कब्जा था। सिपाही जगजीत सिंह अग्रिम सुरक्षित इलाके में हल्की मशीन गन चौकी पर तैनात थे। हमले के दौरान शत्रु की गोलाबारी से उनके बंकर को बहुत नुकसान पहुंचा। शत्रु पर भारी गोलाबारी करना जरूरी समझ कर वे अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए बाहर खुले में आके अपनी गन से तब तक गोलीबारी करते रहे जब तक शत्रु की गोली से उनकी मृत्यु न हो गई।

इस कार्यवाही में सिपाही जगजीत सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

83. 2860932 राइफलमैन प्रेम सिंह,
राजपूताना राइफल्स

(मरणोपरांत)

राजपूताना राइफल्स की एक बटालियन को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी पर अधिकार करने का काम सौंपा गया। हमले के दौरान शत्रु ने एक मीडियम मशीनगन से बहुत तेज और सही गोलीबारी शुरू करके भारी जानी नुकसान पहुंचा कर और हमारे प्रहार सैन्यदल को घेर लिया। राइफलमैन प्रेम सिंह प्रहार करने वाले सैनिकों में थे। मशीनगन को शांत करने की जरूरत महसूस करते हुए वे रेंग कर आगे बढ़े और इन्होंने शत्रु की चौकी पर धावा बोल कर गन को शांत कर दिया। इस कार्यवाही में वे मशीनगन की गोलियों से घायल हो गये और घावों के कारण वे शहीद हो गये। उनकी इस कार्यवाही से उनके साथियों के हौसले बुलंद हो गये और फलस्वरूप लक्ष्य पर कब्जा किया जा सका।

इस कार्यवाही में राइफलमैन प्रेमसिंह ने उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया।

84. 2464113 सिपाही सम्पूरन सिंह,
पंजाब रेजिमेंट

(मरणोपरांत)

सिपाही सम्पूरन सिंह, पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन की उस कम्पनी के साथ थे, जिसे कारगिल क्षेत्र में अन्छिल पास पर अधिकार करने का काम सौंपा गया था। शत्रु के मोर्चों में लगी मीडियम मशीन गन के सही और भारी गोलीबारी के कारण उनकी कम्पनी का धावा रुक गया। सिपाही सम्पूरन सिंह ने बंकर में एक ग्रेनेड फैंक कर मशीन गन को नष्ट कर दिया। ऐसा करते समय वे बुरी तरह घायल हो गये और घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में सिपाही सम्पूरन सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

85. 2964587 सिपाही सत्यवान सिंह,
राजपूत रेजिमेंट

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर 1971)

राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन के सिपाही सत्यवान सिंह उस आक्रमण दल में शामिल थे जिसे पश्चिमी क्षेत्र में डेरा बाबा नानक शत्रु के एक स्थान पर कब्जा करने का सौंपा गया था। अपने कम्पनी कमांडर के साथ सिपाही सत्यवान सिंह अगले दस्ते के साथ आगे बढ़ रहे थे। तो पार्श्व के एक पिल-बाक्स से शत्रु की मीडियम मशीन गन ने गोलाबारी शुरू कर दी जिससे हमारे काफी जवान हताहत होने लगे। इस गन को शांत करना जरूरी समझकर इन्होंने अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए पिल-बाक्स पर हमला कर दिया और शत्रु को मार कर उसकी मीडियम मशीन गन को शांत कर दिया। लेकिन इस कार्यवाही में वे बुरी तरह घायल हो गये जिसके कारण उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में सिपाही सत्यवान सिंह ने उच्चकोटि की सयमित वीरता, दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

86. 5743894 राइफलमैन दलीप सिंह थापा,
गोरखा राइफल्स

(मरणोपरांत)

गोरखा राइफल की एक बटालियन के राइफलमैन दलीप सिंह थापा पश्चिमी क्षेत्र में सुलेमान नेवी के पूर्वी तट पर एक हल्की मशीन गन पर तैनात थे। 8/9 दिसम्बर 1971 की रात को शत्रु ने उनकी कम्पनी के ठिकाने पर तोपखाने की भारी गोलाबारी के साथ हमला कर दिया। राइफलमैन दलीप सिंह थापा ने अपनी हल्की मशीन गन से गोली चलाना शुरू कर दिया और शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुंचाया। उनकी खाई नष्ट हो गई और वे खुद भी शत्रु के सीधे लगे गोले से बुरी तरह घायल होने पर भी वह अपनी खाई से रेंग कर बाहर आये और मशीन गन से तब तक गोलीबारी करते रहे जब तक कि घावों के कारण वे वीरगति को प्राप्त न हुये।

इस कार्यवाही में राइफलमैन दलीप सिंह थापा ने उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया।

सं० 78-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की सक्रियाओं में वीरता के लिये "वीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. कमांडर मुकदाविल ओम्मन ओम्मन (ई०)
भारतीय नौसेना।

(मरणोपरांत)

कमांडर मुकदाविल ओम्मन ओम्मन उस भारतीय नौसैनिक पोत खुकरी के इंजीनियर अफसर थे, जो पाकिस्तान की एक पनडुब्बी के हमले के बाद अरब सागर में डूब गया था।

9 दिसम्बर 1971 को पनडुब्बी की खोज में लगे भारतीय नौसैनिक पोत खुकरी पर एक टारपीडो का वार हुआ। अपने नौसैनिकों को खतरे में पड़ा जान कर कमांडर ओम्मन उनकी सुरक्षा का बंदोबस्त करने के लिये नीचे गये। इस बीच पोत को दूसरा टारपीडो

लगा । यह जानते हुए भी कि उनके बचने के अवसर हर क्षण कम होते जा रहे हैं फिर भी वे अपने नौसैनिकों की सुरक्षा के बंदोबस्त में सहायता करते रहे और ऐसा करते हुए इन्होंने सबसे बड़ी कुर्बानी की ।

पूरी कार्यवाही में कमाडर शुक्कादिवल ओम्मन ओम्मन ने उच्चकोटि के साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

2. लेफ्टिनेंट कमाडर प्रभात कुमार (एल०)
भारतीय नौसेना ।

(मरणोपरान्त)

लेफ्टिनेंट कमाडर प्रभात कुमार भारतीय नौ सैनिक पोत खुकरी पर इलैक्ट्रिकल अफसर थे, जो एक पाकिस्तानी पनडुब्बी के हमले के बाद अरब सागर में डूब गया था ।

9 दिसम्बर 1971 को पनडुब्बी की खोज में लगे भारतीय नौसैनिक पोत खुकरी में टारपीडो लगा । अपने साथियों को खतरे में पड़ा जानकर लेफ्टिनेंट कमाडर प्रभात कुमार उन की सुरक्षा का बंदोबस्त करने के लिये नीचे गये । इस बीच पोत में दूसरा टारपीडो लगा । यह जानते हुए भी कि उनके बचने के अवसर हर क्षण कम होते जा रहे हैं, फिर भी वे अपने साथियों की सुरक्षा के काम में सहायता करते रहे और ऐसा करते हुए इन्होंने सबसे बड़ी कुर्बानी दी ।

पूरी कार्यवाही में लेफ्टिनेंट कमाडर प्रभात कुमार ने उच्चकोटि के साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

3 लेफ्टिनेंट कमाडर रजत कुमार सैन (एस०)
भारतीय नौसेना ।

(लापता)

लेफ्टिनेंट कमाडर रजत कुमार सैन भारतीय नौसैनिक पोत खुकरी में सप्लाई अफसर थे, जो एक पाकिस्तानी पनडुब्बी के हमले के बाद अरब सागर में डूब गया था ।

9 दिसम्बर 1971 को पनडुब्बी की खोज में लगे भारतीय नौ सैनिक पोत खुकरी पर एक टारपीडो का वार हुआ । अपने साथियों को खतरे में पड़ा जान कर उनकी सुरक्षा का बंदोबस्त करने के लिये लेफ्टिनेंट कमाडर सैन नीचे गये । इस बीच पोत को दूसरा टारपीडो लगा । यह जानते हुए भी कि उनके बचने का अवसर हर क्षण कम होते जा रहे हैं फिर भी वे अपने साथियों की सुरक्षा के काम में सहायता करते रहे और ऐसा करते हुए इन्होंने सबसे बड़ी कुर्बानी दी ।

इस पूरी कार्यवाही में कमाडर रजत कुमार सैन ने उच्चकोटि के साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

4 लैफ्टि० कमाण्डर जोगिन्दर कृष्ण सूरी (एक्स) भारतीय नौसेना ।

(मरणोपरान्त)

लैफ्टि० कमाण्डर जोगिन्दर कृष्ण सूरी उस भारतीय नौसैनिक पोत खुकरी के उप-कमाण्डर थे, जो एक पाकिस्तानी पनडुब्बी के हमले के बाद अरब सागर में डूब गया था ।

9 दिसम्बर, 1971 को जब इनके पोत पर दुश्मन ने टारपीडो से वार किया तो लेफ्टि० कमाण्डर जोगिन्दर कृष्ण सूरी अपने नौसैनिकों को खतरे में जान कर इन्होंने शीघ्रता से प्राण रक्षा निरादा और बेकटो के रस्से काट कर समुद्र में फेंक दिये । इनके बचने के अवसर हर क्षण कम हो रहे थे, लेकिन इसके बावजूद भी वे अपने नौसैनिकों की सुरक्षा के काम का निर्देशन करते रहे और बड़ी संख्या में उन्हें बचा सके । ऐसा करने में इन्होंने सबसे बड़ी कुर्बानी दी ।

इस पूरी कार्यवाही में लैफ्टि० कमाण्डर जोगिन्दर कृष्ण सूरी ने उच्चकोटि के साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

5. सर्जन लैफ्टि० सुधाशु शेखर पंडा,
भारतीय नौसेना ।

(लापता)

सर्जन लैफ्टि० सुधाशु शेखर पंडा भारतीय नौसैनिक पोत खुकरी पर मैडिकल अफसर थे, जो पाकिस्तानी पनडुब्बी के हमले के बाद अरब सागर में डूब गया था ।

9 दिसम्बर, 1971 को इनके पोत को दुश्मन का टारपीडो लगा । सर्जन लैफ्टि० पंडा अपनी जान की तनिक भी परवाह न करके जहाज में नीचे बीमारों की सेवा में गए ताकि बीमार और घायल कार्मिकों को डैक पर निकासी के लिए लाया जा सके । इस बीच जहाज को एक और टारपीडो लगा और यह जानते हुए भी कि उनके बचने के अवसर हर क्षण कम होते जा रहे । फिर भी वे बीमार और घायलों का ऊपरी डैक पर ले आने के काम में लगे रहे । ऐसा करते हुए इन्होंने सबसे बड़ी कुर्बानी दी ।

इस पूरी कार्यवाही के दौरान सर्जन लैफ्टि० सुधाशु शेखर पंडा ने उच्चकोटि के साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

6 लैफ्टि० सुरेश गजानन सामंत (एक्स)
भारतीय नौसेना ।

(मरणोपरान्त)

लैफ्टि० सुरेश गजानन सामन्त उस भारतीय नौसैनिक यूनिट के जहाज पर थे जिसने कराची पर हमला किया था । 4/5 दिसम्बर 1971 की रात को नेवीगेटिंग अफसर के रूप में कराची के पास शत्रु के जहाजों और बन्दरगाह के दूसरे संस्थापनों पर हमला करने करने के लिए अपने जहाजों को ठीक स्थिति में लाने की जिम्मेदारी इनकी थी । इन्होंने अपने काम में उच्चकोटि की व्यावसायिक दक्षता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया और वे सौंपे गये कार्य को पूरा करने में सहायक सिद्ध हुए । इसके बाद एक नौसैनिक लंगरगाह के आसपास पानी की सतह के भीतर से तोड़फोड़ करने वालों की खोज करते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुए ।

आद्योपान्त लैफ्टि० सुरेश गजानन सामन्त ने उच्चकोटि की शूरवीरता, व्यावसायिक दक्षता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

सं० 79-प्रेज/72.—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में वीरता के लिए वीर चक्र प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :–

1. स्क्वाड्रन लीडर जाल मानिकशा मिस्त्री (5006)
फ्लाइंग (पायलट)

(मरणोपरान्त)

स्क्वाड्रन लीडर जाल मानिकशा मिस्त्री दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध की गई संक्रियाओं के दौरान एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में सीनियर पायलट थे । 4 दिसम्बर 1972 को

इन्होंने शत्रु की हवाई सीमा को भेद कर कोहाट में जबाबी हवाई कार्यवाही करके शत्रु के हवाई अड्डे को भारी नुकसान पहुंचाया। 5 दिसम्बर, को ये ऐसे दो हवाई जहाजों की फार्मेशन का नेतृत्व कर रहे थे जिन्हें सुरक्षित सकेसर रेडार स्टेशन पर हमला करने का काम सौंपा गया था। नम्बर दो द्वारा उड़ाया जाने वाला हवाई जहाज उड़ान भरते ही बेकार हो गया। विचलित हुए बिना वे अकेले ही इस काम को करने के लिए उड़े। टार्गेट पर पहुंच कर दुश्मन के भारी ज़मीनी फायर का सामना करते हुए उन्होंने रेडार स्टेशन पर हमला किया और रेडार स्टेशन को नष्ट भ्रष्ट करके उसे बेकार करने में सफल हो गए।

इस कार्यवाही के दौरान स्क्वाड्रन लीडर जान मानिकशा मिस्त्री ने सराहनीय साहस, दृढ़-निश्चय और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

2. स्क्वाड्रन लीडर जीवा सिंह (4893)
फ्लाइंग (पायलट) (मरणोपरान्त)

स्क्वाड्रन लीडर जीवा सिंह दिसम्बर, 1971 में हुई पाकिस्तानी लड़ाई के समय ये एक फाइटर स्क्वाड्रन में थे। संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर जीवा सिंह ने एक ऐसी फार्मेशन का नेतृत्व किया जिसे शत्रु के टैंकों और सैनिकों का पता लगाकर उन पर हमला करना था जो हमारी जमीनी फौजों को उलझा रही थीं। इन्होंने शत्रु के छिपे हुए टैंकों का पता लगाया, यद्यपि शत्रु के चार हवाई जहाजों ने इनके सेक्शन को चारों ओर से घेर लिया था पर फिर भी वे हवाई हमले करते रहे। हवाई-मुठभेड़ में इन्होंने शत्रु के एक एफ०-104 हवाई जहाज को उलझाये रखा ताकि इनके विमान नम्बर दो का चालक बचकर निकल सके। लड़ाई के दौरान कम ऊंचाई पर इनके हवाई जहाज पर गोली लगी जिससे इनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में स्क्वाड्रन लीडर जीवा सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

3. स्क्वाड्रन लीडर रमेश चन्द्र सचदेवा (5306),
फ्लाइंग (पायलट) (मरणोपरान्त)

स्क्वाड्रन लीडर रमेश चन्द्र सचदेवा ने दिसम्बर 1971 में पाकिस्तानी संघर्ष के दौरान एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में कार्य किया। 4 दिसम्बर, 1971 को इन्होंने चिटागांव में शत्रु के उन लक्ष्यों पर हमला किया जिनकी रक्षा के लिए बहुत सी विमानभेदी तोपें लगी थीं। बाद में इन्होंने उन सात रेल गाड़ियों को नष्ट किया जो लक्षाम स्थित पाकिस्तानी अग्रिम मोर्चों के लिए महत्वपूर्ण सामान ले जा रही थीं। इन्होंने 6 दिनों में 15 संक्रियात्मक उड़ानें भरीं और भारी जमीनी गोलाबारी का सामना करते हुए कई जहाजों, टैंकों, तोपखानों, गाड़ियों और ईंधन टैंकों को बरबाद किया। दो बार गोलियों से बुरी तरह बिंधे विमान को अड्डे पर वापिस ले आए। 10 दिसम्बर, 1971 को उड़ान के दौरान शत्रु की एक नौका पर हमला करने के बाद इनके विमान के इंजन में आग लग गई और वह गिर कर नष्ट हो गया जिसमें इनकी मृत्यु हो गई।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर रमेश चन्द्र सचदेवा ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व, दृढ़-निश्चय और उड़ान-कौशल का परिचय दिया।

4. फ्लाइट लैफ्टि० प्रदीप विनायक आप्टे (10456)
फ्लाइंग (पायलट) (मरणोपरान्त)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध की गई संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लैफ्टि० प्रदीप विनायक आप्टे एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में काम कर रहे थे। 4 दिसम्बर, 1971 को ये नया छोर उमरकोट-डोरनारो क्षेत्र में सामरिक टोह उड़ान के लिए विमान नम्बर दो के चालक थे। नया छोर के निकट उन्होंने शत्रु के गाड़ियों के काफिले को डोरनारो रेलवे स्टेशन की तरफ बढ़ते देखा। इन्होंने तुरन्त अपनी अगली गनों से हमला किया और गाड़ियों को सीधा निशाना बनाया। इसके बाद वे डोरनारो रेलवे स्टेशन पर उड़े और एक बार फिर इन्होंने एक माल गाड़ी को देखा जिसमें से सामान उतारा जा रहा था। उन पर की जा रही जमीनी गोलाबारी के बावजूद इन्होंने गाड़ी पर हमला किया और वैगनों को काफी नुकसान पहुंचाया। तीसरी बार इन्होंने फिर हमला किया पर जब वे हमला करके ऊपर उठ रहे थे तो शत्रु की जमीनी गोलाबारी से इनका विमान क्षतिग्रस्त हो गया। इन्होंने क्षतिग्रस्त हवाई जहाज पर भी नियंत्रण रखा और उसे 100 मील दूर अपने अड्डे की तरफ उड़ाने लगे। विवश होकर इन्होंने हवाई जहाज छोड़ दिया। इस प्रकार इन्होंने महान बलिदान किया।

इस कार्यवाही के दौरान फ्लाइट लैफ्टि० प्रदीप विनायक आप्टे ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

5. फ्लाइट लैफ्टि० आन्द्रे रूडोल्फ डिकोस्टा (8175)
फ्लाइंग (पायलट) (मरणोपरान्त)

फ्लाइट लैफ्टि० आन्द्रे रूडोल्फ डिकोस्टा ने 4 दिसम्बर, 1971 को रेंगपुर क्षेत्र में लाल मुनीरहाट पर विमान चालक नम्बर दो के रूप में हमलावर टोह उड़ानें भरीं। फौजी लक्षों पर गोलीबारी करने के बाद इन दोनों विमानों ने लाल मुनीरहाट पुल के दक्षिण में एक माल गाड़ी पर हमला किया। इस कार्यवाही में दोनों विमान बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। फ्लाइट लैफ्टि० डिकोस्टा को भी गोली लगी और यद्यपि इन्होंने अपने विमान को वापिस अड्डे पर लाने की कोशिश की पर ये बेहोश हो गए और इनका विमान गिर कर नष्ट हो गया जिससे इनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लैफ्टि० आन्द्रे रूडोल्फ डिकोस्टा ने उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया।

6. फ्लाइट लैफ्टि० लारेंस फ्रेड्रिक परेरा (8678)
फ्लाइंग (पायलट) (मरणोपरान्त)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध की गई संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लैफ्टि० लारेंस फ्रेड्रिक परेरा को अग्रिम इलाके में एक आर्मी ब्रिगेड के साथ फारवर्ड एयर कन्ट्रोलर के काम पर लगाया गया था। उन्हें यह काम सौंपा गया था कि वे अगले ठिकानों पर रहकर अपने नज़दीकी हवाई सहायता देने वाले विमानों को शत्रु लक्ष्यों की तरफ उड़वाएं। उनके निर्देशन में हमारे विमानों ने कई बार शत्रु के जमावों पर सफलतापूर्वक हमले किए। 14 दिसम्बर,

1971 को अपना काम करते हुए इन्हें शत्रु की गोलियां लगीं जिससे इनकी मृत्यु हो गई ।

कार्यवाही के दौरान फ्लाइट लैफ्टि० लारेंस फ्रेड्रिक परेरा ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

7. फ्लाइट लैफ्टि० विजय कुमार वाही (10114)
फ्लाइंग (पायलट) (मरणोपरान्त)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध की गई संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लैफ्टि० विजय कुमार वाही एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में पायलट थे । 6 दिसम्बर, 1971 को इन्हें छम्ब क्षेत्र में वायु-भू मिशन के लिए नम्बर दो विमान के चालक के रूप में नियुक्त किया गया था । शत्रु ने विमान भेदी तोपों और विमानों द्वारा उस लक्ष्य का मजबूती से बचाव कर रखा था । पर इस लक्ष्य को नष्ट करना हमारी स्थल सेना के लिए बहुत महत्वपूर्ण था जिस पर हमले का काफी जोर पड़ रहा था । इन्होंने हमला किया और शत्रु के दो टैंक नष्ट कर दिए । काम पूरा करके अड्डे पर वापिस लौटते समय इनके विमान को गोला लगा । ये विमान के कूदे लेकिन उन्हें घातक चोटें आईं ।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लैफ्टि० विजय कुमार वाही ने उच्च-कोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया ।

सं० 80-प्रेज/72—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में वीरता के लिए "वीरचक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते है :—

1. 613 डिप्टी कमांडेन्ट इन्द्रजीत सिंह उप्पल
सीमा सुरक्षा दल (मरणोपरान्त)

सीमा सुरक्षा दल के श्री इन्द्रजीतसिंह उप्पल एक बटालियन की दो कम्पनियों की जिन्हें पूर्वी क्षेत्र में तैनात किया गया था, कमान कर रहे थे । जब शत्रु की एक चौकी पर हमारी सेना का कब्जा हो जाने के बाद, एक कम्पनी शत्रु की मशीन गन की भारी गोलाबारी के बीच आ गई और उनको वहीं का वहीं रोक दिया । अपनी जान की परवाह तनिक किए बिना श्री इन्द्रजीत सिंह उप्पल ने एक मीडियम मशीन गन ग्रुप को साथ लेकर शत्रु की गन पर गोलाबारी शुरू करवाई । ऐसा करते समय शत्रु की एक गोली उनको लगी, जिसके कारण उन्होंने वीर गति पाई ।

आद्योपान्त श्री इन्द्रजीत सिंह उप्पल ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया ।

2. सं० 66276064 हैड कांस्टेबल मोहिन्द्र सिंह,
सीमा सुरक्षा दल (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)

हैड कांस्टेबलमोहिन्द्र सिंह पश्चिमी क्षेत्र के एक इलाके में सीमा सुरक्षा दल के ठिकाने पर स्थित एक सैक्शन चौकी की कमान कर रहे थे । 3 दिसम्बर 1971 को डिवजनल आर्टिलरी की गोलाबारी की मदद से शत्रु ने दो राइफल कम्पनियों से इस चौकी पर हमला किया । हैड कांस्टेबल मोहिन्द्र सिंह ने अपने सैक्शन से तब तक गोली नहीं चलवाई जब तक कि दुश्मन 50 गज की दूरी पर न आ गया। और फिर अपने सैक्शन से लगातार सही प्रभावकारी गोलाबारी करवाकर हमले को विफल कर दिया। इन्होंने अपने जवानों को डटे रहने और लड़ने के लिए प्रेरित किया । भारी संख्या में शत्रु ने इस चौकी पर फिर हमला किया और एक बार वह चौकी के गिर्द स्कावेंट के लिए लगी तार तक पहुंचने में सफल हो गया । बिना डरे और अपनी जान की जरा भी परवाह किए बिना हैड कांस्टेबल मोहिन्द्र सिंह अपनी खाई से शीघ्र बाहर निकले और अपने जवानों को इकट्ठा करके दुश्मन पर हमला कर दिया । इन्होंने अपनी स्टैन गन से शत्रु के चार जवानों को मार गिराया । वे तब तक वीरता पूर्वक लड़ते रहे जब तक कि शत्रु की हल्की मशीन गन की गोलाबारी से वे बुरी तरह घायल होकर शहीद न हो गए ।

इस कार्यवाही में हैड कांस्टेबल मोहिन्द्र सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

3. सं० 68588913 नायक उमेद सिंह,
सीमा सुरक्षा दल (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर 1971)

नायक उमेद सिंह, पश्चिमी क्षेत्र में एक पिकेट पर मार्टर सैक्शन के इंचार्ज थे । 5 दिसम्बर, 1971 को पिकेट पर शत्रु ने भारी संख्या में मार्टर और स्वचालित हथियारों की गोलाबारी से हमला कर दिया । नायक उमेद सिंह, एक मार्टर मोर्चे से दूसरी मार्टर मोर्चे तक जा-जा कर अपने जवानों को लक्ष्यों पर लगातार गोलीबारी करने के लिए प्रेरित करते रहे । इस कार्यवाही के दौरान शत्रु का एक गोला इनके पास फटा जिससे ये बुरी तरह घायल हो गए । फिर भी नायक उमेद सिंह ने वहां से हटाए जाने से इंकार कर दिया, और वहां तब तक डटे रहे जब तक कि शत्रु के हमले को पछाड़ नहीं दिया गया और उसकी मार्टरों को शान्त नहीं कर दिया गया । ये वहां से हटाए जाने के तुरन्त बाद ही घावों के कारण वीर गति को प्राप्त हुए ।

इस कार्यवाही में नायक उमेद सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय तथा नेतृत्व का परिचय दिया ।

4. 647 डिप्टी कमांडेंट श्री जोगिन्द्र सिंह,
सीमा सुरक्षा दल (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 दिसम्बर 1971)

डिप्टी कमांडेंट श्री जोगिन्द्र सिंह सीमा सुरक्षा दल के पोस्ट ग्रुप आर्टिलरी के इन्चार्ज थे जिसे राजस्थान क्षेत्र में तैनात सीमा सुरक्षा दल बटालियनों की गोलाबारी करने की क्षमता को पूरा करने के लिये संगठित किया गया था । 17 दिसम्बर, 1971 को इन्हें उन यूनिटों को गोलाबारी में सहायता पहुंचाने का काम सौंपा गया था जिन्होंने वीरावाह के पश्चिम में रक्षात्मक मोर्चे जमा रखे थे । टोह लेने के बाद वीरावाह लौटते समय उनकी टोली पर शत्रु ने नजदीक से मशीन गन और मोर्टार से भारी गोलाबारी शुरू कर दी । ये तुरन्त अपनी गाड़ी से बाहर कूदे और अपनी छोटी टोली का विन्यास

करके शत्रु पर हमला कर दिया। मशीन गन की गोलियों की बौछार लगने पर भी वे अपने जवानों का नेतृत्व करते रहे और तब तक लड़ते रहे जब तक कि घायल होने के कारण शहीद न हो गये।

इस कार्यवाही में श्री जोगिंद्र सिंह ने सराहनीय साहस, दृढ़ निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

दिनांक 6 जून 1972

सं० 81-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित अधिकारियों को 1971 के भारत पाकिस्तान संघर्ष तथा बंगलादेश सक्रियाओं के संबंध में की गई विशिष्ट सेवाओं के लिए सहर्ष राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्नि शमन सेवा पदक प्रदान करते हैं :—

श्री धन कांत मेधी,
पुलिस उप महा निरीक्षक,
अपराध अनुसंधान विभाग,
असम।

श्री सुधीर रंजन डे,
कमांडेंट,
6वीं असम पुलिस बटालियन,
असम।

मेजर जनरल नरेंद्र सिंह,
महा निरीक्षक (संक्रिया),
सीमा सुरक्षा दल।

श्री रणजीत सिंह,
महानिरीक्षक,
सीमा सुरक्षा दल।

श्री डी० एन० कौल,
उप निदेशक,
सीमा सुरक्षा दल।

ब्रिगेडियर सुच्चा सिंह,
उप निदेशक (प्रशिक्षण),
सीमा सुरक्षा दल।

ब्रिगेडियर जी० एस० रंधावा,
उप महा निरीक्षक,
सीमा सुरक्षा दल।

कर्नल गुरुदास सिंह,
सहायक निदेशक,
सीमासुरक्षा दल।

लेफ्टिनेंट कर्नल मेष सिंह,
कमांडेंट,
18वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल।

श्री डी० ए० महादकर,
कमांडेंट,
75वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल।

श्री सम्पूर्ण सिंह,
कमांडेंट,
31वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल।

श्री देवकांत काकटी
मंडल संयोजक,
मंत्रि मंडल सचिवालय।

श्री हरनाथ सरकार,
मंडल सयोजक,
मंत्रि मंडल सचिवालय।

लेफ्टिनेंट कर्नल नसीब सिंह,
कमांडेंट,
7वीं बटालियन,
भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।

2. ये पदक राष्ट्रपति के पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक से संबंधित नियमों के नियम 4 (ii) के अन्तर्गत दिये जा रहे हैं।

सं० 82-प्रेज/०.72:—राष्ट्रपति निम्नांकित अधिकारियों को 1971 के भारत पाकिस्तान संघर्ष तथा बंगलादेश संक्रियाओं के संबंध में की गई सराहनीय सेवाओं के लिए सहर्ष पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

श्री सतीश कुमार झा,
पुलिस अधीक्षक,
गारो हिल्स,
असम।

श्री देवेन्द्र नाथ सोनवाल,
पुलिस अधीक्षक,
कचार,
असम।

श्री ऊषा रंजन दत्त,
पुलिस उप अधीक्षक,
शिलांग,
असम।

श्री त्रिपुरतनय, भट्टाचार्जी,
निरीक्षक,
6वीं असम पुलिस बटालियन,
असम।

श्री मिठ्ठाराम दत्त
पुलिस निरीक्षक,
विशेष शाखा शिलांग,
असम।

श्री नवेंदू रंजन सिल,
पुलिस उप निरीक्षक,
कचार जिला कार्यपालक दल,
असम।

श्री मोहिनी रंजन बर्मन,
पुलिस निरीक्षक,
डुबरी,
असम ।

श्री नगेन्द्रचन्द्र बरुआ,
पुलिस उप निरीक्षक,
जिला गारो हिल्स ,
असम ।

श्री जीतेन्द्र कुमार चौधरी
पुलिस उप निरीक्षक,
विशेष शाखा ,
असम ।

श्री दक्षिण रंजन राय,
पुलिस निरीक्षक,
विशेष शाखा,
असम ।

श्री प्रियधर नाथ,
पुलिस उप निरीक्षक,
मनंकचार पुलिस थाना,
असम ।

श्री रणछोड़ भवा रबाड़ी,
सशस्त्र पुलिस कांस्टेबल,
जिला बांसकान्ता,
गुजरात ।

श्री आर० के० शर्मा
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक,
फिरोजपुर,
पंजाब ।

श्री एम० आर० शर्मा,
पुलिस अधीक्षक,
गुरुदासपुर,
पंजाब ।

श्री कपूर सिंह,
पुलिस निरीक्षक, संख्या 59/डब्ल्यू० (स्थानापन्न)
पंजाब ।

श्री शेर सिंह,
पुलिस उप निरीक्षक, संख्या 176/
एल० डी० एच० (स्थानापन्न)
पंजाब ।

श्री तेज सिंह ,
पुलिस अधीक्षक,
जिला जैसलमेर,
राजस्थान ।

श्री डी० आर० पुरी,
पुलिस अधीक्षक,
जिला गंगा नगर
राजस्थान ।

श्री स्वरूप कुमार मुखर्जी ,
पुलिस अधीक्षक,
पश्चिम दिनाजपुर
पश्चिम बंगाल ।

श्री सतेन्द्र विकास घोष,
पुलिस उप निरीक्षक,
कूच बिहार,
पश्चिम बंगाल ।

श्री अंकेश चन्द्र अच्चार्य,
पुलिस उप निरीक्षक,
कूच बिहार,
पश्चिम बंगाल ।

श्री रेवती नाथ विस्वास,
पुलिस उप निरीक्षक,
पश्चिम दिनाजपुर,
पश्चिम बंगाल ।

श्री सुभाष चन्द्र राय भौमिक,
पुलिस उप निरीक्षक,
सौनपुरा,
त्रिपुरा ।

श्री वीरेन्द्र नाथ मुखर्जी,
पुलिस उप निरीक्षक,
सबरूम,
त्रिपुरा ।

श्री निरोद बन्धु चक्रवर्ती,
पुलिस उप अधीक्षक,
विशेष शाखा,
त्रिपुरा ।

श्री विश्व भूषण मुखर्जी,
पुलिस मंडल आधीक्षक,
सौनपुरा,
त्रिपुरा ।

श्री ननीगोपाल भट्टाचार्जी,
पुलिस उप निरीक्षक,
बलोनिया,
त्रिपुरा ।

श्री राधा मोहन सिन्हा,
पुलिस उप निरीक्षक,
कमालपुर,
त्रिपुरा ।

श्री अमूल्य देव वर्मा,
पुलिस उप निरीक्षक,
त्रिपुरा ।

श्री समरेन्द्र दास,
हवलदार,
कमालपुर गव-ट्रेजरी,
त्रिपुरा

श्री भागर्व रंजन भट्टाचार्जी,
पुलिस निरीक्षक,
अगरतला
त्रिपुरा ।

श्री ब्रजपाल सिह
उप महानिरीक्षक,
सीमा सुरक्षा दल ।

ब्रिगेडियर श्री राम,
उप महानिरीक्षक, राजौरी,
सीमा सुरक्षा दल ।

लेफ्टिनेन्ट कर्नल प्रवीर कुमार चक्रवर्ती,
कमांडेंट,
76वी बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल ।

कर्नल पी० शर्मा,
कमांडेन्ट,
सेंट्रल स्टोर एण्ड वर्कशाप,
सीमा सुरक्षा दल ।

लेफ्टिनेन्ट कर्नल पी० के० बनर्जी,
कमांडेन्ट,
91वी बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल ।

श्री एन० ए० एस० खान,
उप निदेशक,
सीमा सुरक्षा दल ।

श्री एस० पी० बनर्जी,
उप महानिरीक्षक
शिलांग,
सीमा सुरक्षा दल ।

श्री वी० के० वर्मा,
सहायक निदेशक,
सीमा सुरक्षा दल (मुख्यालय)

श्री टी० अनन्ता चारी,
सहायक निदेशक,
सीमा सुरक्षा दल (मुख्यालय) ।

श्री रमेन दास,
कमांडेंट,
87वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल ।

श्री सुरजीत सिंह मान,
कमांडेंट,
24वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल ।

श्री शांतिमोय वर्धन,
उप कमांडेंट,
91वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल ।

श्री बीरेन्द्र नारायण भट्टाचार्जी,
संयुक्त सहायक निदेशक (संचार),
सीमा सुरक्षा दल ।

लेफ्टिनेन्ट कर्नल एस० जे० एस० राजामानिकम,
कमांडेन्ट,
25वी बटालियन,
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल ।

मेजर प्रेम राज,
कमांडेंट,
20वीं बटालियन,
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल ।

श्री देवेन्द्र कुमार,
पुलिस उप अधीक्षक,
25वीं बटालियन,
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल ।

श्री हरमेल सिंह,
हैड कांस्टेबल संख्या 80/87,
मंत्रिमण्डल सचिवालय ।

श्री रजनीकान्त सेवकलाल पारेख,
उप निदेशक,
मंत्रिमण्डल सचिवालय ।

श्री रणवीर सिंह यादव,
क्षेत्रीय संयोजक,
मंत्रिमण्डल सचिवालय ।

श्री त्रिभुवन सिंह बिष्ट,
सहायक महा निरीक्षक,
भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, ।

2. ये पदक पुलिस पदक से संबंधित नियमों के नियम (ii) के अन्तर्गत दिये जा रहे हैं ।

पे० ना० कृष्णमणि,
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली-1, दिनांक 26 मई 1972

सं० 5/1/72/पी० ए० सी०—लोक-सभा और राज्य-सभा के निम्नलिखित सदस्य लोक लेखा समिति को 30 अप्रैल 1973 को समाप्त होने वाली कार्यावधि के लिए समिति के सदस्य निर्वाचित हुए हैं :—

लोक सभा के सदस्य

1. श्री भागवत झा आजाद
2. श्री आर० वी० बड़े
3. श्रीमती मुकुल बनर्जी
4. श्री ज्योतिर्मय बसु
5. श्री के० जी० देशमुख
6. चौधरी तैयब हुसैन खां
7. श्री देवेन्द्र नाथ महाता
8. श्री मुहम्मद यूसुफ
9. श्री बी० एम० मूर्ति
10. श्री एस० ए० मुरुगनन्तम
11. श्री राम सहाय पांडे
12. श्री एच० एम० पटेल
13. श्रीमती सावित्री श्याम
14. श्री इरा सेझियान
15. श्री राम चंद्र विकल

राज्य सभा के सदस्य

16. श्री एम० आनन्दम
17. श्री जी० बरबोरा
18. श्री विपिन पाल दास
19. श्री पी० एम० पाटिल
20. श्री कल्याण राय
21. श्री सवाईसिंह सिसोदिया
22. श्री श्याम लाल यादव

2. अध्यक्ष महोदय ने श्री ईरा सेझियान को समिति का सभापति नियुक्त किया है।

बी० डी० तिवारी, उप-सचिवालय

मंत्रिमंडल सचिवालय

(कार्मिक विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 17 जून 1972

सं० 32/9/72-स्थापना (ङ)—निम्नलिखित सेवाओं में ग्रेड-IV की रिक्तियों को भरने के लिए 1973 में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा ली जाने वाली प्रतियोगिता परीक्षा के नियम आम जानकारी के लिए प्रकाशित किये जा रहे हैं :—

(i) भारतीय अर्थ सेवा, और

(ii) भारतीय सांख्यिकीय सेवा,

2. इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर भर्ती की जाने वाली रिक्तियों की संख्या का उल्लेख आयोग के द्वारा निकाली गई सूचना में किया जायेगा। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवारों के लिए आरक्षण भारत सरकार द्वारा निश्चित संख्या के अनुसार किया जाएगा।

अनुसूचित जातियों/आदिम जातियों से अभिप्राय निम्नांकित में उल्लिखित जातियों/आदिम जातियों से किसी एक से है, अर्थात् संविधान (अनुसूचित जातियां) आदेश, 1950, संविधान (अनुसूचित जातियां) (भाग ग राज्य) आदेश, 1951, संविधान (अनुसूचित आदिम जातियां) आदेश, 1950, संविधान (अनुसूचित आदिम जातियां) (भाग ग राज्य) आदेश, 1951, (बम्बई पुनर्गठन अधिनियम, 1950 और पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 के साथ पठित अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों (सूचियों का संशोधन) आदेश, 1956 द्वारा यथा संशोधित), संविधान (जम्मू और काश्मीर) अनुसूचित जातियां आदेश, 1956 संविधान (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह) अनुसूचित आदिम जातियां आदेश, 1959, संविधान (दादरा और नागर हवेली) अनुसूचित आदिम जातियां आदेश, 1962 संविधान (दादरा और नगर हवेली) अनुसूचित आदिम जातियां आदेश, 1962 और संविधान (पांडिचेरी) अनुसूचित जातियां आदेश, 1964 संविधान (अनुसूचित आदिम जातियां) (उत्तर प्रदेश) आदेश, 1967, संविधान (गोवा, दमन और दीव) अनुसूचित जातियां आदेश, 1968, संविधान (गोवा, दमन और दीव) अनुसूचित आदिम जातियां आदेश, 1968 और संविधान (नागालैंड) अनुसूचित आदिम जातियां आदेश, 1970।

3. संघ लोक सेवा आयोग यह परीक्षा नियमों के परिशिष्ट-II में विहित रीति से लेगा।

परीक्षा की तारीख और स्थान आयोग द्वारा नियत किये जायेंगे।

4. उम्मीदवार को या तो —

(क) भारत का नागरिक होना चाहिए या

(ख) सिक्किम की प्रजा, या

(ग) नेपाल की प्रजा, या

(घ) भूटान की प्रजा, या

(ङ) ऐसा तिब्बती शरणार्थी जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से 1 जनवरी 1972 से पहले भारत आ गया हो, या

(च) मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से पकिस्तान, वर्मा, लंका और पूर्वी अफ्रीका के कीनिया, उगांडा तथा संयुक्त गणराज्य टैंजानिया (भूतपूर्व टांगानिका और जंजीबार) देशों से आया हो।

परन्तु ऊपर की (ग), (घ) और (ङ) और (च) कोटियों के अन्तर्गत आने वाले उम्मीदवार के पास भारत

सरकार द्वारा दिया गया पात्रता (एलिजिबिलिटी) प्रमाण पत्र होना चाहिए।

परीक्षा मे उस उम्मीदवार को भी बैठने दिया जा सकता है जिसके लिये पात्रता प्रमाणपत्र आवश्यक हो और उसे सरकार द्वारा प्रमाण पत्र दिये जाने की शर्त के साथ, अनंतिम रूप से नियुक्त भी किया जा सकता है।

5. (क) इस परीक्षा में बैठने वाले उम्मीदवार के लिए आवश्यक है कि उसकी आयु 1 जनवरी 1973 को 21 वर्ष की पूरी हो गई हो किन्तु 26 वर्ष की न हुई हो, अर्थात् उसका जन्म 2 जनवरी, 1947 से पहले और 1 जनवरी 1952 के बाद न हुआ हो।

(ख) ऊपर निर्धारित ऊपरी आयु सीमा में छूट दी जा सकती है :—

(i) यदि उम्मीदवार किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का हो तो अधिक से अधिक पाच वर्ष,

(ii) यदि उम्मीदवार पूर्वी पाकिस्तान से 1 जनवरी 1964 को या उसके बाद भारत मे आया वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(iii) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और वह 1 जनवरी 1964 को या उसके बाद पूर्वी पाकिस्तान से आया वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(iv) यदि उम्मीदवार संघ राज्य क्षेत्र पांडिचेरी का निवासी हो तथा उसने किसी स्तर तक फ्रांसीसी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(v) यदि उम्मीदवार अक्तूबर 1964 के भारत-श्रीलंका समझौते के अधीन 1 नवम्बर, 1964 को या उसके बाद, श्रीलंका से वास्तव में प्रत्यावर्तित होकर, भारत में, आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(vi) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और साथ ही अक्तूबर 1964 से भारत श्रीलंका समझौते के अधीन 1 नवम्बर 1964 को या उसके बाद श्रीलंका से वास्तविक रूप से प्रत्यावर्तित होकर भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(vii) यदि उम्मीदवार गोवा, दमन तथा दीव के संघ राज्य क्षेत्र का निवासी हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(viii) यदि उम्मीदवार कीनिया, उगांडा, तथा संयुक्त गणराज्य टंजानिया (भूतपूर्व टेंगानिका तथा जंजीबार) से आया मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(ix) यदि उम्मीदवार 1 जून 1963 को या उसके बाद, बर्मा से वास्तव मे प्रत्यावर्तित होकर, भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(x) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित आदिम जाति का हो और साथ ही 1 जून 1963 को या उसके बाद, बर्मा से, प्रत्यावर्तित होकर, भारत मे आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(xi) यदि उम्मीदवार रक्षा सेवाओं मे किसी बाह्य देश के साथ सघर्ष में या अशांति-ग्रस्त मे सैनिक कार्यवाही के समय विकलांग होकर निर्मुक्त हुआ सैनिक हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष, और

(xii) यदि उम्मीदवार रक्षा सेवाओं मे किसी बाह्य देश के साथ संघर्ष में या अशांति-ग्रस्त क्षेत्र में सैनिक कार्यवाही के समय विकलांग होकर निर्मुक्त हुआ सैनिक हो और अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो तो अधिक से अधिक आठ वर्ष।

उपर्युक्त परिस्थितियों को छोड़कर निर्धारित आयु सीमा में किसी भी हालत मे छूट नही दी जाएगी।

6. (क) भारतीय आर्थिक सेवा के लिए उम्मीदवार के पास परिशिष्ट-I में उल्लिखित किसी विश्वविद्यालय की अर्थशास्त्र या सांख्यिकी विषय सहित उपाधि होनी चाहिए।

(ख) भारतीय सांख्यिकीय सेवा के लिए उम्मीदवार के पास परिशिष्ट-I में उल्लिखित किसी विश्वविद्यालय की सांख्यिकीय या गणित या अर्थशास्त्र विषय सहित उपाधि होनी चाहिए, अथवा उसके पास परिशिष्ट-Ic में उल्लिखित अर्हताओं में से कोई एक अर्हता होनी चाहिए।

टिप्पणी (1) :—यदि कोई उम्मीदवार किसी ऐसी परीक्षा मे बैठ चुका हो जिसे उत्तीर्ण कर लेने पर

वह इस परीक्षा में बैठ सकता है किन्तु अभी उसे परीक्षा परिणाम की सूचना न मिली हो तो ऐसी स्थिति में वह उस परीक्षा में बैठने के लिए आवेदन कर सकता है। जो उम्मीदवार इस प्रकार की अर्हता परीक्षा (क्वालीफाइंग एक्जामिनेशन) में बैठना चाहता हो, वह भी आवेदन कर सकता है बशर्ते कि वह अर्हता परीक्षा इस परीक्षा के आरम्भ होने से पहले समाप्त हो जाये, ऐसे उम्मीदवारों को यदि वे अन्य शर्तें पूरी करते हों तो इस परीक्षा में बैठने दिया जायेगा। परन्तु परीक्षा में बैठने की अनुमति अनन्तिम मानी जाएगी और यदि वे अर्हता परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण जल्दी से जल्दी और हर हालत में इस परीक्षा के प्रारम्भ होने की तारीख से अधिक से अधिक 2 महीने के भीतर प्रस्तुत नहीं करते, तो यह अनुमति रद्द की जा सकती है।

टिप्पणी (2) :—विशेष परिस्थितियों में, संघ लोक सेवा आयोग ऐसे किसी उम्मीदवार को भी परीक्षा में प्रवेश का पात्र मान सकता है जिसके पास उपर्युक्त अर्हताओं में से कोई भी अर्हता न हो बशर्ते कि उस उम्मीदवार के अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित कोई ऐसी परीक्षाएं पास की हों जिनके स्तर को देखते हुए आयोग उसको परीक्षा में प्रवेश देना उचित समझे।

टिप्पणी (3) :—यदि कोई उम्मीदवार अन्यथा परीक्षा में प्रवेश का पात्र हो किन्तु उसने ऐसे विदेशी विश्वविद्यालय से उपाधि ली हो जो परिशिष्ट-I में सम्मिलित न हो तो वह भी आयोग को आवेदन कर सकता है और आयोग यदि उचित समझे तो उसे परीक्षा में प्रवेश दे सकता है।

7. उम्मीदवारों को आयोग के नोटिस के परिशिष्ट-I में निर्धारित शुल्क अवश्य देना होगा।

8. जो उम्मीदवार स्थायी या अस्थायी रूप से पहले से ही सरकारी सेवा करता हो, उसे इस परीक्षा में बैठने से पहले अपने विभाग के अध्यक्ष की अनुमति अवश्य लेनी होगी।

9. परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवार की पात्रता या अपात्रता के बारे में आयोग का निर्णय अन्तिम होगा।

10. किसी उम्मीदवार को परीक्षा में तब तक नहीं बैठने दिया जाएगा, जब तक कि उसके पास आयोग का प्रवेश प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट आफ एडमिशन) नहीं होगा।

11. यदि कोई उम्मीदवार किसी भी प्रकार से अपनी उम्मीदवारी के लिए पैरवी करेगा तो उसे परीक्षा में बैठने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया जायेगा।

12. यदि किसी उम्मीदवार को आयोग ने किसी दूसरे व्यक्ति की परीक्षा दिलवाने अथवा जाली या फेर-बदल किये हुए प्रमाणपत्र पेश करने अथवा गलत या झूठा तथ्य प्रस्तुत करने अथवा किसी तथ्य को छिपाने या परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए कोई अन्य अनियमित या अनुचित उपाय अपनाने या अपनाने की चेष्टा करने अथवा परीक्षा भवन में किसी तरह का अनुचित आचरण करने के फलस्वरूप अपराधी घोषित किया है तो उसके विरुद्ध दाण्डिक अभियोजन के अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यवाही की जा सकती है :—

(क) सदा के लिए अथवा किसी विशेष अवधि के लिए परीक्षा से वंचित किया जाना :—

(i) आयोग द्वारा उम्मीदवारों के लिए आयोजित किसी परीक्षा में सम्मिलित होने अथवा किसी साक्षात्कार में उपस्थित होने से, और

(ii) केन्द्रीय सरकार द्वारा सरकार के अंतर्गत नौकरियों के लिए।

(ख) यदि वह पहले से ही सरकार की सेवा में हो तो उचित नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है।

13. जो उम्मीदवार लिखित परीक्षा में उतने न्यूनतम अर्हता अंक (क्वालीफाइंग मार्क्स) प्राप्त कर लेगा जितने आयोग अपने निर्णय से निश्चित करे, तो उसे आयोग मौखिक परीक्षा के लिए बुलाएगा।

14. परीक्षा के बाद आयोग उम्मीदवारों के द्वारा अंतिम रूप से प्राप्त कुल अंकों के आधार पर योग्यता क्रम में उनकी सूची बनाएगा और उसी क्रम से उन उम्मीदवारों में से जितने लोगों को आयोग परीक्षा के आधार पर योग्य समझेगा नियुक्तियों के लिए सिफारिश करेगा। ये नियुक्तियां उतनी अनारक्षित रिक्तियों पर की जाएंगी, जितनी का निर्णय परीक्षा के परिणाम के आधार पर किया जाएगा।

लेकिन शर्त यह है कि यदि स्तर के आधार पर अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के लिए आरक्षित पद नहीं भरे जा सकते हैं तो आरक्षित कोटे को पूरा करने के लिए, स्तर में छूट देकर अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवारों को नियुक्त करने के लिए, सेवा के लिए योग्य होने पर, परीक्षा की योग्यता सूची में उनकी श्रेणी को ध्यान में रखे बिना ही आयोग द्वारा सिफारिश की जा सकती है।

15. प्रत्येक उम्मीदवार को परीक्षा फल की सूचना किस रूप में और किस प्रकार दी जाय, उसका निर्णय आयोग स्वयं करेगा। आयोग परीक्षा फल के बारे में किसी भी उम्मीदवार से पत्राचार नहीं करेगा।

16. यदि कोई उम्मीदवार दोनों सेवाओं के लिए प्रतियोगिता परीक्षा में बैठ रहा हो, तो उम्मीदवार द्वारा अपना आवेदन पत्र देते समय व्यक्त किए गए अधिमान-क्रम (प्रेफेरेन्स) उस पर उचित रूप से विचार किया जाएगा।

17. परीक्षा में पास हो जाने से नियुक्ति का अधिकार तब तक नहीं मिलेगा जब तक कि सरकार आवश्यक जांच के बाद संतुष्ट न हो जाये कि उम्मीदवार सेवा में नियुक्ति के लिए हर प्रकार से योग्य है।

18 उम्मीदवार को मानसिक और शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य होना चाहिए और उसमें कोई ऐसा शारीरिक दोष नहीं होना चाहिए जिससे वह संबंधित सेवा में अधिकारी के रूप में अपने कर्तव्यों को कुशलतापूर्वक न निभा सके। यदि सरकार या सक्षम प्राधिकारी द्वारा निर्धारित शारीरिक परीक्षा के बीच किसी उम्मीदवार के बारे में यह ज्ञात हो कि वह इन आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता है तो उसकी नियुक्ति नहीं की जाएगी। आयोग द्वारा मौखिक परीक्षा के लिए बुलाए गए प्रत्येक उम्मीदवार को शारीरिक परीक्षा की जांच करवानी होगी।

नोट —बाद में निराश न होना पड़े इस लिए उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे परीक्षा में प्रवेश के लिए आवेदन पत्र भेजने से पहले सिविल-सर्जन के स्तर के सरकारी चिकित्सा अधिकारी से अपनी जांच करवा लें। नियुक्ति से पहले उम्मीदवारों की किस प्रकार की डाक्टरी जांच होगी और उसके लिए स्वस्थ्य का स्तर किस प्रकार का होना चाहिए इसे ब्योरे इन नियमों के परिशिष्ट IV में दिये गए हैं। रक्षा सेवाओं में विकलांग हुए भूतपूर्व सैनिकों के लिए स्वास्थ्य स्तर में सेवाओं की आवश्यकताओं के अनुसार छूट दी जाएगी।

19. (क) जिसने ऐसी महिला/ऐसे पुरुष से विवाह करने का करार किया हो अथवा विवाह कर लिया हो जिसका पति/जिसकी पत्नी जीवित हो, अथवा

(ख) जिसने जीवित पत्नी/पति के होते हुए किसी अन्य व्यक्ति के साथ विवाह करने का करार किया हो अथवा विवाह कर लिया हो वह उक्त पद पर नियुक्ति का पात्र नहीं होगा/होगी।

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार इस बात से सन्तुष्ट हो कि ऐसा विवाह उस व्यक्ति पर अथवा जिससे विवाह किया गया हो उस पर लागू होने वाले वैयक्तिक कानून के अधीन अनुज्ञेय है और ऐसा करने के अन्य कारण भी है तो ऐसे व्यक्ति को ऐसे कानून से छूट दे सकती है।

20. इस परीक्षा के द्वारा जिन सेवाओं के लिए भर्ती की जा रही है उनका संक्षिप्त ब्यौरा परिशिष्ट-III में दिया गया है।

बी० एल० मथुरिया, अवर सचिव

परिशिष्ट I

भारत सरकार द्वारा अनुमोदित विश्वविद्यालयों की सूची

(नियम 6 के अनुसार)

भारतीय विश्वविद्यालय

कोई भी ऐसा विश्वविद्यालय जो भारत के केन्द्रीय या राज्य विधान मण्डल के अधिनियम से निगमित किया गया हो अथवा अन्य शिक्षा संस्थाएं जिन्हें समद के अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया है अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत विश्वविद्यालय मान लिये जाने की घोषणा की जा चुकी है।

बर्मा के विश्वविद्यालय

रंगून विश्वविद्यालय
माडले विश्वविद्यालय

इंगलैंड और वेल्स के विश्वविद्यालय

बर्मिंघम, ब्रिस्टल, कैम्ब्रिज, डरहम, लीड्स, लिवरपूल, लंदन, मैंचेस्टर, ओक्सफोर्ड, रिडिंग, शैफील्ड तथा वैल्स के विश्वविद्यालय।

स्काटलैंड के विश्वविद्यालय

एबरडीन, एडिनबरा, ग्लास्गो, और सैंट एन्ड्रूज विश्वविद्यालय

आयरलैंड के विश्वविद्यालय

डबलिन विश्वविद्यालय (ट्रिनीटी कालेज)
आयरलैण्ड नेशनल विश्वविद्यालय
क्वीन्स विश्वविद्यालय, बैलफास्ट

पाकिस्तान विश्वविद्यालय

पंजाब विश्वविद्यालय
सिंध विश्वविद्यालय

बंगला देश के विश्वविद्यालय

ढाका विश्वविद्यालय
राजशाही विश्वविद्यालय

नेपाल के विश्वविद्यालय

परिशिष्ट I क

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू

केवल भारतीय सांख्यिकीय सेवा की परीक्षा में बैठने के लिये मान्यताप्राप्त अर्हताओं की सूची [नियम 6(ख) के अनुसार]

(i) भारतीय सांख्यिकीय संस्थान
कलकत्ता का संख्याविद—डिप्लोमा
(स्टेटिस्टीशियन डिप्लोमा) और

(ii) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के भारतीय कृषि अनुसंधान सांख्यिकीय संस्था का व्यवसायिक संख्याविद प्रमाण पत्र (प्रोफेसनल स्टेटिस्टीशियन सार्टिफिकेट)

परिशिष्ट II

खण्ड I

लिखित परीक्षा की रूपरेखा

भारतीय अर्थसेवा और भारतीय सांख्यिकीय सेवा की परीक्षा के विषय :—

(क) लिखित परीक्षा —

(i) निम्नलिखित खण्ड-II के उप-खण्ड क्रमश (क) (क) और (ख) (क) में दिये गये अनिवार्य विषय जिनके अधिकतम अंक 700 होंगे।

(ii) निम्नलिखित खण्ड II के उप-खण्ड क्रमशः (क) (ख) और (ख) (ख) में दिये गये ऐच्छिक विषयों में से चुने गये विषय/प्रत्येक सेवा के

उम्मीदवार उन उपखण्डों के उपबन्धों के किन्तु अधीन 400 अंक तक के ऐच्छिक विषय ले सकते हैं ।

(ख) **मौखिक परीक्षा**:—[इस परिशिष्ट की अनुसूची के भाग (ख) को देखिये] उन उम्मीदवारों के लिए अधिकतम 250 अंक होंगे जिनको आयोग बुलाएगा ।

खण्ड II

परीक्षा के विषय

(क) भारतीय अर्थ सेवा

(क) अनिवार्य विषय देखिये ऊपर खण्ड I का उप खण्ड (क) का खण्ड (i)

	पूर्णांक
(1) सामान्य अंग्रेजी	150
(2) सामान्य ज्ञान	150
(3) अर्थशास्त्र–1	200
(4) अर्थशास्त्र-2	200

(ख) ऐच्छिक विषय (देखिये ऊपर खण्ड–I के उप खण्ड (क) (II)

(1) तुलनात्मक आर्थिक विकास	200
(2) द्रव्य तथा लोक वित्त	200
(3) ग्राम अर्थशास्त्र तथा सहकारिता	200
(4) अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र	200
(5) सांख्यिकी-1	200
*(6) सांख्यिकी–2	200
(7) गणितीय अर्थ शास्त्र तथा ज्यमिति	200
(8) नमूना सर्वेक्षण	200
(9) औद्योगिक अर्थशास्त्र	200
(10) व्यापार के सिद्धांत और अभ्यास	200
(11) व्यवसाय वित्त तथा लेखा	200
(12) व्यवसाय प्रबन्ध तथा वाणिज्य नियम	200

शर्त यह है कि किसी उम्मीदवार को "अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र" (4) और व्यापार के सिद्धांत तथा अभ्यास (10) दोनों विषय चुनने की अनुमति नहीं दी जायेगी ।

इस विषय में निम्नलिखित पांच शाखाओं में से प्रत्येक पर भिन्न भिन्न प्रश्न पत्र होंगे, अर्थात् :—(i) औद्योगिक सांख्यिकी, (सांख्यिकीय गुण नियंत्रण सहित) (ii) आर्थिक साख्यिकी (iii) शैक्षिक सांख्यिकी (iv) जनन सांख्यिकी तथा (v) जन्मविद्या और जन्म मरण सांख्यिकी । इनमें से उम्मीदवार को किन्हीं दो का चुनाव करना है । प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए अधिकतम अंक 100 होंगे ।

(ख) भारतीय सांख्यिकीय सेवा

(क) अनिवार्य विषय [ऊपर खण्ड–I के उप खण्ड (क) के उप खण्ड (I) को देखिये] ।

	पूर्णांक
(1) सामान्य अंग्रेजी	150
(2) सामान्य ज्ञान	150
(3) सांख्यिकी-1	200
(4) सांख्यिकी–2	200

(ख) ऐच्छिक विषय [ऊपर खण्ड I के उप खण्ड (i) (ii) को देखिये] ।

(1) उच्च संभाविता तथा यादृच्छिक प्रक्रिया	200
(2) सांख्यिकीय अनुमिति	200
(3) प्रयोग अभिकल्पना	200
*(4) नमूना सर्वेक्षण	200
(5) अर्थ शास्त्र–I	200
(6) अर्थशास्त्र–II	200
(7) गणितीय अर्थशास्त्र तथा अर्थमिति	200
(8) तुलनात्मक आर्थिक विकास	200
(9) शुद्ध गणित–I	200
(10) शुद्ध गणित–II	200
(11) शुद्ध गणित–III	200
(12) प्रयुक्त गणित	200

*इस विषय में निम्नलिखित पांच शाखाओं में से प्रत्येक पर भिन्न भिन्न प्रश्न पत्र होंगे, अर्थात् (i) औद्योगिक सांख्यिकीय (सांख्यिकीय गुण नियत्रण सहित (ii) आर्थिक साख्यिकीय (iii) शैक्षिक सांख्यिकी (iv) जनन साख्यिकी तथा (v) जन्मविद्या और जन्म मरण सांख्यिकी । इनमें से उम्मीदवार को किन्हीं दो का चुनाव करना है । प्रत्येक प्रश्न-पत्र के लिये अधिकतम 100 अंक होंगे ।

नोट :—इस खण्ड में दिये हुये विषयों का पाठ्य विवरण और स्तर इस परिशिष्ट अनुसूची के भाग (क) में किया गया है ।

खण्ड III

सामान्य

1. सभी प्रश्न पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में ही लिखने होंगे ।

2. सांख्यिकी–II को छोड़कर उपर्युक्त खण्ड II में दिये गये विषय के प्रश्न पत्र के लिए 3 घण्टे का समय दिया जायेगा । सांख्यिकीय–II में इस परिशिष्ट की अनुसूची के भाग (क) की मद (आइटम) 6 पर इस विषय के नीचे दिये गये नोट के अनुसार डेढ़-डेढ़ घण्टे के पांच प्रश्न पत्र होंगे ।

3. उम्मीदवारों को प्रश्नों का उत्तर अपने हाथ से लिखना होगा । उन्हें किसी भी हालत में उत्तर लिखने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लेने की अनुमति नहीं दी जायेगी ।

4. आयोग अपने निर्णय से परीक्षा के किसी एक या सभी विषयों के अर्हक अंक (क्वालिफाईंग मार्क्स) निर्धारित कर सकता है ।

5 भारतीय अर्थ सेवा के लिए केवल उन्हीं उम्मीदवारों के दो ऐच्छिक प्रश्न पत्रों तथा निम्नलिखित अनिवार्य विषयों, अर्थात सामान्य अंग्रेजी तथा सामान्य ज्ञान के प्रश्न पत्रों को जांचा और अंकित किया जायेगा जो लिखित परीक्षा के अर्थशास्त्र-I और अर्थशास्त्र–II विषयों में एक निश्चित न्यूनतम स्तर प्राप्त करेंगे, जैसा कि आयोग द्वारा अपने निर्णय से निर्धारित किया जायेगा ।

भारतीय सांख्यिकीय सेवा के लिये केवल उन्हीं उम्मीदवारों के दो ऐच्छिक प्रश्न पत्रों तथा निम्नलिखित अनिवार्य विषयों, अर्थात् सामान्य अंग्रेजी तथा सामान्य ज्ञान के प्रश्न पत्रों को जांचा और अंकित किया जायेगा जो लिखित परीक्षा के सांख्यिकीय-I और सांख्यिकीय-II विषयों में एक निश्चित न्यूनतम स्तर प्राप्त करेंगे जैसा कि आयोग द्वारा अपने निर्णय से निर्धारित किया जायेगा।

6. यदि किसी उम्मीदवार की लिखावट आसानी से पढ़ने लायक नहीं होगी तो उसे अन्यथा मिलने वाले कुल नम्बरों में से कुछ नम्बर काट लिये जायेंगे।

7. केवल सनही ज्ञान के लिए नम्बर नहीं दिये जायेंगे।

8. परीक्षा के सभी विषयों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जायेगा कि अभिव्यक्ति कम से कम शब्दों में क्रमबद्ध तथा प्रभावपूर्ण ढंग से और ठीक ठीक की गई हो।

9. उम्मीदवारों से तोल और माप की मीट्रिक प्रणाली की जानकारी की आशा की जाती है। प्रश्नों के उत्तर जहां कहीं ऐसा आवश्यक हो, तोल और माप की मीट्रिक प्रणाली का ही उपयोग किया जाये।

अनुसूची

(भाग-क)

अंग्रेजी भाषा तथा सामान्य ज्ञान के प्रश्न पत्रों का स्तर यही होगा जिसकी भारतीय विश्वविद्यालय के स्नातक से अपेक्षा की जा सकती है।

अन्य विषयों के प्रश्न पत्र किसी भारतीय विश्वविद्यालय के संबद्ध व्यवस्थाओं के अंतर्गत "मास्टर" डिग्री परीक्षा स्तर के होंगे। उम्मीदवारों से तथ्यों द्वारा सिद्धान्त की व्याख्या करने और सिद्धांतों द्वारा समस्याओं का विश्लेषण करने की अपेक्षा की जाएगी उनसे अर्थशास्त्र सांख्यिकी के क्षेत्र (क्षेत्रों) में भारतीय समस्याओं से संबंधित विशेष रूप से निपुणता की अपेक्षा की जाएगी।

1. सामान्य अंग्रेजी

उम्मीदवारों को अंग्रेजी भाषा में एक निबन्ध लिखना होगा। अन्य प्रश्न उम्मीदवारों की अंग्रेजी संबंधी योग्यता एवं अंग्रेजी शब्दों के सामान्य प्रयोग की जांच करने के लिए रखे जायेंगे। साधारणतया सारांश अथवा सारलेखन के लिए गद्यांश रखे जायेंगे।

2. सामान्य ज्ञान

इस प्रश्न पत्र के दो भाग होंगे :—

पहले भाग में उम्मीदवारों से ऐसे प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें सामयिक घटनाओं का और दिन प्रतिदिन देखी और अनुभव की जाने वाली बातों के वैज्ञानिक पक्ष का ऐसा ज्ञान सम्मिलित है जिसकी किसी ऐसे शिक्षित व्यक्ति से अपेक्षा की जा सकती है जिसने वैज्ञानिक विषयों का विशेष अध्ययन न किया हो। इस प्रश्न पत्र में भारतीय इतिहास और भूगोल के ऐसे प्रश्न भी होंगे जिनका उत्तर उम्मीदवारों को विशेष अध्ययन के बिना ही जाना चाहिए।

दूसरे भाग में ऐसे प्रश्न पूछे जायेंगे जिनके द्वारा उम्मीदवारों को तथ्यों और आंकड़ों का प्रयोग करने तथा उनसे तर्क संगत निष्कर्ष निकालने, जटिलताओं को प्रत्यक्ष जान लेने की योग्यता एवं महत्वपूर्ण और कम महत्वपूर्ण के बीच अंतर करने की योग्यता की जांच की जा सके।

3. अर्थशास्त्र-I

क्षेत्र तथा रीतिविधान

संतुलन विश्लेषण

उपभोक्ता की मांगका सिद्धांत। तटस्थ वक्र लेखाओं का विश्लेषण, अधिमान संबंधी विचार धाराएं, उपभोक्ता की बचत; उत्पत्ति के सिद्धांत, उत्पत्ति के कारक। उत्पत्ति-फलेन, उत्पत्ति का नियम। फर्म तथा उद्योग के अंतर्गत साम्य।

विभिन्न प्रकार के बाजार संगठनों में मूल्य निर्धारण। समाजवादी अर्थ व्यवस्था में मूल्य निर्धारण। मिश्रित अर्थव्यवस्था में मूल निर्धारण

लोकोपयोगी सेवाएं :—लोकोपयोगताओं की आर्थिक विशेषताएं।

लोकोपयोगिताओं में मूल्य निर्धारण, लोकोपयोगिताओं का नियमन।

वितरण का सिद्धांत। उत्पत्ति कारकों का मूल्य निर्धारण, लगान, मजदूरी ब्याज तथा लाभ के सिद्धांत। समाविष्ट वितरण सिद्धांत। राष्ट्रीय आय में मजदूरी का भाग। लाभ और आर्थिक प्राप्त। आय वितरण में असमानताएं।

रोजगार और उत्पादन का सिद्धांत :—क्लासिकल तथा नान-क्लासिकल विचार धाराएं। कीन्स का रोजगार सिद्धांत। कीन्स के बाद के सिद्धांत। आर्थिक उतार चढ़ाव। व्यापार चक्रों के सिद्धांत व्यापार चक्रों को नियंत्रित करने के लिए वित्तीय तथा मीट्रिक नीतियां।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र—कल्याणकारी अर्थशास्त्र का क्षेत्र, क्लासिकल तथा नान-क्लासिकल विचार धाराएं। नवीन कल्याणकारी अर्थशास्त्र तथा क्षतिपूर्ति के सिद्धात। अनुकूलतम दशाएं, नीति संबंधि बाधाएं।

4. अर्थशास्त्र-II

आर्थिक विकास की संकल्पना तथा उसका मापन। सामाजिक लेखा। राष्ट्रीय आय लेखा। निधि प्रवाह का लेखा, निविष्ट-निपज का लेखा।

सामाजिक विचारधाराएं तथा आर्थिक विकास।

विकासोन्मुखी अर्थव्यवस्थाओं की विशेषताएं तथा समस्याएं।

जनसंख्या की वृद्धि तथा आर्थिक विकास।

विकास के सिद्धांत। विकास के प्रतिमान।

आयोजन—संकल्पना तथा विधियां। समाजवादी तथा पूंजीवादी आर्थिक संगठन के आयोजन। मिश्रित अर्थव्यवस्था के आयोजन। ढांचा (फ्रेमवर्क) आयोजन। क्षेत्रीय आयोजन। विनियोग के सिद्धांत तथा पद्धतियों का चयन। लागत लाभ विश्लेषण। योजना माडल।

भारत में आयोजन। आयोजन का प्रारम्भ। पंचवर्षीय योजनाएं। उद्देश्य तथा पद्धतियां। संस्थाओं की गतिशीलता, प्रशासन

तथा जन सहयोग । मौद्रिक और वित्तीय नीतियों का योगदान । मूल्य नीति, नियंत्रण तथा बाजार विन्यास व्यापार नीति तथा भुगतान संतुलन । सार्वजनिक उद्यमों का योगदान ।

5. सांख्यिकी

विभिन्न प्रकार के सांख्यिकीय सन्निकटन, परिमित अंतर, मानक अन्तर्वेशन सूत्र तथा परिशुद्धताएं, प्रतिलोग अन्तर्वेशन । अवकलन तथा समापलन की सांख्यिकीय विधियां ।

संभाविता की परिभाषा-क्लासिकल मत, कार्यसिद्ध मत । प्रतिचयन अवकाश। पूर्ण एवं मिश्रित समाविता का सिद्धांत। प्रतिबंधी संभाविता स्वतंत्र घटनाएं । बोई का सूत्र । यादृच्छिक चर, संभाविता बंटन । गणितीय प्रत्याशित । पूर्णजनक फलन तथा लक्षण फलन । प्रतिलोभी करण प्रमेय । टेयीकेय की असमता । प्रतिबंधित बंटन । बृहत् संख्याओं के नियम तथा केन्द्रीय सीमित प्रमेय ।

मानकबंटन:– द्वीपद न्यासें, प्रसामान्य आयताकार, पातीव, विलोम द्वीपद, अतिगुणोत्तर कोशी, लापलास, बीटा तथा गामा बंटन । द्विचर तथा बहुचर प्रसामान्य बंटन ।

बृहत् और लघु प्रतिचयन सिद्धांत :—अनन्त स्पर्शीय बंटन तथा बृहत् प्रतिचयन परीक्षण । मानक प्रतिचयन बंटन जैसे टी, एक्स 2, एफ (tx^2F) तथा उन पर आधारित सार्थकता— सहाचर्य तथा आसंग सारणियो का विश्लेषण ।

सह-संबन्ध गुणांक तथा उसका बंटन । फिशर का "जैड", स्थांतरण गुणांक ।

समाश्रयण :—आसंजन रेखा बहुपद । आंशिक सामाश्रयण तथा आंशिक सह-संबंध गुणांक—नल मामलों में उनका बंटन । अंतवर्गीय सह-संबंध । वक्र आसंजन तथा लम्ब कोणीय बहुपद ।

प्रसरण विश्लेषण । एक घातीय प्राक्कलन का सिद्धांत । अन्तक्रिया प्रभाग सहित दिक् वर्गीकर्ण । सहप्रसरण विश्लेषण । प्रयोग अभिकल्पना के मूल सिद्धांत । सामान्य अभिकल्पनाओं का अभिन्यास तथा विश्लेषण जैसे यादृच्छिकीकृत खण्ड तथा लेटिन वर्ग चित्र । उपादानीय प्रयोग तथा संकरण लुप्त क्षेत्र प्रविधियां ।

प्रतिचयन विधियां—प्रतिस्थापन युक्त तथा प्रतिस्थापन रहित सरल यादृच्छ प्रतिचयन । समाश्रयण तथा अनुपात प्राक्कलन । सामूहिक प्रतिचयन, बहुक्रम प्रतिचयन तथा व्यवस्थित प्रतिचयन । प्रतिचयन त्रुटियां ।

प्राक्कलन :—मूल संकल्पनाएं । एक अच्छे प्राक्कलन की विशेषताएं । बिंदु प्राक्कलन तथा अंतराल प्राक्कलन । अधिकतम संभाविता प्राक्कलन तथा उनके गुणवर्ग ।

परिकल्पनाओं के परीक्षण / सांख्यिकीय परिकल्पनाएं :— सरल तथा संयुक्त परिकल्पना । सांख्यिकीय परीक्षण की संकल्पना । त्रुटियों के दो प्रकार । घात फलन । संभाविता अनुपात परीक्षण । विश्वास अंतराल प्राक्कलन ।

अनुकूलतम विश्वास परिबंध ।

असमष्टीय परीक्षण जैसे—संकेत परीक्षण, माध्यिका परीक्षण तथा चाल परीक्षण । सरल विकल्पना के विपरीत सरल परिकल्पना के लिए वाल्ड का अनुक्रमिक संभाविता अनुपात परीक्षण । "ओ० सी०" तथा "ए० एस० एन०" फलन तथा उनके सन्निकट ।

6. सांख्यिकी–II

नोट :—इस विषय में निम्नलिखित पांच शाखाओं में से प्रत्येक पर भिन्न-भिन्न प्रश्न पत्र होंगे, अर्थात् :—(i) औद्योगिक सांख्यिकी (सांख्यिकीय गुण नियंत्रण सहित) (ii) आर्थिक सांख्यिकी (iii) शैक्षिक सांख्यिकी (iv) जनन सांख्यिकी तथा (v) जनविद्या और जन्म मरण सांख्यिकी ।

जो उम्मीदवार इस विषय को अनिवार्य या ऐच्छिक विषय के रूप में लेंगे उन्हें उपर्युक्त किन्हीं दो का चुनाव करना होगा, जिसको उन्हें अपने प्रार्थना पत्र में बताना होगा । एक बार प्रश्न पत्र चुनने के बाद परिवर्तन की अनुमति प्रदान नहीं की जायेगी ।

(i) सांख्यिकीय प्रकार नियंत्रण सहित औद्योगिक आंकड़े

उद्योग के अंतर्गत प्रकार नियंत्रण का सैद्धांतिक आधार । सहनसीमाएं विभिन्न प्रकार के नियंत्रण चार्ट एक्स 'आर' चार्ट, 'पी' और 'सी' चार्ट, वर्ग नियंत्रण चार्ट ।

स्वीकार प्रतिचयन । एक पक्षीय, द्विपक्षीय, बहुपक्षीय तथा अनुक्रमिक प्रतिचयन योजना । "ओ०सी०" तथा "ए०एस०एन०" फलन । गुणों (ATTRIBUTES) तथा चरों (VARIABLES) द्वारा प्रतिचयन डोज रोमिंग तथा अन्य सारणियां ।

औद्योगिक सम्परीक्षण डिजाइन । उद्योगों में समाश्रयण विधियों का प्रयोग तथा प्रसरण विधियों का विश्लेषण । उद्योग में एकजातीया कार्यक्रम सहित संक्रियात्मक अनुसंधान विधियों का प्रयोग ।

(ii) अर्थ-सांख्यिकी

मूल्य और परिमाण के सूचकांक/सूचकांकों के विभिन्न प्रकार, जैसे :—थोक मूल्यों के सूचकांक तथा जीवन निर्वाह के सूचकांक/सूचकांकों का सिद्धांत ।

आय-वितरण । पैरेटो वक्र तथा अन्य वक्र । एककेन्द्रीय वक्र तथा उनके प्रयोग ।

राष्ट्रीय आय । राष्ट्रीय आय के विभिन्न क्षेत्र । राष्ट्रीय आय के प्राक्कलन की विधियां । अंतर्क्षेत्रीय आय प्रक्कलन वर्ग समस्याएं । अन्तर्उद्योग सारिणी । निविष्ट-निष्ट विश्लेषण तथा एकजातीय कार्यक्रम का प्रयोग ।

आर्थिक काल-श्रेणियों का विश्लेषण तथा निर्वचन । आर्थिक काल-श्रेणियां के चार संघटक । गुणात्मक तथा संयोज्यात्मक माडल । वक्र आसंजन तथा चल माध्यविधि उपनति निर्धारण । स्थित तथा चल सामायिक सूचकांकों का निर्धारण। स्वसहसंबंध । आवर्तितावर्क विश्लेषण । युद्दच्छिा का परीक्षण ।

उपभोग और मांग का सिद्धांत, मांग के कार्य, मांग की तौल, काल श्रेणी तथा पारिवारिक बजट आंकड़ों द्वारा मांग का सांख्यिकीय विश्लेषण ।

(iii) शिक्षा सांख्यिकी (मनोभिति सहित) :—

परीक्षण मदों का मापन । प्राप्तांक, मानक प्राप्तांक, सामान्य प्राप्तांक 'टी' तथा 'सी' मान, स्टेनीन मान, शततमक मान ।

मानसिक परीक्षण, परिक्षणों की विश्वसनीयता और संसगीत । विश्वसनीयता की संगणना की विभिन्न विधियां । विश्वसनीयता का सूचक/सुसंगति निर्धारण की प्रक्रियाएं । परीक्षण बैटरी का मान्यकरण चाल बनाम घात परीक्षण ।

उपादन विश्लेषण । मद विश्लेषण । अभिरुचि परीक्षणों में सह-संबंध विधियों का उपयोग ।

स्मरण तथा विस्मरण का माप, स्मरण माडल । अभिवृत्ति तथा मत का माप । समूहगत व्यवहार के माप ।

(iv) जनन आंकड़े

आनुवंशिकता का भौतिक आधार । मेन्डल के नियम । लिंकेज । पृथक्करण का विश्लेषण । लिंकेज की पहिचान तथा प्राक्कलन ।

बहुजनन आनुवंशिकी । दृश्यत्म विचलन के संघटक । अनुवंशिकता का प्राक्कलन, चयन। चयन का आधार । प्रजनन परीक्षण । चरित्र समिश्रण के लिए चयन ।

जनसंख्याजनन । जनन वारंवारता । अतः प्रजनन । यादृच्छिक उभागम । लिंकेज का विसाम्य ।

मानव जनन के तत्व । रक्त वर्गों का अध्ययन । रोग विशेषताएं तथा विपणन ।

(v) जनांकिकी तथा जन्म मरण संबंधी आंकड़े

जीवन सारिणी, उसका निर्माण तथा गुण । मेकेहम तथा योगपर्त्व वक्र, मृत्यु संख्या की वार्षिक तथा केन्द्रीय दरों की व्युत्पति । राष्ट्रीय जीवन सारणियां । यू० एन० आदर्श जीवन सारणियां । संक्षिप्त जीवन सारणियां । स्थिर जनसंख्या । स्थावर जनसंख्या ।

अशोधित प्रजनन दरें, विशिष्ट प्रजनन दरें, कुल और शुद्ध जन्म दरें । परिवार का आकार । अशोधित मृत्यु दरें, बाल मृत्यु दरें । सकारण मृत्यु संख्या । प्रमाणीकृत दरें ।

आंतरिक तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रत्यावर्तन । विशुद्ध प्रत्यावर्तन, पिछली तथा उन्नत अतिजीविता अनुपात सिद्धांत । जनांकीय संक्रमण । जनसंख्या निर्धारण के सामाजिक तथा आर्थिक निर्धारण । जनसंख्या प्रक्षेत्र । गणितीय तथा संघटक विधियां, वृद्धिघात वक्र आसंजन ।

7. तुलनात्मक आर्थिक विकास

विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं के अंतर्गत विशेष रूप से भारत, जापान, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत रूस के संदर्भ में आधुनिक आर्थिक विकास का तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक अध्ययन । उम्मीदवारों से विभिन्न प्रकार की अर्थ-व्यवस्थाओं, जैसे क्रय विक्रय प्रधान स्वतन्त्र उद्यम अर्थ-व्यवस्था केन्द्रीय योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था तथा उनमें हुए परिवर्तन, विशेष रूप से विकासशील अर्थ-व्यवस्थाओं को प्रदान करने योग्य शिक्षाओं की दृष्टि से, के ऐतिहासिक विकास तथा क्रियात्मक लक्षणों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की अपेक्षा की जायेगी ।

8. मुद्रा तथा सार्वजनिक वित्त

मुद्रा का स्वरूप तथा कार्य । मुद्रा का मूल्य । मुद्रा, उत्पत्ति और मूल्य गुणक तथा आय उत्पादन की प्रक्रिया । व्यापारचक्र और मूल्य व्यापार । मुद्रा स्फीति ।

मीट्रिक नीति के उद्देश्य तथा रचना । बैंक दर तथा खुले बाजार की कार्यवाही । केन्द्रीय बैंक पद्धति । सामान्य तथा सुविशिष्ट शाखा नियंत्रण विकासशील अर्थ-व्यवस्था के अंतर्गत अपनाई जाने वाली मीट्रिक नीति । विकसित तथा विकासशील अर्थ-व्यवस्था में मुद्रा तथा पूंजी बाजार । भारतीय मुद्रा बाजार का संगठन ।

सार्वजनिक वित्त : स्वरूप, क्षेत्र, महत्व और उद्देश्य ।

कारारोपण के सिद्धांत :—कारारोपण तथा महत्व । पूर्ण रोजगार और आर्थिक विकास की वित्तीय नीति । घाटे की वित्त व्यवस्था । सार्वजनिक उद्यमों से प्राप्त आय ।

सार्वजनिक ऋण के सिद्धान्त । आन्तरिक और विदेश ऋण । ऋण व्यवस्था । संघीय वित्त व्यवस्था के सिद्धांत ।

9. ग्रामीण अर्थशास्त्र तथा सहकारिता

आर्थिक विकास में कृषि का योगदान ।

कृषि उत्पादन तथा संसाधनों का उपयोग, उत्पादन पलन, उत्पादन माप, लागत और पूर्तिचक्र, अनिश्चितता की स्थिति में उत्पादन कारकों का संयोजन तथा उत्पादन विधियों का चयन । फसल आयोजना ।

उत्पादन कारकों का क्रय विक्रय :—भूमि का क्रय विक्रय, भूमि का मूल्य और लगान । श्रम का क्रय विक्रय । मजदूरी और रोजगार, बेरोजगार तथा अल्प रोजगार । पूंजी बाजार, बचत और पूंजी का निर्माण ।

वस्तुओं की मांगें । खाद्यान्न की मांग ।

कृषि जन्य पदार्थों का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मूल्य, टेरिफ वस्तु संबंधी समझौते । कृषि विकास संबंधी अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम ।
भारतीय ग्राम्य—अर्थ-व्यवस्था की समस्याएं

कृषि जोत । भूमि का अधिग्रहण । फसल पद्धति । कृषि निपज की समस्याएं । भूमिधरी सुधार । सामुदायिक विकास और पंचायती राज्य । कृषि संबंधी धंधे और ग्रामीण उद्योग । ग्रामीण ऋण ग्रस्तता कृषि साख कृषि विपणन और मूल्य प्रसार । वस्तुओं की मांग और खाद्यान्नों की मांग । मूल्य आवलंब और स्थिरता । कृषि भूमि तथा कृषि आय कर कारारोपण । आयोजन के अंतर्गत भारतीय कृषि का विकास दर ।

पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि का स्थान । कृषि विकास के मुख्य कार्यक्रम ।

सहकारिता :—सिद्धांत, उद्यम तथा विकास । भारत तथा दूसरे देशों के सहकारिता आंदोलनों का तुलनात्मक अध्ययन । भारत में विभिन्न प्रकार की सहकारी संस्थाओं का रूप, संगठन तथा कार्यप्रणाली । ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में इन संस्थाओं का महत्व । राज्य तथा सहकारी आन्दोलन । रिजर्व बैंक आफ इंडिया का योगदान ।

10. अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार । अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांत—व्यापार से लाभ । व्यापार की शर्तें । व्यापार नीति । अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक विकास : टेरिफ का सिद्धांत । परिमाणात्मक व्यापार नियंत्रण । सीमाशुल्क संघ । मुक्त व्यापार क्षेत्र / यूरोपीय साझा बाजार ।

भुगतान शेष । भुगतान शेष के असंतुलन । समायोजन की प्रक्रिया । विदेशी व्यापारगुणक । विनिमय दर । आयात और निर्यात नियंत्रण । व्यापार समझौते । प्रमुख करेंसी प्रमाप । बाह्य और आंतरिक संतुलन ।

अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं । अंतर्राष्ट्रीय ऋणनिस्तारण और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष । अंतर्राष्ट्रीय मीट्रिक सुधार । विकासशील देशों के संबंध में भेदभाव रहित प्रवृत्तियां । निर्यात अस्थिरता और वस्तुओं के बाजार भाव की स्थिरता । अंतर्राष्ट्रीय निजी और सार्वजनिक पूंजी में संबंधित जी०ए०टी०टी० का योगदान आर्थिक विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता । अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (I. B. R. D.) एवं तत्सम्बन्धी संस्थाएं । एशियाई विकास बैंक ।

11. गणितीय अर्थशास्त्र और अर्थमिति—

अर्थशास्त्र में गणित और सांख्यिकी का महत्व : अर्थशास्त्र में मापों का प्रयोग . अर्थशास्त्र में गणित का महत्व : आर्थिक सहयोग के मापन में सांख्यिकीय अनुमिति की विधियों और पद्धतियों का प्रयोग ।

मांग विश्लेषण : मांग का सामान्य सिद्धांत और मांग की माप : गत्यात्मक और स्थैतिक मांग फलन : आयोजन की स्थिति में अंत : संबंधित मांग और पूर्तिफलन : मांग और पूर्ति प्राक्कलन की विधियां । मांग प्रक्षेप तथा मांग और मूल्य के प्रति अल्पकालीन दृष्टिकोण ।

उत्पत्ति फलन :—उत्पादन और उत्पादन संभावना फलन की संकल्पना, उत्पादन फलन लागू करने की विधियां । उत्पादन आयोजन और उत्पादन नियंत्रण की गणितीय विधियां ।

एकघातीय कार्यक्रम :—क्रिया विश्लेषण । एकघातीय कार्यक्रम और उसका उपयोग । निविष्ट निपज विश्लेषण । युगेम सिद्धांत के तत्व, आर्थिक आयोजन में उनका प्रयोग ।

कीन्सवादी अर्थशास्त्र और कलासिकल अर्थशास्त्र के गणितीय माडल

गुणक संकल्पना, त्वरक सिद्धांत । साम्य विश्लेषण । उपभोक्ता साम्य । स्थिर दशाएं, आय और मूल्य वृद्धि की मांग पर प्रभाव, पूरक और स्थानापन्न वस्तुएं ।

बाजार मांग :—विनियम संतुलन, व्यवसाय संतुलन । अर्थव्यवस्थापक के अंतर्गत उत्पादन और विनियम का साम्य, मांग और पूर्ति का सामान्यीकृत नियम ।

निर्मिति (Structure) और माडल की संकल्पना :

निर्मिति की विभिन्न संकल्पनाएं —निर्मिति और माडल में भेद । स्वतन्त्र समीकरण और सम्मिलित समीकरण माडलों में समष्टि प्राक्कलन ।

आयोजन माडल :—विभिन्न प्रकार के विकास माडल, पूंजी निपज अनुपात और आर्थिक आयोजन में उनका उपयोग । आयोजन माडल । दीर्घकालीन प्रक्षेप और संदर्भ । अल्पकालीन आर्थिक पूर्वानुमान ।

12 प्रतिचयन सर्वेक्षण

जनगणना और सर्वेक्षण में प्रतिचयन का स्थान । ढ़ांचे और प्रतिचयन इकाई की संकल्पना ।

प्रतिचयन की विधियां : यादृच्छिक प्रतिचयन, स्तरित प्रतिचयन, स्तरण का चयन, बहुखण्डीय प्रतिचयन, सामूहिक प्रतिचयन, क्रमबद्ध प्रतिचयन, दुहरा प्रतिचयन, चर-प्रतिचयन भिन्न आकार के अनुपात में संभाविता के साथ प्रतिचयन बहुपदीय प्रतिचयन, प्रति लोभ प्रतिचयन ।

प्रवकलन की प्रक्रियाएं :—कुल और औसत जन संख्या का प्रावकलन । प्रावकलन में अभिनति । प्रावकलन की मानक त्रुटि । अनुपात समाग्रयण और गुणन प्रतिचयन ।

अनुमूलनतम अभिकल्पनाएं :—लागत और प्रसरण फलन, प्रथमदर्शी सर्वेक्षण का उपयोग । प्रतिचयन इकाइयों का अनुमूलतम आकार और गठन ।स्तरित, बहुमदीय, और बहुखण्डीय अभिकल्पनाओं में अनुकूलतम विनिवान । आवृत्ति सर्वेक्षण में अनुकूलतम प्रतिस्थापना भिन्न ।

गैर प्रतिचयन त्रुटियां और उनको नियंत्रण, अनुक्रिया अभाव का सिद्धान्त अन्देशी प्रतिचयन ।

अभिकल्पना और पथप्रदर्शी तथा बड़े पैमाने के आदृच्छिक प्रतिचयन का संगठन । प्रतिचयन के रेखांकन की परिचालन प्रक्रियाएं यादृच्छिक प्रतिचयन संख्याओं का उपयोग । "पी० पी० एम०" प्रतिचयनों के रेखाकन की विभिन्न विधियां । आंकड़ों के संग्रहण और सारणयन की प्रक्रियाएं । सर्वेक्षण आंकड़ों का विश्लेषण और प्रतिवेदनों का निर्माण ।

13 औद्योगिक अर्थशास्त्र :

उद्योग, प्रतिस्पर्द्धी उद्योग का गठन । औद्योगिक इकाई आकार का सिद्धांत । औद्योगिक स्थान का निर्धारण । क्षेत्रीय औद्योगिक विकास । औद्योगिक समाकलन । संघ और एकाधिकार ।

औद्योगिक उत्पादन की समस्याएं :: उत्पादकता —संकल्पना और मापन उत्पादकता वृद्धि की विधियां । लागत रचना और मूल्य निर्धारण की नीतियां ।

भारतीय उद्योगों का गठन । आकार, स्थिति, एकीकरण और क्षेत्रीय संतुलन ।

भारतीय उद्योगों की समस्याएं —वित्त, निविष्टियां, क्षमता का उपायोग । औद्योगिक नीति । सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र । औद्योगिक लाइसेंस की नीति । विदेशी पूंजी और तकनीकी सहयोग । सार्वजनिक उद्यम की समस्याएं । संगठन, प्रबन्ध नियंत्रण और उनका लेखा-जोखा ।

छोटे पैमाने के उद्योगों की समस्याएं और औद्योगिक संपत्ति ।

श्रम और आर्थिक विकास । श्रम उत्पादकता और प्रेरणा स्रोत । भारत औद्योगिक संबंध । मजदूर संघों का गठन और संगठन ।

मजदूर संघ और राज्य औद्योगिक झगड़ों का निबटारा । न्यूनतम और उचित मजदूरी । मजदूरी और कार्य करने की दशाओं का राज्य द्वारा निर्धारण । श्रम कल्याण ।

14 व्यापार सिद्धांत और व्यापार कार्य :

क्रय-विक्रय । क्रय विक्रय की संकल्पना । बाजार की विशेषताएं । विपणन कार्य । विपणन क्रिया । केन्द्रीकरण और विस्तार, क्रय, विक्रय माल यातायात भंडारण, कोटीक्रम और वित्त । ग्राहक का स्वभाव और निर्णय । बाजार संबंधी जानकारी और अनुसधान । वितरण के स्रोत । बाजार लागत और बाजार क्षमता, बिक्री पूर्वानुमान और आयोजन । बिक्री प्रोत्साहन । विज्ञापन और विक्रेता के गुण । राज्य नियंत्रित बाजार ।

भारतीय बाजार । कृषि उपज और औद्योगिक वस्तुओं का बाजार । भारत मे संयुक्त बाजार । स्टाक एक्सचेंज और उपज एक्सचेंज, उनके कार्य और क्रियाविधि । सरकारी नीति । सरकारी विपणन संगठन और राजकीय व्यापार ।

विदेशी व्यापार । अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की विशेषताएं । घरेलू व्यापार के भिन्न व्यापार की विशेष समस्याएं । यातायात, वित्त और बीमा, साख से संबधित जोखिम, विनियम दर में उतार चढ़ाव और भुगतान स्थान । विदेशी व्यापार मे प्रयुक्त अभिलेख । आयात और निर्यात केन्द्र का गठन और संगठन । निर्यात और आयात नियंत्रण के तरीके ।

भारत के विदेशी व्यापार की मुख्य विशेषताएं – वस्तु संरचना, मुख्य दिशाएं। गत दशक मे निर्यात और आयात नियत्रण की क्रियाएं। लाइसेंस प्रक्रियाए और उसका आधार विदेशी व्यापार वित्त । निर्यात जोखिम गारंटी पद्धति । हाल ही के वर्षों में निर्यात वृद्धि के लिए अपनाई गई विधिया, भारत के व्यापार समझौते राज्य व्यापार नियम के कार्य ।

14. **व्यवसाय वित्त और लेखे**

आधुनिक उद्योग की वित्तीय आवश्यकताएं । भारत में औद्योगिक वित्त के साधन । भारतीय पूजी बाजार । संस्थाओ द्वारा वित्त प्रबन्ध । विदेशी पूजी, स्रोत, ब्याज की दरें और भुगतान की शर्तें । किसी एक फर्म की बजट पूजी संबंधी आवश्यकताएं । उत्तम पूंजी की रूपरेखा । किसी फर्म में अन्तर्गत निधियों के स्रोत और उपयोग । निजी वित्त । मूल्य ह्रास की नीति । संचित कोष और लाभाश । करारोपण और वित्तीय नीति ।

पूंजी की बजट व्यवस्था । वित्तीय विवरण की तैयारी, विश्लेषण और निर्वचन । साख और शेयारो का मूल्यांकन । पुर्ननिमाण, एकीकरण और विलयन योजनाओ का निर्माण । लेखा बही में अनाहत हुंडियो का इन्दराज ।

लागत निवरणो का निर्माण : खर्चे की व्यवस्था और नियत्रण । बजटीय नियंत्रण के सिद्धात । प्रासगिक लागत । वित्तीय और लागत लेखों का ।

16. **व्यवसाय प्रबन्ध और वाणिज्य विधि**

प्रबन्ध पद्धति और प्रबन्धीय कार्य । नीति निर्धारण और व्यवसाय के उद्देश्य । नेतृत्व और साहस, नियंत्रण और निर्णय की शक्ति । प्राधिकारी संबंध, प्राधिकार शिष्टमण्डल, प्राधिकार के स्तर और उत्तदायित्व, नियंत्रण का विस्तार, पर्यवेक्षक की भूमिका ।

संचार और प्रेरणास्रोत की समस्याएं ।

उत्पादन और वस्तु सूचीनियंत्रण । प्रकार नियंत्रण । समय और गति का अध्ययन । संयम की स्थापना और कार्य की माप जोख ।

17. **उच्च संभाविता और यादृच्छिक क्रियाविधियां**

(क) उच्च संभाविता : संभाविता माप, यादृच्छ पद, बंटन फलन का विघटन, यादृच्छ पदो की प्रत्यावली/प्रतिबधी संभावित और प्रतिबधी प्रत्याशाएँ, अनुक्रम का एकीकरण और स्वतन्त्र यादृच्छ पदो का योग कोलमों गोरोध की विषमता, बहुत संख्याओ का कठोर और कमजोर नियम, बंटन में एकीकरण, अभिविदुता और सातत्य के सिद्धान्त, गुणनफल, अद्वितीय सिद्धांत प्रतिश्योम सूत्र, केन्द्रीय सीमा सिद्धान्त, पूर्ण की समस्याएं ।

(ख) **यादृच्छिक क्रियाविधियां**

यादृच्छिक क्रियाविधियां की परिभाषा और वर्गीकरण

अनुक्रम (वास्तविक समय का इन्टरवल या विविकल) से इडेक्स की हुई वास्तविक यादृच्छक पद के समूह के रूप में यादृच्छिक क्रियाविधिया । सीमित आयोग वितरण कार्यों की श्रेणी और उससे संबंधित कोलभोगोरोध का सापेक्षता संबंधी विवरण ।

यादृच्छक पदो में निर्भरता के विभिन्न प्रकार, स्वतन्त्रता, स्वतन्त्र विकास मारटिगेसल्स । मार्कोवनिर्भरता, विस्तृत और संकुचित प्रकार की अचलता ।

मार्कोवक्रियाविधिया : डिस्क्रीट पेरोमीटर सहित और सीमित व डीन्यूमिरबल स्टेट स्पेसिस सहित पूर्णतः अचल मार्कोव कार्यविधि (मार्कीव चेंस के नाम से भी विख्यात) सक्रमण संभावना मैट्रिसेस : स्थितियों का वर्गीकरण और स्थितियो की श्रेणियां ।

लगातार पैरोमीटर सहित मार्केव कार्यविध डिस्क्रीट स्टेट स्पेस:, कोलमोगोरोव का फोर्वर्ड और बेकवर्ड समीकरण,

जनसंख्या की वृद्धि से संबधित साधारण समयापेक्षी यादच्छिक कार्यविधियां : मत्स्य कार्यविधि, विशेद्ध जन्म कार्य विधिया, जन्म मृत्यु कार्यविधिया, जन्म मृत्यु कार्यविधि (बाद के दो प्रकार की लाइनियर प्रोसेस के मामले में पूर्ण हल)

विस्तृत कार्यो में अचल कार्यविधि और डिस्क्रीट पेरामीटर

सहविभेदीकरण कार्य, सहविभेदीरकण कार्य और कार्यविधि का स्पेक्ट्रेल रिप्रेजंटेशन, अचल कार्यविधियो के पारस्परिक निष्पादनों के उदाहरण सामान्य राशनल स्पेन्ट्रेल डेसीटी के उदाहरण ।

18. **सांख्यिकी अनुमान**

नोट––उम्मीदवार को खण्ड "क" और "ख" अथवा खण्ड "क" और "ग" प्रश्नो का उत्तर देना होगा ।

(क) (1) **प्राक्कलन**

प्राक्कलन की विभिन्न विधिया ?अधिकतम संभाविता की विधि, न्यूनतम वर्ग विधि पूर्ण की विधि, लघुतम वर्गों की विधि, अधिकतम संभावित आगणक के अन्तस्पर्शय गुण धर्म ।

कैमर राव असमता और बहु-समष्टिक मामलों में उसका सामान्यीकरण भट्टाचार्य परिबंध । पर्याप्त सांख्यिकी गुण-खण्डन प्रमेय, पिटमेन–कूपमेंन–डारमोइस प्रकार के बंटन, पर्याप्त सांख्यिकीय के न्यूनतम सेट, राव ब्लैक वेक्त का प्रमेय । संभाविना बंटन का पूर्ण परिवार, पूर्ण सांख्यिकीय । न्यूनतम प्रसरण प्राक्कलन पर लेहेमान शेफे का सिद्धान्त ।

(ii) **परिकल्पनाओं का परीक्षण**

परिकल्पना परीक्षण का नेमेन पियर्सन सिद्धान्त । यादृच्छिक अयादृच्छिक परीक्षण ।

अति राशक्त और समानत: अधिसशक्त परीक्षण । नेमेने–पियर्सन की मूल प्रमेयिका । अनामिनत त्रुटि, परीक्षणों की सामंजस्यता और दक्षता । समान क्षेत्र, स्थानीय अनुकूलतम गुणधर्म सहित परीक्षण । 'ए' 'ब', 'ए' 1 'बी०', 'सी' तथा 'डी' किस्म के संशय अंतराल । पूर्णता और एकरूपता वाले सिद्धान्त में संबध । परीक्षण विन्यास का संभाविना अनुपात सिद्धान्त और उसके कुछ प्रयोग ।

(iii) **गैर-प्राचलिक परीक्षण**

क्रम आंकड़े : लघु प्रतिचयन और दीर्घ प्रतिचयन बंटन मुक्त विश्वस्त अंतराल । निम्नलिखित के लिए बंटनमुक्त क्षेत्र :—

(i) आसंजन सोष्ठव का वर्गीय परीक्षण, कोलमोगोरोव-सिम्रनोव परीक्षण ।

(ii) दो जनसंख्याओं की तुलना : चाल परीक्षण, डिक्सन का परीक्षण, विलकावसन का परीक्षण, माध्यिका परीक्षण, लक्षण परीक्षण, फिसरपिटमैन का परीक्षण ।

(iii) स्वातन्त्रय : असंगना, का—वर्ग स्पीयरमेन और केंडल का कोटि सह संबंध गुणांक ।

असमष्टीय परीक्षणों के बृहत प्रतिचयन गुणधर्म । द्विशूलीय न्यास (यूस्टेटिकिटक्स) और उनके सीमांत बंटन ।

(ख) **निर्णय फलन**

सांख्यिकीय योजना और उससे सबंधित चयन के सिद्धांत । सांख्यिकीय योजना के रूप में सांख्यिकीय समस्याओं का निरुपण, निर्णय फलन, यादृच्छिक और अयादृच्छिक निर्णय के नियम । सिनिमेक्स, बेई के न्यूनतम खेद निर्णय नियम । वर्ग त्रुटि हानि फलन में ग्राइप और मिनिमेक्स प्राक्कलन । परीक्षार्थी के अनिपष्ठ पूर्ण वर्ग ।

पर्याप्त का सिद्धान्त और अप्रसरण का सिद्धान्त । हंट-स्टीम प्रमेय । मिनिमेक्स अप्रसरण निर्णय नियम ।

(ग) **बहु चर विश्लेषण**

बहु चर सामान्य बंटन, माध्य सादिश और सह प्रसरण आव्यूह का प्राक्कलन, प्रतिचयन माध्य सादिश और अज्ञात आव्यूह का प्राक्कलन, प्रतिचयन माध्य सादिश और अज्ञात आव्यूह के साथ माध्य सादिश में संबंधित अनिभिति का बंटन, 'टी' के अनुकूलतम गुणधर्म । सामान्य सह संबंध में एकधा और कनेकधा समाश्रयण गणांक, वेहरेन फिशर का निर्मेय :

विशार्ट बंटन, विशार्ट का वर्धागुण धर्म, प्रसरण का सामान्यीकृत विश्लेषण : विहित चर और विहित सह संबंध, अनेक सह प्रवरण आव्यूहों की समानता ।

19. **परीक्षाओं के नमूने**:—

परीक्षण के सिद्धान्त :—यादृच्छिकरण, पुनरावृत्ति और त्रुटि नियंत्रण । त्रुटिनियंत्रण के उपाय, परीक्षण इकाइयों के आकार प्रकार और बनावट का चयन, परीक्षण इकाइयों का समूह ।

प्रसरण विश्लेषण की मूल मान्यताएं । अप-संयोज्यता, प्रसरण विषमांग और अपसामान्यता का प्रभाव । स्थानान्तरण । शुद्ध और मिश्रित माडल । सहबर्ता चरों का उपयोग। सह प्रसरण विश्लेषण ।

अपूर्ण खण्ड नमूनों का निर्माण और विश्लेषण (अतंखंडीय जानकारी सहित या रहित) गवाक्ष नमूने, आंशिक रूप से संतुलित खंड नमूने, कुछ दिशाओं में विषमांगता दूर करने के लिए हाइपर ग्रेसियों लेटिन स्क्वेयर और अन्य नमूने ।

गुणनफलों के नमूनों का निर्माण और उनका विश्लेषण, सामानांतरण श्रेणी में गुणनफलों के परीक्षण में भ्राति, पूर्ण और आंशिक, संतुलिक भ्रांति । मुख्य प्रभावों की भ्राति, विघटित क्षेत्र आवठित क्षेत्र तथा अन्य नमूने । गणनफल अभ्यावृद्धि । गुणात्मक और संख्यात्मक गुणनखण्डों का परीक्षण ।

लुप्त या मिश्रित उपजों के परीक्षण के लिए विश्लेषण की विधियों अलम्बकोणीय आंकड़ों का विश्लेषण । परीक्षण वर्गों के परिणामों का संयोजन अनुक्रिया वक्र और अनुक्रिया का प्रमाणीकरण ।

20. **शुद्ध गणित-I**

सहज चरों के कार्य डीडीकाईड–विधि से परिमेय संख्याओं में से सहज संख्याओं के निर्माण की प्रणाली । अनुक्रम और फलन की सीमाएं और प्रतिबंध, अनुक्रम के क्रमिक और साभ्य रूपक परिवर्तन, अगत श्रेणी और अनंत गुणनफल ।

मीटर अवकाश: खुले और बंद कुलक, सतत फलन और समस्यता, अभिसरण और पूर्णता, पूर्ण मीटर अवकाशों में समावेशी और बंद कुलकों का प्रमेय । मीटर अवकाशों में समावेशी और बद कुलकों का प्रमेय । मीटर अवकाशों और यूक्लिडियन अवकाश । समस्त सातत्य और अरजेला प्रमेय । मीटर अवकाशों में संबंद्ध कुलक ।

एक अथवा अनेक यर्थाथ पदों के फुलन की अवकलनीयता । मध्य मूल प्रयोग, एक अथवा अनेक पदों के फलन में टेलर कृत विस्तार । लेंगरेंज गुणकों सहित फलनों का चरम मूल्य । अस्पष्ट और प्रतिलोमफलन प्रमेय । फलनीय आश्रितता और जेकोबीयन ।

रीमान अनुफलन, अनुफल फलनों के माध्य-मूल- प्रमेय, अनुफलन गणित । अनुचित अनुकल । अनुकलों का अभिसरण । बहुत अनुकल, ग्रीन और स्टोक्स के प्रमेय ।

माप सिद्धान्त : लेबिसग्यु माप, मापयोग्य कुलक और उनके गुणधर्म । मापयोग्य फलन । परिमित माप के कुलकोंपर परिसीमित फलनों का लेबिसग्यू अनुकल । अनृण फलन का अनुकल । सामान्य लेबिसग्यू अनुकल । माप में अभिसरण । फलऊ की प्रमेयिका । एक दिष्ट, प्रभावी और परिसीमित अभिसरण प्रमेय । विटाली व्यक्ति प्रमेय । परिसीमित चरों का प्रसरण । निरपेक्ष सतत फलन । अनुकल कलन का आधारभूत प्रमेपेय स्टीलजेस अनुकलन ।

जटिल पदों का फलन :—वैश्लेषिक फलन। कोशी रोमन समीक जटिल फलनों का समाकलन ।कोशी का भूलभूत प्रमेय और समाकलन सूत्र । मोरेरा प्रमेय । टेलर और लारेन्ट—विस्तार । शून्य और पृव विचित्रताएं । अविशिष्ट प्रमेय और उसके उपयोग । तर्की-सिद्धान्त रोशी प्रमेय । अधिकतम मापांक सिद्धान्त और स्वाज प्रेमेयिका ।

द्वियातीय स्थान्तरण । अनुकोण निरूपण ।

दूसरे आवतीफलन । वायरष्ट्रास फलन । जेकोबी के एस-एन, सी-एन, डी-एन, (sn, cn, dn) फलन । दीर्घवृत्तीय समाकल ।

21. शुद्ध गणित—II

आव्यूह तथा मारणिकी सहित आधुनिक बीजगणित :—

समूह और अर्द्ध समूह । समस्थता । स्थांतरण समूह । केले प्रेमय, चक्रीय समूह । क्रमचयं, सम और विषय क्रमचय । सहकुलक समूहों का विघटन । लेगरेंज प्रमेय, अचल उप समूह और गुणांक समूह । समस्थता और स्वस्थता । संयुग्मी तत्व । सामान्य श्रेणिया, मिश्रित श्रेणियां और मोर्डन होल्डर प्रमेय । बलय:—अनुकल प्रान्स, भाग बलय, क्षेत्र । आव्यूह कलय । चतुष्टय । उप बलय । आदर्श:—महिष्ठ, प्रधान और मुख्य आदर्श अद्वितीय गुणनखण्ड प्रान्त । अन्तरवलय पुर्णा संख्याओं का आदर्श और अंतर बलय । फरमेट प्रमेय । बलयों की समस्यता ।

क्षेत्र विस्तार—बीजगणित और बीजातीत क्षेत्र विस्तार । गेलाइस सिद्धांत के अवयव और अवयवयों द्वारा समीकरण के हल में उसका उपयोग ।

सदिश अवकाश क्षेत्र । उप अवकाश और उनका बीजगणित एक घातीय स्वातंत्रय, आधार विस्तार । विस्तार/गुणक अवकाश/समस्यता और सदिश अवकाश ।

एक घातीय समीकरण पद्धति । वाव्यूह पद/आव्यूहो के तुल्य संबंध प्रारंभिक आव्यूह, श्रेणी तुल्यांक, तुल्यांक समस्तया ।

सविश अवकाशों पर एक घातीय स्थांतरण, उनकी कोटि और शून्यता । द्वेत अवकाश और द्वेत आधार । एकधातीय, द्विधातीय और चतुष्टयस्य । कोटि और चिन्ह । चतुष्य रूप का विहित रूप का विहित रूप में लघुकरण और दो चतुष्टय रूपो का युगपन लघुकरण।

सारणिक फलन, उनका अस्तित्व अद्वितीयता । सारणिक विस्तार की लैप्लेस की विधि । दो सारणियों का गुणनफल । वीनेट—कोसी सूत्र सक्षण और अल्पिष्ठ बहुपद, प्रमयोत्पन्न मान और प्रथमल्पि सदिश । केले-हेमिल्टन प्रेमय । विक्रणीकृत प्रमेय ।

एन-विभितीय ज्यामिति: एन-विभितीय ज्यामिति के अवयव। डंवसार्ग का प्रमेय । एकधातीय अवकाशो के स्वातंत्रय की मात्रा द्वेतता । सामान्तर रेखाएं और दीर्घवृत्तीय, अतिपरवलीय, यूवलीडियन प्रक्षेपीय ज्यामितियां । सपाट धरातल (एन-1) के समानान्तर रेखा । एन-परिस्पारिका संमकोण रेखाएं । सपाट अवकाशों के बीच का अंतर और कोण ।

उत्तल कुलक और उत्तल शंकु । उत्तल आवरण-अतिसमतलों के पृथक करने के प्रमेय । प्रतिबंधित बंद उत्तल कुलक का प्रमेय, जिनके प्रत्येक आलंबी अतिसमतलों में चरमबिन्दु होते हैं । चरम बिन्दुओं का उत्तल आवरण उत्तल बहुतलशुंकु क्षेत्रों के एक धातीय स्थानन्तरण ।अवकल ज्यामिति : अवकाश, वक्र, वेष्टन । उन्नये आधार । वक्र से संबंधित उन्नेय आधारगत वक्र धातीय निदेशांक । प्रथम और द्वितीय आधारभूत रूप । सामान्य खण्ड की वक्रता । वक्रकृति की रेखाए । संयुग्म विधियां । अनंतस्पर्शी रेखाएं । गोस और कोडाजी के समीकरण । धरातल पर दो बिन्दुओं के बीच की सबसे छोटी रेखा और बिन्दुओं के बीज की सबसे छोटी समानान्तर रेखा, रेखित आधार ।

22. शुद्ध गणित—III

संख्यात्मक विश्लेषण और समीकरण । परिमित अवकल । अन्तर्वेशन । वहिर्वेशन । प्रतिलोप अन्तवेशन । सख्यांतमक अवकल और संख्यात्मक अनुकल । प्रथम श्रेणी के अवकल समीकरणो की उपपत्ति, एकधातीय अवकल समीकरण के सामान्य गुणधर्म । स्थिर गुणांकों के साथ एकधातीय अवकल समीकरण ।

सामान्य अवकलन समीकरणों की उपपत्ति । उपपत्ति शुरू करने और उपपत्ति जारी रखने की विधियां । सम्मिलित एक धातीय समीकरण और उनकी उपपत्ति बहुमद समीकरणों के मूल धन विधि द्वारा सामान्य निमेयों की उपपत्ति । नोमोग्राम ।

अवकलन समीकरण: डीवाई/डी० एक्स० एफ० (एक्सवाई) [dy/dx—f(x.y.)] के हल का अस्तित्व प्रमेय ।

प्रथम कोटि के एकधातीय और अधातीय समीकरण । स्थित गुणोंकों के साथ एकधातीय समीकरण । समस्त एकधातीय समीकरण दूसरी कोटि के एक धातीय समीकरण । श्रेणीगत अनुकलों की फ्रविनयसविधि । लीजेन्ड्रेन और हरमिट समीकरणों की उपपत्ति । लीजेन्ड्रे और हरमिट बहुवदों और हरमिट फलनों के प्रारंभिक गुण-धर्म । सम्मलित एकधातीय समीकरणों की विधियां । तीन वर्गों के साथ पूर्ण अवकल समीकरण ।

आंशिक अवकल समीकरण: पहली और दूसरी कोटि के आंशिक अवकल समीकरण, लेगरेंज, चारपिट और मोंगो की विधियां स्थिर गुणांको के साथ एकधातीय आंशिक अवकल समीकरण । पदों के पृथकरण द्वारा लाप्लास तंरग और विचरण समीकरण की उपपत्ति ।

विचरणों का फलन:—यलूर समीकरण के न्यूनतम व्युत्पति की अनिवार्य शर्तें : हैमिल्टन का सिद्धांत्ल । हैमिल्टनवादी । समप-परिमापी निमेय । पद और विन्दु निमेय । अनुकल फलनों का लघुतक बोल्जा । निर्मेय बहुत अनुकल निर्मेय । विचरणों के फलन की प्रत्यक्ष विधियां । द्वितीय विचरण और लघुतम के लिए लीजेन्ड्रे की अनिवार्य शर्तें ।

हरात्मक विश्लेषण : फेरियार श्रणियो द्वारा फलन प्रदर्शन । डीरिक्ले । समाकल । रीमन लैविसक्यू प्रमेय । रोमन का स्थानीकरण प्रमेय । फेरियर श्रेणियों (जोर्डन, डिनी, एण्ड डी० ला० बल्ली पोसिन) के अधिसरण के लिए यथेष्ट शर्तें, फेरियर अनुकल प्रतिचयन प्रमेय । घात वर्णक्रम । स्वसहसंबंध और अनुप्रबंध सहसंबंध ।

23. **प्रयुक्त गणित**

स्थैतिकी : असमतीय बलों में दृढ पिंड के साथ की सदिश प्रतिपादन । केन्द्रीय अक्ष । आभामी कार्य के सिद्धान्त । स्थिरता/केन्द्रीय बलों की ज्याएं, मादा और समतली वक्रों पर ज्या का साम्य । लचक ज्या । दण्ड, डिस्क और वलय के विभव और आर्कषण ।

गति विज्ञान—न्यूटन के गति नियम /नियं डी-एलेम्बर्ट) का सिद्धांत । रेखिक गति आवेगी कल और संवछटन । सवेग और ऊर्जा का सिद्धांत । स्वातुत्रय और निरूद्धता की मात्राएं । सामान्यीकृत निर्देशांक । समय स्वतंत्र प्रणाली का लेंगेरेंज समीकरण । यूलर के गतियकीय और ज्यामिन्तीय समीकरण । हैमिल्टन का सिद्धांत । हैमिल्टन का समीकरण । बर्हुपिंड का परिचय ।

द्रव गतिविज्ञान : यूलर और लेगरेंज के गति समीकरण स्रोत रेखाएं । आवर्तिता और संचरण तथा आदर्श द्रवों में उनकी स्थिरता ।

बरनोली का प्रमेय और उसका प्रयोये । सिलिंडरों और वलयों के चुतुर्दिक विभवे प्रभाव यूलेशिस का प्रमेये और उसका प्रयोग । द्रवगतिकीय निर्मेयों की उपपत्ति की प्रतिबंध विधियां और अनुकोण स्थातंरण । आर्वत्वगति के सामान्य गुणधर्म, अद्वितीयता प्रमेय । साद्रं देव । नैपियर-स्टोक्स के समीकरण । समान्तर दीवारों और सीधे पाइपों में प्रवाह । औसीन और स्टाक्स के सन्निकट वलय पूर्ग मंद गति ।

विद्युत और चुम्बकत्व : कूलोम्ब नियम । चार्जेज । धानक और धारित्र । विद्युत पारक । स्थिर करेंट । करेंटों के चुम्बकीय प्रभाव प्रेरित करेंट और क्षेत्र । मेक्सवेल समीकरण । दो माध्यमों के अंत : पृष्ठ की विद्युत चुम्बकीय दशाएं । विद्युत चुम्बकीय विभव, भार और ऊर्जा । पोयटिंग काप्रमेय । जूल उष्मा । प्रत्यावर्ती करेंट समुष्णधरमी विद्युतपारक में विद्युत- चुम्बकीय तरंग । विद्युत चुम्बकीय तंरगों का परावर्तन और वर्तन । चालित माध्यम तरंग ।

ऊष्मागतिकी : ऊष्मा, ताप और एन्ट्रोपी की परिभाषा की संकल्पना । ऊष्मागति की के प्रथम और द्वितीय नियम । विशिष्ट ऊष्मा । अवस्था परिवर्तन । वादप दवाव । ऊष्मा चालन । विकिरण प्लेंक का नियम । स्टीफन का नियम । ऊष्मागतिकी के फलन और विभव । विषम प्रणालियां और गिब का अवस्था नियम ।

सांख्यिकीय यांत्रिकी : आकृति आवकाश की ज्यामिति और प्रगति की : मेक्सवेल—बोल्जमेन, ओस—आइस्टीन और फर्मी—डिरेक के आंकड़े ।

(भाग—ख)

मौखिक परीक्षा

उम्मीदवारों का साक्षात्कार सुयोग्य और निष्पक्ष विद्वानों के बोर्ड द्वारा किया जायगा, जिसमें प्रख्यात शिक्षा शास्त्री भी होंगे । बोर्ड के सामने उम्मीदवार का सर्वागीण जीवन-वृत होगा । साक्षात्कार का उद्देश्य यह है कि जिससेवा या जिन सेवाओं के लिए उम्मीदवार परीक्षा में सम्मिलित हुआ है , उसके/उनके लिए व्यक्तित्व की दृष्टि से वह उपयुक्त है अथवा नही । साक्षात्कार उम्मीदवार के सामान्य और विशिष्ट ज्ञान और योग्यता की जांच करने के लिए लिखित परीक्षा को सम्पूर्ण करने के उद्देश्य से लिया जाता है । उम्मीदवारों से आशा की जाएगी कि वे केवल अपने विद्याध्ययन के विशेष विष्यों में ही सूझ बूझ के साथ रूचि न लेते हों, अपितु उन घटनाओं में भी रुचि लेते हों, जो उनके चारों ओर अपने राज्य या देश के भीतर और बाहर घटरही हैं तथा आधुनिक विचारधाराओं में और उन नई खोजों में रुचि लें, जिनके प्रति एक सुशिक्षित व्यक्ति में जिज्ञासा उत्पंन होती है ।

साक्षात्कार जटिल परिपृच्छा की प्रक्रिया नहीं है अपितु स्वाभाविक निर्देशन और प्रयोजन युक्तवार्तालाप की प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य उम्मीदवारों के मानसिक गुणों और समस्याओं को समझने की शक्ति का उद्घाटन करना है । बोर्ड द्वारा उम्मीदवारों का मानसिक सतर्कता आलोचनात्मक, ग्रहण शक्ति संतुलित निर्णय की शक्ति और मानसिक सतर्कता, सामाजिक संगठन की योग्यता, चारित्रिक ईमानदारी, नेतृत्व की पहल और क्षमता के मूल्यांकन पर विशेष बल दिया जायगा ।

परिशिष्ट III

इस परीक्षा के द्वारा जिन सेवाओं में भर्ती की जा रही है, उनका संक्षिप्त ब्यौरा :—

1. जो उम्मीदवार दोनों मे से किसी भी सेवा के लिए सफल होंगे, उनकी नियुक्ति उस सेवा के ग्रेड- IV में परख पर की जायेगी जिसकी अवधि दो वर्ष होगी, और इस अवधि को बढ़ाया भी जा सकता है । सफल उम्मीदवारों की परख की अवधि में भारत सरकार के निर्णयानुसार निर्धारित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और अनुदेश तथा परीक्षा पास करनी होगी ।

2. यदि सरकार की राय में किसी परखाधीन अधिकारी का आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की सम्भावना न हो, तो सरकार उसे तत्काल सेवा मुक्त कर सकती है ।

3. परख अवधि या उसकी बढ़ाई हुई अवधि की समाप्ति पर यदि सरकार की राय में उम्मीदवार स्थायी नियुक्ति के लिए योग्य नहीं है, तो सरकार उसे सेवा मुक्त कर सकती है ।

4. यदि सरकार की राय में उम्मीदवार ने संतोषजनक रूप से अपनी परख अवधि समाप्त कर ली है, और यदि वह स्थायी नियुक्ति के लिए उपयुक्त समझा जाये तो उसे स्थायी पदों में मौलिक रिक्तियां उपलब्ध होने पर पक्का कर दिया जायेगा ।

5. भारतीय अर्थ सेवा और भारतीय सांख्यिकीय सेवा के निर्धारित वेतन मान निम्नलिखित है :—

ग्रेड-I— निदेशक (डायरेक्टर) : रु० 1300-60-1600-100-1800 ।

ग्रेडII—संयुक्त निदेशक (ज्वाइंट डायरेक्टर) : रु० 1100-50-1400 ।

ग्रेड-III—उप निदेशक (डिप्टी-डायरेक्टर) : रु० 700-40-1100-50/2-1250 ।

ग्रेड-IV —सहायक निदेशक (असिस्टेंट डायरेक्टर): रु० 400-400-450-30-600-35-670-द० रो०-35-950 ।

6. सेवा के उच्च पदों में पदोन्नति, प्रत्येक ग्रेड में पदोन्नति के लिए निर्धारित कोटे के अनुसार उम्मीदवारों की प्रवरणता को ध्यान में रखते हुए, योग्यता के आधार पर की जायेगी। ये कोटा ग्रेड-III के लिए 75 प्रतिशत, ग्रेड-II के लिए 50 प्रतिशत और ग्रेड-I के लिए 75 प्रतिशत है।

भारतीय अर्थ सेवा/भारतीय सांख्यिकीय सेवा के अधिकारी को केन्द्रीय सरकार के अन्तर्गत भारत में कहीं भी या भारत के बाहर कार्य करने के लिए नियुक्त किया जा सकता है। अथवा इनको निश्चित अवधि के लिए प्रतिनियुक्ति पर भेजा जा सकता है।

7. दोनों सेवाओं के अधिकारियों की छुट्टी, पेंशन और सेवा की शर्तें उसी प्रकार होंगी जो भारत सरकार के मूल नियम (फंडामेंटल रूल्स) और सिविल सेवा विनियम (सिविल सर्विस रेगूलेशन्स) में दी गई और जिनमें सरकार द्वारा समय समय पर संशोधन हो सकता है।

8. समय समय पर संशोधित सामान्य भविष्य निधि (केन्द्रीय सेवाएं) नियमावली (जनरल प्रोविडेंट फंड—सेन्ट्रल सर्विसेज रूल्स) के अन्तर्गत इस निधि में अधिदान कर सकेंगे।

परिशिष्ट-I

उम्मीदवारों की शारीरिक परिक्षा के बारे में विनियम

ये विनियम उम्मीदवारों की सुविधा के लिये दिये जा रहे हैं ताकि वे इस बात का पता लगा सकें कि उनका शारीरिक स्वास्थ्य अपेक्षित स्तर का है या नहीं। ये विनियम मेडिकल परीक्षणों के मार्गदर्शन के लिए भी हैं और जो उम्मीदवार इन विनियमों में निर्धारित की गई न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता, उसको मेडिकल परीक्षक स्वस्थ घोषित नहीं कर सकते। किन्तु जब मेडिकल बोर्ड की यह राय हो कि उम्मीदवार इन विनियमों में निर्धारित स्तर के अनुसार स्वस्थ नहीं है, तो भी मेडिकल बोर्ड को यह अनुमति है कि वह भारत सरकार को विशेषकर लिखे हुए कारणों द्वारा सिफारिश कर सकता है कि उसको सरकार की हानि बिना नौकरी में लिया जा सकता है।

परन्तु यह साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि भारत सरकार अपने निर्णय से मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट पर विचार करने के साथ किसी उम्मीदवार को स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार रखती है।

1. नियुक्ति के योग्य ठहराये जाने के लिए यह जरूरी है कि उम्मीदवार का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य ठीक हो और उम्मीदवार में कोई ऐसा शारीरिक दोष न हो जिसे नियुक्ति के बाद दक्षतापूर्वक काम करने में बाधा पड़ने की संभावना हो।

2. भारतीय (एंग्लो इंडियन समेत) जाति के उम्मीदवारों की आयु कद और छाती के घेर से परस्पर संबंध के बारे में मेडिकल बोर्ड के ऊपर ही यह बात छोड़ दी गई है कि वह उम्मीदवारों की परीक्षा में मार्ग दर्शन के रूप में जो भी परस्पर संबंधी आंकड़े सब से अधिक उपयुक्त समझे, व्यवहार में लाए। यदि वजन, कद, और छाती के घेर में विषमता हो तो जांच के लिए उम्मीदवार को अस्पताल में रखना चाहिए और छाती का एक्सरे लेना चाहिए। ऐसा करने के बाद ही बोर्ड उम्मीदवार को योग्य अथवा अयोग्य घोषित करेगा।

3. उम्मीदवार का कद निम्नलिखित विधि से नापा जायेगा :—

वह अपने जूते उतार देगा और उसे माप दण्ड (स्टैंडर्ड) से इस प्रकार सटा कर खड़ा किया जायेगा कि उसके पांव आपस में जुड़े रहें और उनका वजन सिवाए एड़ियों के, पांवों की उंगलियों या किसी और हिस्से पर न पड़े। वह बिना अकड़ सीधा खड़ा होगा और उसकी एड़ियां, पिंडलियां, नितंब और कंधे माप दण्ड के साथ लगे होंगे। उसकी ठोडी नीची रखी जायेगी ताकि सिर का स्तर (बर्टेक्स आफ दि हेडलेवल) हारिजेंटल वार (आड़ी छड़) के नीचे आ जाये। कद सेंटीमीटरों और आधे सेंटीमीटरों में नापा जाएगा।

4. उम्मीदवार की छाती नापने का तरीका इस प्रकार है :—

उसे इस भांति सीधा खड़ा किया जायेगा कि उसके पांव जुड़े हों और उसकी भुजाएं सिर के ऊपर सटी हों। फीते को छाती के गिर्द इस तरह से लगाया जायेगा कि पीछे की ओर इसका ऊपरी किनारा असफलक (शोल्डरब्लेड) के निम्न कोणों (इन्फीरियर एंगल्स) से लगा रहे और यह फीते की छाती के गिर्द ले जाने पर उसी आड़ समतल (हारिजेंटल प्लेन) में रहे। फिर भुजाओं को नीचे किया जायेगा। और इन्हें शरीर के साथ ढीला लटका रहने दिया जायेगा किन्तु इस बात का ध्यान रखा जायेगा कि कंधे ऊपर या पीछे की ओर न किये जाएं जिससे कि फीता न हिले। अब उम्मीदवार को कई बार गहरा सांस लेने के लिए कहा जायेगा और छाती का अधिक से अधिक फैलाव सेंटीमीटरों में रिकार्ड किया जायेगा, 84-89, 86-93 आदि। नाप को रिकार्ड करते समय एक सेंटीमीटर से कम के भिन्न (फैक्शन) को नोट नहीं करना चाहिए।

नोट :—अंतिम निर्णय लेने से पहले उम्मीदवार की ऊंचाई और छाती दो बार नापी जाएगी।

5. उम्मीदवार का वजन भी लिया जायेगा और उसका वजन किलोग्रामों में रिकार्ड किया जायेगा। आधे किलोग्राम से कम के फैक्शन को नोट नहीं करना चाहिए।

6. (क) उम्मीदवार की नजर की जांच निम्नलिखित नियमों के अनुसार की जायेगी। प्रत्येक का परिणाम रिकार्ड किया जायेगा।

(ख) चश्मे के बिना नजर (नेकेड आई विजन) की कोई न्यूनतम सीमा (मिनिमम लिमिट) नहीं होगी, किन्तु प्रत्येक केस में मेडिकल बोर्ड या अन्य मेडिकल प्राधिकारी द्वारा उसे रिकार्ड किया जायेगा क्योंकि इससे आंख की हालत के बारे में मूल सूचना (बेसिक इन्फार्मेशन) मिल जायेगी।

(ग) चश्मे के साथ और चश्मे के बिना दूर और नजदीक की नजर की निम्नलिखित मानक निर्धारित किया जाता है :—

दूर की नजर		नजदीक की नजर	
अच्छी आंख	खराब आंख	अच्छी आंख	खराब आंख
(संशोधित दृष्टि)		(संशोधित दृष्टि)	
6/9	6/9		
अथवा			
6/9	6/12	जे० I	जे० II

(घ) निकट दृष्टि के प्रत्येक मामले में, फंडस परीक्षा की जानी चाहिए और उसका परिणाम रिकार्ड किए जाने चाहिए। व्याधिकृत दशा मौजूद होने पर जो कि बढ़ सकती है और उम्मीदवार की दक्षता पर प्रभाव डाल सकती है, उसे अयोग्य घोषित किया जाए।

(ङ) दृष्टि क्षेत्र :—सम्मुखन विधि (कन्फ्रंटेशन मैथड) द्वारा दृष्टि क्षेत्र की जांच की जाएगी। जब ऐसी जांच का ननीजा असंतोषजनक या संदिग्ध हो तब दृष्टि क्षेत्र को परिभाषी (पेरीमीटर) पर निर्धारित किया जाना चाहिए।

(च) रतौंधी (नाइट ब्लाइंडनेस) साधारणतया रतौंधी दो प्रकार की होती है, (क) विटामिन "ए" की कमी होने के कारण और रेटीना के व्यावहारिक रोग के कारण रेटीनीटिस पिगमेन्टोसा होता है। जिसका सामान्य कारण ऊपर बताई गई (1) की स्थिति में फंडस में प्रगामान्य होता है, साधारणतया छोटी आयु वाले व्यक्तियों में और कम खुराक पाने वाले व्यक्तियों में दिखाई देता है और अधिक मात्रा में विटामिन "ए" के आने से ठीक हो जाता है, ऊपर बताई गई (2) की स्थिति में फंडस की खराबी होती है और अधिकांश मामलों में केवल फंडस की परीक्षा से ही स्थिति का पता चल जाता है। इस श्रेणी का रोगी प्रौढ़ होता है और खुराक की कमी से पीड़ित नहीं होता है। सरकार में ऊंची नौकरियों के लिए प्रयत्न करने वाले व्यक्ति इस वर्ग में आते हैं।

उपर्युक्त (1) और (2) दोनों के लिए अंधेरा अनुकूलन परीक्षा से स्थिति का पता चल जाएगा। उपर्युक्त (2) के लिए विशेष तथा जब फंडस खराब नहीं हो तो इलक्ट्रो-रेटीनोग्राफी किए जाने की आवश्यकता होती है। इन दोनों जांचों में (अंधेरा अनुकूलन और रेटीनोग्राफी) में समय अधिक लगता है और विशेष प्रबन्ध और सामान की आवश्यकता होती है और इसलिए साधारण चिकित्सक जांच के लिए ये दोनों सभव नहीं। तकनीकी वार्ता को ध्यान में रखते हुए मंत्रालय/विभाग को चाहिए कि वे बताएं कि रतौंधी के लिए इन जांचों का करना अनिवार्य है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर होगा कि पद से संबंध काम की आवश्यकता क्या है और जिन व्यक्तियों को सरकारी नौकरी दी जाने वाली है उनकी ड्यूटी किस तरह की होगी।

(छ) दृष्टि की पकड़ से भिन्न आंख की व्यवस्थाएं (आक्यूलर कंडीशन्स) :—

(I) आंख की उस बीमारी को या बढ़ती हुई वर्तन त्रुटि (प्रोग्रेसिव रिफ्रेक्टेव ऐरर) को, जिसके परिणामस्वरूप दृष्टि की पकड़ कम होने की संभावना हो, अयोग्यता का कारण समझना चाहिए।

(II) भेंगापन (स्क्विंट) : तकनीकी सेवाओं में जहां द्विनेत्री (बाइनोकुलर) दृष्टि का होना अनिवार्य हो, दृष्टि की पकड़ निर्धारित स्तर की होने पर भी भेंगापन को अयोग्यता का कारण समझना चाहिए।

(III) एक आंख वाले व्यक्ति : यदि किसी व्यक्ति की एक आंख हो अथवा एक आंख की दृष्टि सामान्य हो और दूसरी आंख की दृष्टि एम्बीलियोपिक अथवा अर्द्ध सामान्य हो तो आमतौर पर उसका प्रभाव यह होता है कि गहराई को देखने के लिए स्टीरियोस्कोपिक दृष्टि उसकी कमजोर होती है। अनेक सिविल पदों के लिए इसकी आवश्यकता नहीं होती, मेडिकल बोर्ड ऐसे व्यक्तियों की सिफारिश कर सकते हैं यदि उनकी सामान्य आंख में :—

(i) ऐनक के साथ या ऐनक के बिना दूर की दृष्टि 6/6 और समीप की दृष्टि जे०-I हो, परन्तु शर्त यह है कि किसी भी मेरीडियम में गलती दूर की दृष्टि के लिए 4 डायोप्टीयर से अधिक न हो।

(ii) उसकी दृष्टि का क्षेत्र पूरा हो।

(iii) रंगों की सामान्य पहचान हो, जहां भी इसकी आवश्यकता हो, परन्तु शर्त यह है कि कोई इस बात से सन्तुष्ट हो कि उम्मीदवार संबंधित पद के सभी कार्य करने में समर्थ हो।

(ज) कोन्टेक्ट लेंस : (Contact Lenses)—उम्मीदवार की स्वास्थ्य परीक्षा के समय कोन्टेक्ट लेंस के प्रयोग की आज्ञा नहीं होगी। आंख की जांच करते समय यह आवश्यक है कि दूर की नजर के लिए टाइप किए हुए अक्षर 15 पादवर्ता (फुट केन्डल्स) से प्रकाशित हों।

7. रक्त दाब (ब्लड प्रेशर)

रक्त दाब के संबंध में बोर्ड अपने निर्णय से काम लेगा।

नार्मल उच्चतम सिस्टोलिक प्रेशर के आकलन की काम चलाऊ विधि नीचे दी जाती है।

(i) 15 से 25 वर्ष के व्यक्तियों को औसत ब्लड प्रेशर लगभग 100 आयु होता है।

(ii) 25 वर्ष से ऊपर की आयु वाले व्यक्तियों में ब्लड प्रेशर के आकलन का सामान्य नियम यह है कि 110 में आधी आयु सम्मिलित करें। यह तरीका बिल्कुल संतोषजनक दिखाई पड़ता है।

ध्यान दीजिए :—सामान्य नियम के रूप में 140 से सिस्टोलिक प्रेशर को 90 के ऊपर के डायस्टालिक प्रेशर को संदिग्ध समझ लेना चाहिए, और उम्मीदवार के योग्य या अयोग्य होने के संबंध में अपनी अंतिम राय देने से पहले उम्मीदवार बोर्ड को चाहिए कि वह उम्मीदवार को अस्पताल में रखे। अस्पताल में रखने की रिपोर्ट से यह पता लगना चाहिए कि घबराहट (एक्साइटमेंट आदि) कारण ब्लड प्रेशर थोड़े समय रहने वाला है या उसका कारण कोई कायिक (आर्गेनिक) बीमारी है। ऐसे सभी केसों में हृदय का एक्सरे और विद्युत् हुए लेखी (इलेक्ट्रो कार्डियो ग्राफिक) परीक्षाएं और रक्त यूरिया निकाम (क्लीयरेंस) की जांच भी नेमी रूप से की जानी चाहिए। फिर भी उम्मीदवार के योग्य होने पर या न होने के बारे में अंतिम फैसला मेडिकल बोर्ड ही करेगा।

रक्त दाब (ब्लड प्रेशर) लेने का तरीका

नियमतः पारे वाली दाबमानी (मर्करी मेनोमीटरश्र किस्म का आला (इंस्ट्रूमेंट) इस्तेमाल करना चाहिए। किसी किस्म के व्यायाम या घबराहट के बाद पन्द्रह मिनट तक रक्त का दाब नहीं लेना चाहिए। रोगी बैठा या लेटा हो बशर्ते कि वह और विशेषकर उसकी भुजा पर से कंधे तक कपड़े उतार देने चाहिए। कफ में पूरी तरह हवा निकालकर बीच की रकड़ को भुजा के अन्दर की ओर रख कर और इसके निचले

किनारे को कोहनी के मोड़ से एक या दो इंच ऊपर करके लगाना चाहिए। इसके बाद कपड़े की पट्टी को फैलाकर समान रूप से लपेटना चाहिए। ताकि हवा भरने पर कोई हिस्सा फूल कर बाहर को न निकले।

कोहनी के मोड़ पर प्रचंड धमनी (ब्रकिअल आर्टरी) को दबा-दबा कर ढूंढा जाता है और तब उसके ऊपर बीचों बीच स्टेथेस्कोप को हल्के से लगाया जाता है जो कफ के साथ न लगे। कफ में लगभग 200 एम० एम० एच० जी० हवा भरी जाती है और इसके बाद इसमें से धीरे-धीरे हवा निकाली जाती है। इसकी क्रमिक ध्वनियां सुनाई पड़ने पर जिस स्तर पर पारे का कालम टिका होता है वह सिस्टालिक प्रेशर दर्शाता है। जब और हवा निकाली जायेगी तो ध्वनियां तेज सुनाई पड़ेंगी। जिस स्तर पर ये साफ और अच्छी सुनाई पड़ने वाली ध्वनियां हलकी दबी हुई सी लुप्तप्राय हो जाएं, वह डायस्टालिक प्रेशर है। ब्लड प्रेशर काफी थोड़ी अवधि में ही से ले लेना चाहिए। क्योंकि कफ के लम्बे समय का दबाव रोगी लिए क्षोभ कर होता है और इससे रीडिंग गलत हो जाती है। यदि दोबारा पड़ताल करनी जरूरी हो तो कफ में से पूरी हवा निकाल कर कुछ मिनट के बाद ही ऐसा किया जाय। कभी-कभी कफ में से हवा निकालने पर एक निश्चित स्तर पर ध्वनियां सुनाई पड़ती है। दाब गिरने पर वे गायब हो जाती है और निम्नतर स्तर पर पुनः प्रकट हो जाती हैं। इस "माइलेटंगम" से रीडिंग में गलती हो सकती है।

8. परीक्षक की उपस्थिति में किये गये मूत्र की परीक्षा की जानी चाहिए और परिणाम रिकार्ड किया जाना चाहिए। अब मेडिकल बोर्ड को किसी उम्मीदवार के मूत्र मे रसायनिक जांच के द्वारा शक्कर का पता चले तो बोर्ड इसके दूसरे सभी पहलुओं की परीक्षा करेगा और मधुमेह (डायबीटीज) के द्योतक चिन्हो और लक्षणों को भी विशेष रूप से नोट करेगा। यदि कोई उम्मीदवार को ग्लूकोज (ग्लाइकोयूरिया) के सिवाय, अपेक्षित मेडिकल फिटनेस के स्टैंडर्ड के अनुरूप जाए तो वह उम्मीदवार की इस शर्त के साथ फिट घोषित कर सकता है कि ग्लूकोज में अमधुमेह (नान-डायबेटिक) हो और बोर्ड उसे मेडिसन के किसी ऐसे निर्दिष्ट विशेषज्ञ के पास भेजेगा जिसके पास अस्पताल और प्रयोग शाला की सुविधाएं हों। मेडिकल स्टैंडर्ड ब्लड शुगर टालरेंस टेस्ट समेत जो भी बिल निकलने या लेबोरेटरी परीक्षाएं जरूरी समझेगा करेगा और अपनी रिपोर्ट मेडिकल बोर्ड को भेज देगा जिस पर मेडिकल बोर्ड का "योग्य" या 'अयोग्य' की अन्तिम राय आधारित होगी। दूसरे अवसर पर उम्मीदवार के लिए बोर्ड के सामने कार्य उपस्थित होना जरूरी नही होगा। औषधि के प्रभाव को समाप्त करने के लिए यह जरूरी हो सकता है कि उम्मीदवार को कई दिन अस्पताल मे पूरी देखरेख में रखा जाए।

9. जो स्त्री उम्मीदवार जांचों के फलस्वरूप 12 सप्ताह या उससे अधिक अवधि की गर्भवती पाई जाए उसे तब तक के लिए अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित कर दिया जाए जब तक इसकी गर्भावस्था समाप्त न हो जाए। गर्भाशय के समाप्त होने के 6 सप्ताह बाद यदि वह पंजीकृत चिकित्सक के स्वस्थता प्रमाण-पत्र प्रस्तुत कर दे तो आयोग्य प्रमाण-पत्र के लिए उसकी फिर से जांच की जाए।

10. निम्नलिखित अतिरिक्त बातों को प्रेक्षण करना चाहिए।

(क) उम्मीदवार को दोनों कानों से अच्छा सुनाई पड़ता है या नहीं और कान की बीमारी का कोई चिह्न है या नहीं। यदि कोई कान की खराबी हो तो उसकी परीक्षा कान विशेषज्ञ द्वारा की जानी चाहिए। यदि सुनने की खराबी का इलाज शल्य चिकित्सा का हियरिंग एड के इस्तेमाल से हो जाए तो उम्मीदवार को इस आधार पर अयोग्य घोषित नही किया जा सकता है बशर्ते कि कान की बीमारी बढ़ने वाली न हो।

(ख) कि वह बिना किसी बाधा के बोल सकता है।

(ग) उसके दांत अच्छी हालत में हैं या नही, और अच्छी तरह चबाने के लिए जख्मी होने पर नकली दांत लगे हैं या नहीं। (अच्छी तरह भरे हुए दांतों को ठीक समझा जाएगा)।

(घ) उसकी छाती की बनावट अच्छी है या नहीं और छाती काफी फैलती है या नही तथा उसका दिल और फेफड़े ठीक है या नही।

(ङ) उसे पेट की कोई बीमारी है या नही।

(च) उसे रप्चर (हर्निया या फटन) है या नही।

(छ) उसे हाइड्रोसील, बढ़ी हुई वेरिकोसील कैरिकोज। शिरा (वेन) या बवासीर है या नही।

(ज) उस के अंगों, हाथों और पैरों की बनावट और विकास अच्छा है या नही और सभी ग्रंथियां भली भांति स्वतन्त्र रूप से हिलती है या नही।

(झ) उसे कोई चिरस्थायी त्वचा की बीमारी है या नही।

(ञ) उसे कोई जन्मजात कुचना या दोष है या नहीं।

(ट) उसमे किसी उग्र या जीर्ण बीमारी के निशान है या नहीं जिनसे कमजोर गठन का पता लगे।

(ठ) कारगर टीके के निशान हैं या नही।

(ड) उसे कोई संचारी (क्यूनिकेबल) रोग है या नहीं।

11. दिल और फेफड़ों को किसी ऐसी विलक्षणता का पता लगाने के लिए जो साधारण शारीरिक परीक्षा से ज्ञात न हो सभी मामलों (केसेज) में नेमी रूप से छाती की पटक्षेत्र (स्क्रीनिंग) की जानी चाहिए, जहां आवश्यक समझा जाए, एक छायाचित्र (स्काय ग्राम) लिया जाना चाहिए।

जब कोई दोष मिले तो इसे प्रमाण पत्र में अवश्य ही नोट किया जाय। मेडिकल परीक्षक को अपनी राय लिख देनी चाहिए कि उम्मीदवार से अपेक्षित दक्षतापूर्ण ड्यूटी में इससे बाधा पड़ने की संभावना है या नहीं।

12. जहां तक मिली-जुली प्रतियोगिता परीक्षा के उम्मीदवारों का संबंध है, उनके लिए ऊपर पैरा II की नीचे की टिप्पणी में बताई गई अपील करने की कार्याविधि लागू नही होती। इस परीक्षा के उम्मीदवारों को अपील की शुल्क 50 रुपए भारत सरकार के इस संबंध में निर्धारित ढंग से जमा करना होता है। यह फीस

केवल उन उम्मीदवारो की बाबत मिलेगी जो अपीलीय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा अयोग्य घोषित किए जाएंगे। शेष दूसरो के मामलो मे यह जब्त कर ली जायेगी। यदि उम्मीदवार चाहे तो अपने अयोग्य होने के दावे के समर्थन मे स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा भेजे गए निर्णय के 21 दिन के अन्दर अपीले पेश करनी चाहिए, अन्यथा दूसरी स्वास्थ्य परीक्षा केवल नई दिल्ली मे ही होगी और उसका खर्चा उम्मीदवारो को ही देना पड़ेगा। दूसरी स्वास्थ्य परीक्षा के संबध मे की जाने वाली यात्राओ के लिए कोई यात्रा भत्ता या दैनिक भत्ता नही दिया जायेगा। अपीलो के निधारित शुल्क के साथ प्राप्त होने पर अपीलीय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा की जाने वाली स्वास्थ्य परीक्षा के प्रबन्ध के लिए मंत्रिमण्डल सचिवालय (कार्मिक विभाग) द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जायेगी।

मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट

मेडिकल परीक्षक के मार्गदर्शन के लिए निम्नलिखित सूचना दी जाती है :—

शारीरिक योग्यताएं (फिटनेस) के लिए अपनाए जाने वाले स्टैंडर्ड से संबधित उम्मीदवार की आयु और सेवा काल (यदि हो) के लिए उचित गुंजाइश रखनी चाहिए।

किसी ऐसे व्यक्ति को पब्लिक सर्विस मे भर्ती के लिए योग्य नही समझा जाएगा जिसके बारे में यथास्थिति सरकार या नियुक्ति प्राधिकारी (अप्वाइंटिंग अथारिटी) को, यह तसल्ली नही होगी कि उसे ऐसी कोई बीमारी या शारीरिक दुर्बलता (बाडिली इनफर्मिटी) नही जिसे वह उस सेवा के लिए अयोग्य हो या उसके अयोग्य होने की सभावना हो।

यह बात समझ लेनी चाहिए कि योग्यता का प्रश्न भविष्य से भी उतना ही संबद्ध है जितना कि वर्तमान से है और मेडिकल परीक्षा का एक मुख्य उद्देश्य निरंतर कारगर सेवा प्राप्त करना और स्थायी नियुक्ति के उम्मीदवारो के मामले मे अकाल मृत्यु होने पर समय पूर्व पेंशन या अदायगियो को रोकना है। साथ ही यह भी नोट किया जाये कि यहां प्रश्न केवल निरतर कारगर सेवा की सभावना का है और उम्मीदवार को अस्वीकृत करने की सलाह उस हालत मे नही दी जानी चाहिए जब कि उसमे कोई ऐसा दोष हो जो केवल बहुत कम स्थितियों मे निरतर कारगर सेवा मे बाधक पाया गया हो।

बोर्ड मे साधारणतया तीन सदस्य होगे (1) एक चिकित्सक, (2) एक शल्यचिकित्सक और (3) एक नेत्र चिकित्सक। ये सभी यथासंभव साध्य समान स्तर के होने चाहिए। महिला उम्मीदवारो की परीक्षा के लिए किसी महिला चिकित्सक (लेडी डाक्टर) का स्वास्थ्य बोर्ड के सदस्य के रूप मे सहयोजित किया जायेगा।

भारतीय आर्थिक सेवा (इडियन इकानोमिक सर्विस), भारतीय साख्यिकीय सेवा (इंडियन स्टेस्टीकल सर्विस) के उम्मीदवारो को भारत में और भारत से बाहर क्षेत्र सेवा (फील्ड सर्विस) करनी होगी। इस प्रकार के किसी उम्मीदवार के बारे मे मेडिकल बोर्ड को इस बारे में अपनी राय विशेष रूप से रिकार्ड करनी चाहिए कि उम्मीदवार क्षेत्र सेवा (फील्ड सर्विस) के लिए योग्य है या नही।

डाक्टरी बोर्ड की रिपोर्ट को गोपनीय रखना चाहिए।

ऐसे मामलों मे जब कि कोई उम्मीदवार सरकारी सेवा मे नियुक्ति के लिए अयोग्य करार दिया जाता है तो मोटे तौर पर उसके अस्वीकार किए जाने के आधार उम्मीदवार को बताए जा सकते हैं किन्तु डाक्टरी बोर्ड ने जो खराबी बताई हो उनका विस्तृत ब्यौरा नही दिया जा सकता।

ऐसे मामलो मे जहां डाक्टरी बोर्ड का यह विचार हो कि सरकारी सेवा के लिए उम्मीदवार को अयोग्य बनाने वाली छोटी मोटी खराबी चिकित्सा (औषधि या शल्य) द्वारा दूर हो सकती है वहा डाक्टरी बोर्ड द्वारा इस आशय का कथन रिकार्ड किया जाना चाहिए। नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा इस बारे मे उम्मीदवार को बोर्ड की राय सूचित किए जाने मे कोई आपत्ति नही है और जब वह खराबी दूर हो जाये जो एक दूसरे डाक्टरी बोर्ड के सामने उस व्यक्ति को उपस्थित होने के लिए कहने से सबधित पदाधिकारी स्वतन्त्र है।

यदि कोई उम्मीदवार अस्थायी रूप से अयोग्य करार दिया जाये तो दुबारा परीक्षा की अवधि साधारणतया कम से कम छः महीने से कम नही होनी चाहिए। निश्चित अवधि के बाद जब दुबारा परीक्षा होती है ऐसे उम्मीदवार को और आगे की अवधि के लिए अस्थायी तौर पर अयोग्य घोषित न कर नियुक्ति के लिए उसकी योग्यता के संबध मे अथवा वे इस नियुक्ति के लिए अयोग्य है ऐसा निर्णय अतिम रूप से किया जाना चाहिए।

(क) उम्मीदवार का कथन और घोषणा :—

अपनी मेडिकल परीक्षा से पूर्व उम्मीदवार को निम्नलिखित अपेक्षित स्टेटमेन्ट देना चाहिए और उसे साथ लगी हुई घोषणा (डिक्लेरेशन) पर हस्ताक्षर करने चाहिए। नीचे दिए गए नोट मे उल्लिखित चेतावनी की ओर उम्मीदवार को विशेष रूप से, ध्यान देना चाहिए।

1. अपना पूरा नाम लिखें —
   (साफ अक्षरो में)

2. अपनी आयु और जन्म-स्थान बताएं —

2. (क) क्या आप गोरखा, गढ़वाली, असमी, नागालैण्ड, आदिम जाति आदि से सबधित हैं जिनका औसत कद दूसरो से छोटा होता है। "हां" या "नही" मे उत्तर दीजिए और यदि उत्तर "हां" मे है तो उस जाति का नाम बतलाइए :—

3. (क) क्या आपको कभी चेचक, रुक-रुक कर होने वाला या कोई दूसरा बुखार, ग्रथिया (ग्लैंड्स) का बढ़ना या इनमे पीप पड़ना, थूक में खून आना, दमा, दिल की बीमारी, फेफड़े की बीमारी, मूर्छा के दौरे, स्पैटिज्म, एपेंडिसाइटिस हुआ है :—

अथवा

(ख) दूसरी कोई ऐसी बीमारी या दुर्घटना, जिसके कारण शय्या पर लेटे रहना पड़ता हो और जिसका मेडिकल या सर्जिकल इलाज किया गया हो, हुई है :—

4. आप को चेचक का अंतिम टीका कब लगा था ?

5. क्या आपको अधिक कार्य या किसी दूसरे कारण से किसी किस्म की अधीरता (नर्वसनेस) हुई है :—

6. अपने परिवार के संबंध में निम्नलिखित ब्यौरा दें :—

यदि पिता जीवित हो तो उसकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	यदि पिता की मृत्यु हो चुकी हो तो मृत्यु के समय पिता की आयु और मृत्यु का कारण	आपके कितने भाई जीवित हैं, उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	आपके कितने भाइयों की मृत्यु हो चुकी है, मृत्यु के समय उनकी आयु और मृत्यु का कारण
यदि माता जीवित हो तो उसकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	यदि माता की मृत्यु हो चुकी हो तो मृत्यु के समय उसकी आयु और मृत्यु का कारण	आपकी कितनी बहनें जीवित हैं, उसकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	आपकी कितनी बहनों की मृत्यु हो चुकी है, मृत्यु के समय उनकी आयु और मृत्यु का कारण

7. क्या इसके पहले किसी मेडिकल बोर्ड ने आपकी परीक्षा की है ?——————————

8. यदि ऊपर के प्रश्न का उत्तर "हां" हो तो बताइये कि किस सेवा/सेवाओं के लिए आपकी परीक्षा की गई थी ?——————

9. परीक्षा लेने वाला प्राधिकारी कौन था ?——————

10. कब और कहां मेडिकल हुआ ?——————

11. मेडिकल बोर्ड की परीक्षा का परिणाम यदि आपको बताया गया हो अथवा आपको मालूम हो——————

12. मैं घोषित करता हूं कि जहां तक मेरा विश्वास है, ऊपर दिये गये सभी जवाब सही और ठीक है।

उम्मीदवार के हस्ताक्षर——————

मेरे सामने हस्ताक्षर किये।

बोर्ड के चेयरमैन के हस्ताक्षर——————

नोट :—उपर्युक्त कथन की यथार्थता के लिए उम्मीदवार जिम्मेदार होगा। जान-बूझ कर किसी सूचना को छुपाने से यह नियुक्ति और बैठने की जोखिम लेगा और यदि वह नियुक्त हो भी जाये तो आर्थवय निवृत्ति भत्ता (सुपरऐन्युएशन अलाउंस) या उपदान (ग्रेचुटी) के सभी दावों से हाथ धो बैठेगा।

(ख) —————————— की शारीरिक परीक्षा की।

मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट

सामान्य विकास :

अच्छा साधारण

निम्न

घोषणा :—पतला ——— औसत ——— मोटा ———

कद (जूते उतार कर) ——— वजन ———

अत्युत्तम वजन——— कब था ?———

वजन में कोई हाल ही में हुआ परिवर्तन———

तापमान ———

छाती का घेर

(1) पूरा सांस खींचने पर ———

(2) पूरा सांस निकालने पर ———

(3) कलर विजन का दोष ———

(4) दृष्टि क्षेत्र (फील्ड आफ विजन) ———

(5) दृष्टि की पकड़ (विजुअल एक्यूटी) ———

(6) फडस की जांच ———

दृष्टि की पकड़	चश्मे के बिना	चश्मे से	चश्मे की पावर		
			गोल	सिलि०	अक्ष
दूर की नजर क्ष० ने०					
बा० ने०					
क्ष० ने०					
बा० ने०					

4. कान : निरीक्षण ——— सुनना।
दायां कान ——— बायां कान ———

5. ग्रंथियां ——— थाइरॉइड———

6. दांतों की हालत ———

7. श्वसन तंत्र (रेस्पिरेटरि सिस्टम) क्या शारीरिक परीक्षा लेने पर सांस के अंगों में किसी विलक्षणता का पूरा ब्यौरा है।

8. परिसंचय-रण (सेक्युलेरटी सिस्टम)

(क) हृदय : कोई आंगिक क्षति (आर्गेनिक लोजन)

गति (रेट)

खड़े होने पर :

25 बार कुदाए जाने के बाद ———

कुदाये जाने के 2 मिनट बाद ———

(ख) ब्लड प्रेशर ———सिस्टालिक ———डायस्थालिक

9. उदर (पेट) : घेर ——— दाब बेकदना (टेंयरनेस) हार्निया ———

(क) दबा कर मालूम पड़ना, जिगर ——— तिल्ली———
गुर्दे ——— ट्यूमर ———

(ख) बवासीर के मस्से ——— फिरबुला ———

10. तांत्रि तंत्र (नर्वस सिस्टम) तांत्रिक या मानसिक अशक्तता का संकेत ———

11. चाल तंत्र (लोकोमोटर सिस्टम)
कोई विलक्षणता ———

12 जनन मूत्र तंत्र (जेनिटो यूरिनरी सिस्टम)। हाइड्रोसील वेरिकोसील आदि का कोई संकेत।

मूत्र परीक्षा

(क) कैसा दिखाई पड़ता है ?———

(ख) स्पेसिफिक ग्रेविटी (अपेक्षित गुरुत्व)

(ग) हल्ब्यूमेन

(घ) शक्कर

(ङ) कास्ट (मेल्स)

13. छाती का पटेशक्ष (स्क्रीनिंग) एक्स-रे परीक्षा की रिपोर्ट

14 क्या उम्मीदवार के स्वास्थ्य में कोई ऐसी बात है जिससे वह उसे सेवा को दक्षतापूर्वक निभाने के लिए अयोग्य हो सकता है जिसके लिए वह उम्मीदवार है ?

नोट —यदि उम्मीदवार कोई महिला है और यदि वह 12 सप्ताह या उससे अधिक समय से गर्भवती है तो, उसे विनियम 9 के अनुसार अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित कर दिया जाए।

15. (i) क्या वह भारतीय आर्थिक सेवा/भारतीय सांख्यिकीय सेवा में दक्षतापूर्वक और निम्नतर कार्य करने के लिए सब तरह से योग्य पाया गया है ?

(ii) क्या उम्मीदवार क्षेत्र सेवा (फील्ड सर्विस) के लिए योग्य है ?

नोट —बोर्ड को अपना जांच परिणाम निम्नलिखित तीन वर्गों में से किसी एक वर्ग में रिकार्ड करना चाहिए —

(i) योग्य (फिट)

(ii) अयोग्य (अनफिट), जिसका कारण———————

(iii) अस्थायी रूप से अयोग्य, जिसका कारण ———————

स्थान——————— अध्यक्ष———————
(प्रेसीडेंट)

दिनांक——————— सदस्य———————

सदस्य———————

वित्त मन्त्रालय
(व्यय विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 25 मई 1972

संकल्प

सं० फा० 16 (1)-ई०V (बी०)/72—सर्वसाधारण के सूचनार्थ यह घोषणा की जाती है कि सामान्य भविष्य निधि तथा अन्य उसी प्रकार की 10,000 रुपये तक की निधियों के अभिदाताओं की कुल जमा रकमों पर (जिसमें वर्ष 1972-73 के दौरान जमा की गई तथा निकाली जाने वाली राशियां शामिल हैं) ब्याज की दर 5.70 रु० प्रतिशत वार्षिक होगी तथा 10,000 रुपये से ऊपर की रकम पर ब्याज की दर 5.00 रु० प्रतिशत वार्षिक होगी। ये दरें 1 अप्रैल, 1972 से आरम्भ होने वाले वित्तीय वर्ष के दौरान लागू रहेंगी। सम्बन्धित निधियां निम्नानुसार हैं —

1. सामान्य भविष्य निधि (केन्द्रीय सेवाएं)।
2. सामान्य भविष्य निधि (रक्षा सेवाएं)।
3. भारत सचिव सेवाएं (सामान्य भविष्य निधि)।
4. अंशदायी भविष्य निधि (भारत)।
5. भारतीय सिविल सेवा भविष्य निधि।
6. अखिल भारतीय सेवा भविष्य निधि।
7. भारतीय आयुध निर्माणी विभाग भविष्य निधि।
8. भारतीय सिविल सेवा (गैर-यूरोपीय सदस्य) भविष्य निधि।
9. रक्षा सेवा अधिकारी भविष्य निधि।
10. अन्य विविध भविष्य निधि (रक्षा)।
11. सशस्त्र सेना कर्मचारी भविष्य निधि।
12. सैनिक इंजीनियरी सेवा भविष्य निधि।
13. भारतीय आयुध निर्माण कारखानों के श्रमिकों की भविष्य निधि।
14. अंशदायी भविष्य निधि (रक्षा)।
15. भारतीय नौसेना गोदी कामगरों की भविष्य निधि।

2. रेल (रेल बोर्ड) मंत्रालय द्वारा अपने नियंत्रणाधीन विभिन्न भविष्य निधियों की शेष जमा पर, सम्बन्धित वर्ष के दौरान लागू ब्याज की दरों के बारे में अलग से आदेश जारी किये जाएंगे।

आदेश

3. आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

श्याम सुन्दर लाल मलहोत्रा, अवर सचिव

विदेश व्यापार मन्त्रालय

नई दिल्ली, दिनांक मई 1972

संकल्प

सं० 4/27/69-टैक्स (सी०)—भारत सरकार ने विनिश्चय किया है कि अखिल भारतीय हथकरघा बोर्ड का पुनर्गठन करने वाले उसके संकल्प सं० 4(27)-टैक्स(सी०)/69, दिनांक 17 मई 1969 में निम्नलिखित संशोधन किये जाएंगे :—

(क) क्रमांक 7 में, "सहकारी समितियों के संयुक्त रजिस्ट्रार (हथकरघा), महाराष्ट्र सरकार, पुना," के स्थान पर "हथकरघा, शक्ति-चालित करघा तथा सहकारी संस्थाओं के निदेशक, नागपुर" प्रतिस्थापित किया जायेगा।

(ख) क्रमांक 32 में "उप" शब्द निकाल दिया जायेगा।

के० किशोर, संयुक्त सचिव

कृषि मंत्रालय
(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 3 मई 1972

सं० 19-3/69-सी० उद्योग (प्री०)—खाद्य तथा कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग) के संकल्प संख्या 12-24/57-मीन उद्योग (वि०), दिनांक 1 अप्रैल, 1958 के आंशिक आंशोधन में, राष्ट्रपति प्रभारी मीन उद्योग मन्त्री, पांडिचेरी प्रशासन, पांडिचेरी को केन्द्रीय मीन उद्योग मण्डल के सदस्य के रूप में नियुक्त करते हैं।

गोडविन रोज, संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 30 मई 1972

संकल्प

सं० 3/5/59-एफ० डी०—विभिन्न राज्यों द्वारा अपनाई जाने वाली वन नीति के एकीकरण के सम्बन्ध में अखिल भारतीय दृष्टि से तथा सितम्बर, 1948 में आयोजित राज्य सरकारों के मंत्रियों की सिफारिशों के आधार पर, भारत सरकार ने कृषि मंत्रालय के

संकल्प संख्या 6/20/49-वन, दिनांक 19-6-1950 द्वारा केन्द्रीय खाद्य तथा कृषि मंत्री की अध्यक्षता में एक केन्द्रीय वन मण्डल गठित किया था। कुछ संघ राज्य क्षेत्रों की स्थिति में संवैधानिक परिवर्तनों के फलस्वरूप और कुछ नये राज्यों संघ राज्य क्षेत्रों के बनाये जाने के कारण तथा संसद सदस्यों को केन्द्रीय वन मण्डल से सहयोजित करने के निर्णय के फलस्वरूप, मण्डल को पुनर्गठित करना आवश्यक हो गया है। तदनुसार समय-समय पर संशोधित दिनांक 19-6-1950 के संकल्प के आंशिक आशोधन में यह निर्णय किया गया है कि केन्द्रीय वन मण्डल का गठन संशोधित रूप में निम्न प्रकार होगा —

1.	केन्द्रीय कृषि मंत्री	—	अध्यक्ष
2	केन्द्रीय राज्य मंत्री (वन-उद्योग के प्रभारी)	—	उपाध्यक्ष
3.	वनों के प्रभारी मंत्री	आन्ध्र प्रदेश	सदस्य
4.	"	असम	"
5	"	बिहार	"
6	"	गुजरात	"
7	"	हरियाणा	"
8	"	हिमाचल प्रदेश	"
9	"	जम्मू और कश्मीर	"
10	"	केरल	"
11.	"	मध्य प्रदेश	"
12.	"	महाराष्ट्र	"
13	"	मणिपुर	"
14.	"	मेघालय	"
15.	"	मैसूर	"
16.	"	नागालैण्ड	"
17.	"	उड़ीसा	"
18.	"	पंजाब	"
19	"	राजस्थान	"
20.	"	तमिलनाडु	"
21.	वन प्रभारी मंत्री	त्रिपुरा	"
22.	"	उत्तर प्रदेश	"
23.	"	पश्चिमी बंगाल	"
24.	उप राज्यपाल	दिल्ली	"
25.	"	गोवा, दमन और दीव	"
26	"	मिजोराम	"
27	मुख्य आयुक्त	अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह	"
28	"	अरुणाचल प्रदेश	"
29.	"	चण्डीगढ़ प्रशासन	"
30	और लोक सभा के सदस्य	—	"
31.			
32.	सदस्य, राज्य सभा	—	"
33	सचिव, कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग)	—	"
34.	वन महानिरीक्षक	—	"
35.	अध्यक्ष, वन अनुसंधान संस्थान और महाविद्यालय, देहरादून	—	"
36.	सचिव, केन्द्रीय वन उद्योग आयोग।	—	सदस्य सचिव

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को भेज दी जाये।

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सामान्य जानकारी के लिये भारत के राजपत्र में भी प्रकाशित कर दिया जाये।

संकल्प

सं० 3-5/69-वन विकास—कुछ संघ राज्य क्षेत्रों की स्थिति में संवैधानिक परिवर्तन होने तथा कुछ नए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के बनाए जाने के कारण, भारत सरकार ने भूतपूर्व खाद्य और कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग) के पत्र सं० 3-47/58-वन विकास, दिनांक 12-11-1958, जिसे कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग) के संकल्प सं० 3-5-/69-वन विकास, दिनांक 9-12-1971 द्वारा अंतिम रूप से संशोधित किया गया था, के पूर्व आदेशों में आंशिक रूप से संशोधन करते हुए, केन्द्रीय वन मण्डल की स्थायी समिति को निम्न प्रकार से पुर्नगठित करने का निर्णय किया है :—

1.	केन्द्रीय राज्य मंत्री (वन के प्रभारी)	अध्यक्ष
2	कृषि के केन्द्रीय उपमंत्री	उपाध्यक्ष
3—6	निम्न प्रकार से गठित किये गये चार क्षेत्रों में से प्रत्येक से वन के एक राज्य मंत्री (जो बारी-बारी से समिति मे काम करेंगे)	सदस्य

(i) **पूर्वी क्षेत्र** : असम, बिहार, मणिपुर, मेघालय, मिजोराम, नागालैण्ड, उड़ीसा, त्रिपुरा, पश्चिमी बंगाल (अरुणाचल प्रदेश तथा अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह को स्थायी समिति की बैठकों से पूर्व की बैठको के लिये इस क्षेत्र में सम्मिलित किया जायेगा)।

(ii) **उत्तरी क्षेत्र** हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू तथा कश्मीर, पंजाब और उत्तर प्रदेश (दिल्ली तथा चण्डीगढ़ को स्थायी समिति की बैठकों से पूर्व की बैठकों के लिये इस क्षेत्र में सम्मिलित किया जायेगा)।

(iii) **पश्चिमी क्षेत्र** : गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, तथा गोवा, दमन एव दीव।

(iv) **दक्षिणी क्षेत्र** : आंध्र प्रदेश, केरल, मैसूर तथा तामिल नाडु।

7.	सचिव, भारत सरकार, कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग)	सदस्य
8.	वन महानिरीक्षक	सदस्य
9.	अध्यक्ष, वन अनुसंधान सस्थान एव महाविद्यालय, देहरादून।	सस्दय
10.	सचिव, केन्द्रीय वन मंडल	सदस्य सचिव

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सब सम्बन्धितों को भेजी जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि सर्वसाधारण की जानकारी के लिये यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

त्रिभुवन प्रसाद सिंह, सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi the 1st June 1972

No 71 Press /72—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of conspicuous gallantry in the recent operations against Pakistan to —

1 Brigadier Anand Sarup (IC-4501) Gorkha Rifles

Brigadier Anand Sarup was allotted the task of organising and launching into battle a force for engaging the enemy at Pathankot and in the area North of Fenny Town He organised this force quickly and the troops under his command fought gallantly during the battles at Nazirhat Kumarhat and Bhatiari Brigadier Anand Sarup was constantly on the move well forward with his troops directing the operations

Throughout Brigadier Anand Sarup displayed conspicuous gallantry and outstanding leadership

2 Lieutenant Colonel Shamsher Singh (IC 7018) The Brigade of Guards

Lieutenant Colonel Shamsher Singh was commanding a Battalion of The Brigade of guards during an attack in the Eastern Sector The enemy had put up formidable defences with well co-ordinated Artillery Tank and Machine Gun fire combined with mines wire and booby traps In spite of strong opposition from the enemy the Battalion managed to get a foot-hold on the objective and held on to it, notwithstanding heavy casualties in bunker to bunker fighting The enemy launched a series of counter attacks during which the Battalion ran short of ammunition Undaunted Lieutenant Colonel Shamsher Singh engaged in hand to hand fighting He personally directed his troops by moving from place to place and he encouraged his men to hold on to their positions Simultaneously, he arranged for Artillery and Medium Machine Gun support After regrouping his Battalion, he launched a fresh attack and despite heavy opposition, succeeded in capturing the objective inflicting heavy casualties on the enemy

In this operation, Lieutenant Colonel Shamsher Singh displayed conspicuous gallantry and outstanding leadership

3 Major Vijay Kumar Berry (IC 11567), The Parachute Regiment

After the cease fire on 17th December 1971 Pakistan troops occupied an area approximately 600 yards inside our territory in the Western Sector and developed this into a defence locality with mine fields all around it The locality was dominated by other defensive positions across the border held in strength by the enemy

A battalion of the Parachute Regiment was given the task of clearing this encroachment Major Vijay Kumar Berry was ordered to capture this locality His company faced heavy enemy shelling Undaunted, Major Vijay Kumar Berry continued the assault Leading his men through the mine-field, he charged the enemy position without any regard for his personal safety and reached the objective The enemy however subjected the position to heavy Artillery and Mortar fire for the next twelve hours Undaunted Major Vijay Kumar Berry moved from section to section, inspiring his men and held on to the captured ground and cleared the intrusion

In this operation Major Vijay Kumar Berry displayed conspicuous gallantry and outstanding leadership

4 2850287 Naik Sugan Singh, The Rajputana Rifles (*Posthumous*)

(*Effective date of award—9th December 1971*)

On the 9th December 1971 a Battalion of the Rajputana Rifles were ordered to attack the enemy defences at Maynamati, which comprised well prepared concrete bunkers housing Medium Machine Guns whose cross fire covered every possible approach Naik Sugan Singh was commanding one of the assaulting sections When the assaulting troops closed on to the objective the Medium Machine Guns opened fire and held up the assault Realising the gravity of the situation Naik Sugan Singh charged at one of the Medium Machine Gun Posts He received a burst in his shoulder Although bleeding profusely he crawled upto the bunker and lobbed a hand grenade killing two men The second Medium Machine Gun was still active Although he had bled profusely he charged at the second Medium Machine Gun he could not carry himself and fell down Undeterred he then crawled upto the bunker with a grenade in his hand and pushed the grenade into the bunker killing three of the enemy He was also killed as a result of the explosion

In this action Naik Sugan Singh displayed conspicuous gallantry and determination

No. 72 Pres /72—The President is pleased to approve the award of the SHAURYA CHAKRA for acts of gallantry to —

1 Major Vishnu Datta Sharma (IC 10048)
Air Defence Regiment
The Regiment of Artillery

(*Effective date of award—3rd December 1971*)

Major Vishnu Datta Sharma commanding a battery of an Air Defence Regiment was responsible for the air defence of Halwara Airfield He deployed his battery in a skilful and competent manner and by his close presence inspired his men to put in their best in the face of direct air attacks by the enemy aircrafts Under his inspiring leadership his battery kept the enemy aircraft at bay on the 3rd December 1971 thereby preventing damage to valuable installations and equipment On the 4th December 1971 fully aware that a number of unexploded bombs were lying around the airfield he with complete disregard to his personal safety moved from one gun position to another to ensure effective air defence During his round he was seriously injured when an unexploded bomb suddenly exploded

Throughout Major Vishnu Datta Sharma displayed commendable courage and professional skill

2 Lieutenant Commander Sajjan Kumar (X), Indian Navy

(*Effective date of award—5th December 1971*)

Lieutenant Commander Sajjan Kumar was in charge of the Command Clearance Diving Team at Vishakhapatnam during the recent operations against Pakistan

On 5th December 1971 Lieutenant Commander Sajjan Kumar led the team that located and marked the position of the Pakistani Submarine Ghazi which sank off Vishakhapatnam as a result of an Indian Naval action Although there was a chance of internal explosion in the sunken submarine Lieutenant Commander Sajjan Kumar led continuous diving operations which not only established the submarine's identity but also provided vital operational information

Throughout Lieutenant Commander Sajjan Kumar displayed gallantry of a high order

3 Squadron Leader Gopal Krishan Arora (4864), Flying (Navigator) (*Posthumous*)

During the conflict with Pakistan in December 1971 Squadron Leader Gopal Krishan Arora was attached to a surface to Air Guided Weapons Squadron for duties as a Controller for guiding the Squadron to engage enemy aircraft He set up the Guided Weapons Command Post in one day and fully integrated it with the local Air Defence system He remained at his post throughout and efficiently guided the Squadron to engage any intruding enemy aircraft His efforts culminated in the successful engagement of an enemy bomber aircraft while it was raiding an airfield While on duty he stepped on a hidden explosive which had been dropped during an enemy raid and was killed

Throughout Squadron Leader Gopal Krishan Arora displayed courage and devotion to duty of a high order

4 Flight Lieutenant Virsa Singh Mall (9602)
Aeronautical Engineering (Electronics)

(*Effective date of award—9th December 1971*)

During the India-Pakistan conflict in December 1971 Flight Lieutenant Virsa Singh Mall was employed as Technical Officer of a Fighter Bomber Squadron at one of our forward airfields He ensured maximum serviceability and quick turn around of aircraft for operational requirements

During the nights of 9th and 10th December, 1971 the airfield was attacked by enemy aircraft thrice in quick succession and the bombs fell in the dispersal area setting fire to the armament stores lying in a bunker and lighting up of the entire dispersal area Though the air raid siren for the next attack was on he with the help of a few airmen extinguished the fire by pulling out the burning boxes and throwing loose earth over them and thus saved the armament dump from destruction

Throughout, Flight Lieutenant Virsa Singh Mall displayed courage, leadership and devotion to duty of a high order.

5. Second Lieutenant Ravindranathan Maledath (SS-23795), The Corps of Engineers.

(Effective date of awa d—13th December, 1971)

Second Lieutenant Ravindranathan Maledath was ordered to keep the Pathankot Air Field operational by disposing of the un-exploded bombs from the runway and the surrounding area. He carried out this dangerous task in a commendable manner. He personally defuzed a number of unexploded bombs with complete disregard to his personal safety.

Throughout, Second Lieutenant Ravindranathan Maledath displayed commendable courage, determination and professional skill.

6. JC-33586 Subedar Sewa Singh, The Corps of Engineers.

(Effective date of award—13th December, 1971)

Subedar Sewa Singh was given the task of disposing of five unexploded enemy bombs in the premises of Food Corporation of India in village Zeera near Ferozepur. The fuze in these bombs and its mechanism was of a new type, and there was no information regarding the method of neutralising it. Furthermore, there was no special bomb disposal equipment and stores to immunise the fuzes. Undeterred, Subedar Sewa Singh at grave risk to his life and safety, decided to extract the fuze manually. He defuzed the unexploded bombs with his own hands.

In this action, Subedar Sewa Singh displayed commendable courage, determination and professional skill.

7. Bipra Charan Mahapatra, NM, No. 60128 Master Chief Petty Officer, Second Class, India Navy.

(Effective date of award—5th December, 1971)

Bipra Charan Mahapatra, Master Chief Petty Officer, was a member of the Command Clearance Diving Team at Vishakhapatnam during the recent operations against Pakistan.

On 5th December, 1971, the Command Diving Team was required to locate and mark the position of the Pakistani Submarine Ghazi which sank off Vishakhapatnam as a result of an Indian Naval action. Although there was a chance of internal explosions in the submarine, Bipra Charan Mahapatra, Master Chief Petty Officer, carried out continuous diving operations which not only established the identity of the submarine but also provided vital operational information.

Throughout, Bipra Charan Mahapatra, Master Chief Petty Officer, displayed gallantry of a high order.

8. Mangal Bhai Patel, No. 87199, Leading Engineering Mechanic, Indian Navy.

(Effective date of award—4th December, 1971)

Mangal Bhai Patel, Leading Engineering Mechanic, was a member of the crew of an Indian Naval Ship during hostilities with Pakistan.

On 4th December, 1971, when his ship was engaged in an offensive sweep in the Arabian sea, an accident occurred in the Boiler Room resulting in the bursting of a superheated steam pipe as a result of which the Boiler Room was filled with steam at a temperature of 398.5 degrees centigrade. The Boiler Room had to be evacuated and the machinery was in grave danger as it could not be shut down. Without regard for his personal safety, Mangal Bhai Patel rushed in and shut off all the emergency control valves. He suffered severe burns all over his body but succeeded in saving the ship's machinery.

In this action, Mangal Bhai Patel, Leading Engineering Mechanic, displayed commendable courage.

9. Ayirookuzhyil Joseph Baby, No. 80298, Leading Medical Assistant, Indian Navy.

(Effective date of award—15th December, 1971)

Ayirookuzhyil Joseph Baby, Leading Medical Assistant, was on board an Indian Naval Ship which was a part of the amphibious force deployed in landing Army Units in Cox Bazar's area during the operations against the Pakistani Forces in Bangladesh.

On 15th December, 1971, when the first wave of Army Units jumped into the water to land, some of the Jawans were swept by the current into an area where the water was deep and there was a danger of their being drowned. Ayirookuzhyil Joseph Baby, Leading Medical Assistant, jumped from his ship into an area of heavy swells and high breakers and in complete disregard to his safety rescued one jawan from drowning, and brought him back to his ship. By immediate application of artificial respiration he saved the life of the jawan.

In this action, Ayirookuzhyil Joseph Baby, Leading Medical Assistant, displayed commendable courage.

10. 291190 Leading Aircraftsman Omkar Singh, Fitter Mechanic Airframe.

(Effective date of award—8th December, 1971)

On the night of 8th/9th December, 1971, one of our forward airfields was subjected to heavy bombing and straffing by enemy aircraft, resulting in fire in the Rocket Dump. The fire spread at a fast rate and the whole dispersal area was lit. The pens and buildings also became visible and were exposed to the danger of enemy air attack. In the meantime, the second air raid siren was sounded. Unmindful of the risk involved, Leading Aircraftsman Omkar Singh immediately volunteered to assist in putting out the fire. The task was accomplished successfully and the ammunition dump and the dispersal area were saved from the next enemy air raid.

In this action, Leading Aircraftsman Omkar Singh displayed commendable courage and devotion to duty.

11. Narain Atti Marad, No. 56163, Acting Leading Engineering Mechanic, Indian Navy.

(Effective date of award—4th December, 1971)

Narain Atti Marad, Leading Engineering Machanic, was a member of the crew of an Indian Naval Ship during the hostilities with Pakistan.

On 4th December, 1971, when his ship was engaged in an offensive sweep in the Arabian Sea, an accident occurred in the Boiler Room resulting in the bursting of a superheated steam pipe as a result of which the Boiler Room was filled with steam at a temperature of 398.5 degrees centigrade. The Boiler Room had to be evacuated and the machinery was in grave danger as it could not be shut down. Without regard for his personal safety. Narain Atti Marad entered the Boiler Room and the shut off the oil sprayers and furance pump and thus saved the ship's machinery from serious damage.

In this action, Narain Atti Marad, Leading Engineering Mechanic, displayed commendable courage.

12. 246295 Corporal Sarmukh Singh, Instrument Repairer—I.

(Effective date of award—8th December, 1971)

On the night of 8th/9th December, 1971, one of our forward airfields was subjected to heavy bombing and straffing by enemy aircraft, resulting in fire in the Explosive Storage. The fire spread at a fast rate and the whole dispersal area was lit. The pens and buildings also became visible and were exposed to the danger of enemy air attacks. In the meantime, the second air raid siren was sounded. Unmindful of the risk involved, Corporal Sarmukh Singh immediately volunteered to assist in putting out the fire. The task was accomplished successfully and the ammunition dump and dispersal area were saved from the next enemy air raid.

In this action, Corporal Sarmukh Singh displayed commendable courage and devotion to duty.

13. 523559 Lance Naik Bhim Bahadur Thapa, The Gorkha Rifles.

(Effective date of award—15th December, 1971)

On the 15th December, 1971, Lance Naik Bhim Bahadur Thapa was the officiating Section Commander of a company of a Battalion of The Gorkha Riflles which was given the task of assaulting 'Ukhia' beach from a landing craft ship in the Eastern Sector. The section disembarked in approximately four deep water and rising waves. As his section went forward towards the beach they ran into deeper water. At this critical juncture, Lance Naik Bhim Bahadur Thapa with utter disregard for his own safety leapt and rescued three of his men from drowning.

In this action, Lance Naik Bhim Bahadur Thape displayed gallantry of a high order.

14. G/54982 Driver Mechanical Equipment Shri Sewa Singh, The General Reserve Engineer Force.

(*Effective date of award—24th December,* 1971)

On 24th December, 1971, Driver Mechanical Equipment Shri Sewa Singh, of a Road Maintenance Unit The General Reserve Engineer Force was assigned the task of clearing the heavy snow which had blocked the road beyond Zojila, holding up a convoy of vehicles carrying battle casualties from the Kargil Sector to Srinagar. With complete disregard for his own safety and comfort he operated his machine day and night under sub-zero tempeature, to clear the snow and ice over a road sector of twenty seven kilometers.

Throughout, Shri Sewa Singh displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

15. 6582936 Civilian Driver Kannan, Army Service Corps.

(*Effective date of award—14th December,* 1971)

On the 14th December, 1971, Civilian Driver Kannan of the Army Service Corps was carrying ammunition in his vehicle to the artillery gun positions in the Rajasthan Sector when his vehicle was attacked by enemy aircraft. Though wounded, he continued to drive his vehicle and delivered the ammunition at its destination.

In this action, Civilian Driver Kannan showed commendable courage, presence of mind and devotion to duty.

16. *G/9898* Pioneer Mahabir Yadav, Pioneer Company, (General Reserve Engineer Force) (*Posthumous*)

(*Effective date of award—14th December,* 1971)

Pioneer Mahabir Yadav was part of a party of forty pioneers which was detailed on the 14th December, 1971 to unload duck board and ammunition from the wagons at Khokrapur Railway Station in the occupied territory in the Rajasthan Sector. At about 1740 hours, four enemy bombers flew over the area and started bombing the railway wagons. All pioneers took cover except Pioneer Mahabir Yadav who continued to unload ammunition till he was hit directly by a bomb as a result of which he died.

In this action, Pioneer Mahabir Yadav displayed commendable courage and devotion to duty.

17. G/140069 Pioneer Raj Mal, The General Reserve Engineer Force.

(*Effective date of award—11th December,* 1971)

On the 11th December, 1971, Pioneer Raj Mal of a Pioneer Company, the General Reserve Engineer Force, along with Engine Artificer Kirpa Ram was raising a heavy load at a height of 20 feet above ground level to fit on the bristowe in the Jammu Airfield area when four enemy planes attacked the airfield. Even though most of his colleagues took shelter, he, knowing that the machine would be severely damaged if the load was dropped suddenly which would jeopardise the completion of the task, remained at his post. He and Engine Artificer Kirpa Ram saved the equipment by lowering it gently and keeping it safely nearby. Though injured himself due to bomb explosion he remained calm and unperturbed, thus inspiring his comrades and infusing courage and confidence amongst them.

In this action, Pioneer Raj Mal displayed commendable courage, determination and devotion to duty of a high order.

18. G/104506 Superintendent Grade 1, Shri Harbans Singh, The General Reserve Engineer Force

(*Effective date of award—24th December,* 1971)

On 24th December 1971 Superintendent Grade 1 Shri Harbans Singh of a Road Maintenance Unit, the General Reserve Engineer Force was assigned the task of clearing the heavy snow which had blocked the road beyond Zojila holding up a convoy of vehicles carrying battle casualties from the Kargil Sector to Srinagar. He set about the job employing the few machines available to him. With utter disregard for his own safety and comfort he was continuously on the job supervising, guiding and ensuring round the clock work in this extremely difficult area Inspired by his leadership, courage and dedication his men worked day and night under sub-zero temperature and cleared the road by the 26th December, 1971. Though frostbitten, he allowed himself to be evacuated only after the convoy carrying the casualties had passed.

Throughout, Shri Harbans Singh displayed courage, determination and leadership of a high order.

19. G/4134 Engine Artificer Kirpa Ram, General Reserve Engineer Force.

(*Effective date of award—11th December,* 1971)

Engine Artificer Kirpa Ram of a Surfacing Company, General Reserve Engineer Force was engaged in laying at premix carpet over a portion of air strip at the Jammu airfield. He along with Pioneer Raj Mal was raising a heavy load at a height of 20 feet above the ground level to fit on the bristowe when four enemy planes attacked the bristowe machine Even though most of his colleagues took shelter, he, knowing that the machine would be severely damaged if the load was dropped suddenly which could jeopardise the completion of the task, remained at his post. He and Pioneer Raj Mal saved the equipment by lowering it gently and keeping it safely nearby. Though injured due to bomb explosion, he remained calm and unperturbed thus inspiring his comrades and infusing courage and confidence amongst them.

In this action, Engine Artificer Kirpa Ram displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

20. Shri Apar Singh Cheema, Assistant Station Master, Gurdaspur Railway Station.

Shri Apar Singh Cheema was an Assistant Station Master at Gurdaspur Railway Station during the India-Pakistan conflict in December, 1971. He was made responsible to co-ordinate the low level reporting in the area. Under his able guidance, 110 observation reports were sent between the period 3rd and 17th December, 1971, 90% of these reports were passed to the Control Centre within thirty seconds, twenty one of these reports were made during night and twelve out of these twenty one reports materialised into actual raids over Pathankot. It was because of his alertness and dedication that Pathankot got timely warning of enemy raids.

On 12th December 1971, Gurdaspur Railway Station was heavily bombed by five Sabre aircraft. Despite the bombing, Shri Apar Singh Cheema remained at his post and kept on relaying the information to the Control Centre.

On 13the December, 1971, at about 1410 hours, he again informed the Control Centre that four enemy aircraft had been seen passing by. Immediately two aircraft were sent for interception and thus the enemy aircraft were prevented from continuing their attack on Gurdaspur.

Throughout, Shri Apar Singh Cheema displayed courage and devotion to duty of a high order.

21. Shri Ram Prakash, Assistant Station Master, Northern Railway.

22. Shri Balwant Singh, Engine Driver, Northern Railway.

23. Shri Balbir Singh, Leading Fireman. *Northern Railway.*

Sarvashri Ram Prakash, Balwant Singh and Balbir Singh were on duty on a special Military Train carrying guns, vehicles and ammunition. When the train was passing a way side station in Kotkapura area, a wagon carrying a vehicle loaded with military stores and ammunition caught fire. The train was immediately brought to a stop. Unmindful of the intensity of the fire and danger of explosions of ammunition inside the vehicle, Sarvashri Ram Prakash Balwant Singh and Balbir Singh uncoupled the burning wagon from the rest of the train. Thereafter, driving ahead, they detached the burning wagon from the engine and thus isolated it from the rest of the train, thereby saving the special military train.

In this action Sarvashri Ram Prakash, Balwant Singh and Balbir Singh displayed presence of mind, courage and devotion to duty of a high order.

24. Shri Chatar Singh.

Shri Chatar Singh sarpanch of village 'Dhok' with his camel and 10 other camels from village operated with a Battalion of The Grenadiers throughout the operations in "Chotan" and "Barmer" areas in the Rajasthan Sector. His party carried the Battalion's essential loads over a distance of over 70 kilometers inside the enemy territory totally unmindful of their personal life and safety. The party was subjected during the operations to intense artillery, mortar and automatic fire but they continued to operate with the Battalion.

On 17th December, 1971, when the Battalion Headquarters received the heaviest shelling and rounds were falling all around the camels, not a single camel or its handler left the place. This was mainly due to Shri Chatar Singh's inspiring leadership, devotion to duty and commendable courage.

25. Shri Cheewang Namgyal, The Nubra Guards.

Shri Cheewang Namgyal was commanding a company of the Nubra Guards which formed part of the force attacking point 18402 Area 'Old Post' and 'Chawnks' village This company was a force of volunteers with fifteen days of military training. With great courage, determination and inspiring leadership, Shri Cheewang Namgyal held on to the firm bases and also provided flank protection to the attacking troops. Under his able leadership, his company rendered valuable assistance to the troops by carrying ammunition over precipitors heights. His company also showed exceptional dedication in evacuation of casualties.

Throughout, Shri Cheewang Namgyal displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

26. Shri Stenzin Tundur, The Nubra Guards.

Shri Stenzin Tundur, The Nubra Guards was a medical practitioner in village 'Aranu' in Western Sector. On the outbreak of hostilities, he gave up his practice to join this force. Throughout the period of operations, he rendered medical aid to the Ladakh Scouts and Nubra Guards under difficult and trying conditions. Shri Stenzin Tundur's services contributed in a great measure to the success of the operations in the Kargil Sector.

Throughout, Shri Stenzin Tundur showed courage and determination of a high order.

27. Shri Munshi Ram, (T.No., 207), Civilian Labourer.

(Effective date of award—5th December, 1971)

Shri Munshi Ram was a casual labourer in the ammunition point at Akhnoor in the Wesern Sector. On the 5th December, 1971, this ammunition point was subjected to heavy bombardment by the enemy. While other labourers left the place, Shri Munshi Ram stuck to his post and continued to carry out the duties assigned to him.

In this action, Shri Munshi Ram displayed courage and devotion to duty of a high order.

No 73-Pres/72—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Lieutenant Colonel PRAKASH CHANDER SAWHNEY, (IC-6796), The Bihar Regiment.

(Effective date of award—4th December, 1971)

Lieutenant Colonel Prakash Chander Sawhney who was commanding a Battalion of the Bihar Regiment was given the task of clearing an enemy strong hold in an area in the Eastern Sector. This was a well fortified position which was held in strength by the enemy Lieutenant Colonel Prakash Chander Sawhney planned the attack with great professional competence and inspired his men to capture the position inflecting heavy casualties on the enemy. Throughout this operation held led his battalion with courage and determination, despite heavy small arms and artillery fire by the enemy.

In this action, Lieutenant Colonel Prakash Chander Sawhney displayed gallantry, leadership and professional skill of a high order.

2. Lieutenant Colonel RAJ KUMAR SURI (IC-8126), The Jat Regiment.

Lieutenant Colonel Raj Kumar Suri was in command of a Battalion of the Jat Regiment which was occupying a position in an area in the Fazilka Sector The Battalion position was subjected to intense artillery and mortar fire from the 3rd to the 17th December, 1971 Though wounded due to enemy shelling on the 9th December, 1971 he continued to direct his troops and inspired them to hold on to their positions and the Battalion repulsed two determined enemy attacks.

Throughout, Lieutenant Colonel Raj Kumar Suri displayed gallantry and leadership of a high order.

3 Major ANANTANARAYANAN KRISHNASWAMY (IC-11114), The Jammu and Kashmir Rifles.

(Effective date of award—17th December, 1971

Major Anantanarayanan Krishnaswamy was commanding a Company of a Battalion of the Jammu and Kashmir Rifles which had been ordered to establish a road block in an area in the Eastern Sector. After the road block had been established on the 16th December, 1971, an enemy column of approximately 500 strength supported by tanks, was seen approaching the Battalion position. The enemy engaged our forward companies one of which was commanded by Major Anantanarayanan Krishnaswamy. Major Krishnaswamy moved from trench to trench and encouraged his men to hold on to the position. In the meantime, the enemy was seen forming up for an attack Major Krishnaswamy got hold of two abandoned ammunition vehicles lying on the road side and set them on fire He also improvised a megaphone and asked the enemy to surrender. By pursuasion and threats of retaliation, the enemy started giving themselves up in batches till they all surrendered.

In this action, Major Anantanarayanan Krishnaswamy displayed gallantry and leadership of a high order.

4 Major RAVENDER DATT LAW (IC-11655), Cavalry.

(Effective date of award—6th December, 1971)

Major Ravender Datt Law was commanding an independent armoured squadron, which was given the task of containing the enemy thrust on Laungewala in the Rajasthan Sector. He deployed his tanks effectively to stem the enemy advance. During the battle from the 6th December to the 10th December, 1971, Major Ravender Datt Law inflicted heavy casualties on the enemy armour and provided valuable support to the Infantry.

Throughout, Major Ravender Datt Law displayed gallantry, leadership and professional skill of a high order.

5 Major PRADEEP KUMAR SHARMA (IC-13172), The Regiment of Artillery

(Effective date of award—4th December, 1971)

Major Pradeep Kumar Sharma was a Battery Commander with a battalion of the Gorkha Rifles during an attack on the Dera Baba Nanak Bridge on the night of the 3rd/4th December 1971. A change in the attack plan involved complete revision of the artillery fire plan and Major Pradeep Kumar Sharma was able to accomplish this with great speed and precision. During the attack he noticed an enemy Medium Machine Gun which was inflicting casualties on our troops. With complete disregard to his safety, he charged the enemy bunker, killed the crew, and silenced the machine gun.

In this action, Major Pradeep Kumar Sharma displayed gallantry, leadership and professional skill of a high order.

6 IC 38368 Risaldar BRAHMA NAND, Cavalry.

(Effective date of award—5th December, 1971)

On 5th December 1971, Risaldar Brahma Nand, commanding a troop of a squadron of Cavalry, was guarding Mandiala crossing in the Chhamb Sector. His troop was heavily attacked by enemy armour and infantry, but he held on to his position foiling all attempts of the enemy to capture the crossing before our own troops had crossed over safely. In the encounter, he destroyed five enemy tanks.

In this action, Risaldar Brahma Nand displayed commendable initiative, courage and determination of a high order

7. IC-28067 Subedar HARI SINGH, The Mahar Regiment.

(Effective date of award—9th December, 1971)

A Battalion of the Mahar Regiment was ordered to lay a mine-field around Fattiwala post in the Western Sector A patrol was detailed to provide protection to the Engineer Mine Laying Party When the mine laying started the enemy brought down heavy artillery fire resulting in the death of a Sepoy and splinter wounds to four other ranks The wounded other ranks were brought back to safety by the patrol; but efforts to retrieve the body of the dead soldier failed due to heavy and effective fire from enemy machine guns. Subedar Hari Singh was ordered to take another patrol to bring back the dead body. As this patrol approached the area, they came under intense machine gun fire and shelling from the enemy. Subedar Hari Singh ordered his party to take

cover while he himself, crawled forward and recovered the dead body.

In this action, Subedar Hari Singh displayed courage and determination of a high order.

8. No. 1027089 Dafadar PRITHI SINGH
Cavalry.

(*Effective date of award—5th December,* 1971)

On the night of 4th/5th December, 1971, the enemy intruded into our territory and occupied Nawan Pind Border outpost in the Sialkot Sector with one company supported by Medium Machine Guns. On the 5th December, 1971, two platoons of a Battalion of the Garhwal Rifles supported with tanks were ordered to re-capture the post. During the assault, the infantry was held up by heavy and accurate fire from enemy automatic weapons. Dafadar Prithi Singh was ordered to move forward with his tanks to destroy the enemy. With complete disregard to his personal safety and under heavy shelling and anti-tank fire, he manoeuvred his tank skilfully, closed in with the enemy and destroyed the post resulting in its capture.

In this action, Dafadar Prithi Singh displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

9. JC-41312 Subedar LALBAHADUR PUN,
The Gorkha Rifles.

(*Effective date of award—6th December,* 1971)

Subedar Lalbahadur Pun was Second-in-Command of a rifle company of a battalion of the Gorkha Rifles. The company was ordered to capture an enemy position in an area in the Eastern Sector. The final 75 metres to the objective were without any cover. Subedar Lalbahadur Pun volunteered to close up the flank of the enemy bunkers and threw smoke candles to lay a smoke screen. After he had thrown the smoke candles, the direction of wind suddenly changed thereby lessening the effect of the smoke. Realising the importance of effective smoke, he crawled to a more advantageous location and threw another smoke candle. The resulting smoke screen helped in the capture of the enemy position.

In this action, Subedar Lalbahadur Pun displayed commendable courage and initiative.

10. 13211154 Naib Subedar DORAI SWAMY,
The Corps of Engineers.

(*Effective date of award—11th December,* 1971)

On the night of the 11th December, 1971, movement of tanks across the mine-field in an area in the Shakargarh Sector was disrupted due to a trawl getting bogged down in the Nallah running across the mine-field. The enemy counter attack was imminent and it was, therefore, necessary to open the mine-lane immediately. Naib Subedar Dorai Swamy at once took over this task. Undeterred by intense and accurate enemy fire on his party, he moved from man to man giving instructions to them. Ultimately, the traffic was restored, enabling the forward movement of tanks and other anti-tank elements.

In this action, Naib Subedar Dorai Swamy displayed commendable courage, initiative and leadership.

11. JC-42500 Naib Subedar GURCHARAN SINGH,
The Sikh Regiment.

Naib Subedar Gurcharan Singh was a Platoon Commander in a Battalion of the Sikh Regiment occupying a defended area in the Eastern Sector. Under cover of darkness, two enemy platoons supported by medium machine guns established themselves between the two company defended localities and brought down heavy and accurate fire on his company. Naib Subedar Gurcharan Singh who was ordered to clear the enemy occupied positions led his platoon in a lightning attack but was pinned down short of the objective by intense and heavy enemy fire. He skilfully moved one of his light machine gun to an advantageous position for neutralising the enemy's weapons. Crawling from man to man, he inspired and exhorted his troops to get up and assault. Undeterred by the enemy fire and with complete disregard for his own safety, he got up and led the assault. The enemy unnerved by this determined attack hastily withdrew.

In this action, Naib Subedar Gurcharan Singh displayed gallantry, leadership and determination of a high order.

12. No. 1169089 Havildar (GD) THAPASI CHETTIAR RAMASWAMY CHETTIAR, Air Defence Regiment.

(*Effective date of award—5th December,* 1971)

Havildar (GD) Thapasi Chettiar Ramaswamy Chettiar was commanding a detachment of an Air Defence Battery guarding Amritsar airfield. On the 5th December, 1971, the enemy fighter aircraft raided Amritsar airfield on a number of occasions. Havildar Ramaswamy Chettiar directed the fire of his gun in an accurate manner and shot down an enemy star fighter and was instrumental in the capture of an enemy pilot.

Throughout, Havildar (GD) Thapasi Chettiar Ramaswamy Chettiar displayed courage and professional skill of a high order.

13. 3140746 Havildar HEM CHANDER,
The Jat Regiment.

(*Effective date of award—4th December,* 1971)

On the 4th December, 1971, a Battalion of the Jat Regiment was ordered to clear an enemy post in the Rajasthan Sector. This post was held in strength by the enemy. The attack was held up due to heavy and accurate light machine gun fire from the enemy post. Havildar Hem Chander, with utter disregard to his personal safety, crawled forward and destroyed the enemy light machine gun bunker with a grenade. His action contributed to the success of the attack.

In this action, Havildar Hem Chander exhibited commendable courage and determination.

14. 2743482 Havildar KRISHNA GURAO,
The Maratha Light Infantry.

(*Effective date of award—11th December,* 1971)

Havildar Krishna Gurao was the commander of a Medium Machine Gun Section of a Battalion of the Maratha Light Infantry which had established a road block in an area in the Eastern sector. The enemy attacked this position in strength on the night of 10th/11th December, 1971. Havildar Krishna Gurao brought down heavy and accurate fire and thus broke up the enemy attack. Later, the enemy regrouped and attacked from a direction not covered by the Medium Machine Gun. Havildar Krishna Gurao, with complete disregard to safety, redeployed his gun in the open and broke up the second assault of the enemy. In this action, 77 soldiers of the enemy were killed.

Throughout this action, Havildar Krishna Gurao displayed gallantry, initiative and devotion to duty of a high order.

15. 5434807 Havildar DALBAHADUR GURUNG,
The Gorkha Rifles.

(*Effective date of award—6th December,* 1971)

Havildar Dalbahadur Gurung was platoon Havildar of a platoon of a Battalion of the Gorkha Rifles which was ordered to capture enemy 3 inch mortars and an anti tank gun. Havildar Dalbahadur Gurung with a section was assigned the task of capturing the anti-tank gun, whereas the rest of the platoon went for the 3 inch mortars. The approach to the anti-tank gun was covered by a light machine gun. Inspite of heavy enemy fire, he led his section, and not only captured the anti-tank gun, but also silenced the light machine gun by crawling upto it and killing the enemy.

In this action, Havildar Dalbahadur Gurung displayed gallantry and leadership of a high order.

16. No. 2440669 Havildar LEKH RAJ,
The Punjab Regiment.

Havildar Lekh Raj of the Punjab Regiment was commanding a Recoilless Gun Detachment, when his battalion was attacked in strength by enemy infantry supported by a squadron of tanks in the Eastern Sector. Under cover of the morning mist, the enemy tanks firing their weapons had reached within 20 yards of the forward defended localities. Seeing the danger to which our troops were exposed, Havildar Lekh Raj manoeuvred his recoilless gun to hit the enemy tanks from the flanks. Undeterred by the heavy machine gun fire directed on his detachment by the enemy, he hit an enemy tank with the first shot and destroyed it. When he was about to engage the second tank, he was hit by the medium machine gun fire from an enemy tank and was seriously wounded.

In this action, Havildar Lakh Raj displayed cool courage and commendable initiative and determination.

17. 3140688 Havildar RAGHBIR SINGH
The Parachute Regiment.
(*Effective date of award*—16*th December*, 1971)

On the 16th December, 1971 Havildar Raghbir Singh, was part of a platoon operating behind an enemy post in an area in the Ferozepore Sector. At midnight, the enemy rushed one platoon and two Medium Machine Guns to reinforce his post, which was being attacked by our troops. The enemy platoon attacked the position of Havildar Raghbir Singh's section supported by machine guns which were firing from a close range. With utter disregard for his safety, he charged the medium machine gun, bayoneted a crew, captured one machine gun and took an enemy soldier as prisoner. The other machine gun detachment fled in confusion.

In this action, Havildar Raghbir Singh displayed gallantry and determination of a high order.

18. No. 9205717 Havildar KHAZAN SINGH SANGWAN,
The Brigade of the Guards.
(*Effective date of award*—6*th December*, 1971)

Havildar Khazan Singh Sangwan was commanding a section of a company of a Battalion of the Brigade of the Guards, deployed in support of a Battalion of the Sikh Regiment, holding Phagla Ridge in the Chhamb Sector. On the 6th December, 1971 the enemy launched a massive attack supported by armour on the feature. He carried out commando raids on the enemy armour and destroyed two enemy tanks with anti-tank missiles from a close range of 600 metres. His bold and courageous action was instrumental in repulsing the enemy attack.

In this action, Havildar Khazan Singh Sangwan displayed courage and determination of a high order.

19. No. 4141549 Lance Havildar KISHAN SINGH,
The Kumaon Regiment.

Lance Havildar Kishan Singh was with a company of a Battalion of the Kumaon Regiment during an attack on a heavily fortified enemy locality in the Eastern Sector. During the assault, one Heavy Machine Gun of the enemy opened up accurate and effective fire on his company. Lance Havildar Kishan Singh immediately rushed forward alone towards the machine gun bunker and lobbed a grenade into the bunker. Having silenced the gun, he pressed his single handed attack, shot the enemy soldier and snatched the machine gun.

His cool courage, initiative and complete disregard for his personal safety was instrumental in the capture of the objective.

20. 5833405 Lance Havildar JOGINDER SINGH SEN,
The Gorkha Rifles.
(*Effective date of award*—15*th December*, 1971)

Lance Havildar Joginder Singh Sen was a Medium Machine Gun Section Commander affiliated with a Company of a battalion of the Gorkha Rifles during an attack on enemy positions in an area in the Shakargarh sector. After the objective had been capture the enemy launched a counter attack in strength and succeeded in surrounding the Medium Machine Gun. Three of the enemy soldiers charged the machine gun post and tried to snatch it. Lance Havildar Joginder Singh Sen, with utter disregard to his safety, jumped out of his trench and killed the three enemy soldiers with his Khukri. This action not only saved the Medium Machine Gun, but also helped in repulsing the counter attack.

In this action, Lance Havildar Joginder Singh Sen displayed gallantry of a high order.

21. 92306050 Naik FATEH MOHAMED,
Ladakh Scouts.
(*Effective date of award*—10*th December*, 1971)

Naik Fateh Mohamed was in command of the leading section of a company of Ladakh Scouts during the attack on an enemy position in the Western Sector. The assault of his section was held up, when two enemy light machine guns opened intense fire from a bunker. Naik Fateh Mohamed immediately deployed his section to return the fire and with complete disregard to his safety, crawled upto the bunker and lobbed two grenades inside the bunker thereby silencing the light machine guns and killing all the occupants.

In this action, Naik Fateh Mohamed displayed gallantry and leadership of a high order.

22. 2552653 Naik JAJULA SANYASI,
The Madras Regiment.
(*Effective date of award*—17*th December*, 1971)

Naik Jajula Sanyasi was the Commander of a recoilless gun detachment of a Battalion of the Madras Regiment, in the Shakargarh sector. On the 17th December, 1971, the advance of our troops was held up due to Medium Machine Gun Fire from two enemy bunkers. Naik Jajula Sanyasi with complete disregard to his safety, manoeuvred his gun to a flank and destroyed both the Medium Machine Gun bunkers.

In this action, Naik Jajula Sanyasi displayed gallantry, initiative and devotion to duty of a high order.

23. 2651351 Lance Naik RAGHUNATH SINGH,
The Grenadiers.
(*Effective date of award*—5*th December*, 1971)

Lance Naik Raghunath Singh was in the Medium Machine Gun Detachment with a company of a Battalion of the Grenadiers during their attack on an enemy position in the Rajasthan Sector, on the night of the 5th December, 1971. Inspite of heavy enemy shelling and machine gun fire, he supported the attack in a daring and effective manner. While lifting a red hot barrel, he burnt his hands, but undeterred, he kept up a heavy volume of fire and thus contributed substantially to the success of the attack.

In this action, Lance Naik Raghunath Singh displayed gallantry, initiative and determination of a high order.

24. 2660579 Grenadier MANGAL SINGH,
The Grenadiers.
(*Effective date of award*—6*th December*, 1971)

Grenadier Mangal Singh was part of the assaulting troops during an attack on an enemy position in the Rajasthan Sector. The attack was held up due to heavy and accurate cross fire from enemy machine guns. Grenadier Mangal Singh, with complete disregard to his personal safety, took his light machine gun to a forward position and in the process was seriously wounded. Undeterred, he continued to crawl forward and engaged the enemy with his light machine gun till he became unconscious due to burst wounds.

In this action Grenadier Mangal Singh displayed gallantry, initiative and determination of a high order.

25 4443902 Sepoy SAWARAN SINGH,
The Sikh Light Infantry.
(*Effective date of award*—12*th December*, 1971)

Sepoy Sawaran Singh was part of a company of a Battalion of the Sikh Light Infantry during their attack on an enemy position in the Western sector. The company assault was held up due to heavy and accurate medium machine gun fire from an enemy bunker located on a flank. Sepoy Sawaran Singh with complete disregard to his safety, crawled upto the medium machine gun post and silenced it with a grenade. Immediately after this, he was charged by an enemy soldier. Sepoy Sawaran Sinkh killed the enemy with his bayonet.

In this action, Sepoy Sawaran Singh displayed gallantry of a high order.

No. 74-*Pres.*/72.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Captain KUMARA MADHAVA VELAPPAN NAIR (X), I.N.

Captain Kumara Madhava Velappan Nair was the Commander of the Task Force which attacked Karachi on the night of 8th/9th December, 1971. In the face of imminent air attack and in the presence of enemy shore gun batteries, he led his Task Force against the enemy forces off Karachi. Despite the fact that his force was detected and reported to Karachi by a picket vessel, he led his ship undeterred into action in the area off Karachi, which resulted in the sinking and damaging of many Pakistani Naval Units. In this action, Captain Kumara Madhava Velappan Nair displayed gallantry and leadership of a high order.

2. Commander BENOY ROY CHOWDHURY (S) I.N.

Commander Benoy Roy Chowdhury was the Engineer Officer of the Indian Naval Ship Vikrant, which was called upon to carry out patrolling of waters off Bangladesh during the period of hostilities against Pakistan in December, 1971. This task included operations of fighter/bombers and anti-submarine aircraft from Indian Naval Ship Vikrant for attacks on enemy ships and patrol duties. Commander Benoy Roy Chowdhury, by his ceaseless efforts made every equipment available for these attacks. It was as a result of his efforts that the ship could not be attacked by enemy submarines whilst Indian Naval Aircraft carried out continuous attacks on every held ports.

Throughout the operation Commander Benoy Roy Chowdhury displayed commendable courage and professional skill.

3. Commander ROY JOSEPH MILLAN (X) I.N.

Commander Roy Joseph Millan was the Commanding Officer of an Indian Naval Submarine, which patrolled the waters of Bangladesh during the recent operations against Pakistan. Despite the fact that the patrol duties of his ship were such that it was under constant surveillance by enemy air and surface forces, he continued to carry out his hazardous patrol and thereby constituted a constant under water threat to the enemy. His probes into the near approaches of enemy held ports in Bangladesh, which required a great skill in navigation, obtained for the Indian Navy very vital intelligence.

Throughout the operations, Commander Roy Joseph Millan, displayed commendable courage and leadership.

4. Lieutenant Commander (Special duty Bosun) INDER SINGH, I.N.

Lieutenant Commander Inder Singh was the Commanding Officer of a Naval Unit of the Eastern Fleet. After the outbreak of hostilities with Pakistan in December, 1971, he was ordered to patrol the approaches to Vishakhapatnam against enemy submarine attack. On the night of 3rd/4th December, 1971, he attacked a Pakistani submarine which was trying to enter the approaches to Vishakhapatnam. His attack was successful and the Pakistani submarine later identified as Ghazi, was sunk. Later in the operations, he was responsible for the capture of a Pakistani ship.

Throughout the operation Lieutenant Commander Inder Singh displayed commendable courage and devotion to duty.

5. Lieutenant Commander ASHWANI KUMAR MEHRA (X) I.N.

Lieutenant Commander Ashwani Kumar Mehra was the pilot of the Indian Naval Aircraft, which carried out continued strikes on enemy held ports in Bangladesh during the December, 1971 operations. He took part in nine strike missions against the enemy defended ports of Chittagong, Mongla and Khulna. Six of these successful strikes were led by this officer. Despite heavy anti-aircraft gun fire against the aircraft, he continued to lead his missions on to its targets, thereby inflicting heavy damage to port installations and ships in these harbours. On the 13th December, 1971, he attacked a heavily defended enemy ship, which was carrying troops. As a result of his attack, the enemy ship burst into flames and later sank in Karuna Phuli river.

Throughout the operations Lieutenant Commander Ashwani Kumar Mehra displayed gallantry, leadership and professional skill of a high order.

6. MEGH NATH SANGAL, Master Chief Electrical Artificer (Power), Second Class, (No. 50896).

Megh Nath Sangal, Master Chief Electrical Artificer (Power) Second Class, was a member of the crew of an Indian Naval Ship which attacked Karachi on the night of the 4th/5th December, 1971. In the face of imminent air attack, and in the presence of enemy shore gun batteries, he led his men into the attack. His brave and inspiring leadership to the men working under him enabled the Naval Units to deliver a severe blow to the Pakistani Surface Fleet.

In this action, Megh Nath Sangal, Master hief Electrical Artificer (Power) Second Class, displayed Commendable courage and leadership.

7. MUGHILISSERY OUSEPH THOMACHAN, Petty Officer (No. 46337).

Mughilissery Ouseph Thomachan, Petty Officer was a member of the crew of an Indian Naval Ship, which attacked Karachi on the night of the 4th/5th December, 1971. In the face of imminent air attack, and in the presence of enemy shore gun batteries, Mughilissery Ouseph Thomachan, Petty Officer led his men into the attack with utmost courage. His brave and inspiring leadership to the men working under him enabled the Naval Units to deliver a severe blow to the Pakistani surface fleet.

In this action, Mughilissery Ouseph Thomachan, Petty Officer displayed commendable courage and leadership.

8. RAVINDRA NATH SHARMA, Acting Petty Officer (Telegraphist) (No. 88301).

Ravindra Nath Sharma, Petty Officer (Telegraphist) was a member of the crew of an Indian Naval Ship which attacked Karachi on the night of the 4th/5th December, 1971. In the face of imminent air attack, and in the presence of enemy shore gun batteries, Ravindra Nath Sharma led his men into the attack with utmost courage. His brave and inspiring leadership to the men working under him enabled the Naval Units to deliver a severe blow to the Pakistani Surface Fleet.

In this action, Ravindra Nath Sharma, Petty Officer (Telegraphist) displayed commendable courage and leadership.

9. KAPALLI SAI RAJU, Leading Electrical Machanic (Power) (No. 89148).

Kapalli Sai Raju was a member of a Naval Unit which attached the port of Khulna during the operations against Pakistani occupation Forces in Bangladesh. On the 10th December 1971, while this force was involved in action against enemy air and shore forces in the port of Khulna, Kapalli Sai Raju, leading Electrical Machanic (Power) was in the Ship, which came under heavy air attack. During an engagement, some of the crew were landed in the port of Khulna to capture the port. Despite the fact the part of his force was seriously injured and was under very heavy machine-gun attack by the enemy ground forces, he continued to lead his men into hand-to-hand fighting, which finally resulted in the capture of the port of Khulna.

In this action, Kapalli Sai Raju, leading Electrical Machanic (Power), displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

10. LAKSHMAN KUMAR CHAKARVARTY, Mechanician Third Class, (No. 48830).

Lakshman Kumar Chakarvarty, Mechanician Third Class was a member of the crew of an Indian Naval Ship which attacked Karachi on the night of the 4th/5th December, 1971. In the face of imminent air attack, and in the presence of enemy shore gun batteries, Lakshman Kumar Chakarvarty Mechanician Third Class led his men into the attack with utmost courage. His brave and inspiring leadership to the men working under him enabled the Naval Units to deliver a severe blow to the Pakistani Surface Fleet.

In this action, Lakshman Kumar Chakarvarty, Mechanician Third Class displayed commendable courage and leadership.

No. 75-Pres./72. -The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Group Captain ROBERT ARNOLD WEIR (3881). Flying (Pilot).

During the India-Pakistan conflict in December, 1971, Group Captain Robert Arnold Weir was in command of an operational Squadron in the Western Sector. He carried out a large number of operational missions in Poonch area flying at heights of 30-50 feet above ground level fully knowing that the aircraft was vulnerable to even small arms fire and also that escape by parachute or force landing in the event of damage to aircraft was not possible. Between the 8th and 11th December, 1971, he engaged and destroyed a large number of enemy gun positions in the face of heavy ground opposition. In addition, he carried out numerous other missions in support of our ground forces inflicting heavy damage on enemy positions and also undertook recce missions for the location of infiltrators in the area.

Throughout the operations, Group captain Robert Arnold Weir displayed professional skill and leadership of a high order.

2. Wing Commander KESHEV CHANDRA AGGARWAL (4434).

Flying (Pilot).

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Wing Comander Keshev Chandra Aggarwal was in Command of an operational Fighter Squadron. He led a number of operational missions against enemy armour and troop concentrations in support of our ground forces. Though faced with heavy ground fire and air opposition, he pressed home his attacks and destroyed numerous vehicles and a petrol dump. On the 4th December, 1971, and again on 8th December, 1971, he undertook reconnaissance sorties in Chor-Doronara areas and successfully located two trains carrying ammunition and destroyed them. On the 6th December, 1971, he led a formation and destroyed a railway engine and fifteen wagons containing ammunition in Chor-Doronare-Hasisar area. Again, on the 9th December, 1971, he destroyed fifteen wagons and damaged approximately forty wagons at Mir-Purkhas, thereby depriving the enemy of vital supplies.

Throughout the operations, Wing Commander Keshev Chandra Aggarwal displayed gallantry, leadership and flying skill of a high order.

3. Wing Commander KRISHAN KUMAR BADHWAR (4669).

Flying (Pilot).

During the conflict with Pakistan in December, 1971, Wing Commander Krishan Kumar Badhwar was in command of a Bomber Squadron in the Western Sector. During the period, 3rd December to 14th December, 1971, he undertook various missions against enemy air bases and port installations which were heavily defended by Missile carrying fighters and anti-aircraft guns. Disregarding personal safety and with great courage and skill he attacked air bases at Masoor, Drig Road and Port Installations at Karachi. He was thus instrumental in depleting the enemy's oil reserves and crippling his port facilities at Karachi.

Throughout the operation, Wing Commander Krishan Kumar Badhwar displayed gallantry, leadership and professional skill of a high order.

4. Wing Commander NARINDER CHATRATH (3959). Flying (Pilot).

On the 4th December, 1971, Wing Commander Narinder Chatrath led an attack on Kurmitola, the heavily defended airbase near Dacca. Near the target, the formation was intercepted by Pakistani Sabres. As the formation broke out to deal with the attacking Sabres, Wing Commander Narinder Chatrath engaged a Sabre and after some dog fight the Sabre disengaged and started returning to base. Although the weather was bad and the fuel was running low, the officer chased the Sabre deep into enemy territory, engaged it in another dog fight and shot it down. The aircraft hit the ground and blew up in flames.

In this action Wing Commander Narinder Chatrath displayed gallantry and flying skill of a high order.

5. Wing Commander DONALD MELVYN CONQUEST (4692).

Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Wing Commander Donald Melvyn Conquest was commanding an Operational Training Unit. On the 4th December, 1971, he led a formation which attacked and set fire to Karachi Port bulk oil installation. On 5th December, he carried out an attack on Mauripur airfield and destroyed six enemy aircraft on ground and caused extensive damage to others. Again, on the 6th December, he attacked and destroyed the Ware houses at Drigh Road airfield. In addition, he carried out a number of lose air support and interdiction missions. He was instrumental in neutralising heavy enemy armoured thrust in the Langewala section and in setting on fire numerous goods trains. On one occasion, he was wounded by enemy fire. Though profusely bleeding, he successfully brought his formation back to base.

Throughout the operations, Wing Commander Donald Melvyn Conquest displayed gallantry, leadership and professional skill of a high order

6 Wing Commander RAVINDAR NATH DOGRA (4725).

Flying (Pilot).

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Wing Commander Ravindar Nath Dogra was in command of a Fighter Bomber Squadron. He flew a number of missions deep into enemy territory which were heavily defended and often came back with a number of bullet holes in his aircraft. His fearlessness and personal example inspired confidence amongst the pilots of his Squadron who volunteered for hazardous missions and completed them successfully.

Throughout the operations, Wing Commander Ravindar Nath Dogra displayed gallantry, leadership and flying skill of a high order.

7 Wing Commander ARUN KANTI MUKHERJEE, VM (4416)

Flying (Pilot).

During the recent hostilities with Pakistan, Wing Commander Arun Kanti Mukherjee was commanding a Tactical Flying Unit. He undertook a number of operational sorties and attacked heavily defended enemy air bases. Due to his sound planning, all the tasks allotted to his unit were accomplished in an exemplary manner. His unit carried out deep penetration sorties at night in the face of heavy enemy defences. The unit did valuable work in keeping the enemy force harassed at night.

Throughout the operations, Wing Commander Arun Kanti Mukherjee displayed gallantry, leadership and professional skill of a high order.

8. Wing Commander RAMANATHAN SUNDARESAN (4574) Flying (Pilot)

During the conflict with Pakistan in December, 1971, Wing Commander Ramanathan Sundaresan was in a Fighter Bomber Squadron in the Eastern Sector. As the leader of a formation attacking Tezgaon airfield near Dacca, he was intercepted by a formation of four enemy aircraft. He engaged the enemy inspite of heavy ground fire and shot down one of the four Sabres.

In this action Wing Commander Ramanathan Sundaresan displayed gallantry and professional skill of a high order.

9 Wing Commander MURARI LAL TREHON (4577),

Flying (Pilot).

During the conflict with Pakistan in December, 1971, Wing Commander Murari Lal Trehon was in command of a Fighter Bomber Squadron in the Western Sector. He flew several operational missions and destroyed a number of enemy tanks, bunkers and gun positions in the face of heavy ground fire. His squadron also carried out a large number of fighter recce sorties deep into enemy territory which were of great value in planning and executing subsequent operations.

Throughout the operations, Wing Commander Murari Lal Trehon displayed gallantry, leadership and professional skill of a high order.

10. Squadron Leader RAMESH CHANDER KOHLI (4891).

Flying (Pilot).

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Ramesh Chander Kohli was attached to an operational Bomber Squadron. He successfully flew a number of missions deep into enemy territory which involved penetration into enemy radar coverage, against well defended targets. He was a source of inspiration to his colleagues and junior pilots in the Unit.

Throughout the operations, Squadron Leader Ramesh Chander Kohli displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

11. Squadron Leader ARYA BHUSHAN LAMBA (4713). Flying (Pilot)

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Arya Bhushan Lamba was the Flight Commander of a Fighter Bomber Squadron. On the 4th December, 1971, he led sorties on Risalwala and Chander airfields blasting the dispersals. On the 5th December, 1971, he destroyed a tank and a tank transporter. On the 6th December, 1971, he destroyed enemy positions near Narowal. On the 7th December, 1971, he struck twice; once on a troop concentration and later on guns and tank concentration.

On the 9th December 1971, he blew up a bridge over Ichogil canal by maintaining close liaison with Technical Staff, he ensured a high rate of service-ability of aircraft in the squadron.

Throughout the operation, Squadron Leader Arya Bhushan Lamba displayed gallantry, leadership and professional skill of a high order.

12. Squadron Leader FAROKH JEHANGIR MEHTA (4906).

Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Farokh Jehangir Mehta, as a Senior Pilot in one of the Fighter Bomber Squadrons, flew twenty-two operational missions consisting of close air support in Kutch and Barmer sector and made successful strikes at Mirpur and Badin. He flew five counter air missions against Badin, Talahar and Masroor airfields. On the 13th December 1971, while he was on a strike mission to Talahar airfield, he was engaged by a Sabre. In the ensuing air battle, he shot down the enemy aircraft. On another occasion, while he was on a close air support mission in Naya Chor area, he was attacked by a Sabre. He manoeuvered his aircraft with great skill and secured a hit at the enemy aircraft which was seen crashing.

Throughout, Squadron Leader Farokh Jehangir Mehta displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

No. 76-*Pres.*/72.—The President is pleased to approve the award of the *BAR* TO VIR CHAKRA, for gallantry in the recent operations against Pakistan to:—

1. Wing Commander BHUPENDRA KUMAR BISHNOI, Vr.C (4594).

Flying (Pilot).

During the India-Pakistan conflict in December, 1971, Wing Commander Bhupendra Kumar Bishnoi was in command of an operational Fighter Squadron in the Eastern Sector. He led the first two Bombing missions over Tezgaon airfield and undeterred by heavy ground fire, he hit Tezgaon Runway and also destroyed a large transport aircraft on the ground. During one of these Bombing missions, his aircraft was hit by a heavy shell and sustained severe damage. Notwithstanding this, he pressed home the attack. On the 14th December, 1971, he raided military targets in Dacca inspite of intense ground fire. His attacks on the Government House at Dacca and other targets were carried out with accuracy. During the missions in support of Indian Army, he led 10 sorties against heavily defended enemy positions in the Comilla Sector and destroyed enemy Bunkers and strongholds.

Throughout the operations, Wing Commander Bhupendra Kumar Bishnoi displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

2. Squadron Leader VINOD KUMAR BHATIA, Vr. C. (6497).

Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Vinod Kumar Bhatia was a flight commander of a Fighter Bomber Squadron. He flew a large number of missions deep inside enemy territory and brought back useful information. He also led three deep-penetration counter air strikes against enemy airfields which were heavily defended by Anti Aircraft Guns. On his subsequent missions, notwithstanding heavy ground fire and patrolling by enemy aircraft, he pressed home his attacks. He was responsible for the destruction of three enemy aircraft and numerous other military installations on the ground. He also carried out interdiction missions disrupting enemy lines of communication. In addition, he provided close air support to our ground forces.

Throughout the operations, Squadron Leader Vinod Kumar Bhatia displayed gallantry, determination and professional skill of a high order.

3. Flight Lieutenant VINOD KUMAR NEB, Vr. C. (8189).

Flying (Pilot).

On the 4th December, 1971, Flight Lieutenant Vinod Kumar Neb was No. 3 of a formation of four aircraft, on a mission to strike the airfield of Kurmitola in the Dacca complex. While the formation was near the target, it was intercepted by three Sabres. Flight Lieutenant Vinod Kumar Neb engaged an enemy aircraft and shot it down. Thereafter he saw another Sabre and although he was low on fuel, he started manoeuvering his aircraft for advantage position to engage the enemy aircraft. In the meantime, the fire warning light on the aircraft came on and his leader also ordered him to disengage in view of the limited fuel. He brought the aircraft safely to base inspite of engine trouble. Subsequently, he operated from the Detachment of the Squadron away from the base and flew a number of ground strike missions in the Comilla Sector. Along with his leader, he was responsible for destroying the enemy bunkers and gun positions on the hillocks overlooking our troops in Barkal which enabled its capture by our troops.

Throughout Flight Lieutenant Vinod Kumar Neb .. and professional skill of a high order.

No. 77-*Pres.*/72.—The Presient is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Major RAMESH KUMAR DADKAR (IC-14290), The Maratha Light Infantry. (*Posthumous*)

Major Ramesh Kumar Dadkar war commanding a Company of a Battalion of the Maratha Light Infantry which was deployed in an area in the Eastern Sector during the recent operations against Pakistan. When a Junior Commissioned Officed was injured due to a mine blast, Major Ramesh Kumar Dadkar, along with a few stretcher bearers immediately rushed to his help notwithstanding intense enemy fire. When the Junior Commissioned Officer was being evacuated, one of the stretcher bearers was fatally wounded due to enemy fire. Undeterred, he continued his attempts to evacuate the Junior Commissioned Officer from the minefield. In this process, an enemy machine gun burst hit him as a result of which he died.

In this action, Major Ramesh Kumar Dadkar displayed commendable courage and determination.

2. Major HARDEV SINGH GREWAL (JC-21289), The Jat Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—7th December* 1971)

On the night of the 7th December, 1971, Major Hardev Singh Grewal was commanding a company of a Battalion of The Jat Regiment deployed in a defensive position in the Chhamb Sector. The enemy attacked this position thrice, supported by heavy artillery fire. He brought accurate artillery fire on the enemy and inspired his men to repulse attacks. In his third desperate bid, the enemy managed to get a foothold on one of his localities. He immediately launched a counter attack and succeeded in restoring the situation, inflicting heavy casualties on the enemy. On the night of the 9th December 1971, the enemy again launched a number of concerted infantry and armour assaults. Moving in the open from man to man wih utter disregard to his safety, he encouraged his men and the attacks were repulsed with heavy casualties to the enemy. On the 10th December, 1971, though wounded in the thigh, he continued to direct the operation. He was again hit by an enemy machine gun burst as a result of which he died.

In this action, Major Hardev Singh Grewal displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

3. Major HARPAL SINGH GREWAL (IC-18061), The Bihar Regiment. (*Posthumous*)

Major Harpal Singh Grewal was the Officer Commanding of a Company of a Battalion of the Bihar Regiment and was given the task of liquidating an enemy post in the Eastern Sector. This post was held in strength, was well fortified and supported by Medium Machine Guns. During the assault, his Company came under very heavy small arms and machine gun fire; but this officer by his personal example inspired his men to press home the attack. While leading the attack, Major Grewal was wounded by a burst from a machine gun. He, however, continued to lead the charge and liquidated the post. After the capture of the objective he succumbed to his injuries.

In this action, Major Harpal Singh Grewal displayed gallantry and leadership of a high order.

4 Major LIL BAHADUR GURUNG (IC-14532),
The Mahar Regiment (*Posthumous*)

Major Lil Bahadur Gurung was the Officer Commanding of a Company of a Battalion of the Mahar Regiment during an assault on an enemy post in the Eastern Sector. The enemy was occupying a well fortified position supported by Medium Machine Guns. During the assault, his Company came under intense and accurate fire from enemy Medium Machine Guns. Undeterred by the heavy volume of fire, Major Gurung led a determined attack and by his personal example, inspired his troops to maintain the momentum of the attack. Though severely wounded in the leg, he crawled up to an enemy Medium Machine Gun bunker and in the process received another burst in his leg. Though seriously wounded, he lobbed a grenade into the bunker neutralizing the Medium Machine Gun thus facilitating the caputre of the objective by his Company. He continued to encourage his men until he succumbed to his wounds on the battle field.

Throughout, Major Lil Bahadur Gurung displayed gallantry and determination of a high order.

5. Major Gurdev Singh Jaswal (IC-16008),
The Punjab Regiment (*Posthumous*)
Effective date of award—10th December 1971)

Major Gurdev Singh Jaswal was commanding a Company of a Battalion of The Punjab Regiment during the operations against Pakistan in the Western Sector. His Battalion was ordered to capture the enemy position based on 'Chak Amru' Railway Station in the Shakargarh Sector. Major Gurdev Singh Jaswal led the assault through a tactical mine field of 600 yards depth. Because of the swift assault led by him, the enemy was taken by surprise and was routed. During the reorganisation his company came under accurate and intense enemy Medium Machine Gun and Artillery fire. Major Gurdev Singh Jaswal, despite heavy enemy small arms fire and shelling moved from trench to trench to encourage his men. While doing this, he was hit by an enemy Medium Machine Gun burst, as a result of which he died.

Throughout this action, Major Gurdev Singh Jaswal displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

6 Major NARAIN SINGH (IC-18086),
The Jat Regiment. (*Posthumous*)
(Effective date of award—5th December 1971)

On the 5th December 1971 Major Narain Singh who was commanding a company of a Battalion of The Jat Regiment was assigned the task of capturing an enemy locality in an area in the Fazilka Sector. When the counter attack was launched, the enemy brought down intense artillery and small arms fire inflicting heavy casualties on our troops. Undeterred Major Narain Singh led his men and charged on to the objective. In the process, he was hit by a burst from a machine gun but he continued to direct the operation and engaged the enemy in hand to hand fighting during which he was mortally wounded.

In this action Major Narain Singh displayed gallantry, leadership and determination of a high order.

7 Major VETRI NATHAN (IC-13991)
Gorkha Rifles (*Posthumous*)
(Effective date of award—6th December 1971)

Major Vetri Nathan was commanding a Company of a Battalion of the Gorkha Rifles in the Kargil Sector. On the night of 6th/7th December 1971, his company was given the task of capturing a feature held in strength by the enemy. During the assault the enemy subjected our troops to intense and accurate small arms and artillery fire. Major Vetri Nathan in utter disregard of his personal safety, moved from man to man encouraging them to press home the attack. Though seriously wounded he led the charge and captured the objective before succumbing to his wounds.

In this action Major Vetri Nathan displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

8 Major DEVINDERJIT SINGH PANNU (IC-13158),
The Sikh Regiment. (*Posthumous*)
(Effective date of the award—4th December, 1971)

Major Devinderjit Singh Pannu was commanding a company of a Battalion of the Sikh Regiment which was occupying a key position for the defence of Chhamb when the enemy launched their attack on the night of 3rd/4th December, 1971. This officer immediately rushed to one of his platoons occupying a screen position at 'Moel' border outpost and held out against heavy pressure throughout that night and thereafter for sixteen hours after the position had virtually been surrounded. He then withdrew to his main position where his company was subjected to battalion night attacks by the enemy during two successive nights. Major Devinderjit Singh Pannu repeatedly exposed himself to enemy small arms and artillery fire by moving from one locality to another inspiring his men to beat back the enemy. Realising the importance of this position, the enemy launched another battalion attack on the morning of the 5th December, 1971, preceded by heavy artillery fire. While moving from trench to trench, encouraging his men, Major Pannu was mortally wounded by a shell and died on his post.

Throughout, Major Devinderjit Singh Pannu displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

9 Major RAJENDER SINGH RAJAWAT (IC-18128),
The Rajasthan Rifles. (*Posthumous*)
(Effective date of award—8th December 1971)

Major Rajender Singh Rajawat was commanding an Armoured Personnel Carrier Company of a Battalion of the Rajputana Rifles in the Shakargarh sector. His company was assigned the task of capturing an enemy locality. This position was held in strength by the enemy. Major Rajender Singh Rajawat led his men in the assault and cleared the built up area, inspite of heavy shelling and stiff resistance after fierce hand to hand fighting. When the enemy launched a counter-attack he, notwithstanding heavy enemy fire went from trench to trench encouraging his men to repulse the attack. In the process he was hit by an enemy shell as a result of which he died.

In this operation, Major Rajender Singh Rajawat displayed commendable courage, determination and leadership of a high order.

10 Major SHASHI PAL SINGH (IC-18798)
The Rajput Rifles (*Posthumous*)
(Effective date of award—14th December 1971)

On the 14th December 1971 Major Shashi Pal Singh was commanding a company of a Battalion of the Rajput Regiment which was engaged in assaulting a Railway embankment in an area in the Eastern Sector. The enemy was entrenched in well fortified positions held in strength. During the assault the enemy brought down heavy and accurate artillery and small arms fire. Undettered Major Shashi Pal Singh kept on advancing towards the objective. In the process he was injured and his leading troops suffered heavy casualties whereby the assault was halted. Despite his wounds, he continued to direct the operation, and ultimately succeeded in capturing the objective. Subsequently he succumbed to his injuries.

In this action Major Shashi Pal Singh displayed gallantry determination and leadership of a high order.

11 Major SURINDER VATSA (IC-15055)
The Corps of Engineers (*Posthumous*)
(Effective date of the award—13th December 1971)

On the 13th December 1971 Major Surinder Vatsa of an Engineer Regiment accompanied a column of a Battalion of the Maratha Light Infantry assigned the task of raiding an enemy locality on the 'Kamalpur—Bakshiganj' axis in the Eastern Sector. The raid was successful and four enemy 130 mm mortars were captured. Apprehending enemy reinforcements, Major Surinder Vatsa was ordered to destroy the mortars before the raiding column returned to base. Major Surinder Vatsa destroyed two mortars with explosives but while preparing the charge for the third mortar he was

shot by an enemy sniper. Though seriously wounded, he, realising the importance of the task managed to damage the remaining mortars by exploding grenades in the barrel before he succumbed to his injuries.

In this action, Major Surinder Vatsa displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

12. Captain RAVENDER NATH GUPTA (IC-16871) Engineers. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—17th December* 1971)

Captain Ravender Nath Gupta was one of the sub-task force commanders for breaching the minefield in an area in the Western Sector. The success of the operation depended upon vehicle lanes through the enemy mine field, being made with speed so that an Armoured Regiment could be inducted in the area before the enemy could launch counter attack. This area was continuously under enemy artillery and mortar fire and information regarding the depth of the minefield was wanting. As time was very short, Captain Ravender Nath Gupta volunteered to lead a small party on foot on a wide outflanking move to assess the other edge of the minefield. By this method, the party was able to get this vital information within an hour. Subsequently, when the enemy attacked, he with complete disregard to his safety personally guided the tanks through the cleared minefield. While doing so he was hit by an enemy artillery shell as a result of which he died.

In this action, Captain Ravender Nath Gupta displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

13. Captain ASHOK KUMAR KARKARE (JC-21909) The Regiment of Artillery (*Posthumous*)

(*Effective date of award—8th December*, 1971)

Captain Ashok Kumar Karkare of the Regiment of Artillery was the forward Observation Officer with a company of a Battalion of The Rajput Regiment during their attack on Khalara in the Western Sector. The Company launched a determined attack and secured part of its objective despite very stiff opposition. The enemy immediately brought down intense artillery fire inflicting heavy casualties on our troops. Captain Ashok Kumar Karkare had in the meantime secured one of the Captured enemy artillery radio sets and through it misguided the enemy thereby diverting enemy artillery fire and saving casualties to our troops. On the morning of the 8th December 1971, the enemy launched a determined counted attack with infantry supported by armour. Undeterred by the heavy shelling and small arms fire, Captain Ashok Kumar Karkare directed own artillery fire in an accurate manner and was instrumental in repulsing the attack. The enemy launched another determined counter attack on the same day and once again he exposed himself to danger to provide effective artillery support. He continued to engage the enemy till our troops had extricated themselves from the position. While he was himself withdrawing, he was hit by a machine gun burst and was killed on the spot.

Throughout, Captain Ashok Kumar Karkare displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

14. Captain RAVENDER KHAURA (SS-20095), The Regiment of Artillery (*Posthumous*)

(*Effective date of award—3rd December* 1971)

Captain Ravinder Khaura of the Regiment of Artillery was an Observation Post Officer in a defended locality in the Chhamb Sector. On the 3rd/4th December 1971, the enemy attacked this position in strength on a number of occasions. These attacks were supported by intense and accurate artillery fire. Undeterred by the heavy shelling and unmindful of his personal safety, he repeatedly exposed himself to danger in order to bring down accurate artillery fire on the enemy. He inspired and encouraged the men to hold on to the position and continued to bring down effective artillery fire breaking up enemy attacks till he was killed by an enemy shell.

In this action, Captain Ravinder Khaura displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

15. Captain MADAN PAUL (IC-18747)

Air Observation Post Squadron (*Posthumous*)

(*Effective date of award—16th December*, 1971)

Captain Madan Paul was an air observation post pilot with an Air Observation Post Squadron deployed in the Western Sector. Throughout the operations, he flew round the clock missions deep inside enemy territory to bring back valuable information regarding the enemy troop concentrations and directing own artillery fire on enemy targets. On occasions, his aircraft was riddled by enemy machine gun fire but undeterred he continued with his mission till the required information was obtained. In a sortie on the 14th December 1971, his aircraft was badly damaged by an enemy air burst shell. Unmindful of the danger to himself he continued to fly over the target area directing our artillery fier. On the 16th December 1971, Captain Madan Paul was returning after completing a mission when he observed the enemy firing on our own troop locations. He immediately flew his aircraft towards the enemy location to direct our artillery fire. In the process, he was hit and killed by a bullet from enemy Machine Gun.

Throughout, Captain Madan Paul displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

16. Captain SATISH CHANDER SEHGAL (IC-20044), The Regiment of Artillery (*Posthumous*)

(*Effective date of award—16th December* 1971)

On the 16th December 1971, Captain Satish Chander Sehgal was the Forward Observation Post Officer with an armoured regiment in the Shakargarh Sector. The leading squadron was manoeuvring across the Saraj Chak forest when they came across enemy tanks which were being withdrawn behind a smoke screen into the Gazipur forest about two hundred yards away. Captain Satish Chander Sehgal immediately engaged them effectively with large crumps of medium artillery fire, neutralising the tank concentration. Seeing an enemy tank at the edge of the Gazipur forest attempting to escape, he charged forward and destroyed the fleeing tank with his observation post tank gun. In this process, his own tank was hit and it caught fire. With utter disregard for his safety he, alongwith his Radio Operator, helped to extricate the Driver and Gunner from the burning tank. While doing so, he was hit by an enemy machine gun fire as a result of which he died.

In this action Captain Satish Chander Sehgal displayed gallantry and leadership of a high order.

17. Captain VIJAI PRATAP SINGH (IC-22198).

(*Posthumous*)

Captain Vijai Pratap Singh was the Forward Observation Officer with a company of a Mountain Regiment which was assigned the task of attacking an enemy post in the Eastern Sector. During the assault, the company commander was seriously wounded. Captain Vijai Pratap Singh took over command of the company and led the assault on the enemy post. He moved from one platoon to another to encourage his men. Inspite of heavy artillery, mortar and automatic fire and though seriously wounded, he brought down accurate and concentrated fire of our guns on the enemy. Inspired by his example, the company captured the post. Captain Vijai Pratap Singh, however, succumbed to his injuries.

In this action, Captain Vijai Pratap Singh displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

18. Captain SURENDRA NATH (MS-8540).

Army Medical Corps. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—16th December* 1971)

On the 16th December 1971, Captain Surendra Nath was the Regimental Medical Officer with a Battalion of the Madras Regiment during the battle of the Basantar River in the Shakargarh Sector. While establishing a Bridge Head across the Basantar River, the battalion suffered heavy casualties. Carrying his medical haversack he moved from one casualty to another in utter disregard of his safety rendering medical aid. In this process, he was hit by a shell splinter and succumbed to his injuries.

In this operation, Captain Surendra Nath displayed commendable courage, determination and devotion to duty.

19. Second Lieutenant PERMJIT SINGH CHIMA (IC-23365).

Engineers. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—13th December* 1971)

Second Lieutenant Permjit Singh Chima was with a Field Company assigned in support of an Infantry Brigade Group in Naya Chor area in the Rajasthan Sector. During the advance to Naya Chor the tracks of a tank were damaged by an anti-tank mine. Second-Lieutenant Permjit Singh Chima was ordered to make a safe lane in the mine field to retrieve the damaged tank. With complete disregard to his personal safety, he led his party for clearance of the lane. The enemy subjected the mine field clearance party to heavy machine gun and rifle fire. Undeterred Second Lieutenant Chima continued with the work and completed the task of retrieving the tank. Subsequently, while clearing a mine field near Purbat Ali he was killed by a mine explosion.

In these actions, Second Lieutenant Permjit Singh Chima displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

20. Second Lieutenant DAVID ALEXANDER DEVADASAN (SS-22831).

The Mahar Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—11th December* 1971)

Second Lieutenant David Alexander Devadasan was commanding a Platoon of a Battalion of The Mahar Regiment during the operations against Pakistan. On the night of 10th/11th December 1971, his Battalion was given the task of capturing an enemy position in an area in the Shakargarh Sector. This position was held in strength by the enemy and protected by a mine field. During the attack, the assaulting troops were held up by a heavy volume of a machine gun fire. Dealising the necessity of silencing this gun, Second Lieutenant David Alexander Devadasan, in utter disregard of his safety rushed towards the objective inspiring his platoon to follow him. The enemy directed intense and accurate small arms and artillery fire on his platoon inflicting heavy casualties. Undeterred he charged the enemy Machine Gun position and silenced it this enabled the capture of the objective. In this process, he was hit by a burst from the enemy machine gun as a result of which he died.

In this action, Second Lieutenant David Alexander Devadasan displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

21. Second Lieutenant SATISH KUMAR JASWAL (IC-23805).

The Dogra Regiment (*Posthumous*)

(*Effective date of award—15th December* 1971)

Second Lieutenant Satish Kumar Jaswal led a patrol deep into enemy territory in the area of Bisso Buzurg and Dhingar in the Shakargarh Sector. On 15th December 1971, at 2300 hours when the patrol approached Dhingar village, an enemy ambush party opened fire at close range with automatic weapons and grenades. Second Lieutenant Satish Kumar Jaswal ordered his patrol to charge the enemy ambush. In the process, he was hit by a bullet. Despite his injury, he continued to give directions to his patrol and succeeded in defeating the ambush party before succumbing to his injuries.

In this action, Second Lieutenant Satish Kumar Jaswal displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

22. Second Lieutenant BHARAT SINGH KASANA (SS-24026).

The Dogra Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—4th December* 1971)

Second Lieutenant Bharat Singh Kasana was a platoon commander with a Battalion of the Dogra Regiment which was given the task of capturing Madurbere in the Eastern Sector. An attack was launched by a company of the Battalion to capture the railway bridge north of Madurbere but it was held up by intense automatic fire from enemy bunkers overlooking the bridge. After the company had neutralised one bunker, another one opened up at a distance of about 150-200 yards which halted the company's advance. At this stage, Second Lieutenant Bharat Singh Kasana mustered his platoon and though under very heavy artillery and automatic fire, he led the assault on the enemy bunkers. In the process, he was hit by a burst of medium machine gun fire in the leg but unmindful of his injury, he pressed home the assault. He was again hit by a burst of automatic fire on his forehead, and he succumbed to his injuries.

In this action, Second Lieutenant Bharat Singh Kasana displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

23. Second Lieutenant ASHOK KUMAR NANCHAHAL (SS-23228).

The Rajput Regiment (*Posthumous*)

(*Effective date of award—7th December* 1971)

Second Lieutenant Ashok Kumar Nanchahal was a platoon Commander in a Battalion of the Rajput Regiment during an attack on the enemy positions at 'Chhina Bidi Chand' in the Khalra area in the Western Sector. During the assault, his platoon came under intense shelling and heavy automatic fire but Second Lieutenant Ashok Kumar Nanchahal enthused his men to press home the attack. At this juncture, he noticed two enemy machine guns firing from bunkers and inflicting heavy casualties on our troops. With utter disregard to his personal safety, he charged towards the machine gun post single handed and lobbed a grenade through the loophole killing the enemy and silencing the guns. In this process, however, he was seriously injured and succumbed to his injuries. His act of valour inspired his men who charged and captured the objective inflicting heavy losses on the enemy.

In this action, Second Lieutenant Ashok Kumar Nanchahal displayed gallantry and leadership of a high order.

24. Second Lieutenant SHESHANNA MANJU NATH (IC-24877).

The Rajput Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—3rd December* 1971)

On the 3rd December 1971 a Battalion of The Rajput Regiment was advancing along the axis 'Pachagarh'—'Thakurgaon' in the Eastern Sector. Second Lieutenant Sheshanna Manju Nath was commanding the leading platoon. During the advance, the enemy opened up with a Medium Machine Gun inflicting heavy casualties on our troops. He, realising the necessity of silencing the machine gun, charged the machine gun post. In the process, he received a machine gun burst and succumbed to his injuries after silencing the gun.

In this action, Second Lieutenant Sheshanna Manju Nath displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

25. Second Lieutenant HARDEV PAL NAYYAR (SS-23397).

The Sikh Light Infantry. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—12th December* 1971)

On the night of 11th/12th December 1971 Second-Lieutenant Hardev Pal Nayyar was platoon commander in a company which was assigned the task of attacking an enemy post in the Western Sector. During the assault, his platoon was held up by automatic fire from the enemy bunkers. Second Lieutenant Hardev Pal Nayyar, with complete disregard of his personal safety, crawled upto two bunkers and silenced them with grenades. While charging into the third bunker, he was hit by a burst of medium machine gun fire. Though seriously wounded, he kept on encouraging his men till post was captured. Thereafter, he succumbed to his injuries.

In this action, Second Lieutenant Hardev Pal Nayyar displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

26. Second Lieutenant JAYENDRA JAISINGH RANE (IC-24201).

The Garhwal Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—5th December*, 1971)

On the 5th December 1971, Second Lieutenant Jayendra Jaisingh Rane was commanding a Company of a Battalion of the Garhwal Rifles, which was ordered to capture an enemy post near Hilli in the Eastern Sector. The enemy was in well prepared positions supported by Medium Machine Guns, mortars and artillery fire. Second Lieutenant Rane led the attack but his company was pinned down by heavy and accurate automatic fire coming from three directions. Though seriously wounded in his leg, he manoeuvred one platoon to a flank so as to extricate the other two. In doing so, he was shot in his other leg also but

with complete disregard to his own life, he continued to conduct the fight to extricate his men until he succumbed to his wounds on the battle field.

In this action, Second Lieutenant Jayendra Jaisingh Rane displayed gallantry, leadership and determination of a high order.

27. Second Lieutenant BAHADUR SINGH (IC-24250).
The Sikh Light Infantry. (*Posthumous*)
(*Effective date of award—15th December*, 1971)

On the 15th December 1971, a Battalion of the Sikh Light Infantry was ordered to capture the enemy defence position at 'Purbat Ali' in the Rajasthan Sector. During the attack, the assaulting troops came under heavy artillery and medium machine gun fire and suffered casualties. Second Lieutenant Bahadur Singh noticed an enemy medium machine gun firing from a bunker on a flank. Realising the importance of silencing this gun, he with complete disregard for his personal safety led a charge on this post and silenced the gun. In the process, he was hit by a burst of the medium machine gun fire and died soon after reaching the object.

In this action, Second Lieutenant Bahadur Singh displayed courage and leadership of a high order.

28. Second Lieutenant HAWA SINGH (SS-23003).
The Gorkha Rifles. (*Posthumous*)

A Battalion of the Gorkha Rifles was given the task of capturing an enemy position in an area in the Eastern Sector. The enemy was holding a well fortified position supported by Medium Machine Guns. During the assault Second Lieutenant Hawa Singh was seriously wounded by enemy fire. Undeterred and regardless of his personal safety, he pressed his charge and cleared five enemy bunkers and killed a number of enemy personnel. His daring example inspired his Company to capture the objective. Later he succumbed to his injuries.

In this action, Second Lieutenant Hawa Singh displayed commendable courage, initiative and determination.

29. Second Lieutenant KANWARJIT SINGH (IC-24921).
Scinde Horse. (*Posthumous*)
(*Effective date of award—12th December* 1971)

Second Lieutenant Kanwarjit Singh was commanding a Troop of a Squadron of The Scinde Horse in the Shakargarh Sector. On the 12th December, the Squadron was ordered to deploy opposite the Chakra crossing near the river Bein to make contact with the enemy holding the crossing. Second Lieutenant Kanwarjit Singh closed with the enemy positions despite stiff opposition and accurate anti-tank and artillery fire. In the fight, he manoeuvred and handled his troop effectively and thus enabled the rest of the Squadron to locate and engage the enemy inflicting considerable damage. Second Lieutenant Kanwarjit Singh personally engaged and knocked out two enemy emplacements and an anti-tank missile launching site. While covering the extrication of other elements of the Squadron, his tank became the target of concentrated enemy fire. Undaunted, he remained in the open cupola of his tank directing the extrication and correcting the fire of his own tank. While engaged in this task, he was mortally wounded by a direct hit from an anti-tank gun.

In this action, Second Lieutenant Kanwarjit Singh displayed commendable courage, determination and leadership.

30. JC 17910 Subedar RAJAB ALI.
The Rajputana Rifles. (*Posthumous*)
(*Effective date of award—7th December*, 1971)

On the night of the 7th/8th December 1971, Subedar Rajab Ali was commanding a rifle platoon of a Battalion of the Rajputana Rifles. He led his platoon in an attack against a well fortified enemy position at Sheshalede. During the assault, he was seriously wounded but with complete disregard to his personal safety he pressed on the attack and charged the enemy strong point where he eventually died fighting bravely.

In this action, Subedar Rajab Ali exhibited a high sense of duty, inspiring leadership and courage.

31. JC-39418 Subedar SHREEDHARA DASS.
The Madras Regiment. (*Posthumous*)
(*Effective date of award—17th December* 1971)

Subedar Shreedhara Dass was a platoon commander in a Company of a Battalion of The Madras Regiment. On the 16th December 1971, his Battalion had taken up a defended area at Hingora Tar in the Western Sector. In the early hours of 17th December 1971, the enemy launched an attack in strength. With utter disregard to his safety, Subedar Shreedhara Dass moved from trench to trench encouraging his men to repulse the attack. Though seriously wounded, he refused to be evacuated. Half an hour later, the enemy launched another attack and this time was able to close in with the defences. Seeing that the crew of one of his Light Machine Guns had been killed, he took over the Light Machine Gun and killed a number of enemy troops himself. During the fight he was seriously wounded as a result of which he died.

In this action, Subedar Shreedhara Dass displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

32. JC-15901 Subedar GURCHARAN SINGH, SM.
The Sikh Regiment. (*Posthumous*)
(*Effective date of award—12th December* 1971)

Subedar Gurcharan Singh was commanding a Platoon of a Battalion of the Sikh Regiment during an attack on the enemy positions at Parbat Ali in the Rajasthan Sector. He led his men across a minefield six hundred metres deep and captured the objective after hand to hand fighting. While reorganising on the objective, he observed two enemy companies forming up for a counter attack. He led his platoon in a charge on the enemy.

This unexpected attack launched with speed and determination broke up the enemy attack and they withdrew in utter confusion. During this attack, he was mortally wounded and died on the battle field.

In this action, Subedar Gurcharan Singh displayed bravery, initiative and leadership of a high order.

33. JC-33019 Subedar PRITAM SINGH
The Sikh Light Infantry (*Posthumous*)
(*Effective date of award—16th December* 1971)

Subedar Pritam Singh was the senior JCO of a Company of a Battalion of The Sikh Light Infantry during the operations in the Shakargarh Sector. A platoon of a Company under Subedar Pritam Singh was ordered to clear the village Pila Dogran. The Platoon came under accurate enemy fire resulting in five casualties including one of the light machine gun teams. Realising the gravity of the situation, he quickly got hold of the light machine gun, regrouped the platoon and pressed home the attack. The fire from his light machine gun silenced one of the medium machine guns of the enemy. At this stage he was seriously wounded but he refused to be evacuated. Subsequetly, he succumbed to his injuries.

In this action, Subedar Pritam Singh displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

34. JC-35308 Subedar RAJ BAHADUR SINGH
The Brigade of Guards (*Posthumous*)

Subedar Raj Bahadur Singh was the Second-in-Command of a company of a Battalion of The Brigade of Guards. His company was ordered to capture an enemy post in the Eastern Sector as part of our defensive action. During the assault, Subedar Raj Bahadur Singh was wounded by a mine blast. The heavy machine gun fire of the enemy held up the assault of his company. Undeterred and unmindful of his personal injury, Subedar Raj Bahadur Singh crawled through the minefield and wire obstacle, lobbed a hand grenade inside the bunker, thus silencing the machine gun. He however, succumbed to his injuries.

In this action, Subedar Raj Bahadur Singh displayed courage and determination of a high order.

35. JC-16783 Subedar SITA RAM
The Grenadiers (*Posthumous*)
(*Effective date of award—11th December* 1971)

Subedar Sita Ram was commanding the left forward platoon of a company of a Battalion of The Grenadiers during the attack on 'Chakra' in the Shakargarh Sector. This was a well fortified position held in strength by the enemy and covered by

a minefield 800 yards in depth. During the forming up and the assault, the enemy brought down very heavy and accurate shell and mortar and artillery fire. Undaunted by the intensity of the enemy fire and the casualties among his men, Subedar Sita Ram led his men across the minefield and captured the objective after bitter fighting. Though seriously wounded, he refused to be evacuated. The enemy launched a determined counter attack and once again Subedar Sita Ram, unmindful of his injuries went from trench to trench inspiring his men to stand fast and beat back the enemy attack. He was wounded again in this process and was eventually evacuated but succumbed to his injuries.

Throughout, Subedar Sita Ram displayed gallantry and leadership of a high order.

36. No. 2544424 Naib Subedar CHERIYAN
The Madras Regiment (*Posthumous*)

A Battalion of The Madras Regiment was ordered to clear an enemy locality in the Eastern Sector. When the assaulting troops were forming up for the attack, the enemy brought down accurate and effective Medium Machine Gun fire. Naib Subedar Cheriyan was assigned the task of silencing the machine gun. He and six other ranks went towards the machine gun post. When the party was within 50 yards of the position, the enemy directed machine gun fire at them, injuring Naib Subedar Cheriyan in the arm and the chest. Undeterred, he continued to advance and directed the operation. Although he was again hit by a bullet, he continued to lead the party which succeeded in silencing the gun. Naib Subedar Cheriyan however, succumbed to his wounds.

In this action, Naib Subedar Cheriyan displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

37. JC 225 Naib Subedar SULTAN MOHAMMED KHAN
The Jammu and Kashmir Militia (*Posthumous*)
(*Effective date of award—8th December* 1971)

Naib Subedar Sultan Mohammed Khan was ordered to take a patrol to reconnoitre the strongly held enemy position in an area in the Kargil Sector. On the 8th December 1971, while probing the defences, one party carrying the Light Machine Gun strayed into a minefield and its members were injured by a mine blast. The enemy was alerted and opened fire with automatic weapons. Naib Subedar Sultan Mohammad Khan, realising the danger, immediately rushed to retrieve the Light Machine Gun. Though seriously wounded, he crawled upto the Light Machine Gun and engaged the enemy till the rest of his party could neutralize the bunker. He then sited his Light Machine Gun at a vantage point and engaged the enemy and thus contributed to the success of the operation. Subsequently, he died in an air crash.

In this action Naib Subedar Sultan Mohammed Khan displayed gallantry and determination of a high order.

38. JC-46727 Naib Subedar MAM CHAND SHARMA
The Mahar Regiment (*Posthumous*)

Naib Subedar Mam Chand Sharma was commanding a platoon of a Company of a Battalion of The Mahar Regiment during an assault on an enemy post in the Eastern Sector. The enemy was occupying well fortified positions and was supported by Medium Machine Guns. He led the attack with complete disregard to his personal safety. During the assault, his platoon came under heavy and accurate Machine gun fire from the upper story of a building which was inflicting heavy casualties on his platoon Naib Subedar Mam Chand Sharma personally led his men and charged the machine gun post. During this charge, he received a bullet in his chest but undeterred he pressed on the assault and silenced the enemy machine gun before succumbing to his wounds on the battle field.

In this action, Naib Subedar Mam Chand Sharma displayed gallantry, leadership and determination of a high order.

39. 31-1913 Company Havildar Major KRISHAN SINGH
The Jat Regiment (*Posthumous*)

A Battalion of The Jat Regiment was given the task of clearing the enemy from Comilla Airfield. This was a heavily fortified position and was held in strength by the enemy. During the assault, a Company of the Battalion came under very heavy and accurate fire from two enemy machine guns. Realising the necessity of silencing these machine guns, Company Havildar Major Krishan Singh charged one machine gun post single handed and captured it. The second machine gun continued to fire and inflict casualties on our troops. He charged the second machine gun post single handed and physically snatched the machine gun from the enemy. While bringing it back, he was shot and died on the battle field.

In this action, Company Havildar Major Krishan Singh displayed courage and determination of a high order.

40. 9204205 Havildar BUDHI BALLABH
The Mahar Regiment (*Posthumous*)

Havildar Budhi Ballabh was a platoon Havildar in a Battalion of the Mahar Regiment. During an assault on the enemy held post in an area in the Eastern Sector, his platoon was held up in front of two enemy bunkers due to heavy and accurate fire. Half of the troops in his platoon had either been killed or wounded. Undeterred, he went from man to man collecting ammunition of those who had been killed and wounded and distributed this ammunition amongst those still fighting. Finding that his platoon could not advance due to close proximity and fire of the enemy, Havildar Budhi Ballabh crawled upto the enemy bunker with a view to destroying it, but was hit by a machine gun burst and died on the spot. His steadfastness, courage and personal example inspired his troops to charge on the enemy and capture the objective.

In this action, Havildar Budhi Ballabh displayed gallantry, leadership and determination of a high order.

41. 2240521 Havildar DAYANAND RAM,
The Rajputana Rifles (*Posthumous*)
(*Effective date of award—4th December* 1971)

Havildar Dayanand Ram was commanding a platoon during his battalion attack on an enemy post at Islamgarh in the Rajasthan Sector. This was a well fortified post held in strength by the enemy. During the assault, his platoon came under heavy and effective enemy small arms fire. Though wounded, Havildar Dayanand Ram, with complete disregard for his personal safety charged the enemy post and succeeded in capturing it before he succumbed to his injuries.

In this action, Havildar Dayanand Ram exhibited gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

42. 1026586 Dafadar HARBIR SINGH
Armoured Delivery Regiment (*Posthumous*)
(*Effective date of award—5th December* 1971)

Dafadar Harbir Singh was the commander of the leading tank of the troop of an Armoured Delivery Regiment, which was sent to Longewala in the Rajasthan Sector to blunt the thrust of a large Armoured column of the enemy. He with complete disregard to his safety, closed in on the enemy tanks and opened accurate and intense fire on the enemy column, and knocked out two enemy tanks. His tank was, however, hit by enemy tank fire from the flank as a result of which he died.

In this action, Dafadar Harbir Singh displayed gallantry and determination of a high order.

43. 4039278 Havildar DEVENDRA SINGH KANDARI
The Kumaon Regiment (*Posthumous*)
(*Effective date of award—10th December* 1971)

On the 10th December 1971, Havildar Devendra Singh Kandari was the Platoon Havildar in a company of a Battalion of the Kumaon Regiment which was detailed for attacking the enemy defences in an area in the Eastern Sector. While assaulting the objective his Platoon Commander was killed and he assumed command of the platoon. On reaching the objective, enemy depth localities opened up with small arms fire from a very close range. With utter disregard to his personal safety, he rushed on to the enemy in their fortified bunkers and a hand to hand fight ensued. He snatched one light machine gun killing the gun detachment. In this process, he was seriously wounded in the stomach and succumbed to his injuries.

In this action, Havildar Devendra Singh Kandari displayed gallantry leadership and devotion to duty of a high order.

44. 13652879 Havildar HARI DAS NAG
The Brigade of Guards (*Posthumous*)
(*Effective date of award—13th December*, 1971)

Havildar Hari Das Nag was a Platoon Havildar in a Battalion of The Brigade of Guards assigned the task of capturing a feature in the Kargil Sector. He volunteered to destroy an enemy machine gun position which was holding the company's attack. He approached the enemy bunker, lobbed

a grenade into it and charged fearlessly killing the machine gun crew single-handed. Having done this, he stood up, waving to his company indicating that the machine gun bunker had been destroyed. In the process an enemy grenade burst near him, as a result of which he died.

In this action, Havildar Hari Das Nag displayed gallantry and determination of a high order.

45. 5334168 Havildar SOM BAHADUR THAPA
The Gorkha Rifles (*Posthumous*)
(*Effective date of award—5th December,* 1971)

On the night of 5th/6th December 1971, a Company of a Battalion of the Gorkha Rifles was assigned the task of capturing the enemy border Post at Chak Bhura in the Western Sector. This was a well fortified post held in strength and supported by Medium Machine guns, Recoilless guns and mortars. As the Company formed up for the assault, the enemy brought down heavy and accurate artillery and small arms fire and inflicted heavy casualties on the left forward platoon commanded by Havildar Som Bahadur Thapa Undaunted, Havildar Som Bahadur Thapa quickly organised his platoon and led them in the attack. Though seriously wounded by an artillery shell, he inspired his men to charge the objective and capture it. Soon after reaching the objective, Havildar Som Bahadur Thapa succumbed to his injuries.

In this action, Havildar Som Bahadur Thapa displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

46. 2444085 Lance Havildar DILBAGH SINGH
The Punjab Regiment (*Posthumous*)
(*Effective date of award—12th December* 1971)

Lance Havildar Dilbagh Singh was a section commander in the pioneer platoon of a Battalion of The Punjab Regiment during the operations in the Shakargarh Sector. After the capture of Shabazpur position, Lance Havildar Dilbagh Singh was given the task of making a safe lane through a minefield 600 yards deep. Notwithstanding intense enemy fire, he kept on prodding and removing enemy mines in complete disregard of his personal safety The safe lane was almost complete when Lance Havildar Dilbagh Singh was blown up while neutralising an anti-tank mine.

In this action, Lance Havildar Dilbagh Singh showed commendable courage and devotion to duty.

47. 3144417 Lance Havildar GANGA DHAR
The Jat Regiment (*Posthumous*)
(*Effective date of award—4th/5th December* 1971)

A Company of a Battalion of The Jat Regiment captured area "Gurmukh Khera" in the Western Sector on the 4th December 1971, Immediately after occupation of this position, intense medium machine gun fire opened up from a pill box in the area of "Out Fall" thereby halting our advance. Lance Havildar Ganga Dhar volunteered to be a member of the suicide squad to silence the enemy pill box. He, with two others, started crawling towards the enemy bunker and when they were hardly 10-15 yards from it, Lance Havildar Ganga Dhar rushed towards the pill box and lobbing grenades, silenced the machine gun-post. In the process, he was shot at point blank range as a result of which he died.

In this action, Lance Havildar Ganga Dhar displayed gallantry and determination of a high order.

48. 2951096 Lance Havildar GIAN CHAND
The Rajput Regiment (*Posthumous*)
(*Effective date of award—15th December,* 1971)

Lance Havildar Gian Chand was the Commander of one of the platoons of a Battalion of the Rajput Regiment which had put up a road block in an area in the Eastern Sector. The enemy made repeated attempts to dislodge our troops from the road block by bringing down accurate artillery, mortar and automatic fire. Lance Havildar Gian Chand spotted an enemy bunker from where Heavy Machine gun fire was inflicting casualties to own troops. With complete diregard to his safety, he took a Light Machine Gun and started crawling towards the enemy bunker. In the process, he was seriously wounded but he carried on unmindful of his injuries. When he was within a few yards of the bunker, he sprayed it with his light machine gun and killed all the five occupants. He foiled all attempts by the enemy to regain control of the bunker. Before medical help could reach the bunker, Lance Havildar Gian Chand succumbed to his injuries.

In this action, Lance Havildar Gian Chand displayed gallantry and determination of a high order.

49. 5233730 Lance Havildar TEK BAHADUR GURUNG
The Parachute Regiment (*Posthumous*)

Lance Havildar Tek Bahadur Gurung was a section commander in the Company of a Battalion of The Parachute Regiment which was assigned the task of capturing an area in the Ganganagar Sector. The Company came under heavy artillery and machine gun fire. When the attacking troops were about fifty yards short of the objective, the light machine gunner was fatally wounded. Lance Havildar Tek Bahadur Gurung immediately picked up the machine gun and pressed on with the attack. On reaching the objective, he engaged the enemy machine gun bunker, lobbed a grenade and silenced the machine gun. While doing so, a burst from another machine gun hit him in the chest, as a result of which he died.

In this action, Lance Havildar Tek Bahadur Gurung displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

50. 1021241 Lance Havildar LAXMAN RANE
The Maratha Light Infantry (*Posthumous*)
(*Effective date of award—11th December* 1971)

Lance Havildar Laxman Rane was a section commander in a Battalion of the Maratha Light Infantry which had established a road block south of the enemy defences in Jamalpur in the Eastern Sector. Lance Havildar Laxman Rane's section was attacked in strength on the night of 10th/11th December 1971. After the assault by the first wave of the enemy had been broken up, enemy assaulted with fresh troops. Lance Havildar Laxman Rane jumped out of his trench and engaged the enemy with the bayonet, killing three enemy soldiers before he himself was bayoneted to death.

In this action, Lance Havildar Laxman Rane displayed gallantry and determination of a high order.

51. 13710771 Lance Havildar RAGHBIR SINGH
The Jammu and Kashmir Rifles (*Posthumous*)
(*Effective date of award—3rd December* 1971)

Lance Havildar Raghbir Singh was a Section Commander in a Battalion of The Jammu and Kashmir Rifles. He was assigned the task of [illegible] Bridge over the Upper Bari Doab canal on the [illegible] axis. On the 3rd December 1971 after dark, the enemy attacked the Khalra defences in overwhelming strength. Though heavily outnumbered and virtually surrounded, he inspired his section to hold their ground and inflicted heavy casualties on the enemy. Though in the process, he was seriously wounded and succumbed to his injuries, his section stuck to their position and denied the bridge to the enemy.

In this action, Lance Havildar Raghbir Singh displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

52. 2747431 Naik EKNATH KARDEO,
The Maratha Light Infantry (*Posthumous*)
(*Effective date of award—4th December* 1971)

On the night of 4th/5th December 1971, a Battalion of the Maratha Light Infantry was given the task of capturing an enemy position in the Eastern Sector. The assault by our troops was held up by sustained and accurate enemy Medium Machine Gun fire from a bunker. Naik Eknath Kardeo charged the enemy bunker and silenced the Machine Gun enabling the capture of the enemy locality. In the process, he was hit by a burst from the machine gun as a result of which he died.

In this action, Naik Eknath Kardeo displayed gallantry and determination of a high order.

53. 2550237 Naik MANI
The Madras Regiment (*Posthumous*)
(*Effective date of award—17th December* 1971)

Naik Mani was a section commander in a Battalion of the Madras Regiment, deployed in an area in the Rajasthan Sector. On the 16th December, 1971, the enemy subjected the Battalion position to heavy shelling. Unmindful of his safety, Naik Mani moved from trench to trench to ensure that the digging was completed. Early on the 17th December 1971, the enemy mounted a massive attack supported by heavy artillery and medium machine gun fire. The Light

Machine Gun Post of his section was hit and put out of action. He immediately took over the Light Machine Gun and manned it till he was totally wounded.

In this action Naik Mani displayed galantry and determination of a high order.

54. 2956048 Naik RAMESH CHAND

The Rajput Regiment (*Posthumous*)

Naik Ramesh Chand was commanding a section of a Battalion of The Rajput Regiment when the advance of the leading platoon was held up by effective machine gun fire from enemy positions in an area in the Eastern Sector. Naik Ramesh Chand was ordered to clear the enemy from a bridge. As the section moved for the assault, it came under heavy enemy fire. Naik Ramesh Chand picked up a light machine gun and crawling forward to the enemy machine gun bunker lobbed hand grenades at the enemy. While doing this, he was hit in the arm by an enemy bullet. The enemy quickly moved to another bunker and resumed firing. Unmindful of his injury, he crawled forward in another attempt to destroy the machine gun. Positioing his own Light Machine Gun, he brought heavy and effective fire on the enemy, who stopped firing at the assaulting troops and directed their fire towards Naik Ramesh Chand. In the process, Naik Ramesh Chand was hit by a burst from the machine gun as a result of which he died.

In this action, Naik Ramesh Chand displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

55. 2558988 Naik SAHADEVAN

The Madras Regiment (*Posthumous*)

(*Effective date of award—17th December* 1971)

Naik Sahadevan was a section commander in a company of a Battalion of the Madras Regiment deployed on the Western Sector. On the night of 15th/16th December, 1971, the assault of the leading company was hindered by an enemy Medium Machine Gun. Naik Sahadevan, without any regard for his safety, rushed to the Medium Machine Gun post and silenced it by lobbing grenades. In the process, he was hit by a burst as a result of which he died.

In this action, Naik Sahadevan displayed gallantry of a high order.

56. 5437972 Lance Naik GOBARDHAN ADHIKARI

The Gorkha Rifles (*Posthumous*)

(*Effective date of award—15th December* 1971)

On the 15th December 1971 a Company of a Battalion of the Gorkha Rifles was mopping up the enemy in an area in the Eastern Sector. Lance Naik Gobardhan Adhikari commanding a section was given the task of driving out the enemy from the built up area. While advancing, his section came under fire of a medium machine gun firing from a window. In utter disregard to his personal safety, he crawled under the fire of the machine gun right upto the window and lobbed a grenade inside which damaged the gun and killed its crew. At this stage, he was fired upon by an enemy machine gun located across the road. Lance Naik Gobardhan Adhikari charged towards this Medium gun. In the process, the received a burst on his face as a result of which he died.

In this action, Lance Naik Gobardhan Adhikari displayed gallantry of a high order.

57. 3353350 Naik GURJANT SINGH

The Sikh Regiment (*Posthumous*)

(*Effective date of award—12th December* 1971)

Naik Gurjant Singh was the Section Commander of one of the assaulting platoons of a Battalion of the Sikh Regiment which attacked Parbat Ali in the Rajasthan Sector on the night of the 12th December 1971. After his platoon had captured the objective, the enemy was seen forming up for a counter-attack. His platoon was ordered to charge at the enemy and break up their assault. Naik Gurjant Singh led his section and in the hand to hand fight bayoneted seven enemy soldiers to death before he succumbed to his injuries.

In this action, Naik Gurjant Singh displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

58. 9072795 Lance Naik MOHAN LAL, The Jammu and Kashmir Militia (*Posthumous*)

(*Effective date of award—7th December* 1971

On the night of the 7th December, 1971, Lance Naik Mohan Lal was manning the Medium Machine Gun deployed with a company of a Battalion of the Jammu and Kashmir Militia on a pickquet in the Western Sector when the enemy attacked this pickquet in strength supported by heavy artillery fire and virtually over-ran the forward trenches of this locality. Undeterred, Lance Naik Mohan Lal kept on firing at the enemy stalling his further advance, thereby enabling our troops to reorganise for a counter attack. As a result of the counter attack, the enemy was forced to retreat. Eventually, the dead body of Lance Naik Mohan Lal was found at his medium machine gun post, but in front of the bunker, as many as nineteen dead bodies including that of the enemy company commander were also found.

In this action, Lance Naik Mohan Lal displayed gallantry and determination of a high order.

59. 3348614 Naik NAIB SINGH

The Sikh Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—3rd December*, 1971)

Naik Naib Singh was in a defended locality in the Western Sector. On the night of 3rd/4th December, 1971, the enemy launched an attack in strength on his post. Naik Naib Singh enthused his men and directed their fire. When his own ammunition was exhausted, he resorted to hand to hand fighting and killed an enemy soldier with his bayonet. In the encounter, he received serious injuries as a result of which he died.

In this action, Naik Naib Singh displayed cool courage, and determination of a high order.

60. 2950437 Naik RAJA SINGH

The Rajput Regiment. (*Posthumous*)

Naik Raja Singh was a section commander in a Battalion of the Rajput Regiment. His company was ordered to clear an enemy post in the Eastern Sector. The enemy brought down heavy and accurate fire from automatic weapons and three grenades in a bid to break up the assault. He, with utter disregard for his personal safety, led his section and rushed the enemy position. He was hit on the head by an enemy bullet but undeterred he charged the enemy light machine gun bunker holding up the attack and destroyed it with a grenade before succumbing to his wounds.

In this action, Naik Raja Singh displayed courage, devotion to duty and leadership of a high order.

61. 4152120 Lance Naik DURGA DATT

The Kumaon Regiment (*Posthumous*)

(*Effective date of award—5th December* 1971)

During the attack on an enemy post at Gadra in the Rajasthan Sector, on the 5th December 1971, Lance Naik Durga Datt crawled to an enemy Medium Machine Gun bunker, lobbed a grenade and destroyed the gun and its crew. While he was crawling to the other bunker, he was hit on the head by a machine gun burst. Unmindful of his serious injuries, he pressed forward and lobbing a grenade silenced the other machine gun post also. He was found on the objective, seriously wounded and in an unconscious state. He later succumbed to his injuries.

In this action, Lance Naik Durga Datt displayed gallantry of a high order.

62. 53839599 Lance Naik JAR JANG GURUNG

The Gorkha Rifles (*Posthumous*)

(*Effective date of ward—3rd December*, 1971)

Lance Naik Jar Jang Gurung, along with one other rank was manning a Listening Post ahead of a defended locality in the Western Sector on the night of 3rd/4th December, 1971. When surrounded by the enemy, he sent his colleague to inform his Company Commander regarding the approaching enemy and himself kept the enemy at bay for over two hours. When his ammunition was exhausted, he attacked the enemy with the bayonet. In the encounter, he received serious injuries as a result of which he died.

In this action, Lance Naik Jar Jang Gurung displayed a high sense of duty and courage and determination of a high order.

63. 9070949 Lance Naik JANAK SINGH, The Jammu and Kashmir Militia *(Posthumous)*

(Effective date of award—5th December, 1971)

Lance Naik Janak Singh was part of a force detailed to raid an enemy post in the Gurais Sector on the 5th December 1971. Lance Naik Janak Singh was the leading scout of the leading platoon when the enemy opened up with Machine guns on the approaching column. With complete disregard for his personal safety, he charged and destroyed the enemy machine gun bunker but was mortally wounded and died on the battle field.

In this action, Lance Naik Janak Singh showed courage and initiative of a high order.

64. 13727390 Lance Naik (Unpaid) MAGAR SINGH, The Jammu and Kashmir Rifles *(Posthumous)*

A Battalion of the Jammu and Kashmir Rifles was occupying a defensive position approximately 400 meters from enemy defences in an area in the Eastern Sector. After intense bombardment, the enemy attacked the position in strength. Lance Naik Magar Singh who was commanding the forward-most section inspired his men to repulse the attack. One of the artillery shells landed near the Light Machine Gun post injuring the crew. Lance Naik Magar Singh with utter disregard to his personal safety jumped out of his trench, rushed to the Light Machine Gun post, brought the Light Machine Gun to his own trench and continued firing, inflicting heavy casualties on the enemy, thereby blunting the attack. Lance Naik Magar Singh was hit by a shell splinter and died at his post.

In this action, Lance Naik Magar Singh displayed commendable courage and determination.

65. 1277821 Gunner (GD) ARMUGAM, Air Defence Regiment *(Posthumous)*

(Effective date of award—5th December, 1971)

On the 5th December 1971, while manning an Air Defence Gun deployed for the protection of Srinagar Air Field, Gunner (GD) Armugam directed the fire of his gun accurately against an attack by nine enemy sabre jet aircraft and shot down one enemy aircraft. Though seriously wounded, he continued to fire his gun till he succumbed to his injuries.

In this action, Gunner Armugam displayed gallantry and professional skill of a high order.

66. 2955911 Sepoy BIRDHA RAM, The Rajput Regiment *(Posthumous)*

(Effective date of award—15th December 1971)

Sepoy Birdha Ram was a member of the crew of the Recoilless Rifle Detachment of a Battalion of The Rajput Regiment which had established a road block behind the enemy defences in an area in the Eastern Sector. On the 15th December 1971, the enemy made determined attempts to dislodge the battalion and brought heavy machine gun and mortar fire on the company localities in which this Recoilless Rifle was located. A direct hit destroyed the Recoilless Gun position, wounding the second crew of the detachment. Sepoy Birdha Ram took the recoilless rifle, and without any regard of his own safety moved forward closing in with the enemy and destroyed the Medium Machine Gun Post with his Recoilless Rifle. While moving to another position, he was hit in the chest and died on the spot.

In this action, Sepoy Birdha Ram displayed gallantry and devotion to duty of a high order.

67. 2647963 Grenadier GORAKH RAM, The Grenadiers *(Posthumous)*

(Effective date of award—11th December 1971)

Grenadier Gorakh Ram was a member of a Company Headquarters Team of a Battalion of the Grenadiers during an attack on the enemy defence at 'Chakra' in the Western Sector. The attack was launched on the night of 10th/11th December 1971, under heavy enemy small arms and artillery fire. During the assault, the Company Headquarters came under effective fire from an enemy machine gun firing from a nearby bunker. Though seriously wounded, Grenadier Gorakh Ram charged the machine gun post single handed and silenced it before succumbing to his wounds.

In this action, Grenadier Gorakh Ram displayed gallantry and determination of a high order.

68. 2649837 Grenadier GURBAX SINGH, The Grenadiers *(Posthumous)*

(Effective date of award—10th December 1971)

On the 10th December 1971, a Battalion of the Grenadiers reached the outskirts of Nainkot in the Shakargarh Sector. The enemy brought down heavy artillery, mortar and tank fire on our positions. An officer, who was in the open was seriously wounded by a shell splinter. Grenadier Gurbax Singh, with utter disregard to his personal safety rushed to the spot and lifting the wounded officer ran towards a trench. In the process, he was wounded on the head by a shell splinter as a result of which he died.

In this action, Grenadier Gurbax Singh showed commendable courage.

69. 4444667 Sepoy KARNAIL SINGH, The Sikh Light Infantry *(Posthumous)*

(Effective date of award—9th December 1971)

Sepoy Karnail Singh was part of a Divisional Commando Company during the operations in the Vera-Burj area in the Western Sector. The Vera and Burj positions were the scene of bitter fighting. On the 9th December 1971, the Commando Company was ordered to reinforce these localities. The enemy launched an attack in strength to recapture these positions. During the attack, one enemy Medium Machine Gun opened up from a well entrenched position on a flank inflicting heavy casualties on our troops. In utter disregard of his safety, Sepoy Karnail Singh charged into the bunker and succeeded in killing the enemy. In the process, he was fatally wounded by an enemy grenade.

In this action, Sepoy Karnail Singh displayed gallantry of a high order.

70. 9071115 Sepoy MOHMAD IQBAL, The Jammu and Kashmir Militia *(Posthumous)*

(Effective date of award—5th December, 1971)

Sepoy Mohmad Iqbal was a member of a party ordered to raid an important Pakistani post on a feature in the Pakistan occupied territory of Jammu and Kashmir. On the 5th December 1971, as the party was approaching the post, the enemy opened up with automatic weapons and 2 inch mortars causing heavy casualties to own troops. Sepoy Mohmad Iqbal realising the necessity of silencing the enemy mortar, charged the mortar post single handed and in the process was killed by a burst from a Light Machine Gun.

In this action, Sepoy Mohmad Iqbal displayed gallantry, initiative and determination of a high order.

71. 4541237 Sepoy KASHINATH SIVRUDRA KAMBLE, The Mahar Regiment *(Posthumous)*

(Effective date of award—12th December 1971)

Sepoy Kashinath Sivrudra Kamble was in a company of a Battalion of the Mahar Regiment during the attack on Parbat Ali in the Rajasthan Sector. When the assaulting troops were fifty yards short of the objective, one of the enemy Medium Machine Guns opened up inflicting heavy casualties on own troops. Sepoy Kashinath Sivrudra Kamble, with total disregard for his personal safety charged the enemy Machine Gun. Though seriously wounded by a burst from the gun, he crawled forward and lobbed a grenade in the bunker silencing the Machine Gun before succumbing to his injuries.

In this action, Sepoy Kashinath Sivrudra Kamble displayed commendable courage and devotion to duty.

72. 2450841 Sepoy MEHAR SINGH

The Punjab Regiment *(Posthumous)*

(Effective date of award—5th December 1971)

On the 5th December 1971 a Battalion of the Punjab Regiment was holding an area in the Eastern Sector. The enemy attacked the Battalion positions in strength supported by heavy machine gun and artillery fire. Sepoy Mehar Singh who was manning a Medium Machine Gun, came out of the trench with his machine gun to occupy a vantage position. In the process he was hit by a bullet. Though bleeding profusely, he brought down heavy fire on the enemy. He was again hit by a machine gun burst out he continued to fire till the attack was repulsed. He, however, succumbed to his injuries.

In this action Sepoy Mehar Singh displayed gallantry and determination of a high order.

73. 2658792 Grenadier MURAD KHAN,

The Grenadiers *(Posthuhous)*

A battalion of the Grenadiers was ordered to capture an enemy post in the Eastern Sector. The assault was held up by an enemy Medium Machine Gun bringing down very heavy and accurate fire from the Left Flank. With complete disregard to his personal safety and under intense fire, Grenadier Murad Khan crawled up to the Medium Machine Gun bunker and silenced the gun with a grenade. Thereafter, he saw two enemy personnel charging his Company Commander with bayonets. He immediately rushed forward and in the hand to hand fight killed one of the enemy personnel, but was himself fatally wounded.

In this action Grenadier Murad Khan displayed courage and determination of a high order.

74. 2658592 Grenadier RAFIQ KHAN,

The Grenadiers *(Posthumous)*

A Battalion of the Grenadiers, was given the task of capturing an enemy post in an area in the Eastern Sector. After the capture of the post, isolated pockets of the enemy continued to inflict casualties on own troops, particularly an enemy Light Machine Gun located in a bunker. Grenadier Rafiq Khan, with complete disregard for his personal safety crawled forward and lobbed a grenade into the bunker which burst outside wounding him seriously. Undeterred he threw another grenade and silenced the light machine gun but in the process was hit by a burst from the light machine gun as a result of which he died.

Grenadier Rafiq Khan displayed commendable courage and determination.

75. 5038478 Rifleman MOTI KUMAR NAWAR,

The Gorkha Rifles *(Posthumous)*

Rifleman Moti Kumar Nawar was the number one of a light machine gun detachment of a Battalion, of the Gorkha Rifles. His battalion was ordered to capture an enemy held post in the Eastern Sector. This was a well fortified position held in strength by the enemy. During the assault, our troops came under effective small arms and artillery fire. Rifleman Moti Kumar Nawar was seriously wounded in the thigh by a shell splinter but he kept firing his light machine gun from his hip and pressed on with the attack. When the assaulting troops closed in with the enemy defences, they were held up by an enemy heavy machine gun firing from a bunker and inflicting heavy casualties on the troops. Rifleman Moti Kumar Nawar, realising the importance of silencing this gun, discarded his light machine gun and taking two grenades in his hand charged the machine gun post single-handed. In this process, he was seriously wounded by a machine gun burst, but he managed to lob a grenade through the loop hole and silenced the gun before succumbing to his wounds.

In this action Rifleman Moti Kumar Nawar displayed gallantry and determination of a high order.

4049455 Rifleman MAKAR SINGH NEGI

The Garhwal Rifles *(Posthumous)*

(Effective date of award—5th December, 1971)

On the night of 4th/5th December, 1971, the enemy intruded into our territory and occupied a Border outpost in the Western Sector. On the 5th December 1971, two platoons of a Battalion of the Garhwal Rifles supported by a troop of tanks were ordered to recapture the post. Our assaulting troops were, however, held up due to accurate and effective fire from enemy machine guns. To silence the enemy machine gun, Rifleman Makar Singh Negi, with utter disregard to his personal safety, charged the enemy machine gun post, single handed. He was mortally wounded and died on the battle field. The post was eventually captured.

In this action, Rifleman Makar Singh Negi displayed gallantry of a high order.

77. 1179857 Gunner BHADRESWAR PATHAK

Air Defence Regiment,

The Regiment of Artillery *(Posthumous)*

(Effective date of award—7th/8th December 1971)

Gunner Bhadreswar Pathak was carrying out the duties of Ammunition number in a detachment of an Air Defence Regiment deployed for the protection of a Medium Regiment gun area in the Western Sector. On the 7th December 1971 the Medium Regiment gun area was attacked by two enemy MIG 19 aircraft. The air defence gun immediately opened intense fire on the enemy aircraft. To silence the gun, the enemy aircraft started straffing the gun at low level. Throughout the attack Gunner Bhadreswar Pathak with complete disregard to his life and safety kept on supplying ammunition to the gun resulting in the destruction of one of the enemy aircraft.

On the 8th December, 1971, five enemy F-86 sabre jet aircraft attacked his gun position. Gunner Bhadreswar Pathak kept on supplying ammunition till he was hit by a bullet. Though injured, Gunner Bhadreswar Pathak refused to be evacuated and stayed on his post till he succumbed to his injuries.

Throughout, Gunner Bhadreswar Pathak displayed gallantry and devotion to duty of a high order.

78. 5034537 Rifleman MAN BAHADUR PUN

Gorkha Rifles *(Posthumous)*

Rifleman Man Bahadur Pun was the commander of a Rocket Launcher Team in a company of a Battalion of the Gorkha Rifles during the attack on an enemy post in the Eastern Sector. The enemy defences consisted of a series of highly developed bunkers with Medium Machine Guns and Rocket Launchers dominating the area around it. Rifleman Man Bahadur Pun was on the left flank of the assaulting troops. The attacking troops came under intense artillery and mortar fire, and their advance was held up. Rifleman Man Bahadur Pun with utter disregard to his safety crawled upto one of the bunkers and silenced it with his rocket launcher. In the process, he received a burst from a light machine gun in his leg but unmindful of his injuries he crawled to another place and fired the rocket launcher a second time to silence another post. At this stage he received another burst at point blank range as a result of which he died.

In this action Rifleman Man Bahadur Pun displayed gallantry of a high order.

79. 492235 Rifleman PAS BAHADUR PUN,

Gorkha Rifles *(Posthumous)*

A Battalion of the Gorkha Rifles was ordered to clear an enemy position at Ghazipur in the Eastern Sector. During the assault, the enemy brought down intense and accurate Medium Machine Gun fire inflicting heavy casualties on own troops. Undeterred by the heavy volume of enemy fire, Rifleman Pas Bahadur Pun charged forward closing in with the enemy, killed three enemy personnel in hand to hand fight and captured one Medium Machine Gun. He was, however, seriously wounded and succumbed to his injuries.

In this action, Rifleman Pas Bahadur Pun exhibited courage and determination of a high order.

80 2449735 Sepoy AVTAR SINGH,

The Punjab Regiment *(Posthumous)*

(Effective date of award—10th December 1971)

On the night of 10th/11th December 1971, Sepoy Avtar Singh of a Battalion of the Punjab Regiment formed part of a force attacking the Right Shoulder of Nangi Tekri in the Jammu and Kashmir Sector. This was a well fortified position held in strength by the enemy. During the attack, the assulting troops were subjected to intense artillery and medium machine gun fire as a result of which Sepoy Avtar Singh lost one of

his legs. Undaunted, he crawled upto a Medium Machine Gun post in a bid to destroy it and while hurling himself at the Medium Machine Gun, he was hit by a burst of automatic fire as a result of which he died.

In this action, Sepoy Avtar Singh displayed gallantry and determination of a high order.

81. 2858706 Rifleman CHAGAN SINGH,
The Rajputana Rifles (*Posthumous*)

While clearing an enemy post in the Eastern Sector, Rifleman Chagan Singh's platoon came under intense shelling and heavy small arms fire. When about twenty five yards short of the enemy position, he spotted an enemy 106 mm. re-coilless gun inside a bunker. Although wounded, he crawled upto the bunker. In the process, he received another light machine gun burst, but he destroyed the enemy bunker with hand grenades before succumbing to his injuries.

In this action, Rifleman Chagan Singh exhibited gallantry and determination of a high order.

82. 2457287 Sepoy JAGJIT SNGH
The Punjab Regiment (*Posthumous*)

(*Effective date of award—5th December* 1971)

On the 5th December, 1971, the enemy launched an attack in strength with infantry and armour on the defences occupied by a Battalion of the Punjab Regiment in the Rajasthan Sector. Sepoy Jagjit Singh was manning a light machine gun post in the forward defended locality. During the attack, his bunker was badly damaged by enemy fire. Realising the importance of maintaining a heavy volume of fire against the enemy, he with utter disregard to his personal safety, came out in the open and started firing his gun, till he was killed by enemy fire.

In this action, Sepoy Jagjit Singh displayed gallantry and determination of a high order.

83. 2860932 Rifleman PREM SINGH,
The Rajputana Rifles (*Posthumous*)

A Battalion of the Rajputana Rifles was given the task of capturing an enemy post in the Eastern Sector During the assault, the enemy brought down intense and accurate Medium Machine Gun fire inflicting heavy casualties and pinning down the assaulting troops. Rifleman Prem Singh who was part of the assaulting troops realising the importance of silencing the machine gun, crawled forward and charged the enemy post and silenced the gun. In the process he was hit by a burst from the Machine Gun as a result of which he died His action inspired his colleagues and the objective was captured.

In this action, Rifleman Prem Singh displayed gallantry of a high order.

84. 2464113 Sepoy SAMPURAN SINGH,
The Punjab Regiment (*Posthumous*)

Sepoy Sampuran Singh was with a Company of a Battalion of the Punjab Regiment, which was assigned the task of capturing Branchil Pass in the Kargil Sector. The assault was held up due to accurate and intense Medium Machine Gun fire from the enemy defence. Sepoy Sampuran Singh lobbed a grenade into the bunker and destroyed the Medium Machine Gun. In the process, he was seriously wounded and he succumbed to his injuries.

In this action, Sepoy Sampuran Singh displayed gallantry and devotion to duty of a high order.

85. 2964587 Sepoy SATYAWAN SINGH,
The Rajput Regiment (*Posthumous*)

(*Effective date of award—5th December* 1971)

Sepoy Satyawan Singh of a Battalion of the Rajput Regiment was part of a commando force given the task of capturing an enemy locality in the Dera Baba Nanak area in the Western Sector. Sepoy Satyawan Singh was accompanying the leading elements with his Company Commander when a Medium Machine Gun opened up from a pill box from the flank causing heavy casualties to our troops. Realising the necessity of silencing this gun, he with complete disregard to his personal safety charged the pill box and silenced the enemy Medium Machine Gun killing the enemy. In this process, he was seriously wounded as a result of which he died

In this action, Sepoy Satyawan Singh displayed cool gallantry and determination of a high order

86. 5743894 Rifleman DALIP SINGH THAPA
Gorkha Rifles (*Posthumous*)

Rifleman Dalip Singh Thapa of a Battalion of the Gorkha Rifles was manning a Light Machine Gun on the east bank of Munnawar Tawi, in the Western Sector. On the night of 8th/9th December 1971, the enemy attacked his company position under cover of intense artillery fire. Rifleman Dalip Singh Thapa opened up fire with his Light Machine Gun inflicting heavy casualties on the enemy. His trench was destroyed and he himself was severely wounded by a direct hit by an enemy shell, but undeterred he crawled out of his trench and continued manning the gun till he succumbed to his injuries.

In this action, Rifleman Dalip Singh Thapa displayed gallantry of a high order.

No. 78-Pres./72.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Commander MUKADAVIL OMMEN OMMEN (E)
Indian Navy (*Posthumous*)

Commander Mukadavil Ommen Ommen was the Engineer Officer of the Indian Naval ship KHUKRI, which sank in the Arabian Sea after a Pakistani submarine attack.

On the 9th December, 1971, whilst carrying out an anti-submarine hunt Indian Naval Ship KHUKRI was hit by a torpedo. On realising the danger to his men, Commander Ommen went below to get his men to safety. In the meantime, the ship was hit by another torpedo. Despite the fact that the chances of his survival were getting less every second, he continued to help his men to safety and in so doing made the supreme sacrifice.

Throughout, Commander Mukadavil Ommen Ommen displayed courage and devotion to duty of a high order.

2. Lieutenant Commander PRABHAT KUMAR (L)
Indian Navy (*Posthumous*)

Lieutenant Commonder Prabhat Kumar was the Electrical Officer of the Indian Naval Ship KHUKRI, which sank in the Arabian Sea after a Pakistani submarine attack.

On the 9th December, 1971, whilst carrying out an anti-submarine hunt, Indian Naval Ship KHUKRI was hit by a torpedo. On realising the danger to his men, Lieutenant Commander Prabhat Kumar went below to get his men to safety. In the meantime, the ship was hit by another torpedo. Despite the fact that the chances of his survival were getting less every second, he continued to help his men to safety and in so doing made the supreme sacrifice.

Throughout, Lieutenant Commander Prabhat Kumar displayed courage and devotion to duty of a high order.

3. Lieutenant Commander RAJAT KUMAR SEN (S)
Indian Navy (*Missing*)

Lieutenant Commander Rajat Kumar Sen was the Supply Officer of the Indian Naval Ship KHUKRI, which sank in the Arabian Sea after a Pakistani submarine attack.

On the 9th December, 1971, whilst carrying out an anti-submarine hunt, Indian Naval Ship KHUKRI was hit by a torpedo. On realising the danger to his men, Lieutenant Commander Sen went below to get his men to safety In the meantime, the ship was hit by another torpedo. Despite the fact that the chances of his survival were getting less every second, he continued to help his men to safety and in so doing made the supreme sacrifice.

Throughout, Lieutenant Commander Rajat Kumar Sen displayed courage and devotion to duty of a high order.

4. Lieutenant Commander JOGINDER KRISHAN SURI (X)
Indian Navy (*Posthumous*)

Lieutenant Commander Joginder Krishan Suri was Second-in-Command of the Indian Naval Ship KHUKRI which sank in the Arabian Sea after a Pakistani submarine attack.

On the 9th December, 1971, when his Ship was hit by enemy torpedoes, Lieutenant Commander Joginder Krishan Suri realising the danger to his men rushed and cut all the life saving floats and rafts and threw them in the sea Despite the fact that the chances of his survival were getting less every second, he continued to guide his men to safety and managed to save a large number. In so doing, he made the supreme sacrifice.

Throughout, Lieutenant Commander Joginder Krishan Suri displayed courage and devotion to duty of a high order.

5. Surgeon Lieutenant SUDHANSU SEKHAR PANDA
Indian Navy (*Posthumous*)

Surgeon Lieutenant Sudhansu Sekhar Panda was the Medical Officer on board Indian Naval Ship KHUKRI which sank in the Arabian Sea after a Pakistani submarine attack.

On the 9th December, 1971, when his Ship was hit by enemy torpedo, Surgeon Lieutenant Panda in complete disregard to his personal safety, went down to the Ship's sick bay to ensure that the sick and wounded personnel were brought on deck for evacuation. In the meantime, the Ship was hit by another torpedo and despite the fact that he was aware that the chances of his survival were decreasing every second, he continued to evacuate the sick and wounded to the upper deck. In so doing, he made the supreme sacrifice

Throughout, Surgeon Lieutenant Sudhansu Sekhar Panda displayed courage and devotion to duty of a high order.

6. Lieutenant SURESH GAJANAN SAMANT (X)
Indian Navy (*Posthumous*)

Lieutenant Suresh Gajanan Samant was on board an Indian Navan Unit, which attacked Karachi. On the night of 4th/5th December, 1971, as Navigating Officer, he was responsible for getting the Ships in a position to attack enemy Ships off Karachi and also other installations in the harbour. He displayed great professional skill and devotion to duty and was instrumental in achieving the aim of the mission. Subsequently, he laid down his life while searching for the under water saboteurs around a naval anchorage.

Throughout, Lieutenant Suresh Gajanan Samant displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

No. 79-Pres./72.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Squadron Leader JAL MANIKSHA MISTRY (5006)
Flying (Pilot) (*Posthumous*)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Jal Maniksha Mistry was a Senior Pilot in a Fighter Bombar Squadron. On 4th December, 1971, he carried out a counter air penetration mission to Kohat and caused extensive damage to the airfield. On 5th December, he was leading a formation of two aircraft on the strike mission to Sakesar Radar Station which was very heavily defended. The aircraft flown by his Number two became unserviceable at take off. Undeterred by this, he proceeded alone on this mission. After reaching the target he attacked the Radar Station in the face of heavy ground fire and succeeded in damaging and putting the radar station off the air.

Throughout, Squadron Leader Jal Maniksha Mistry displayed commendable courage, determination and devotion to duty.

2. Squadron Leader JIWA SINGH (4893),
Flying (Pilot) (*Posthumous*)

At the outbreak of hostilities with Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Jiwa Singh was on the strength of a Fighter Squadron. During the operations, Squadron Leader Jiwa Singh led a formation to search and strike enemy tanks and troops which were engaging our ground forces. He successfully located the hidden tank positions and pressed home his attack even though his section was encircled by four enemy aircraft. He engaged an enemy F-104 in an aerial Combat so that his number two could get away to safety. In the combat, his aircraft was shot at low level as a result of which he was killed.

In this operation, Squadron Leader Jiwa Singh displayed gallantry and devotion to duty of a high order.

3. Squadron Leader RAMESH CHANDER SACHDEVA (5306)
Flying (Pilot) (*Posthumous*)

During the conflict with Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Ramesh Chander Sachdeva served with a Fighter Bomber Squadron. On 4th December, 1971, he carried out attacks against very heavy ack-ack defended targets at Chittagong and later destroyed seven trains, carrying vital supplies to the Pakistani forward positions, at Laksham. He flew 15 operational sorties in 6 days and destroyed a number of ships, tanks, Gun positions, bunkers, trains and fuel tanks in the face of heavy ground fire. He landed back with serious bullet holes in the aircraft on two occasions. On 10th December, 1971, while carrying out a sortie, his engine flamed out after an attack on an enemy boat and his aircraft crashed as a result of which he died.

Throughout, Squadron Leader Ramesh Chander Sachdeva displayed gallantry, leadership, determination and flying skill of a high order.

4. Flight Lieutenant PRADIP VINAYAK APTE (10456),
Flying (Pilot) (*Posthumous*)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Pradip Vinayak Apte was serving in a Fighter Bomber Squadron. On the 4th December, 1971, he was detailed as Number Two on a tactical reconnaissance mission in Naya Chor-Umarkot-Dhornaro area. Near Naya Chor, he observed enemy vehicle convoys moving towards Dhornaro Railway Station. He immediately went in for a front gun attack and scored direct hits on the vehicles. This mission then flew over Dhornaro Railway Station and once again he spotted a goods train which was being unloaded. He attacked the train despite concentrated ground fire and caused considerable damage to the wagons. He pressed on with his third attack but while pulling up, his aircraft was damaged by the ground fire. He brought the damaged aircraft under control and headed for the base which was about 100 miles. Under compelling circumstances, he abandoned the aircraft. In this operation, he made the supreme sacrifice.

Throughout, Flight Lieutenant Pradip Vinayak Apte displayed gallantry and determination of a high order.

5. Flight Lieutenant ANDRE RUDOLPH DA COSTA (8175)
Flying (Pilot) (*Posthumous*)

On the 4th December, 1971, Flight Lieutenant Andre Rudolph Da Costa flew as Number Two on offensive reccee sorties in Lal Munirhat in the Rangpur Sector. After successfully straffing the Army targets, the pair attacked a goods train south of Lal Munirhat bridge and both the aircraft ejected close to base. Flight Lieutenant Da Costa was also hit and although he tried to bring his aircraft back, he fell unconscious and his aircraft crashed as a result of which he died.

In this action, Flight Lieutenant Andre Rudolph Da Costa displayed gallantry of a high order.

6. Flight Lieutenant LAWRENCE FREDRIC PEREIRA (8678)
Flying (Pilot) (*Posthumous*)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Lawrence Fredric Pereira was employed on Forward Air Controller duties with an Army brigade in a forward area. He was required to direct close air support aircraft on to enemy targets from forward locations. His directions were responsible for many successful attacks by our aircraft on enemy concentrations. On the 14th December, 1971, while performing his duties, he was hit by enemy bullets as a result of which he died.

Throughout, Flight Lieutenant Lawrence Fredric Pereira displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

7. Flight Lieutenant VIJAY KUMAR WAHI (10114)
Flying (Pilot) (*Posthumous*)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Vijay Kumar Wahi was a pilot in a Fighter Bomber Squadron. On 6th December, 1971, he was detailed as number two in an Air to Ground mission to Chhamb area. The target was heavily defended by anti aircraft guns and enemy aircraft but the destruction of this target was of vital importance to our ground forces which were under heavy pressure. He pressed home the attacks and knocked out two enemy tanks. While returning from the mission, his aircraft was hit and he ejected sustaining fatal injuries.

In this action, Flight Lieutenant Vijay Kumar Wahi displayed gallantry, determination and professional skill of a high order.

No. 80-*Pres./*72.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. 613 Deputy Commandant INDERJIT SINGH UPPAL, The Border Security Force (*Posthumous*)

Shri Inderjit Singh Uppal of the Border Security Force was commanding two Companies of a Battalion which were deployed in an area in the Eastern Sector. After an enemy position was captured, one of the Companies came under heavy fire from an enemy machine gun and the Company was pinned down. In complete disregard of his safety, Shri Inderjit Singh Uppal took one Medium Machine Gun Group and directed his fire towards the enemy maschine gun. In the process, he was hit by a bullet as a result of which he died.

Throughout, Shri Inderjit Singh Uppal displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

2. No. 66276064 Head Constable MOHINDER SINGH, The Border Security Force. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—3rd December* 1971)

Head Constable Mohinder Singh was commanding a section post in the Border Security Force position in an area in the Western Sector. On the 3rd December, 1971 the enemy attacked this post with two Rifle Companies supported by a Divisional Artillery Fire. Head Constable Mohinder Singh held the fire of his section till the enemy was within 50 yards and repulsed the attack by accurate and sustained fire from his section weapons. He inspired his men to stand and fight. The enemy launched another attack in strength on the post and this time it succeeded in reaching the wire obstacles surrounding the post. Undaunted and with utter disregard of his personal safety, Head Constable Mohinder Singh ran out of his trench and rallying his men charged at the enemy, killing four of them with his sten gun. He continued to fight till he was seriously wounded by enemy light machine gun fire, as a result of which he died.

In this action, Head Constable Mohinder Singh displayed gallantry and determination of a high order.

3. No. 68588913 Naik UMED SINGH, The Border Security Force. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—6th December,* 1971)

Naik Umed Singh was incharge of the Mortar Section at a picquet in the Western Sector. On the 6th December, 1971, the picquet was attacked by enemy in strength supported by intense mortar and automatic fire. Naik Umed Singh moved from one mortar position to another to inspire his men and ensure continuous fire on the targets. During this period an enemy shell burst near him and he was seriously wounded. Naik Umed Singh refused to be evacuated and he stayed in the motar position till the enemy attack was repulsed and their mortar silenced. He, however, succumbed to his injuries, soon after his evacuation.

In this action, Naik Umed Singh displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

4. 647 Deputy Commandant Shri JOGINDER SINGH, The Border Security Force. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—17th December,* 1971)

Shri Joginder Singh, Deputy Commandant was incharge of the post Group Artillery of the Border Security Force which was organised to supplement the fire support of the Border Security Force Battalions employed in the Rajasthan Sector. On the 17th December, 1971, he was assigned the task of organising fire support for the units taking up defensive positions west of Virawah. After the reconnaissance, as his party was returning to Virawah, the enemy opened up from close range with heavy machine gun and mortar fire. He immediately jumped out of his vehicle and marshalling his small party, assaulted the enemy. Though hit by a machine gun burst, he led the troops, fighting hand to hand till he succumbed to his injuries.

In this action, Shri Joginder Singh displayed commendable courage, determination and leadership.

The 6th June 1972

No. 81-*Pres./*72.—The President is pleased to award the President's Police and Fire Services Medal for distinguished service to the undermentioned officers in connection with the distinguished services rendered during the Indo-Pak conflict 1971 and Bangladesh operations :—

Shri Ghana Kanta Medhi,
Deputy Inspector General of Police,
Criminal Investigation Department,
Assam.

Shri Sudhir Ranjan De,
Commandant,
6th Assam Police Battalion,
Assam.

Major General Narainder Singh,
Inspector General (Operations)
Border Security Force.

Shri Ranjit Singh,
Inspector General,
Border Security Force.

Shri D. N. Kaul,
Deputy Director,
Border Security Force.

Brig. Sucha Singh,
Deputy Director (Training),
Border Security Force.

Brig. G. S. Randhawa,
Deputy Inspector General,
Border Security Force.

Col. Gurdas Singh,
Assistant Director,
Border Security Force.

Lt. Col. Megh Singh,
Commandant,
18th Battalion,
Border Security Force.

Shri D. A. Mahadkar,
Commandant,
75th Battalion,
Border Security Force.

Shri Sampuran Singh,
Commandant,
31st Battalion,
Border Security Force.

Shri Debakanta Kakati,
Divisional Organiser,
Cabinet Secretariat.

Shri Hara Nath Sarkar,
Divisional Organiser,
Cabinet Secretariat.

Lt. Col. Nasib Singh,
Commandant,
VII Battalion,
Indo-Tibetan Border Police.

2. These awards are made under rule 4(ii) of the rules governing the grant of the President's Police and Fire Services Medal

No. 82-*Pres./*72.—The President is pleased to award the Police Medal for meritorious service to the undermentioned officers in connection with the meritorious services rendered during Indo-Pak conflict 1971 and Bangladesh operations :—

1. Shri Satish Kumar Jha,
Superintendent of Police,
Garo Hills,
Assam.

2. Shri Debendra Nath Sonowal
Superintendent of Police,
Cachar,
Assam.

3. Shri Usha Ranjan Dutta,
Deputy Superintendent of Police,
Shillong,
Assam.

4. Shri Tripuratonoy Bhattacharjee,
Inspector,
6th A.P. Battalion,
Assam.

5 Shri Muharam Dutta
Inspector of Police
Special Branch
Shillong,
Assam

6 Shri Nebendu Ranjan Sil,
Sub-Inspector of Police,
Cachar District Executive Force,
Assam

7 Shri Mohini Ranjan Barman
Inspector of Police,
Dubri
Assam

8 Shri Nagendra Chandra Baruah,
Sub Inspector of Police
Garo Hills District,
Assam

9 Shri Jitendra Kr Choudhury,
Sub Inspector of Police
Special Branch,
Assam.

10 Shri Dakshina Ranjan Roy
Inspector of Police,
Special Branch,
Assam

11 Shri Priyadhar Nath,
Sub Inspector of Police
Mankachar Police Station,
Assam

12 Shri Ranchhod Sava Rabari,
Armed Police Constable,
Banaskantha District,
Gujarat

13 Shri R K Sharma,
Senior Superintendent of Police,
Ferozepore,
Punjab

14 Shri S R Sharma,
Superintendent of Police,
Gurdaspur,
Punjab

15 Shri Kapur Singh,
Inspector of Police No 59/W. (*Officiating*)
Punjab

16 Shri Sher Singh,
Sub-Inspector of Police No 176/LDH, (*Officiating*)
Punjab

17 Shri Tej Singh,
Superintendent of Police,
Jaisalmer District,
Rajasthan

18 Shri D R Puri
Superintendent of Police,
Ganganagar District,
Rajasthan

19 Shri Swarup Kumar Mukherjee,
Superintendent of Police,
West Dinajpur,
West Bengal

20 Shri Sathindra Bikash Ghosh
Sub Inspector of Police,
Cooch Behar
West Bengal

21 Shri Ankesh Chandra Acharyya,
Sub Inspector of Police,
Cooch Behar,
West Bengal

22 Shri Rebati Nath Biswas
Sub Inspector of Police,
West Dinajpur,
West Bengal

23 Shri Subhas Chandra Roy Bhowmick,
Sub Inspector of Police,
Sonamura,
Tripura.

24 Shri Birendra Nath Mukherjee,
Sub-Inspector of Police,
Sabroom
Tripura

25 Shri Nirode Bandhu Chakraborty,
Deputy Superintendent of Police,
Special Branch,
Tripura

26 Shri Biswa Bhusan Mukherjee,
Circle Inspector of Police,
Sonamura,
Tripura

27 Shri Nanigopal Bhattacharjee,
Sub-Inspector of Police,
Belonia,
Tripura

28 Shri Radha Mohan Sinha
Sub-Inspector of Police,
Kamalpur,
Tripura.

29 Shri Amulya Deb Barma
Sub-Inspector of Police,
Tripura.

30 Shri Samarendra Das,
Havildar,
Kamal Sub Treasury,
Tripura

31 Shri Aparna Ranjan Bhattacherjee,
Inspector of Police,
Agartala,
Tripura.

32 Shri Brijpal Singh,
Deputy Inspector General,
Border Security Force

33 Brig Sri Ram,
Deputy Inspector General, Rajouri,
Border Security Force

34 Lt Col Prabir Kumar Chakrabarti,
Commandant,
76th Battalion,
Border Security Force

35 Col P Sharma,
Commandant,
Central Stores & Workshop,
Border Security Force

36 Lt Col P K Banerjee
Commandant,
91st Battalion,
Border Security Force

37 Shri M A S Khan,
Deputy Director,
Border Security Force

38 Shri S P Banerjee,
Deputy Inspector General, Shillong,
Border Security Force

39 Shri B K Varma,
Assistant Director,
Border Security Force Headquarters,

40 Shri T Ananta Chari,
Assistant Director,
Border Security Force Headquarters

41 Shri Ramen Das,
Commandant,
87th Battalion
Border Security Force

42 Shri Surjit Singh Mann,
Commandant,
24th Battalion,
Border Security Force

43 Santimoy Bardhan,
Deputy Commandant,
91st Battalion,
Border Security Force

44 Shri Birendra Narayan Bhattacharjee,
Joint Assistant Director (Communications),
Border Security Force.

45. Lt. Col. S. J. S. Rajamanikkam,
Commandant,
25th Battalion,
Central Reserve Police Force.

46. Major Prem Raj,
Commandant,
20th Battalion,
Central Reserve Police Force.

47. Shri Devendra Kumar,
Deputy Superintendent of Police,
25th Battalion,
Central Reserve Police Force.

48. Shri Harmail Singh,
Head Constable No. 80/87,
Cabinet Secretariat.

49. Shri Rajanikant Sevaklal Parekh,
Deputy Director,
Cabinet Secretariat.

50. Shri Ranbir Singh Yadav,
Area Organiser,
Cabinet Secretariat.

51. Tribhuwan Singh Bisht,
Assistant Inspector General,
Indo-Tibetan Border Police.

2. These awards are made under rule 4(ii) of the rules governing the grant of the Police Medal.

P. N. KRISHNA MANI, Jt. Secy. to the President

LOK SABHA SECRETARIAT

New Delhi-1, the 26th May 1972

No. 5/1/72/PAC.—The following Members of Lok Sabha and Rajya Sabha have been elected to serve as Members of the Committee on Public Accounts for the term ending on 30th April, 1973.

Members of Lok Sabha

1. Shri Bhagwat Jha Azad.
2. Shri R. V. Bade.
3. Shrimati Mukul Banerji.
4. Shri Jyotirmoy Bosu.
5. Shri K. G. Deshmukh.
6. Chaudhari Tayyab Husain Khan.
7. Shri Debendra Nath Mahata.
8. Shri Mohammad Yusuf.
9. Shri B. S. Murthy.
10. Shri S. A. Muruganantham.
11. Shri Ramsahai Pandey.
12. Shri H. M. Patel.
13. Shrimati Savitri Shyam.
14. Shri Era Sezhiyan.
15. Shri Ram Chandra Vikal.

Members of Rajya Sabha

16. Shri M. Anandam.
17. Shri Golap Barbora.
18. Shri Bipinpal Das.
19. Shri P. S. Patil.
20. Shri Kalyan Roy.
21. Shri Swaisingh Sisodia.
22. Shri Shyam Lal Yadav.

2 The Speaker has been pleased to appoint Shri Era Sezhiyan as the Chairman of the Committee.

B. B. TEWARI, Dy. Secy.

CABINET SECRETARIAT

(Department of Personnel)

RULES

New Delhi, the 17th June, 1972

No. 32/9/72-Estt.(E).—The rules for a competitive examination to be held by the Union Public Service Commission in 1973 for the purpose of filling vacancies in Grade IV of the following Services are published for general information :—

(i) The Indian Economic Service, and

(ii) The Indian Statistical Service.

2. The number of vacancies to be filled on the results of the examination will be specified in the Notice issued by the Commission. Reservation will be made for candidates belonging to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes in respect of vacancies as may be fixed by the Government.

Scheduled Castes/Tribes mean any of the Castes/Tribes mentioned in the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950, the Constitution (Scheduled Castes) (Part C States) Order, 1951, the Constitution (Scheduled Tribes) Order, 1950, the Constitution (Scheduled Castes) (Part C States) Order 1951, as amended by the Scheduled Castes and Scheduled Tribes Lists (Modification) Order, 1956 read with the Bombay Reorganisation Act, 1950 and the Punjab Reorganisation Act, 1966; the Constitution (Jammu and Kashmir) Scheduled Castes Order, 1956, the Constitution (Andaman and Nicobar Islands) Scheduled Tribes Order, 1959, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes Order, 1962, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Tribes Order, 1962, the Constitution (Pondicherry), Scheduled Castes Order, 1964, the Constitution (Scheduled Tribes) (Uttar Pradesh) Order, 1967, the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Castes Order, 1968, the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Tribes Order, 1968 and the Constitution (Nagaland) Scheduled Tribes Order, 1970.

3. The examination will be conducted by the Union Public Service Commission in the manner prescribed in Appendix II to these rules.

The dates on which and the places at which the examination will be held shall be fixed by the Commission.

4. A candidate must be either :—

(a) a citizen of India, or

(b) a subject of Sikkim, or

(c) a subject of Nepal, or

(d) a subject of Bhutan, or

(e) a Tibetan refugee who came over to India, before the 1st January, 1962, with the intention of permanently settling in India, or

(f) a person of Indian origin who has migrated from Pakistan, Burma, Ceylon and East African countries of Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar) with the intention of permanently settling in India.

Provided that a candidate belonging to categories (c), (d), (e) and (f) above shall be a person in whose favour a certificate of eligibility has been issued by the Government of India.

A candidate is whose case a certificate of eligibility is necessary may be admitted to the examination and he may also provisionally be appointed subject to the necessary certificate being given to him by the Govermnent.

5. (a) A candidate for admission to this examination must have attained the age of 21 years and must not have attained the age of 26 years on 1st January, 1973, *i.e.*, he must have been born not earlier than 2nd January, 1947, and not later than 1st January, 1952.

(b) The upper age limit prescribed above will be relaxable :—

(i) up to a maximum of five years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;

(ii) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* displaced person from East Pakistan and has migrated to India on or after 1st January, 1964;

(iii) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* displaced person from East Pakistan and has migrated to India on or after 1st January, 1964;

(iv) up to a maximum of three years if a candidate is a resident of the Union Territory of Pondicherry and has received education through the medium of French at some stage;

(v) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Ceylon and has migrated to India on or after 1st November, 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;

(vi) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Ceylon and has migrated to India on or after 1st November, 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;

(vii) up to a maximum of three years if a candidate is a resident of the Union Territory of Goa, Daman and Diu;

(viii) up to a maximum of three years if a candidate is of Indian origin and has migrated from Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar);

(ix) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;

(x) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;

(xi) up to a maximum of three years in the case of Defence Services personnel disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof; and

(xii) up to a maximum of eight years in the case of Defence Services personnel disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof who belong to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribs.

SAVE AS PROVIDED ABOVE THE AGE LIMITS PRESCRIBED CAN IN NO CASE BE RELAXED.

6. (a) A candidate for the Indian Economic Service must have obtained a degree with Economics or Statistics as a subject from any of the Universities enumerated in Appendix I.

(b) A candidate for the Indian Statistical Service must have obtained a degree with Statistics or Mathematics or Economics as a subject from any of the Universities enumarated in Appendix I or possess any of the qualifications mentioned in Appendix I-A.

NOTE I.—A candidate who has appeared at an examination the passing of which would render him eligible to appear at this examination but has not been informed of the result may apply for admission to the examination. A candidate who intends to appear at such a qualifying examination may also apply provided the qualifying examination is completed before the commencement of this examination. Such candidates will be admitted to the examination, if otherwise eligible, but the admission would be deemed to be provisional and subject to cancellation if they do not produce proof of having passed the examination, as soon as possible, and in any case not later than two months after the commencement of this examination.

NOTE II.—In exceptional cases the Union Public Service Commission may treat a candidate, who has not any of the foregoing qualifications, as a qualified candidate provided that he has passed examinations conducted by other institutions, the standard of which in the opinion of the Commission, justifies his admission to the examination.

NOTE III.—A candidate who is otherwise qualified but who has taken a degree from a foreign university which is not included in Appendix I, may also apply to the Commission and may be admitted to the examination at the discretion of the Commission.

7. Candidates must pay the fee prescribed in Annexure I to the Commission's Notice.

8. A candidate already in Government Service, whether in a permanent or a temporary capacity, must obtain prior permission of the Head of the Department to appear for the Examination.

9. The decision of the Commission as to the eligibility or otherwise of a candidate for admission to the examination shall be final.

10. No candidate will be admitted to the examination unless he holds a certificate of admission from the Commission.

11. Any attempt on the part of a candidate to obtain support for his candidature by any means may disqualify him for admission.

12. A candidate who is or has been declared by the Commission guilty of impersonation or of submitting fabricated documents or documents which have been tampered with or of making statements which are incorrect or false or of suppressing material information or otherwise resorting to any other irregular or improper means for obtaining admission to the examination, or of using or attempting to use unfair means in the examination hall or of misbehaviour in the examination hall, may, in addition to rendering himself liable to criminal prosecution,—

(a) be debarred permanently or for a specified period :—

(i) by the Commission, from admission to any examination or appearance at any interview held by the Commission for selection of candidates; and

(ii) by the Central Government from employment under them;

(b) be liable to disciplinary action under the appropriate rules, if he is already in service under Government.

13. Candidates who obtain such minimum qualifying marks in the written examination as may be fixed by the Commission in their discretion shall be summoned by them for *viva voce*.

14. After the examination, the candidates will be arranged by the Commission in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finaly awarded to each candidate and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified by the examination shall be recommended for appointment up to the number of unreserved vacancies decided to be filled on the results of the examination.

Provided that candidates belonging to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes may, to the extent the number of vacancies reserved for the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes can not be filled on the basis of the general standard, be recommended by the Commission by a relaxed standard to make up the deficiency in the reserved quota, subject to the fitness of these candidates for appointment to the Services, irrespective of their ranks in the order of merit at the examination.

15. The form and manner of communication of the result of the examination to individual candidates shall be decided by the Commission in their discretion and the Commission will not enter into correspondence with them regarding the result.

16. In the case of the candidates competing for both the Services, due consideration will be given to the order of preference expressed by a candidate at the time of his application.

17. Success in the examination confers no right to appointment, unless Government are satisfied after such enquiry as may be considered necessary, that the candidate is suitable in all respects for appointment to the Service.

18. A candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the discharge of his duties as an officer of the Service. A candi-

date who after such physical examination as Government or the appointing authority, as the case may be may prescribe is found not to satisfy these requirements, will not be appointed. Any candidate called for viva voce by the Commission may be required to undergo physical examination.

NOTE.—In order to prevent disappointment candidates are advised to have themselves examined by a Government Medical Officer of the standing of a Civil Surgeon, before applying for admission to the examination, Particulars of the nature of medical test to which candidates will be subjected before appointment and of the standards required are given in Appendix IV to these Rules. For the disabled ex-Defence Services personnel the standards will be relaxed consistant with the requirements of the Service(s).

19. No person :

(a) who has entered into or contracted a marriage with a person having a spouse living or

(b) who, having a spouse living, has entered into or contracted a marriage with any person,

shall be eligible for appointment to service.

Provided that the Central Government may if satisfied that such marriage is permissible under the personal law applicable to such person and the other party to the marriage and there are other grounds for so doing, exempt any person from the operation of this rule.

20. Brief particulars relating to the Services to which recruitment is being made through this examination are stated in Appendix III.

B. L. MATHURIA
Under Secy.

APPENDIX I

List of Universities approved by the Government of India (vide Rule 6)

INDIAN UNIVERSITIES

Any University incorporated by an Act of the Central or State Legislature in India or other educational institutions established by an Act of Parliament or declared to be deemed as Universities under Section 3 of the University Grants Commission Act 1956.

UNIVERSITIES IN BURMA

The University of Rangoon.

The University of Mandalay.

ENGLISH AND WELSH UNIVERSITIES

The Universities of Birmingham, Bristol, Cambridge, Durham, Leeds, Liverpool, London, Manchester, Oxford, Reading, Sheffield and Wales.

SCOTTISH UNIVERSITIES

Universities of Aberdeen, Edinburgh, Glasgow and St. Andrews.

IRISH UNIVERSITIES

The University of Dublin Trinity (College).

The National University of Ireland.

The Queen's University, Belfast.

UNIVERSITIES IN PAKISTAN

The University of Punjab.

The University of Sind.

UNIVERSITIES IN BANGLADESH

The Rajshahi University.

The Dacca University.

UNIVERSITY IN NEPAL

The Tribhuvan University, Kathmandu.

APPENDIX I-A

List of qualifications recognised for admision to the examination for the Indian Statistical Service only [vide Rule 6(b)].

(i) Statisticians Diploma of the Indian Statistical Institute, Calcutta.

(ii) Professional Statisticians Certificate of the Institute of Agricultural Research Statistics, ICAR, New Delhi.

APPENDIX II

SECTION I

Plan of the Examination

The competitive examination for the Indian Economic Service and the Indian Statistical Service comprises :—

(I) Written Examination in—

(i) compulsory subjects as set out in Sub-Sections (A) (a) and (B) (a) respectively of Section II below, carrying a maximum of 700 marks,

(ii) A selection from the optional subjects set out in Sub-Sections (A) (b) and (B) (b) respectively of Section II below. Subjects to the provisions of those Sub-Sections, candidates may take optional subjects up to a total of 400 marks for each Service.

(II) Viva-voce (vide Part B of the Schedule to this Appendix) of such candidates as may be called by the Commission, carrying a maximum of 250 marks.

SECTION II

Examination Subjects

(A) The Indian Economic Service

(a) Compulsory subjects [vide Sub-Section (I) (i) of Section I above].

	Maximum Marks
(1) General English	150
(2) General Knowledge	150
(3) Economics I	200
(4) Economics II	200

(b) Optional subjects (vide Sub-Section (I) (ii) of Section I above.)

	Maximum Marks
(1) Comparative Economic Development	200
(2) Money and Public Finance	200
(3) Rural Economics and Co-operation	200
(4) International Economics	200
(5) Statictics I	200
(6) Statistics II	200
(7) Mathematical Economics and Econometrics.	200
(8) Sample Surveys	200
(9) Industrial Economics	200
(10) Theory and Practice of Trade	200
(11) Business Finance and Accounts	200
(12) Business Management and Commercial Law	200

Provided that no candidate shall be allowed to offer both "International Economics" (44) and "Theory and Practice of Trade" (10).

*In this subject there will be separate papers on each of the following five branches, viz., (1) Industrial Statistics, (including statistical quality control) (ii) Economic Statistics, (iii) Educational Statistics, (iv) General Statistics and (v) Demography and Vital Statistics, of which a candidate is required to choose any two. Each paper will carry a maximum of 100 marks.

(B) The Indian Statistical Service.

(a) Compulsory Subjects (Vide Sub-Section (1) (i) of Section I above).

	Maximum Marks
(1) General English	150
(2) General Knowledge	150
(3) Statistiecs I	200
*(4) Statistics II	200

(b) Optional subjects (vide Sub-Section (i) (ii) of Section I above).

	Maximum Marks
(1) Advanced Probability and Stochasic Processes.	200
(2) Statistical Infeience	200
(3) Design of Experiments	200
(4) Sample Surveys	200
(5) Economics I	200
(6) Economics II	200
(7) Mathematical Economics and Econometrics	200
(8) Comparative Economic Development	200
(9) Pure Mathematics I	200
(10) Pure Mathematics II	200
(11) Pure Mathematics III	200
(12) Applied Mathematics	200

*In this subject, there will be separate papers on each of the following five branches, viz., (i) Industrial Statistics, including statitical quality control) (ii) Economic Statistics, (iii) Educational Statistics, (iv) General Statistics and (v) Demography and Vital Statistics, of which a candidate is required to choose any two. Each paper will carry a maximum of 100 marks.

Note.—The standard and syllabi of the subjects mentioned in this Section are given in Part A of the Schedule to this Appendix.

SECTION III

General

1. ALL QUESTION PAPERS MUST BE ANSWERED IN ENGLISH.

2 There will be one paper of three hours duration in each of the subjects referred to in Section II above, except in the subject Statistics II. In Statistics II, there will be five papers, each of 1½ hours' duration vide Note under this subject at item 6 of Part A of the Schedule to this Appendix.

3. Candidates must write the papers in their own hand. In no circumstances, will they be allowed the help of a scribe to write the answers for them.

4. The Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all the subjects of the examination.

5. For the Indian Economic Service, the papers in the optional subjects and in the following compulsory subjects, viz., General English and General Knowledge of only such candidates will be examined and marked as attain such minimum standard as may be fixed by the Commission in their discretion at the written examination in the following compulsory subjects, via, Economics I and Economics II.

For the Indian Statistical Service, the papers in the optional subjects and in the following compulsory subjects viz., General English and General Knowledge of only such candidates will be examined and marked as attain such minimum standard as may be fixed by the Commission in their discretion at the written examination in the following compulsory subjects, viz., Statistics I and Statistics II.

6 If a candidate's handwriting is not easily legible, a deduction will be made on this account from the total marks otherwise accruing to him.

7. Marks will not be allotted for mere superficial knowledge.

8. Credit will be given for orderly, effective and exact expression combined with due economy of words in all subjects of the examination.

9. Candidates are expected to be familiar with the metric system of weights and measures. In the question papers, wherever necessary, questions involving the use of metric system of weights and measures may be set.

SCHEDULE

PART A

The standard of papers in English and General Knowledge will be such as may be expected of a graduate of an Indian University.

The standard of papers in the other subjects will be that of the Master's degree examination of an Indian University in the relevant disciplines. The candidates will be expected, to illustrate theory by facts, and to analyse problems with the help of theory. They will be expected to be particularly conversant with Indian problems in the field(s) of Economics/Statistics.

1. General English.—

Candidates will be required to write an essay in English. Other questions will be designed to test their understanding of English and workmanlike use of words. Passages will usually be set for summary or precis.

2. General Knowledge.—

The paper will consist of two parts :

In the first part candidates will be required to answer questions designed to test their knowledge of current events and of such matters of every day observation and experience in thir scientific aspects as may be expcted of an educated person who has not made a special study of any scientific subject. Questions may also be set on History of India and Geography of a nature which candidates should be able to answer without special study.

In the second part candidates will be required to answer questions designed to test their ability to deal with facts and figures and to make logical deductions therefrom, their capacity to perceive implications, and their ability to distinguish between the important and the less important.

3. Economics I—

Scope and methodology.

Equilibrium analysis.

Theory of consumers' demand. Indifference curve analysis, Revealed preference approach. Consumer's surplus.

Theory of production. Factory of production. Production functions. Laws of returns. Equilibrium of the firm and the industry.

Pricing under various forms of market organisation. Pricing in a socialist economy. Pricing in a mixed economy.

Public utilities : economic characteristics of public utilities; price determination in public utilities. regulaton of public utilities.

Theory of distribution. Pricing of factors of production. Theories of rent, wages, interest and profit. Macrodistribution theory. Share of wages in national income. Profits and economic progress. Inequalities in income distribution.

Theory of employment and output—the classical and neoclassical approaches. Keynesian theory of employment. Post-Keynesian deveopments.

Economic fluctuations. Theories of business cycle. Fiscal and monetary policies for control of business cycle.

Welfare economics : scope of welfare economics; classical and neo-classical approaches; New welfar economics and the compensation principles; optimum conditions; policy implications.

4. Economics II.—

Concept of economic growth and its measurement.

Social accounts; national income accounts; flow of funds; accounts input-output accounting.

Social institutions and economic growth Characteristics and problems of developing economies.

Population growth and economic development

Theories of growth. Growth models.

Planning—Concept and methods. Planning under Capitalist and Socialist forms of economic organisation. Planning in a mixed economy. Perspective planning. Regional planning. Investment criteria and choice of techniques; Cost-benefit analysis. Planning models.

Planning in India. Evolution of Planning. Five Year Plans. Objectives and techniques. Problems of resource mobilization, administration and public co-operation. Role of monetary and fiscal policies; price policy, controls and market mechanism. Trade policy and Balance of payments. Role of public enterprises.

5. Statistics I.—

Different types of numerical approximations; finite differences, standard interpolation formulae and their accuracies; inverse interpolation Numerical methods of differentiation and integration.

Definition of probability. Classical approach, axiomatic approach. Sample space. Laws of total and compound probability. Conditional probability. Independent events. Baye's formula, Random variables ; probability distributions; Mathematical expectation. Moment generating functions and characteristic functions. Inversion theorem. Tchebychev's inequality Conditional distributions Laws of large numbers and central limit theorems.

Standard distributions : Binomial, Poisson, Normal Rectangular. Exponential. Negative binomial. Hypergeometric. Cauchy, Laplace, Beta and Gamma distributions, Bivariate and Multivariate normal distributions.

Large and small sample theory : Asymptotic sampling distributions and large sample tests. Standard sampling distributions such as TX^2 F, and tests of significance based on them Association and analysis of contingency tables.

Correlation coefficient and its distribution; Fisher's 'Z' transformation. Regression ; linear and polynomial; multiple regression—partial and multiple correlation coefficients including their distributions in null cases. Intra class correlation. Curve fitting and orthogonal polynomials.

Analysis of variance. Theory of linear estimation. Two-way classification with interaction. Analysis of covariance. Basic principles of design of experiments. Layout and analysis of common design such as randomised blocks. Latin square Factorial experiments and confounding Missing plot techniques.

Sampling techniques : Simple random sampling with and without replacement. Stratified sampling. Ratio and regression estimates. Cluster sampling, multistage sampling and systematic sampling. Non-sampling errors

Estimation · Basic concepts. Characteristics of a good estimate. Point and interval estimates. Maximum likelihood estimates and their properties.

Tests of hypotheses. Statistical hypotheses : Simple and composite. Concept of a statistical test. Two kinds of error Power function. Likelihood ratio tests. Confidence interval estimation. Optimum confidence bounds.

Common non-parametric tests such as sign test, median test and run test. Wald's sequential probability ratio test for testing a simple hypothesis against a simple alternative OC & ASN functions and their approximations.

6. Statistics II.—

NOTE :—In this subject, there will be separate papers on each of the following five branches, viz. (i) Industrial statistics (including Statistical Quality Control). (ii) Economic Statistics, (iii) Educational Statistics. (iv) Genetical Statistics, and (v) Demography and Vital Statistics.

Candidates offering this subject, whether as a compulsory or as an optional subject, are required to choose any two of the above papers, which they must indicate in their applications. No change in the selection of papers once made will be allowed.

(i) *Industrial Statistics (including Statistical Quality Control).*

Theoretical basis of quality control in industry, Tolerance limits. Different kinds of control charts—X, R charts, p and c charts, group control charts.

Acceptance sampling. Single, double, multiple and sequential sampling plans. OC and ASN functions. Sampling by attributes and by variables. Use of Dodge-Roming and other tables.

Design of industrial experimentation. Use of regression techniques and analysis of variance techniques in industry.

Applications of Operational research techniques including linear programming in industry.

(ii) *Economic Statistics*

Index numbers of prices and quantities. Different types of index numbers *e.g.* index numbers of wholesale prices and cost of living index numbers. Theory of index numbers.

Income distributions. Pareto and other curves. Concentration curves and their uses.

National Income. Different sectors of national income. Methods of estimating national income. Inter-sectoral flows. Problems of regional income estimates. Inter-industry table. Applications of input-output analysis and linear programming.

Analysis and interpretation of economic time series. The four components of an economic time series. Multiplicative and additive models. Trends determination by curve fitting and by moving average method. Determination of constant and moving seasonal indices. Auto-correlation, periodogram analysis, tests of randomness.

Theory of consumption and demand, demand function, elasticities of demand, statistical analysis of demand with the help of time series and family budget data.

(iii) Educational Statistics (including Psychometry)

Scaling of test items. Scores. standard scores, normal scores. T and C scales, stanine scale, percentile scale.

Mental tests. Reliability and validity of tests. Different methods for computing reliability. Index of reliability Procedures for determining validity. Validation of a test battery. Speed versus power tests.

Factor Analysis. Item analysis. Use of correlation methods in aptitude tests.

Measurement of learning and forgetting. Learning models. Attitude and opinion measurement. Measurements of group behaviour.

(iv) Genetical Statistcs

Physical basis of heredity. Mendel's laws. Linkage. Analysis of segregation, detection and estimation of linkage.

Polygenic inheritance. Components of phenotypic variation. Estimation of heritability. Selection Basis of selection. Progeny testing. Selection for combination of characters.

Population genetics. Gene frequency. Inbreeding. Random mating Linkage disequilibrium.

Elements of human genetics. Study of blood groups, disease traits and aberrations.

(v) Demography and Vital Statistics

The life table. its construction and properties. Makeham's and Compertz curves. Derivation of annual and central rates of morality. National life tables. U.N. model life tables. Abridged life tables. Stable population. Stationary population.

Crude fertility rates, specific fertility rates, gross and net reproduction rates; family size; crude mortality rate. infant mortality rates; Mortality by cause of death; Standardised rates.

Internal and international migration; net migration; backward and forward survivorship ratio methods

Demographic transition; Social and economic determinants of population.

Population projections. Mathematical and Component methods. Logistic curve fitting.

7. Comparative Economic Development

A comparative and historical study of modern economic development under different social systems with special reference to India, Japan, France, U.K., USA and USSR. The candidates will be expected to make a critical appraisal of the historical evolution and operational features of the various types of economies, e.g., market-oriented free enterprize economy, centrally planned economy and their variations, *particularly from the point of view of the lessons that they* have for developing economies.

8. *Money and Public Finance*

Nature and functions of money. Value of money, Money, output and prices. The multiplier and the process of income generation. Trade cycles and price movements. Inflation.

Objectives and mechanism of monetary policy. Bank rate and open market operations. Central Bank techniques: general and selective credit controls. Monetary policy in a developing economy. Money and capital markets in developed and developing economies. Organisation of the India money market.

Public finance : nature, scope, importance and objectives.

Theory of taxation : effects and incidence of taxation. Taxable capacity and double taxation. Effects and importance of public expenditure. Fiscal policy for full employment and economic development. Deficit financing. Revenue from public enterprises.

Theory of public debt. Internal and foreign loans debt management.

Theory of federal finance.

9. *Rural Economics and Co-operation*

Role of agricultural in economic development.

Agricultural production and resource use, production functions, returns to scale; cost and supply curves; factory combination and selection of techniques under uncretainty, Crop planning.

Factor markets : Land market, land value and rent, Labour market, wages and employment, unemployment and underemployment, Capital market, savings and capital formations.

Commodity demands; demand for food.

International trade in agricultural commodities—prices, tariffs, commodity agreements. International programmes for agricultural development.

Problems of Indian rural economy. Agricultural holdings. Land utilisation Cropping pattern. Problems of agricultural inputs, land tenure reforms. Community Development and Panchayati Raj. Agricultural Labour, Subsidiary occupations and rural industries Rural indebtedness. Agricultural credit. Agricultural marketing and price spread. Commodity demands and demand for food. Price support and stabilisation. Taxation of agricultural land and income. Growth rate in Indian agriculture under planning.

Agriculture in Five Year Plans, Major programmes of agricultural development.

Co-operation : Principles origin and development. Comparative study of co-operation in India and abroad. Structure. Organisation and working of various types of co-operative institutions in India. Role of these institutions in the rural economy. The State and the co-operative movement. Role of the Reserve Bank of India.

10. *International Economics*

International trade. Theories of international trade. Gains form trade. Terms of trade. Trade policy. International trade and economic development. Theory of tariffs. Quantitative trade restrictions Customs unions. Free trade areas. European Common Market.

Balance of payments. Disequilibrium in balance payments Mechanism of adjustments. Foreign trade multiplier. Exchange rates. Import and exchange controls. Trade agreements. Key currency standard. External and internal balance.

International institutions. International liquidity and I.M.F. International monetary reforms. Secular trends in terms of trade of developing countries. Export instability and stabilisation of commodity prices. G.A.T.T. Movements of international capital private and public. International aid for economic growing I.B.R.D. and its affiliates. Asian Development Bank.

11. *Mathematical Economics and Econometrics*

Role of mathematics & statistics in economics : Measurement inceconomics. Role of mathematics in economics. Statistical methods and techniques of inference in measuring economic relationships.

Demand analysis : General theory and measurement of demand; dynamic and static demand functions. Interrelated demand and supply functions under conditions of planning metods of estimation of demand and supply relationships. Demand projections and short term outlook for prices and demand.

Production functions : Concept of production and transformation functions; methods of fitting production functions; mathematical methods of production planning and control.

Linea analysis; linear programming and its analysis; elements of game theory—their application in economic planning.

Mathematical models of Keynesian and classical economics : Concept of multiplier; acceleration principle. Equilibrium analysis; equilibrium of the consumer. stability conditions, effect on demand of increase in income and prices, complements and substitutes. Market demand : equilibrium of exchange, equilibrium of the firm. Equilibrium of production and exchange in the economy generalized law of demand and supply.

Concept of structure and model : Different concepts of structure—distinction between structure and model. Estimation of parameters in sigle equation and simultaneous equation models.

Planning models : Different types of growth models, capital output ratios and their use in economic planning. Planning models. Long term projections and perspective; short term economic forecasting.

12. *Sample Surveys*

Place of sampling in census and survey work. Concept of frame and sampling unit.

Sampling techniques : Random sampling, stratified sampling, choice of strata, multistage sampling, cluster sampling, systematic sampling, double sampling, variable sampling fraction sampling with the probability proportional to size, multiphase sampling, inverse sampling.

Estimation procedures : Estimates of population total and mean; bias in estimates; standard error of estimates. Ratio regression and product estimates.

Optimum designs : Cost and variance functions. Use of pilot surveys. Optimum size and structure of sampling units. Optimum allocation in stratified. multiphase and multistage designs. Optimum replacement fraction in repetitive surveys.

Non-sampling errors and their control, theory of non-response, inter penetrating samples.

Design and organisation of pilot and large scale sample surveys Operational procedure for drawing samples; use of random sampling numbers; various methods of drawing pps samples. Procedures for collection and tabulation of data. Analysis of survey data and preparation of reports.

13. *Industrial Economics*

Industry Structure of competitive industry. Theory of the size of an industrial unit. Theory of industrial location. Regional development of industry. Industrial integration. Combination and monopoly.

Problems of industrial production Productivity—concept and measurement. Techniques of raising productivity Cost structure and pricing policies.

Structure of Indian industry—size, location, integration and regional balance.

Problems of Indian Industry—finance; inputs; utilisation of capacity, Industrial policy. Private and public sectors.

Industrial licensing. Foreign capital and technical collaboration.

Problems of public enterprises—organisation, management, control and accountability.

Problems of small scale industries and Industrial Estates.

Labour and economic development. Labour productivity and incentives. Industrial relations in India. Organisation and structure of trade unions. Trade Unions and the State. Settlement of industrial disputes. Minimum and fair wages. State regulation of wages and working conditions. Labour welfare.

14. *Theory and Practice of Trade*

Marketing. The concept of marketing; characteristics of a market. Marketing functions: marketing process, concentration and dispersion, buying, selling, transportation, storage, grading and finance. Customer behaviour and decision Marketing information and research. Channels of distribution. Marketing cost and efficiency. Sales forecasting and planning. Sales promotion; advertising and salesmanship. State regulated marketing.

Marketing in India. Marketing of agricultural produce and manufactured products. Organised markets in India—Stock exchanges and produce exchanges, their functions and processes State policy; governmental marketing organisations and state trading.

Foreign trade. Characteristics of an international market. Special problems of foreign trade as disfloct from domestic trade; transport; finance and insurance; risks in respect of credit, exchange fluctuations and transfer of payments. Documents used in foreign trade. Organisation and structure of export and import houses. Techniques of import and export control.

Chief feature of India's foreign trade—Commodity composition, value and direction. Operation of export and import controls during the last ten years. Licensing procedures and criteria. Foreign trade finance. Export Risks Guarantee System. Methods of export promotion adopted in recent years. India's trade agreement. Functions of the State Trading Corporation.

15. *Business Finance and Accounts*

Financial needs of modern industry. Sources of industrial finance in India. Indian capital market. Institutional financing. Foreign capital; sources interest rates and terms of repayment

Budgeting capital requirements of a firm. Optional capital structure. Sources and use of funds in a firm; Self-financing. Depreciation policy. Reserves and dividends. Taxation and financial policy.

Capital budgeting. Preparation, analysis and interpretation of financial statements. Valuation of goodwill and shares. Preparation of schemes of reconstruction, amalgamation and absorption; recording the effect in books of account.

Preparation of costing statements, treatment and control of overheads. Principles of budgetary control. Standard costing. Reconciliation of financial and cost accounts.

16. *Business Management and Commercial Law*

The management process and managerial functions Formulation of policy and goals of enterprise. Leadership and morale; control and decision-making. Authority relationships, delegation of authority, levels of authority and responsibility, span of control. The role of the supervisor. Problems of communication and motivation.

Production and inventory control. Quality control. Time and motion study. Plant layout and work measurement.

Managerial problems in marketing operations, Selection and control of channels of distribution; product line, pricing and sales promotion policy. Demand analysis and advertising.

Personnel management. Problems of selection, placement, promotion, transfer and retirement. Job-evaluation and merit rating. Union-management relations.

Legal framework of business activities in India.

Law relating to contracts and companies.

17. *Advanced Probability and Stochastic Processes*

(a) *Advanced Probability.*—Probability as measure; random variable; decomposition of distribution functions; expectation of a random variable; the conditional probability and conditional expectations; convergence of sequences and some of independent random variables; Kolmogorov's inequality; strong and weak laws of large numbers; Convergence in distribution; Theorems of convergence and continuity; Characteristic functions; Uniqueness theorem; inversion formula; central limit theorems; Problem of moments.

(*b*) *Stochastic Processes*

Definition and classification of stochastic processes.

Stochastic processes as a family of real-valued random variables indexed by an orderred set (discrete or an interval of the real time). The class of finite-dimensional distribution functions and statement of Kolmogorov's Consistency theorem.

Various types of dependence among the random variables: independence, independent incremnts, martingabls, Markov dependence, wide and strict sense stationarity.

Markov Processes

Strictly stationary Markov process with discrete parameter and with finite and denumerable state spaces also called Markov chains); transition probability matrices; classification of states and classes of states.

Markov process with continuous parameter and discrete state space: Kolmogorov forward and backward equations. Simple time-dependent stochastic processes regarding population growth; Poisson process; Pure birth process; Birth and death process (complete solution in the case of linear processes of the two latter types).

Wide sense stationary process with discrete parameter

Covariance function; special representation of the covariance function and of the process; examples of correlation functions of stationary processes linear prediction of stationary processes; examples in the case of a general rational special density.

18. *Statistical Inference*

NOTE: Candidates will be required to answer questions from Sections 'A' and 'B' or Sections 'A' & 'C'.

A (i) *Estimation*

Different methods of estimation: method of maximum likelihood, method of minimum-chi-square, method of moments, method of least squares; asymptotic properties of maximum likelihood estimators. Cramer-Rao inequality and its generalization to the multiparametric case. Bhattacharya bounds. Sufficient Statistics; Factorization theorem, Pitman-Koopmam-Darmois from of distributions, minimal set of sufficient statistics. Rao-Blackwell theorem. Complete family of probability distributions, complete statistics. Lehmann-Scheffe' theorem on minimum variance estimation.

(ii) *Testing of hypotheses*

Neyman-Pearson theory of testing of hypotheses. Randomized and non-randomized tests.

Most powerful and uniformly most powerful tests. Neyman-Pearson fundamental lemma. Unbiasedness, consistency and efficiency of tests. Similar regions; tests with locally optimum properties. Type, A, Al, B, C, and D critical regions. Relationship between the notions of completeness and similarity. Likelihood-ratio principle of test construction and some of its applications. Bartletts test for homogeneity of variances.

(iii) *Non-parametric tests*

Order statistics: Small sample and large sample distribution theory, distribution-free confidence intervals for quantiles. Distribution-free tests for

(i) goodness of fit: chi-square test, Kolmogorov-Simrnov test.

(ii) Comparison of two populations : Run test, Dixon's test, Wilcoxon's test, Median test, Sign test, Fisher-Pitman test.

(iii) Independence, contingency, chi-square, Spearman's and Kendall's rank correlation coefficients

Large sample properties of non-parametric test. U-statistics and their limiting distributions.

B. *Decision Functions*

Statistical game and principles of choice associated with it Formulation of statistical problems as a statistical game, decision functions, randomized and non-randomised decision rules Minimax, Bayes and minimum regret decision rules. Admissible and minimax tests. Admissible and minimax estimates under square error loss function. Minimal complete class of tests.

Principle of sufficiency and principle of invariance Hunt-Stein theorem. Minimax invariant decision rules.

C *Multivariate Analysis*

Multivariate Normal Distributions Estimation of mean vector and covariance matrix, Distribution of Sample mean vector and inference relating to mean vector with unknown matrix, Hotelling's Tests based on T^2; Power functions of T^2 and I, Optimum properties of T^2. Partial and multiple regression coefficients in normal correlation, Behrens—Fisher problem, Wishart distribution; Reproductive property of ness for metric spaces and euclidean spaces. Uniform con- Wishart, Generalised analysis variance; Mahalanobis's D^2 Discriminant functions, Principal component analysis, Canonical variates and canonical correlation, equality of several covariance matrices.

19 *Design of Experiments*

Principles of experimentation : randomisation, replication and error control. Techniques for error control; choice of size, shape and structure of experimental units, grouping of experimental units.

Basic assumptions of analysis of variance. Effects of non-additivity, variance, heterogeneity and non-normality Transformation Pure and mixed models, Use of concomitant variable Covariance analysis.

Construction and analysis of incomplete block designs, (with and without recovery of inter block information), lattice designs, partially balanced incomplete block designs Hyper Graeco-Latin Squares and other designs for elimination of heterogeneity in several directions

Construction of factorial designs and their analysis confounding in symmetrical factorical experiments, total and partial, balanced confounding. Confounding of main effects; split plot, strip-plot and other designs. Fractional replication Experiments with qualitative and quantitative factors

Techniques for analysis for experiments with missing or mixed up yields Analysis of non-orthogonal data Combination of results of groups of experiments. Response curves and standardisation of response.

20. *Pure Mathematics I*

Functions of a real variable. Construction of system of real numbers from rational numbers by Dedekinds method. Bounds and limits of sequences and functions. Convergence point-wise and uniform, of equences, infinte series and infinite products.

Metric spaces open and closed sets, continuous functions and homomorphism, convergence and completeness, theorem on nested closed sets in complete metric spaces. Compactness for metric spaces and euclidean spaces. Uniform continuity and Arzela's theorem. Connected sets in metric spaces

Differentiability of functions, of one and several real variables Mean value theorems Taylor expansion of functions of one and more variables. Extreme values of functions including method of Lagranage multipliers. Implicit and inverse function theorems. Functional dependence and Jacobian

Riemann integration, mean value theorems of integral calculus. Improper integrals. Convergence of integral Differentiation and integration under the integral sign. Line and surface integrals Multiple integrals, Green's and Stokes theorems.

Measure Theory : Lebesgue measure, measurable sets and their properties. Measurable functions. Lebesgue integral of bounded functions over sets of finite measure The integral of a non-negative function. The general Lebesgue integral Convergence in measure. Fatou's lemma Monotone dominated and bounded convergence theorems. Vitali covering theorem Functions of bounded variation Absolutely continuous functions Fundamental theorem of integral Calculus, Stieltjes integral.

Functions of a Complex Variable. Analytic functions. Cauchy-Riemann equations Integration of complex functions. Cauchy's fundamental theorem and integral formulae. Morera's theorem Taylor and Laurent expansions. Zeros and poles Singularities The Residue Theorem and its applications. Argument principle Rouches theorem. Maximum modulus principle and Schwarz lemma.

Bilinear transformations. Conformal representation.

Doubly periodic functions. Weierstrass's functions, Jacobi's functions, Elliptic integrals.

21. *Pure Mathematics II*

Modern Algebra including Matrices and Determinants : Semi groups and groups : Isomorphism. Transformation group, Cayley's theorem Cyclic groups, Permutations; even and odd permutations. Coset decomposition of groups Lagrange's theorem Invariant subgroups and factor groups Homomorphism and automorphism Conjugate elements. Normal series, composition series and Jordan—Holder theorem.

Rings Integral domain Division rings. Fields Matrix rings. Quaternions. Sub rings, Ideals maximal, prime and principal ideals Unique factorization domains. Difference rings. Ideals and difference rings of integers. Format's theorem Homomorphism of rings.

Field extensions-algebriac and trancendental field extensions Elements of Galois theory and its applications to solution of equations by radicals

Vector spaces over a field Sub spaces and their algebra-Linear independence, basis, dimension, Factor spaces. Isomorphism of vector spaces

System of linear equations Rank of a matrix. Equivalence relations on matrices elementary matrices, row equivalences, equivalence, similarity

Linear transformations on vector spaces, their rank and nullity Dual spaces and dual basis Linear, bilinear and quadratic forms Rank and signature Reduction of a quadratic form to canonical form and simultaneous reduction of two quadratic forms

Determinant functions, its existence and uniqueness. Laplace's method of expanding a determinant. Product of two determinals. Binet-Cauchy formula Characteristics and minimal polynomials eigen values and eigen vectors. Cayley-Hamilton theorem Diagonalization theorems.

n-dimensional geometry —Elements of the geometry of n-dimension Desargues' theorem. Degrees of freedom of linear spaces. Duality, Parallel lines Elliptic hyperbolic, euclidean and projective geometries Line normal to (n-1) Flat. System of n-mutually orthogonal lines Distances and angles between flat spaces

Convex sets and convex cones. Convex hull. Theorems on separating hyperplanes Theorem that a closed convex set whichs is bounded from below has extreme points in every supporting hyperplane Convex hull of extrerpe points. Convex polyhedral cones Linear transformations of regions.

Differential geometry —Curves in space, Envelopes, Developable surfaces Developable associated with a curve. Curvilinear coordinates on a surface. First and second fundamental forms Curvature of normal section Lines of curvature Conjugate systems Asymptotic lines The equations of gauss and of Codazzi Geodesics and Geodesic parallels Ruled surfaces

22 *Pure Mathematics III*

Numerical Analysis and Difference Equations.—Finite differences. Interpolation, Extrapolation Inverse interpolation Numerical differentiation and numerical integration Solution of difference enuatoins of the first order General properties of the linear difference quation Lineaar difference equations with constant coefficients.

Solution of ordinary differential equations. Methods of starting the solution and continuing the solution. Simultaneous linear equations and their solution. Roots of polynomial equations Solution of simple problems by relaxation method. Nomograms.

Differential Equations.—Existence theorem for the solution of dy/dx=f (xy).

First order linear and non-linear equations. Linear equations with constant coefficients. Homogeneous linear equations. Second order linear equations. Frobenius method of integration in series. Solutions of Legendre, Bassel and Hermite equations. Elementary properties of Legendre and Hermite polynomials and Bessel functions. Systems of simultaneous linear equations. Total differential equations with three variables.

Partial differential equations : partial differential equations of first and second order Lagrange's, Charpit's and Monge's method. Linear partial differential equations with constant coefficients. Solutions of Laplace's wave and diffusion equations by separation of variables.

Calculus of Variations : Necessary conditions for a minimum. Derivation of the Euler-equations. Hamilton's principle. Hamiltonian, Isoperimetric problems. Variable and point problems. Minima of functions of integrals. Bolza's problems. Multiple integral problem. Direct method in calculus of variations. Second variation and Legendre's necessary condition for a minimum.

Harmonic Analysis : The representation of a function by Fourier series. Dirichlet integral. Riemann Labesque Theorem. Riemann's localization theorem. Sufficient conditions for the convergence of Fourier series (Jordan, Dini & de la-valee Poussin). Fourier integrals. Sampling theorem. Power spectrum. Auto-correlation and cross-correlation.

23. *Applied Mathematics*

Statics : Vector treatment of equilibrium of a rigid body *under forces not necessarily coplanar, Central axis, Principles* of virtual work, Stability. Strings under central forces, equilibrium of strings on rough and smooth plane curves. Elastic strings. Attractions and potentials of a rod, disc and sphere.

Dynamics : Newton's laws of motion. D'Alember's principle. Rectilinear motion. Motion in two dimensions. Motion in a resisting medium. Planetary motion. Impulsive forces and impacts. Principle of momentum and energy. Degrees of freedom and constraints. Generalised coordinates. Lagrange's equation for holonomic system. Euler's dynamical and geometrical equations. Hamilton's principle. Hamilton's equations. Introduction to many-body problem.

Hydrodynamics : Eulerian and Lagragian equations of motion. Stream lines. Vorticity and circulation and their constancy in ideal fluid.

Bernoulli's theorem and its application. Potential flow around cylinders and spheres. Blasius theorem and its application. Techniques of images and conformal transformation for solution of hydrodynamical problems. Simple properties of vortex motion uniqueness theorem. Viscous fluid. Napier-Stokes equations. Flow between parallel walls and straight pipes. Oseen and Stokes approximations. Slow motion past a sphere.

Electricity and magnetism : Coulomb Law. Charges. Conductors and condensers. Dielectrics. Steady currents. Magnetic effects of currents. Induced currents and fields. Maxwell equations. Electromagnetic conditions at an interface between two media. Electromagnetic potentials, stresses and energy. Poynting's theorem. Joule heat. Alternating currents. Electromagnetic waves in an isotropic dielectric. Reflection and refraction of electromagnetic waves. Waves in conducting media.

Thermodynamics : Concepts of quantity of heat, temperature and entropy. First and second laws of thermodynamics. Specific heats. Change of phase. Vapour pressure. Conduction of heat. Radiation Planck's law. Stefan's law. Thermodynamic functions and potentials. Heterogeneous systems and Gibb's phase rule.

Statistical Mechanics : Geometry and kinemetrics of the phase space, Maxwell-Bolzamann, Bose-Einstein and Fermi-Dirac statistics.

PART B

Viva Voce.—The candidate will be interviewed by a Board of competent and unbiased observers who will have before them a record of his career. The object of the interview is to assess his suitability for the Service or Services for which he has competed. The interview is intended to supplement the written examination for testing the general and specialized knowledge and abilities of the candidate. The candidate will be expected to have taken an intelligent interest not only in his subjects of academic study but also in events which are happening around him both within and without his own state or country, as well as in modern currents of thought and in new discoveries which should rouse the curiosity of well educated youth.

The technique of the interview is not that of a strict cross examination, but of a natural, though directed and purposive conversation, intended to reveal the candidate's mental qualities and his grasp of problems. The Board will pay special attention to assessing the intellectual curiosity, critical Powers of assimilation, balance of judgement and alertness of mind; the ability for social cohesion; integrity of character, initiative and capacity for leadership.

APPENDIX III

Brief particulars relating to the two Services to which recruitment is being made through this examination :

1. Candidates selected for appointment to either of the two Services will be appointed to Grade IV of the Service on probation for a period of two years which may be extended if necessary. During the period of probation, the candidates will be required to undergo such courses of training and instruction and to pass such examination and tests as the Government may determine.

2. If in the opinion of Government the work or conduct of the officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

3. On the expiry of the period of probation or of any extension, if the Government are of opinion that a candidate is not fit for permanent appointment, Government may discharge him.

4. On completion of the period of probation to the satisfaction of Government, the candidate shall if considered fit for permanent appointment be confirmed in his appointment subject to the availability of substantive vacancies in permanent posts.

5. Prescribed scales of pay for both the Indian Statistical Service and the Indian Economic Service are as follows :

Grade I—Director, Rs. 1300—60—1600—100—1800.

Grade II—Joint Director, Rs. 1100—50—1400.

Grade III—Deputy Director, Rs. 700—40—1100—50/2—1250.

Grade IV—Assistant Director, Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950.

6. Promotions to the higher grades of the Service will be made on the basis of merit with due regard to seniority in accordance with the quota of vacancies set aside for promotion for each grade *viz.*, 75% for Grade III, 50% for Grade II and 75% for Grade I.

An officer belonging to the Indian Statistical Service/ Indian Economic Service will be liable to serve anywhere in India or abroad under the Central Government and may be required to serve in any post on deputation for a specified period.

7. Conditions of service and leave and pension for officers of the two Services are the same as those described in the Fundamental Rules and Civil Service Regulations of Government of India respectively subject to such modifications as may be made by Government from time to time.

8. Conditions of Provident Fund are the same as laid down in the General Provident Fund (Central Services) Rules subject to such modifications as may be made by Government from time to time.

APPENDIX IV

REGULATIONS RELATING TO THE PHYSICAL EXAMINATION OF CANDIDATES

(These regulations are published for the convenience of candidates and in order to enable them to ascertain the probability of their coming up to the required physical standard. The regulations are also intended to provide guide lines to the medical examiners and a candidate who does not satisfy the minimum requirement prescribed in the regulations, cannot be declared fit by the medical examiners. However, while holding that a candidate is not fit according to the norms laid down in these regulations, it would be permissible for a Medical Board to recommend to the Government of India for reasons specifically recorded in writing that he may be admitted to service without disadvantage to Government.

2. It should, however be clearly understood that the Government of India reserve to themselves, absolute discretion to reject or accept any candidate after considering the report of the Medical Board.)

1. To be passed as fit for appointment a candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the efficient performance of the duties of his appointment.

. In the matter of the correlation of age, height and chest girth of candidates of Indian (including Anglo-Indian) race it is left to the Medical Board to use whatever correlation figures are considered most suitable as a guide in the examination of the candidates If there be any disproportion with regard to height, weight and chest girth, the candidate should be hospitalised for investigation and X-ray of the chest taken bfore the candidate is declared fit or not fit by the Board.

3. The candidate's height will be measured as follows :—

He will remove his shoes and be placed against the standard with his feet together and the weight thrown on the heels and not on the toes or other side of the feet. He will stand erect without rigidity and with the heels, calves, buttocks and shoulders touching the standard; the chin will be depressed to bring the vertex of the head level under the horizontal bar and the height will be recorded in centimeters and parts of a centimetre to halves.

4. The candidate's chest will be measured as follows :—

He will be made to stand erect with his feet together, and to raise his arms over his head. The tape will be so adjusted round the chest that its upper edge touches the inferior angles of the shoulder blades behind and lies in the same horizontal plane when the tape is taken round the chest. The arms will then be lowered to hand loosely by the side, and care will be taken that the shoulders are not thrown upwards or backwards so as to displace the tape. The candidate will then be directed to take a deep inspiration several times and the maximum expansion of the chest will be carefully noted and the minimum and maximum will then be recorded in centimetres 84—89, 86—93 etc. In recording the measurements, fractions of less than a centimetre should not be noted.

N.B.—The height and chest of the candidate should be measured twice before coming to a final decision.

5. The candidate will also be weighed and his weight recorded in kilograms: fractions of half of a kilogram should not be noted.

6.(a) The candidate's eyesight will be tested in accordance with the following rules. The result of each test will be recorded.

(b) There shall be no limit for minimum naked eye vision but the naked eye vision of the candidates shall, however, be recorded by the Medical Board or other medical authority in every case, as it will furnish the basic information in regard to the condition of the eye.

(c) The following standards are prescribed for distant and near vision with or without glasses.

Distant vision		Near vision	
Better eye (Corrected vision)	Worse eye (Corrected vision)	Better eye (Corrected vision)	Worse eye (Corrected vision)
6/9 or 6/9	6/9 or 6/12	J 1	J.II

(d) In every case of myopia, fundus examination should be carried out and the results recorded. In the event of pathological condition being present which is likely to be progressive and affect the efficiency of the candidate, he should be declared unfit.

(e) *Field of vision.*—The field of vision shall be tested by the confrontation method. When such test gives unsatisfactory or doubtful results the field of vision should be determined on the perimeter.

(f) *Night Blindness.*—Broadly there are two types of night blindness, (1) as a result of Vit. A deficiency and (2) as a result of Organic Disease of Retina—a common cause being Retinius pigmemosa. In (1) the fundus is normal, generally seen in younger age-group and ill-nourished persons and improves by large doses of Vit. A. In (2) the fundus is often involved and mere fundus examination will reveal the condition in majority of cases. The patient in this category is an adult, and may not suffer from malnutrition. Persons seeking employment for higher posts in the Government will fall in this category. For both (1) and (2) dark adaptation test will reveal the conditions. For (2) specially when fundus is not involved electro-Retinography is required to be done. Both these tests (dark adaptation and retinography) are time consuming and required specialized set up and equipment, and thus are not possible as a routine test in a medical check-up. Because of these technical consideration, it is for the Ministry/Department to indicate if these tests for night blindless are required to be done. This will depend upon the job requirement and nature of duties to be performed by the prospective Government employee.

(g) *Ocular condition other than visual acuity.*—(i) Any organic disease or a progressive refractive error which is likely to result in lowering the visual acuity should be considered a disqualification.

(ii) *Squint.*—For technical services where the presence of binocular vision is essential, squint, even if the visual acuity in each eye is of the prescribed standard should be considered a disqualification. For other services the presence of squint should not be considered as a disqualification, if the visual acuity is of the prescribed standard.

(iii) *One eye* : If a person has one eye or if he has one eye which has normal vision and the other eye is ambylyopic or has subnormal vision, the usual effect is that the person lacks stereoscopic vision for perception of depth. Such vision is not necessary for many civil posts. The medical board may recommend as fit, such persons provided the normal eye has

(i) 6/6 distant vision and J1 near vision with or without glasses, provided the error in any meridian is not more than 4 dioptores for distant vision.

(ii) has full field of vision.

(iii) normal colour vision wherever required.

Provided the board is satisfied that the candidate can perform all the functions for the particular job in question.

(h) *Contact Lenses.*—During the medical examination of a candidate, the use of contact lenses is not to be allowed. It is necessary that when conducting eye test, the illumination of the type letters for distant vision should have an illumination of 15 foot candles.

7. *Blood Pressure*

The Board will use its discretion regarding Blood Pressure. A rough method of calculating normal maximum systolic pressure is as follows :—

(i) With young subjects 15—25 years of age the average is about 100 plus the age.

(ii) With subjects over 25 years of the age the general rule of 110 plus half the age seems quite satisfactory.

N.B.—As a general rule any systolic pressure over 140 and diastolic over 90 should be regarded as suspicious and the candidate should be hospitalised by the Board before giving their final opinion regarding the candidate's fitness or otherwise. The hospitalization report should indicate whether the rise in blood pressure is of a transient nature due to excitement etc. or whether it is due to any organic disease. In all

such cases X-ray and electrocardiographic examination, of heart and blood urea clearance test should also be done as a routine. The final decision as to the fitness or otherwise of a candidate will, however, rest with the Medical Board only.

Method of taking Blood Pressure

The mercury manometer type of instrument should be used as a rule. The measurement should not be taken within fifteen minutes of any exercise or excitement. Provided the patient, and particularly his arm is relaxed he may be either lying or sitting. The arm is supported comfortably at the patients side in a more or less horizontal position The arm should be freed from clothes to the shoulder. The cuff completely deflated should be applied with the middle of the rubber over the inner side of the arm, and its lower edge an inch or two above the bend of the elbow. The following turns of cloth bandage should spread evenly over the bag to avoid bulging during inflation

The brachial artery is located by palpitation at the bend of the elbow and the stethoscope is then applied lightly and centrally over it below, but not in contact with the cuff. The cuff is inflated to about 200 m.m. Hg. and then slowly deflated The level at which the column stands when soft successive sounds are heard represents the Systolic Pressure. When more air is allowed to escape the sounds will be heard to increase in intensity The level of the column at which the well-heard clear sounds change to soft muffled fading sounds represents the diastolic pressure. The measurements should be taken in a fairly brief period of time as prolonged pressure of the cuff is irritating to the patient and will vitiate the readings. Rechecking, if necessary, should be done only a few minutes after complete deflation of the cuff. (Sometimes as the cuff is deflated sounds are heard at a certain level; they may disappear as pressure falls and reapear at a still lower level. This 'Silent Gap' may cause error in reading).

8. The urine (passed in the presence of the examiner) should be examined and the result recorded. Where a Medical Board finds sugar present in a candidate's urine by the usual chemical tests the Board will proceed with the examination with all its other aspects and will also specially note any signs or symptoms suggestive of diabetes. If, except for the glycosuria the Board finds the candidate conforms to the standard of medical fitness required they may pass the candidate "fit subject to the glycosuria being non-diabetic" and the Board will refer the case to a specified specialist in Medicine who has hospital and laboratory facilities at his disposal. The Medical Specialist will carry out whatever examinations clinical and laboratory he considers necessary including a standard blood sugar tolerance test, and will submit his opinion to the Medical Board upon which the Medical Board will base its final opinion "fit" or "unfit". The candidate will not be required to appear in person before the Board on the second occasion. To exclude the effects of medication it may be necessary to retain a candidate for several days in hospital under strict supervision.

9. A woman candidate who as a result of tests is found to be pregnant of 12 weeks standing or over, should be declared temporarily unfit until the confinement is over. She should be re-examined for a fitness certificate six weeks after the date of confinement subject to the production of a medical certificate of fitness from a registered medical practitioner.

10. The following additional points should be observed :—

(a) that the candidates hearing in each ear is good that there is no sign of disease of the ear. In case it is defective the candidate should be got examined by the ear specialist. Provided that if the defect in hearing is remediable by operation or by use of a hearing aid a candidate cannot be declared unfit on that account provided he has no progressive disease in the ear.

(b) that his speech is without impediment:

(c) that his teeth, are in good order and that he is provided with dentures where necessary for effective mastication (well filled teeth will be considered as sound);

(d) that the chest is well formed and his chest expansion sufficient; and that his heart and lungs are sound:

(e) that there is no evidence of any abdominal disease:

(f) that he is not ruptured;

(g) that he does not suffer from hydrocele, a severe degree of varicocele, varicose veins or piles;

(h) that his limbs, hands and feet are well formed and developed and that there is free and perfect motion of all joints:

(i) that he does not suffer from any inveterate skin disease:

(j) that there is no congenital malformation or defect:

(k) that he does not bear traces of acute of chronic disease pointing to an impaired constitution:

(l) that he bears marks of efficient vaccination; and

(m) that he is free from communicable disease.

11. Screening of the chest should be done as a routine in all cases for detecting any abnormality of the heart and lungs which may not be apparent by ordinary physical examination, where it is considered necessary, a skiagram should be taken.

When any defect is found it must be noted in the certificate and the medical examiner should state his opinion whether or not it is likely to interfere with the efficient performance of the duties which will be required of the candidate.

12. The candidates filing an appeal against the decision of the Medical Board have to deposit an appeal fee of Rs. 50 in such manner as may be prescribed by the Government of India in this behalf. This fee would be refunded if the candidate is declared fit by the Appellate Medical Board. The candidates may, if they like, enclose medical certificate in support of their claim of being fit. Appeals should be submitted within 21 days of the date of the communication in which the decision of the Medical Board is communicated to the candidates; otherwise, requests for second medical examination by an Appellate Medical Board will not be entertained. The Medical Examination by the Appellate Medical Boards would be arranged at New Delhi only and no travelling allowance or daily allowance will be admissible for the journeys performed in connection with the medical examination. Necessary action to arrange medical examination by Appellate Medical Boards would be taken by the Cabinet Secty. (Deptt. of Personnel) on receipt of appeals accompanied by the prescribed fee.

Medical Boards Report

The following intimation is made for the guidance of the Medical Examiner :—

The standard of physical fitness to be adopted should make due allowance for the age and length of service, if any, of the candidate concerned.

No person will be deemed qualified for admission to the Public Service who shall not satisfy Government, or the appointing authority, as the case may be that he has no disease, constitutional affection, or bodily infirmity unfitting him, or likely to unfit him for that service

It should be understood that the question of fitness involves the future as well as the present and that one of the main objects of medical examination is to secure continuous effective service, and in the case of candidates for permanent appointment to prevent early pension or payments in case of premature death. It is at the same time to be noted that the question is one of the likelihood of continuous effective service, and that rejection of a candidate need not be advised on account of the presence of a defect which in only a small proportion of cases is found to interfere with continuous effective service.

The Board should normally consist of three members, (i) a physician (ii) a Surgeon and (iii) an Opthalmologist all of whom should as far as practicable, be of equal status A lady doctor will be coopted as a member of the Medical Board whenever a woman candidate is to be examined

Candidates appointed to the Indian Economic Service/ Indian Statistical Service are liable for field service in or out of India. In case of such a candidate, the Medical Board should specially record their opinion as to his fitness or otherwise for field service.

The report of the Medical Board should be treated as confidential.

In cases where a candidate is declared unfit for appointment in the Government Service, the grounds for rejection may be communicated to the candidate in broad terms without giving minute details regarding the defects pointed out by the Medical Board

In cases where a Medical Board considers that a minor disability disqualifying a candidate for Government service can be cured by treatment (medical or surgical) a statement to that effect should be recorded by the Medical Board There is no objection to a candidate being informed of the Board's opinion to this effect by the appointing authority and when a cure has been effected it will be open to the authority concerned to ask for another Medical Board

In the case of candidates who are to be declared 'Temporarily Unfit' the period of special for re-examination should not ordinarily exceed six months at the maximum On re-examination after the specified period these candidates should not be declared temporarily unfit for a further period but a final decision in regard to their fitness for appointment or otherwise should be given

(a) *Candidate's statement and declaration*

The candidate must make the statement required below prior to his Medical Examination and must sign the Declaration appended thereto His attention is specially directed to the warning contained in the Note below :—

1 State your name in full (in block letters) .

2 State your age and birth place .

2 (*a*) Do you belong to races such as Gorkhas, Garwalis, Assamese, Nagaland Tribals etc whose average height is distinctly lower ? Answer 'Yes' or 'No' and if the answer is 'Yes', state the name of the race . . . .

3 (*a*) Have you ever had small-pox, intermittent or any other fever, enlargement or suppuration of glands, spitting of blood, asthma, heart disease, lung disease, fainting at tacks, rheumatism, appendicitis! . . . .

Or

(*b*) Any other disease or accident requiring confinement to bed and medical or surgical treatment?

4 When were you last vaccinated? . . .

5 Have you suffered from any form of nervousness due to over work or any other cause? . . . .

6 Furnish the following particulars concerning your family.—

Father's age if living and state of health	Father's age at death and Cause of death	No of brothers living, their ages and state of health	No of brothers dead, their ages at and cause of death

Mother's age if living and state of health	Mother's age at death and cause of death	No. of sisters living, their ages and state of health	No. of sisters dead, their ages at and cause of death

7 Have you been examined by a Medical Board before? . . . .

8. If answer to the above is, Yes, Please state what Service/Services, you were examined for ? . . . .

9. Who was the examining authority? . . . .

10. When and where was the Medical Board held? . . . .

11. Result of the Medical Board's examination if communicated to you or if known . . . .

I declare that all the above answers are to the best of my belief true and correct.

Candidate's signature. . . . .

signed in my presence
. . . .

Signature of the Chairman of the Board

NOTE—The candidate will be held responsible for the accuracy of the above statement By wilfully suppressing any information he will incur the risk of losing the appointment and, if appointed, of forfeiting all claims to Superannuation Allowance or Gratuity

Report of the Medical Board on (name of candidate)

Physical Examination

1. General development . Good. . fair . . . . . Poor . .

Nutrition · Thin . Average Obese...... ..
Height (Without shoes) . . Weight... . ....
Best Weight When ? . . any recent change in weight ? ....Temperature. . . . .

Girth of Chest.

(1) (After full inspiration) . .

(2) (After full expiration) . . .

2. Skin . Any obvious disease . . . .

3 Eyes.

(1) Any disease ....

(2) Night blindness

(3) Defect in colour vision

(4) Field of vision

(5) Visual acuity

(6) Fundus Examination . . . .

Acuity of vision		Naked eye	With glasses	Strength of glass Sph Cyl	axis
Distant vision	R E				
	L E				
Near vision .	R.E				
	L E				

4. Ears : Inspection.....Hearing : Right Ear.....
Left Ear.....

5. Glands .....Thyroid .....

6. Condition of teeth .....

7. Respiratory System : Does physical examination reveal anything abnormal in the respiratory organs?.....
If yes, explain fully .....

8. Circulatory System:

(*a*) Heart: Any organic lessions?.....Rate
Standing .....
After hopping 25 times.....
2 minutes after hopping.....

(*b*) Blood Pressure : Systolic.....Diastolic.....

9. Abdomen : Girth .....Tenderness.....
Hernia.....

(*a*) Palpable : Liver.....Spleen .....
Kidneys.....Tumours.....

(*b*) Haemorrhoids .....Fistula .....

10. Nervous System : Indication of nervous or mental disabilities .....

11. Loco-Motor System : Any abnormality .....

12. Genito Urinary System : Any evidence of Hydrocele, varicocele etc.

Urine Analysis:

(a) Physical appearance .....

(*b*) Sp. Gr.....

(*c*) Albumen .....

(*d*) Sugar .....

(*e*) Casts .....

(*f*) Cells .....

13. Report of Screening /X-Ray Examination of Chest.

14. Is there any thing in the health of the candidate likely to reander him unfit for the efficient discharge of his duties in the service for which he is a candidate ?

NOTE:—In the case of a female candidate, if it is found that she is pregnant of 12 weeks standing or over, she should be declared temporarily unfit, *vide* Regulation 9.

15. (*i*) Has he been found qualified in all respects for the efficient and continuous discharge of his duties in the Indian Economic Service & Indian Statistical Service.

(*ii*) Is the candidate fit for FIELD SERVICE.....

NOTE—The Board should record their findings under one of the following three categories:

(*i*) Fit .....

(*ii*) Unfit on account of.....

(*iii*) Temporarily unfit on account of.....

Place.....

Date .....*Chairman*

Member

Member

12—111GI/72

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Expenditure)

New Delhi, the 25th May 1972

RESOLUTION

No. F.16(1)-E.V.(B)/72.—It is announced for general information that accumulations at the credit of subscribers to the General Provident Fund and other similar Funds upto Rs. 10,000/- (inclusive of deposits and withdrawals during the year 1972-73) will carry interest at the rate of Rs. 5.70% per annum and the interest rate of 5% per annum will apply to sums in excess of Rs. 10,000/-. These rates will be in force during the financial year beginning on 1-4-1972. The funds concerned are :—

1. The General Provident Fund (Central Services).
2. The General Provident Fund (Defence Services).
3. The Secretary of State's Services (General Provident Fund).
4. The Contributory Provident Fund (India).
5. The Indian Civil Services Provident Fund.
6. The All India Services Provident Fund.
7. The Indian Ordnance Deptt., Provident Fund.
8. The Indian Civil Service (N.E.M.) Provident Fund.
9. Other Miscellaneous Provident Fund (Defence).
10. The Defence Services Officers' Provident Fund.
11. The Armed Forces Personnel Provident Fund.
12. The Military Engineering Services Provident Fund.
13. The Indian Ordnance Factories Workmen's Provident Fund.
14. The Contributory Provident Fund (Defence).
15. The Indian Naval Dockyard Workmen's Provident Fund.

2. Necessary instructions will be issued separately by the Ministry of Railways (Railway Board) concerning the rates of interest applicable during the year in question to the balances in the various Provident Funds under the control of that Ministry.

ORDER

3. ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India.

S. S. L. MALHOTRA, Under Secy.

MINISTRY OF FOREIGN TRADE

New Delhi, the 29th May 1972

RESOLUTION

No. 4/27/69-Tex(C).—The Government of India have decided that the following amendments shall be made in their Resolution No. 4(27)-Tex(C)/69, dated the 17th May, 1969, reconstituting the All India Handloom Board :—

(a) Against S. No. 7, "Joint Registrar of Cooperative Societies (Handloom), Government of Maharashtra, Poona"; shall be *substituted* by "Director of Handlooms, Powerlooms and Cooperative Textiles, Nagpur"; and

(b) In S. No. 32, the word "Deputy" shall be deleted.

K. KISHORE, Jt. Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE

(Department of Agriculture)

New Delhi, the 3rd May 1972

No. 19-3/69-FY(P).—In partial modification of the Ministry of Food and Agriculture (Department of Agriculture) Resolution No. 12-24/57-FY-(D), dated the 1st April, 1958 the President is pleased to nominate the Minister in Charge of Fisheries, Pondicherry Administration, Pondicherry as Member of the Central Board of Fisheries.

GODWIN ROSE, Jt. Secy.

RESOLUTIONS

New Delhi, the 30th May 1972

No. 3-5/69-FD.—With a view to ensuring an All-India angle in the integration of forest policy pursued by the various States and in the light of the recommendations made by the Conference of Ministers of the States held in September, 1948, the Government of India constituted a Central Board of Forestry under the Chairmanship of the Union Minister of Food & Agriculture *vide* Ministry of Agriculture Resolution No. 6-20/49-F., dated 19-6-1950. In view of the constitutional changes in the status of some of the Union Territories and the creation of some new States/Union Territories, as also the decision to associate Members of Parliament with the Central Board of Forestry, it has become necessary to re-organise the Board. Accordingly, in partial modification of the Resolution dated 19-6-1950, as amended from time to time it has been decided that the revised composition of the Central Board of Forestry will be as follows :—

Chairman

1. Union Minister for Agriculture.

Vice-Chairman

2. Union Minister of State (Incharge of Forestry).

Members

3. Minister in charge of Forests, Andhra Pradesh.
4. Minister in charge of Forests, Assam.
5. Minister in charge of Forests, Bihar.
6. Minister in charge of Forests, Gujarat.
7. Minister in charge of Forests, Haryana.
8. Minister in charge of Forests, Himachal Pradesh.
9. Minister in charge of Forests, Jammu & Kashmir.
10. Minister in charge of Forests, Kerala.
11. Minister in charge of Forests, Madhya Pradesh.
12. Minister in charge of Forests, Maharashtra.
13. Minister in charge of Forests, Manipur.
14. Minister in charge of Forests, Meghalaya.
15. Minister in charge of Forests, Mysore.
16. Minister in charge of Forets, Nagaland.
17. Minister in charge of Forests, Orissa.
18. Minister in charge of Forests, Punjab.
19. Minister in charge of Forests, Rajasthan.
20. Minister in charge of Forests, Tamil Nadu.
21. Minister in charge of Forests, Tripura.
22. Minister in charge of Forests, Uttar Pradesh.
23. Minister in charge of Forests, West Bengal.
24. Lt. Governer, Delhi.
25. Lt. Governor, Goa, Daman & Diu.
26. Lt. Governer, Mizoram.
27. Chief Commissioner, Andaman & Nicobar Islands.
28. Chief Commissioner, Arunchal Pradesh.
29. Chief Commissioner, Chandigarh Administration.
30. &
31. Members, Lok Sabha.
32. Member, Rajya Sabha.
33. Secretary, Ministry of Agriculture. (Department Agriculture).
34. Inspector General of Forests.
35. President, Forest Research Institute & Colleges, Dehra Dun.

Member-Secretary

36. Secretary, Central Forestry Commission.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

No. 3-5/69-FD.—In view of the constitutional changes in the status of some of the Union Territories, and the creation of some of new States/Union Territories, the Government of India, in partial modification of the earlier orders contained in the then Ministry of Food and Agriculture (Department of Agriculture) letter No. 3-47/58-FD, dated 12-11-1958, as finally amended *vide* Ministry of Agriculture (Department of Agriculture) Resolution No. 3-5/69-FD, dated 9-12-1971, have decided to re-constitute the Standing Committee of the Central Board of Forestry, as follows :—

Chairman

1. Union Minister of State (In-charge of Forestry).

Vice-Chairman

2. Union Deputy Minister for Agriculture.

Members

3. One State Minister for Forests from each of the four zones constituted as under (to serve on the Committee in rotation).
   (i) *Eastern Zone* : Assam Bihar, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Orissa, Tripura, West Bengal. (Arunachal Pradesh & Andaman & Nicobar Islands will be grouped with this zone for pre-Standing Committee meetings).
   (ii) *Northern Zone* : Haryana Himachal Pradesh, Jammu & Kashmir, Punjab and Uttar Pradesh. (Delhi and Chandigarh will be grouped with this zone for pre-Standing Committee meetings).
   (iii) *Western Zone* : Gujarat, Madhya Pradesh, Maharashtra, Rajasthan and Goa, Daman & Diu.
   (iv) *Southern Zone* : Andhra Pradesh, Kerala, Mysore and Tamil Nadu.
7. Secretary to the Government of India, Ministry of Agriculture (Deptt. of Agriculture).
8. Inspector General of Forests.
9. President, Forest Research Institute & Colleges, Dehra Dun.

Member-Secretary

10. Secretary, Central Forestry Commission.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

T. P. SINGH, Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1972